विषय-सूची

क्रम संख्या	संदेश	पृष्ठ संख्या
24.	श्मशान वाटिका मे भाषण	75
25.	भरपेट भोजन ससार मे सब को मिलना चाहिये	77
26.	शिमला के नागरिको द्वारा सम्मान	81
27.	विशप काटन स्कूल मे ...	84
28.	सर्वोदय बाल आश्रम मे	89
29.	ताशकन्त हवाई अड्डे पर	91
30.	मास्को मे आगमन	92
31.	दुनिया सिकुड रही है—राजकीय भोज मे भाषण	94
32.	मास्को मे "बाडुग" भोज के अवसर पर	97
33.	लेनिनग्राड मे आगमन ...	99
34.	लेनिनग्राड मे प्राच्य विद्या अनुसधान सस्थान मे ..	100
35.	लेनिनग्राड मे भोज	102
36.	लेनिनग्राड से प्रस्थान	104
37.	कीव मे आगमन	105
38.	"कलखोज" के किमानो के बीच	106
39.	कीव मे राजकीय भोज	108
40.	कीव से प्रस्थान	110
41.	सोची के सुन्दर नगर मे	111
42.	फिर मास्को मे	112
43.	सोची से प्रस्थान	114
44.	मास्को विश्वविद्यालय मे	115
45.	मास्को मे मैत्री सभा	118
46.	सर्वोच्च सोवियत परिषद् द्वारा स्वागत	121
47.	टेलिविजन पर	124
48.	मास्को से प्रस्थान ...	125
49.	ताजकिस्तान मे	126

क्रम संख्या	संदेश	पृष्ठ संख्या

क्रम संख्या	संदेश	पृष्ठ संख्या
127.	इंडियन ऐकेडमी ऑफ फाइन आर्ट्स के भवन का उद्घाटन ·	348
128.	जलियांवाला बाग में राष्ट्रीय स्मारक का उद्घाटन ···	350
129.	राष्ट्रीय अनुशासन योजना के अवसर पर · ··	353
130.	सर्वोदय सम्मेलन में भाषण ··· ··· ···	356
131.	सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर सार्वजनिक सभा ··· ···	360
132.	अनम जयन्ती समारोह के अवसर पर	363
133.	सार्वजनिक सभा, अमरावती मे भाषण ·	368
134.	बुद्ध पूर्णिमा समारोह के अवसर पर · ··	372
135.	इलाहाबाद मे ग्राम भारती के कार्यकर्त्ताओ के सम्मुख भाषण	375
136.	श्रीमती स्वरूप रानी अस्पताल का उद्घाटन तथा पडित मोतीलाल नेहरू मेडिकल कालेज का शिलान्यास	378
137.	मोतीलाल नेहरू शताब्दी के अवसर पर ब्राडकास्ट भाषण	382
138.	मोतीलाल नेहरू शताब्दी समारोह पर पुस्तकें भेट किए जाने के अवसर पर ··· ··· ··	383
139.	पं० मोतीलाल नेहरू की शतवार्षिक जयन्ती समारोह	385
144	पचमढ़ी के नागरिक सम्मान के उत्तर मे भाषण ··	389
141.	फिल्मफेयर पुरस्कार ·· · ·	390
142.	शिवाजी महाराज के तैल-चित्र का अनावरण ··	393
143.	उद्घाटन-भाषण ··· · ·	397
144	कविराज श्री श्यामादास वाचस्पति की मूर्ति का अनावरण	401
145.	हिन्दी शिक्षा परिषद् के वार्षिक अधिवेशन मे भाषण	404
146.	शिक्षायतन के नये भवन का उद्घाटन ·	407
147.	सदाकत आश्रम मे भाषण ·· ··· ··	410
148.	हिन्दी पत्रिका 'सरस्वती' का हीरक जयन्ती अंक की भेट स्वीकार ··· ··· · ·	412

1

बिहार में उच्च शिक्षा के लिए सुविधाएं

राज्यपाल महोदय, मुख्य मंत्रीजी, वायस चान्सलर महोदय, प्रिन्सिपल, विद्यार्थी और छात्राओ, बहनो और भाइयों,

इस जयन्ती के सम्बन्ध मे जब मुझ से कहा गया था तो उस समय मै हिचका क्योंकि समय इतना कम था कि किसी तरह इसकी गुजाइश नजर नही आ रही थी। पर जब मुख्य मत्रीजी का आग्रह पत्र मुझे मिला तो किसी तरह से इसको अपने कार्यक्रम मे लाना अनिवार्य सा हो गया और मुझे इस बात की खुशी है कि मै इसमें आप सब से मिल सका। मगर मुझे अफसोस है कि साथ-साथ पूरे इन्तजाम के साथ एक सार्वजनिक सभा नही की जा सकी, तो भी मै जहा तक देख सकता हू यहा पर पर आज केवल इस कालेज के छात्र-छात्राओ ही नही है बल्कि शहर और आस पास के गावो के भी बहुतेरे लोग पहुच गये है और बहुत हद तक सार्वजनिक सभा का काम भी यहा पर पूरा हो जाता है।

यह बडी खुशी की बात है कि अब बिहार मे ऊंची शिक्षा का प्रचार बहुत जोरो से बढ रहा है। जब मै अपने शिक्षाकाल के दिनो को ध्यान मे लाता हू और आज का उनसे मुकाबला करता हू तो मुझे मालूम हो जाता है कि तब मै और आज मे कितना बडा फर्क पड गया है। कालेजो की संख्या प्राय 30 गुनी या उससे भी अधिक हो गयी है और मेरा अपना अन्दाजा है कि छात्रो की संख्या भी 20 गुनी या उससे भी अधिक हो गयी है। याने जितने छात्र आजकल किसी एक कालेज मे पढते है शायद उतने छात्र बिहार भर के सभी कालेजो को मिलाकर उन दिनो मे नही पढ़ते थे। तो इस प्रकार से छात्रों की सख्या 20 गुनी हो गयी है। यह एक शुभ लक्षण है। अब हमारे प्रान्त मे कालेज बडे बडे शहरो तक ही सीमित नही रह गये, अब तो ऐसे कई ऐसे शहर होगे जहा नये कालेज हो गये है और इस तरह से छोटे-छोटे स्थानो मे जहा पहले नही थे वहा भी कालेज कायम हो गये है। जब इतनी सुविधा ऊंची शिक्षा के लिये हमारे प्रान्त मे आज फैल गयी है तो इसमे आश्चर्य नहीं कि विद्यार्थियो की संख्या भी बहुत अधिक हो गयी है और दिन-प्रति-दिन वह बढ़ती जा रही है।

आर० डी० और डी० जे० कालेज की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर भाषण; 1 जनवरी, 1960

2

एक तरफ जहा शिक्षा के प्रचार का हम इतना बडा प्रयत्न कर रहे है दूसरी ओर हमारे सामने यह भी प्रश्न उटता है कि जो विद्यार्थी इन सस्थाओ से शिक्षा पाकर बाहर निकलते है वे सब के सब नौकरी की तालाश करते है और सब के लिये नौकरी मौजूद नही है। जो इजीनियरिग या इस प्रकार के किसी विशेष ज्ञान से किसी कारबार के लिये अपने को योग्य बनाते है उनके लिये तो अभी स्थान मिलता भी है पर जो केवल बी० ए० और एम० ए० आर्टस सबजेक्ट्स में पास करते है उनके लिये उतनी जगह अभी नही पैदा हुयी है जितने विद्यार्थी तैयार हो रहे है। इसलिय जहां एक तरफ विद्या का प्रचार बहुत ही शुभ लक्षण है, दूसरी तरफ शिक्षित लोगो के बीच मे बेकारी का बढ़ना भी एक चिन्ता का विषय बनता जाता है और चिन्ता का विषय बनना भी ठीक है क्योकि अगर वे न भी पढते तो भी उनको कही न कही कोई न कोई काम तो ढूढना ही पडता और बेकारी की समस्या का उनके न पढने से हल नही होता, इतना जरूर होता कि अशिक्षित बेकारो की संख्या बढ़ती और शिक्षित बेकारो की संख्या उतनी नही होती। इसलिये शिक्षा के प्रचार को रोकने का प्रयत्न नही हो सकता, उसकी दिशा बदलने की आवश्यकता हो सकती है जिस मे उन सस्थाओ द्वारा ऐस लोग तैयार किये जाये जो सब निकल करके नौकरी पर भरोसा नही करके स्वय इस योग्य हो जाय कि कुछ न कुछ अपना रास्ता निकाल ले और कुछ न कुछ काम कर लें।

आज से दो दिन पहले मै बगाल मे था और बगाल मे मैंने दो यूनिवर्सिटियों में दीक्षान्त भाषण दिये, वे दोनों यूनिवर्सिटियां ऐसी थी जहा इंजीनियरी या उससे मिले-जुले विषयों मे शिक्षा दी जाती है। वहां भी मैंने कहा था कि यद्यपि आज आर्टस ग्रेजुएट के लिय बडी दिक्कत पेश हो रही है और इजीनियरिग या इस तरह की दूसरी किस्म की संस्थाओ मे शिक्षा पाये हुए लोगों को जगहे मिलती है। मगर यह कहना अतिशयोक्ति नही होगा कि कुछ दिनों के बाद इंजीनियरों की संख्या भी बढ जायगी और उनको भी आर्टस ग्रजुएट के लिये जो कठिनाई है उसका मुकाबला करना पड़ेगा और कहीं कहीं इसका बुरा लक्षण अभी भी देखने मे आया है। इसका तरीका यही है कि जो विद्यार्थी चाहे आर्टस पढ़कर निकलें चाहें किसी इंजीनियरिंग या टेक्निकल कालेज से पढ़कर निकलें वे अपने में इतना भरोसा लेकर निकलें कि उनको दूसरों का मुंह नहीं देखना होगा बल्कि वे कुछ ऐसा करेंगे जिस से वे आत्मनिर्भर हो जायें।

3

मुझे एक बात और पसन्द आयी। डाक्टर बी० सी० राय इन दोनों यूनिवर्सटियों के प्रेसीडेट है। उन्होने विद्यार्थियों को सलाह दी और वह मुझे बहुत पसन्द आयी जिसको मै आपके लिये यहां दुहरा देना चाहता हूं। जो लोग इंजीनियर होकर निकलते है तो क्या यह जरूरी है कि वे किसी बडे कारखाने मे जाकर काम करें, किसी गवर्नमेंट के दफ्तर में जाकर कुछ काम करें या किसी ऐसी जगह में काम करे जहां इंजीनियर लोगों की जरूरत होती है ? उनमें से हरेक को तैयार रहना चाहिये कि किसी बड़े कारखाने में काम कर सकें तो करें और अगर उसका मौका न हो तो अपने घर मे बैठ कर कोई चीज बना लिया करे और वे जहां पढते हो उनको ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिये कि घर बैठे काम कर ले और कोई चीज ऐसी बना लें जिससे देश को भी लाभ पहुंचे और उनका गुजारा करने का रास्ता मिल जाय।

यह बात तो उन्होने इंजीनियरिग कालेज के लडको से कही। यहां पर इंजीनियरिग कालेज नही है। मगर सायन्स के विषय तो यहा भी पढाये जाते है। साइन्स के लड़को से और खास करके मै आर्टस के लड़कों से कहना चाहता हूं कि उनके लिये भी बहुत बड़ा मैदान सारे देश में पड़ा हुआ है। कुछ दिन हुए मैने सुना था कि अगर सारे देश मे आज शिक्षा का प्रचार किया जाय और सब के लिये स्कूल खोले जायं तो न मालूम कितने लाख शिक्षको की जरूरत होती है। प्राइमरी स्कूल के अर्थ मे ले और स्कूल कायम करने का निश्चय करें और निश्चय किया भी गया है तो न मालूम कितने लाख शिक्षकों की आवश्यकता पडेगी। तो ये शिक्षिक जो पहले से शिक्षित है वे ही हो सकते है। यह ऐसा काम है जो अभी आजकल कम से कम किसी शिक्षित पुरुष के लिये या शिक्षिता स्त्री के लिये काफी हो सकता है और इसमें उनको काफी काम मिल सकता है। यह जरूर है कि बड़े ओहदे पर लोगों को जितनी तनख्वाह मिलती है वह नही मिलेगी। मगर यह काम यहां गावों में रह कर करना होगा जहा खर्च खुद-ब-खुद बहुत कम होता है, जहां की आबोहवा बेहतर होती, जहां अगर वे थोड़ा काम करके लोगों को ठीक तरह से समझावे, ठीक रास्ता दिखलावें और केवल विद्यार्थियों और शिक्षितों तक ही अपने काम को सीमित नही रखें पर सारी जनता को सुशिक्षित बनाने की बात सोचें तो उनके लिये काफी काम है और उनके लिये खाने-पीने की कमी नही रहेगी।

तो यह सब थोडा विचार करने से, जाच और बुद्धि लगाने से, थोडा अनुमान करने मे सब को पता लग सकता है। इसमे दोनों चीजे है। अपने लिये अगर काफी मात्रा मे गुजारे का सामान चाहिये तो वह मिलता है और दूसरी तरफ देश की भलाई है। जो बडी-बडी नौकरियां है उन नौकरियों तक सब लोग न पहुंच पाते है, न पहुच सकते है। इसके लिय थोडे ही लोग जायेगे चाहे वे अपनी बुद्धि के कारण, अपनी योग्यता के कारण, चाहे और किसी कारण से पहुंचे मगर ज्यादा लोग तो ऐसे ही रहेगे जिनको मध्यम वर्ग की तरह से थोडा बहुत खाना-पीना उपार्जन करके अपने को सुखी बनाना है। मगर इससे भी अधिक मै तो यह मानता हू कि जब गांवो में शिक्षा जोरो से फैल रही है जो शिक्षित होते है उनका मुह गावों की ओर से शहरों की ओर हो जाता है। अगर कही कारखाना खुलने वाला हो तो घर छोडकर कारखाने की ओर अधिक दौड हो जाती है। इसका नतीजा यह होता है जो अगर सच पूछिये तो सारे देश के लिये बहुत अच्छा नही कहा जा सकता कि सब शिक्षित लोग, सभी ऐसे लोग जो दूसरो को पढा सकते है, सिखा सकते है गांवो को छोडकर दूसरी जगह चले जाये, जो लोग गाव में रह जायेगे उनको रास्ता दिखाने वाला, जो बाते इस वक्त हो रही है उनको वहा तक पहुंचाने-वाला कौन रहेगा। इसको भी सोचना है। गांवो मे जो लोग शिक्षा पाते है उनको अपने आपको इस तरह से तैयार करना है कि अपना काम अच्छी तरह से कर सके। शिक्षा का अर्थ यह नही है कि दफ्तरी कामो के लिये लोगो मे योग्यता हो जाय बल्कि शिक्षा का अर्थ यह होना चाहिये कि उनको चाहे कोई भी काम करना पडे तो उसको बेहतर कर सकेगे और अच्छाई और खूबी के साथ कर सकेगे। लिखने का काम हुआ तो वह भी उनके लिये उतना ही सहल होगा जितना अगर हल भी चलाना पडे तो उसी खूबी के साथ और बेहतर तरह से चला सकेगे।

आजकल बहुत योजनाए बन रही है। उनका यही उद्देश्य है कि देश में धन की वृद्धि हो, लोगो के पास अधिक काम हो। काम इस रूप में नहीं बल्कि इस रूप में कि जितनी चीजे हमारी जरूरत की हो सकती है, जिनको हम अपने आराम और सुख के लिये आवश्यक मानते है, मन बहलाव के लिये आवश्यक मानते है उनको अधिक मात्रा में पैदा कर सकते है तो वह अच्छी और सच्ची प्रगति है। तो इस काम को अच्छी तरह से करना है और इस में अनगिनत आदमियो की जरूरत है और आप इस संदेश को गांव गाव तक पहुंचावें।

आप समझे कि वह एक चीज जो हमारे सामने रही है और जिसकी वजह से सभी लोग चिन्तित रहे है वह अन्न की समस्या है। देश बड़ा और आबादी बड़ी है । तभी अन्न की कमी है और जब तक हम अपने देश मे इतना अन्न नही पैदा कर लेगे कि हमारे विदेशो से अन्न मगाने की जरूरत नही रह जाय तब तक हम सच्चे माने मे सुखी नही हो सकते है और इसी लिये हजारो बाते सोची जाती है कि अन्न की वृद्धि कैसे हो । किसानो को नये तरीके बतलाना और यह समझा देना कि किस तरीके से एक बीघे मे 10 मन के बदले 15 मन वे पैदा कर सकते है और सिर्फ बतलाना ही नही, अपने हाथो से करके दिखलाना इतना बडा काम है जिस मे सब के सब लग सकते है और उनको लगना भी चाहिये। आप ऐसा नही समझे कि हमारे मा-बाप इतना पैसा खर्च करके गावो से शहर मे पढने के लिये भेजते है, अपना पेट काटकर हमको शिक्षा दिलाते है, वह शिक्षा हमको हल चलाने के लिये नही दी जाती, इतना खर्च बेकार जाने वाला है। ऐसी बात नही है। कोई काम छोटा नही है। छोटा काम भी अच्छी तरह से किया जाय, खूबी के साथ किया जाय तो वह बड़ा हो सकता है। यह गलत धारणा है कि हाथ से काम करना एक मजदूर का काम है शिक्षको का काम नही है। इसको छोडना चाहिये। जो लोग इजीनियरिग मे जाते है या एग्रीकल्चरल कालेज मे जाते है उनको यह सब करना पड़ता है। मगर मै यह भी समझता हू कि जितना उनको छोडना चाहिये उतना छोडते नही है। वे अपने हाथ से सब काम करके दिखला देते है। उस तरह से आप भी सभी अपनी-अपनी जगह पर जाकर विद्या से जो लाभ उठा पाते है उसको लोगो मे बाटे। विद्या ही ऐसी चीज है जो बाटने से घटती नही बढ़ती है । जितने प्रकार का और धन है वह बाटने से घटता है, विद्या बाटने से बढ़ती है, घटती नही। आप मे से प्रत्येक का वही काम होना चाहिये जो मैने बताया। गावो मे जाकर अपने उस काम को करे और लोगो का उत्साह बढावे और उनके उत्साह को बढ़ाने मे सफल होने के लिये स्वय उदाहरण बनकर, मिसाल बनकर लोगो को दिखलाये ।

यह कालेज पिछले 60 वर्षो से बहुत तरह की कठिनाइयों से गुजरता हुआ आज इस अवस्था तक पहुचा है । इसके लिये मै सब से पहले उन महानुभावों को धन्यवाद देता हू जिन्होंने पहले-पहल एक ऐसी संस्था की स्थापना करने की सोची थी जब इस तरफ लोगो का ध्यान उतना नही था और उसके बाद अधिक लोगो की सहायता पाकर इसको आगे बढ़ाया, एक विभाग के बाद

दूसरा विभाग देकर इसकी उपादेयता बढ़ायी और आज इसे इस अवस्था में पहुंचाया। उन सब को मैं धन्यवाद देता हू और धन्यवाद से भी बढ़कर बधाई देना चाहता हू और इस कालेज के छात्र जो इस समय यहां पर हैं उनको बधाई देना चाहता हू कि उनका समय इस कालेज मे पहुचने का तब आया जब उसकी कठिनाई बहुत करके दूर हो गयी और अच्छा समय आया। इसको जितना लाभ पहुंचेंगा उतना ही ज्यादा लाभ इस जिले के लोगो को होगा। मैं आप सब को एक बार और बधाई देकर धन्यवाद करता हूं। जय हिन्द।

7

सिख शिक्षा सम्मेलन का उद्घाटन

राज्यपाल महोदय, सरदार सुरजीतसिह मजीठिया, सरदार भार्गसिह जी, बहनों और भाइयो,

आपके इस सम्मेलन मे मुझे आने का यह मौका मिला इसके लिये आप सब का आभारी हू। यहा आने के पहले यह मेरा कर्त्तव्य था और मेरा यह सौभाग्य था कि पहले मै हर मन्दिर साहब मे जाकर दर्शन कर लू और वैसा मैने किया। पटना शहर मेरे लिये तो अपना ही शहर है जब मै यहा का एक रहनेवाला रहा हू और यद्यपि आज यहा से दूर दिल्ली चला गया हू मगर जितना भी समय वहा भले ही कटे, इस शहर को नही भूल सकता हू। इसलिये इस शहर मे हर मन्दिर साहब के दर्शन पहले भी कई बार करने का सुअवसर मिला है और आज भी मिला। आज से चन्द साल पहले मै आनन्दपुर साहब मे गया था जिस स्थान का बडा महत्व यह है कि दसवे गुरु गुरु गोविन्द सिंह ने वहा से काम आरम्भ किया था और पटना शहर अपनी खुशकिस्मती समझे कि उनका यहा ही जन्म हुआ और बचपन के उनके कई वर्ष इसी जगह पर बीते और इस शहर मे उनके पैरो की धूली पडी होगी। इसके पहले यह भी रिवायत सही है कि गुरू नानक साहब यहा पधारे थे। इन चीजो को ध्यान मे रखते हुए और इसके और पहले के इतिहास का ध्यान किया जाय तो यह एक ऐसा अनोखा शहर रहा है जहा भारत के ऐतिहासिक महापुरुष समय-समय पर आते गये है और उन्होंने देश को और मानव समाज को जागृत और उन्नत करने मे बहुत बड़ा काम किया है। इसलिये कान्फ्रेस के अधिकारियो का यह निश्चय कि इस बार का यह सम्मेलन यहा ही किया जाय बहुत ही शुभ निश्चय है और मेरा विश्वास है कि इस सम्मेलन के बाद कान्फ्रेस का काम और भी तेजी से और अच्छी तरह से आगे बढ़ेगा।

यह कान्फ्रेस पिछले 50 वर्षो से काम करती आ रही है और इसकी स्थापना इस ख्याल से की गयी थी कि इसके जरिये से शिक्षा का प्रचार हो क्योकि मनुष्य का ऊपर उठाने के लिये शिक्षा सब से आवश्यक और कारगर चीज होती है। इस लिये उस वक्त से आज तक शिक्षा प्रचार के काम मे कई सस्थाए कायम करके, ऐतिहासिक खोज के काम में मदद करके, दस्तकारी

सिख शिक्षा सम्मेलन का उद्घाटन करते समय भाषण, 2 जनवरी, 1960

के काम जारी करके तथा और कई प्रकार से यह कान्फ्रेन्स काम करती आयी है । आजकल भारतवर्ष भर मे शिक्षा का प्रचार बडी तेजी से हो रहा है । मगर इस शिक्षा मे इस चीज की कमी बहुतेरे लोग महसूस करते है और वह कमी यह है कि पुस्तको को पढने से ज्ञान या टेकनिकल काम करने का अभ्याम लोगों को हो जाता है मगर साथ-साथ मनुष्य के चरित्र को सुधारने का काम आजकल हमारे विद्यालय बहुत कुछ नही करते । इसके कई कारण हो सकते है जिनमे से एक कारण तो यह है कि इस देश के अन्दर बहुत धर्मों के मानने वाले, बहुत मजहबो के पैरवी करने वाले लोग बसते है और जो भी यहा की सरकार हो उसके लिये यह लाजमी हो जाता है कि वह किसी एक धर्म या सम्प्रदाय को कोई खास तरीके से मदद नही करे। इसका अर्थ यह नही है कि लोग धर्म से अलग रहे , धर्म से च्युत हो जाये, उनमे धार्मिक भावना नही रहे । उसका अर्थ यह है कि सब को अपने धर्म की उन्नति करनी चाहिये और उसकी उन्नति के लिये जो कुछ करना हो वे लोग खुद किया करे और उसका बोझ सरकार पर नही लादे क्योकि वह किसी एक धर्म, मजहब या सम्प्रदाय की नही बल्कि सब की है । इसलिये कभी-कभी यह गलतफहमी भी हो जाती है कि हमारी सरकार बिला-मजहब सरकार है । यह बात नही है । दोनो मे बहुत फर्क है । सरकार मजहब की विरोधी नही है । सच पूछिये तो मजहब के बिना मनुष्य का चरित्र बन भी नही सकता । धर्म चाहे जो कुछ हो, सभी धर्मो मे मनुष्य के चरित्र पर जोर दिया ही गया है । कोई भी मजहब चाहे आदमी क्यो नही माने, उसको अपना चरित्र सुधारना चाहिये और चरित्र सुधारने का तरीका भी यही है कि सच्चाई के साथ जो भी काम उसको मिले उसको करे, अपने फर्ज को अदा करे । सब से बडा चरित्र भी यही होता है । मगर चूकि कालेज और स्कूल मे खास करके मजहबी शिक्षा नही दी जाती और बच्चो को दूसरा कोई ऐसा मौका नही मिलता जहा उनको यह शिक्षा मिल सके, इसलिये अक्सर लोग समझ लेते है । कि अब न तो मजहब की जरूरत है और न उसके लिये कुछ करना जरूरी है । मगर सच पूछिये तो इस प्रकार की सस्थाओ का मुख्य काम यही है कि जो लोग उसके असर के अन्दर आवे उनका चरित्र बनावे और उसके लिये लोगो मे प्रचार करे, लोगो को ऐसा काम सिखाये जिस से उनका चरित्र अच्छा बन जाय, लोगो को इस तरीके से शिक्षा दे जिस मे वे मजहब के सच्चे अर्थ को समझ सके और मनुष्य के साथ हमदर्दी और प्रेम का बर्ताव करे आपस मे मतभेद या मनमुटाव का कारण नही बनावे ।

ये सब चीजे जो गैर-सरकारी सस्थाए है वे ही कर सकती है। यह खुशी की बात है कि इस सम्मेलन ने इस काम को शुरू से सम्भाला है और जहा कही भी इसके विद्यालय, या दूसरे विद्या सिखाने वाले स्कूल, मदर्से या कालेज है उन सभो मे कुछ न कुछ चरित्र को सुधारने की कोशिश जरूर रहती है और मै ने सुना है कि इस सम्मेलन मे भी धार्मिक विषयों पर जोर देते रहते है, ऐसे विषय, ऐसे लेख भी पढाये जाते है और कविता भी कवि सम्मेलन द्वारा लोगो को सुनायी जाती है। यह एक ऐसा काम है जो सरकारी सस्थाए शायद नही कर सकती । इसलिये मै ऐसी सस्थाओ का खास करके स्वागत करता हू और आदर करता हू। जब मुझ से सरदार सुरजीतसिह जी ने यह आग्रह किया कि मै पटने आकर इस सम्मेलन का उद्घाटन करू तो मैने विशेष करके इस बात को इसलिये मजूर कर लिया कि यहा मुझे बहुतेरे सिख बहनो और भाइयो से मिलने का मौका होगा और उनसे मै यह कह सकूगा कि भारत-वर्ष मे सभी धर्मो के लिये पूरी आजादी और गुजाइश है, सब को विचार करने का मौका है, सब को अपनी रीति से, जिस तरह से मुनासिब समझे इबादत करने की इजाजत है और खास कर के सिखों के साथ हमारे जैसे लोग जो पटना के निवासी है एक खास सम्बन्ध रखते है। वह सम्बन्ध जिस दिन गुरु गोविन्द सिह जी का जन्म इस शहर मे हुआ इस शहर का क्या, इस सूबे मे जितने लोग उस वक्त थे या अभी है या आइन्दे होने वाले है सब के साथ जुट गया। वह सम्बन्ध जितना ही नजदीक का सम्बन्ध है उतना ही दृढ सम्बन्ध है। इसलिये ऐसे एक सम्मेलन मे शरीक होना केवल इज्जत की बात ही नही है, उससे हमे सीखने का भी मौका मिलता है। इसीलिये मै ने यहा आना मजूर किया और आपकी खिदमत मे हाजिर हुआ । मेरे लिये खुशी की बात यह भी है कि मै हर मन्दिर साहब का भी दर्शन कर सका।

तो मै आप से यह कहना चाहता हू कि सिख भाइयो को समझना चाहिये कि चाहे वे पजाब मे रहते हो या बिहार मे रहते हों, आन्ध्र मे रहते हो या बगाल मे, हिन्दुस्तान के किसी भाग मे रहते हों उन सभी जगहों को उनको केवल अपना घर ही नही मानना चाहिये बल्कि अपने को उन जगहो की तरक्की मे लगा देना चाहिये यह समझकर कि वे जहा है उस जगह की तरक्की होगी तो उनकी तरक्की साथ साथ होती रहेगी।

उसके अलावा यह भी एक बड़ी चीज है कि बहुत करके सिख पजाब मे रहते है और पजाब हमारे देश की सरहद पर है। वह सरहद एक तरफ नही

है कई तरफ है । हमारे पश्चिम मे एक सरहद है। अब उत्तर में भी सरहद ऐसी हो गयी है जिसको हम सरहद समझने लग गये हैं । इसलिये खास करके जरूरत है कि हरेक भारतवासी चाहे उसका धर्म कोई हो अपने को भारतवर्ष का मुलाजिम समझे और जो आजादी हम ने पायी है उसे महफूज रखना और इस देश के अन्दर जितने लोग बसते हैं उनको उन्नत बनाना, ऊपर उठाना प्रत्येक का फर्ज है। जब इस तरह की भावना हमारे दिलों मे जाग जायगी तो छोटी-मोटी बाते जिनकी वजह से हमारे आपस के मतभेद हो जाया करते हैं उनकी ठीक कद्र होने लगेगी और वे अपनी जगह पर जाकर बैठ जायेंगी।

मै यह नही कहता हू कि किसी मे मतभेद नही हो। जब समझने वाले, सोचने वाले 10, 5 इकट्ठे होंगे तो यह हो नही सकता कि सभी बातों में, सभी मसलों में, सभी चीजों के बारे मे सब का एक ख्याल उठे। अगर एक ख्याल भी हो तो सभी लोग एक ही तरह से, एक ही तरह के शब्दो में उस ख्याल को जाहिर नही कर सकते हैं। इसीलिये किसी रूप मे चाहे वह भाषा की बिना पर हो चाहे सच्चे शब्दों मे रहे या नही रहे, रहन-सहन की बिना पर हो कुछ न कुछ मतभेद रहता है। लेकिन हिन्दुस्तान का यह बडा फ़खर है कि इन सारे दूसरी तरह के मतभेदों के रहते हुए सारा हिन्दुस्तान आज ही नही अनन्त काल से एक रहा है और ईश्वर चाहेगा और यहा के लोगो मे सद्बुद्धि रहेगी तो हिन्दुस्तान अनन्त काल तक एक बना रहेगा। हम देखते है कि अलग-अलग भाषाए हैं, अलग-अलग रिवाज हैं, अलग-अलग कपडे, खान-पान, आबोहवा ये सब अलग-अलग हैं और आज से नही बहुत जमाने से रहे हैं मगर तो भी आदि काल मे ही इस देश के लोगो ने सीख लिया कि भगवान एक है, उसके पास पहुचने के लिये भिन्न-भिन्न रास्ते हैं और हो सकते हैं। इसलिये हर आदमी को अपने योग्य रास्ता ढूढ निकालना है और उस रास्ते पर चलना है। पैगम्बरों और फिरिश्तों की यह सीख होती है जो उस रास्ते को सुगम कर देती है और हर आदमी को अपने तजुरबे पर भरोसा करके रास्ते को खोजने की जरूरत नही पडती। बहुत बाते उनको पैगम्बरो से मिल जाती हैं। हमको जो कुछ मिला है वह हमारे लिये कीमती है, बडा है तो ऐसे ही जो दूसरो को मिला है वह उसके लिये उतना ही कीमती और जरूरी है। हमारे देश मे इस चीज को हजारो वर्ष पहले लोगों ने सीख लिया था और इसी वजह से इतने मजहब होते हुए, इतने धर्म सम्प्रदाय होते हुए भी भारत हमेशा एक रहा है। यहा तक कि भारतवर्ष के अलग-अलग हिस्सो मे अलग-अलग

बादशाहत रही, राजा रहे, नबाव रहे और राज्य करते रहे। मगर अंदर मे संस्कृति की वजह मे यह देश एक रहा है और आज तो हमारा यह सौभाग्य है कि अपनी आखो मे हम यह भी देख रहे है कि सास्कृतिक एकता के अलावा आज राजनीतिक एकता भी देश मे कायम हो गयी है और दक्षिण में कन्या कुमारी से लेकर उत्तर में हिमालय तक और पश्चिम मे समुद्र से लेकर पूर्व मे समुद्र तक आज एक राज्य चल रहा है और उसकी सलतनत आज दिल्ली मे है और वहा से जो हुक्म जारी होता है वह सारे मुल्क मे चलता है और हुक्म देनेवाला भी एक ही है। हुक्म देने वाले देश के सभी हिस्सो से चुनकर जो गये है वे अपनी बुद्धि के मुताबिक अपना फर्ज अदा करते है, सब मिल-जुल कर जो सुन्दर होता है कहते है और हुक्म देते है।

इस तरह मे जो पहले सास्कृतिक एकता थी वह राजनीतिक एकता भी हो गयी है। यह इतिहास मे पहला मौका आया है। बहुत दिन पहले रहा भी हो जिसका पता नही है। मगर आज स्वराज्य का एक सुन्दर पौधा चल रहा है। मै तो यही कहूगा कि ऐसे मौके पर हमारे लिये और आसान होना चाहिये कि अगर आपस मे मतभेद भी हो तो उसे मिटा-पटा ले, आपस मे एक दूसरे के साथ मिल जाये। अगर मतभेद कायम भी रहे तो भी इतना तो जरूर होना चाहिये कि आपस मे मतभेद रखते हों मगर कोई दूसरा हमारे सामने अगर होता है, कोई बाहर का अपनी आख दिखाता है तो हम सब एक है, एक रहेगे और सब मिलकर उसका मुकाबला करेगे। इस एकता की जरूरत आज हिन्दुस्तान को है और सिर्फ मन ही मन मे एकता रखना नही बल्कि उस एकता को किसी न किसी रूप मे दिखलाना जरूरी है जिस मे सभी लोग समझ जायें कि भारत-वर्ष एक है। यो तो एक गवर्नमेट बनाकर उसका सबूत प्रति मिनट हम दे रहे है और हमारे चुने हुए लोग मिल-जुल कर काम कर रहे है और इस बात का सबूत दे रहे है कि यह सारा देश एक है।

मै आपसे यही कहना चाहूगा कि अपने जीवन मे हरेक आदमी इस बात की हमेशा कोशिश करे, इसको कभी नही भूले कि हिन्दुस्तान एक है, हरेक आदमी को जिम्मेदारी है कि उसकी स्वाधीनता, उसकी आजादी को सुरक्षित रखे, महफ़ूज रखे और उस पर कोई आच नही आने दे और चूकि इस प्रकार की कान्फ्रेंस मे इस तरह का ख्याल पैदा होता है, पैदा किया जा सकता है, आपको यह बता देना चाहता हू। इसीलिये मै इस तरह की कान्फ्रेंस का स्वागत करता हू और इसीलिये मै यहा हाजिर हुआ और आपकी थोडी खिदमत करने का सौभाग्य प्राप्त कर सका।

12

गोसंवर्धन सम्मेलन

श्री राज्यपाल महोदय, श्री जगत नारायण लाल, देवियो और सज्जनो,

आपका यह सम्मेलन बड महत्व का सम्मेलन है क्योंकि हिन्दुस्तान मे सब से बडी योजना अगर कोई हो सकती है तो वह यहा के गावो को सुधारने की योजना हो सकती है और गावों को सुधारने मे सबसे बडी चीज यहा की खेती को सुधारना है और खेती को सुधारने मे सब मे आवश्यक वस्तु गायों और बैलों को सुधारना है। इस तरीके से जितने महत्व के काम हम अपने गावो के लिये करे उनमे बहुत ऊचा स्थान गो सेवा और पशुपालन का है। कुछ दिनो से कुछ धार्मिक भावना के लग जाने की वजह से और कुछ इसी तरह की और बातो के आ जाने की वजह से तरह-तरह की गलत-फहमिया हो गयी ह। महात्मा गान्धी ने हमको बताया था कि चाहे धर्म कुछ भी हो, गो सेवा के काम को ऐसा बना देना चाहिये कि चाहे धार्मिक विचार कुछ भी हो, इसे देश के लिये उन्नति का काम समझकर इसमे लग जाये, जुट जाये और मै समझता हू कि इस दृष्टि से इस काम मे अगर सब लोग लगेगे तो कही किसी प्रकार का विरोध इसमे नही आयेगा और हर तरह से यह काम आगे बढ सकेगा।

अब इस समय जो बडी समस्या हमारे सामने आ रही है वह यह है कि आबादी तेजी से बढ़ रही है और विशेष करके बिहार जैसे प्रान्त मे जहा पहले आबादी इतनी घनी है आबादी बढे तो उसका फल यह होगा कि मनुश्य के लिये जितनी जमीन चाहिये नही रहेगी और दिन-प्रति-दिन वह घटती जायगी। जितनी जमीन प्रति मनुष्य हमको यहा पर प्राप्त है वह अपने लिये पूरा अन्न पैदा करने के लिये काफी नही है। अब वह दिन दूर नही है जब वह नाकाफी हो जायगी। दूसरी ओर हमको यह भी देखना है कि बिना बैल के खेती का काम नही हो सकता है, बिना दूध के हमारा खाना भी पूरा नही हो सकता है। इसलिये गाय का पालन जरूरी हो जाता है जिस मे हम खेती का काम पूरा कर सके और खुराक को पूरा कर सके। इसमे एक भय की बात यह है कि एक तरफ गाय के लिये चारा जुटाना है जो हम उसी जमीन मे पैदा कर सकते ह जिस मे अन्न पैदा करते है और दूसरी ओर मनुष्य के लिये अन्न पैदा करना। यह मनुष्य और पशु का एक दूसरे के साथ मुकाबले

पटना राजभवन मे किये गये गोसम्वर्धन सम्मेलन मे भाषण; 2 जनवरी, 1960

का समय हो जाता है। इसमे बुद्धिमानी इसी में है कि हम इसको पहले से समझकर ऐसा प्रबन्ध सोचे जिस से वह मुकाबला कम से कम हम को करना पड़े और इसके लिये जब हम जमीन मे जो कुछ पैदा करते है उसको बढा देगे तभी यह दिक्कत दूर हो सकती है। यहा की पैदावार चाहे अन्न की हो चाहे घास की हो, चाहे जो चीज भी हो बहुत कम होती है और उसका नतीजा यह होता है कि न तो मनुष्य के लिये खाने के लिये पूरा अन्न पैदा होता है और न पशु के लिये पूरा चारा हम पदा करते है। इसके साथ ही बात यह भी है कि हमारी जमीन मे पैदा करने की शक्ति मौजूद है। इसका ठीक तरह से इन्तजाम किया जाय, उसको समझकर, बुद्धि लगाकर, कुछ आजकल के विज्ञान के जरिये से, नये प्रयोगों के जरिये से काम करे तो हम खेती की पैदावार बढा सकते हैं। इसलिये इस वक्त यह जरूरी है कि हम जमीन का जो उत्पादन है उसको बढाने की कोशिश करे, जितना हम पैदा करते है उसको बढाने की कोशिश करें। इसके लिये समय पर बोना, अच्छे बीज लगाना, पानी का प्रबन्ध करना, खेत जोतना ये सब चीजें जरूरी है, मगर इन सब चीजो से अधिक जरूरी खाद देना है ? उस खाद का एक जरिया गाय ही है। जो गाय से गोबर मिलता है उससे बढकर और दूसरा कीमती खाद नही है। वह चीज भी हम गाय से ले सकते है। बात असल यह है कि गाय की सेवा ऐसी चीज है कि यदि वह ठीक तरह से की जाय तो गाय सिर्फ अपने लिये ही नही अपने बाल-बच्चो के लिये भी काफी पैदा कर सकती है। जिस तरह से एक मनुष्य सिर्फ अपने लिये ही पैदा नही करता है बल्कि अपने परिवार के लिये, अपने बच्चो के पालन के लिये भी पैदा करता है उसी तरह से गाय बछडे के लिये भी दूध देती है और जो बूढे-लंगडे जानवर हो जाते है, जो बेकार हो जाते है उनके लिये भी और मरने पर चमड़े, हड्डी, मांस आदि जिनसे खाद बन सकता है उससे निकल आते है। महात्मा जी ने अपने हाथों से वर्धा मे प्रयोग शुरू किया था और उसके संचालकों ने यह साबित कर दिया कि गो-पालन कोई नुकसान का काम नही है, उससे हम मुनाफा कर सकते है और यदि मुनाफा नही कर सकते तो कम से कम उससे कोई नुकसान नहीं है। गाय से हमे खाने के लिये दूध, मखन मिलता रहेगा और साथ ही खेती के लिये वह बैल भी पैदा करती है।

इसलिये मै कहूंगा कि गाय की नस्ल इस तरह से सुधारनी चाहिये कि वह ज्यादा से ज्यादा दूध हमको दे सके और बछड़े भी दे सके। यह असम्भव

नही है। खास करके आजकल विज्ञान की तरक्की इतनी हो गयी है कि यह काम जल्द और आसानी से किया जा सकता है । और चीजों में विज्ञान की जो भी कमी रही हो पर इसमे उसका फल अच्छा है। इस चीज को करना चाहिये और कुछ ऐसे लोगों को इस काम में पड़ना चाहिये जिनकी इसमे पूरी दिलचस्पी हो। ऐसे लोग पड़ेंगे तो गो-पालन कोई नुकसान की चीज नही रहकर एक फायदेमन्द धंधा बन जायगा जिस से हमको अनाज भी ज्यादा मिल सकेगा और दूध भी मिल सकेगा।

गाय का दूध उतना ही जरूरी है जितना अन्न क्योंकि देखा गया है हिन्दुस्तान मे जहा मांस खाने वाले लोग अधिक नही है दूध घी की ज्यादा आवश्यकता है। हिसाब लगाने वालो ने यह भी हिसाब लगाया है कि जो लोग मांस खाते है यदि उनके लिये मास का इन्तजाम किया जाय अर्थात् जानवरो को पाल करके मास पैदा किया जाय तो जितना मास पैदा करने में जमीन या अन्य खर्च है उससे बहुत कम दूध और अन्न पैदा करने में होता है। अर्थात जितनी जमीन से आदमी अपने खाने के लिये अन्न और दूध का खर्च निकाल सकता है अगर वह आदमी मास खाकर रहना चाहे तो उससे ज्यादा जमीन लगेगी क्योंकि पशु-पालन मे जमीन ज्यादा लगती है। इसी ख्याल से हमारे पूर्वजों ने कहा था कि गो-पालन जरूरी है और इन सब चीजों पर अधिक ध्यान देकर उन्होंने सोचा कि धार्मिक भावना से इस काम को लोग करेंगे तो इसमें बहुत सफलता मिलेगी।

जो आकड़े अभी सुनाये गये उससे अच्छा यह होगा कि आप भी करके दिखलावें और दूसरी जगह से आकड़े लेकर नही सुनावें बल्कि आकड़े आप भी तैयार कराये। गाय के गोबर से अन्न की पैदावार कितनी बढ़ायी जा सकती है इसे हम दिखलायें, दूध घी पैदा करके हम बतलायें कि एक गाय से दूध घी कितना पैदा हो सकता है। जो आंकड़े दूसरी जगह से हम लिया करते है उसकी जगह पर यह अच्छा होगा कि सब चीजों को आप भी करके दिखलायें तो लोगों को विश्वास हो जायगा क्योकि केवल पुस्तकी ज्ञान से बहुत लोगों को विश्वास नही होगा। जब वे अपनी आंखों से देख लेंगे कि अधिक दूध होता है, अच्छे बछड़े होते है तो लोगों के दिल पर असर पड़ेगा और इस काम को वे करने लग जायेंगे। मेरा अपना विश्वास है कि हमारे किसान प्रगति-विरोधी नहीं हैं। मगर वे बात करने से नहीं मानते। जब उनको करके दिखला दिया जाता है तो वे मानते हैं और आसानी से अपने

लिये उस काम को मंजूर कर लेते है। आपका यह कर्त्तव्य है कि इस प्रयोग को करके लोगों के सामने दिखला करके लोगों को विश्वास दिला दें और लोगों को प्रोत्साहन दें। मुझे बड़ी खुशी है। मैं इस तरह की चीजों में बराबर दिलचस्पी लेता आया हूं। आजकल सम्पर्क कम हो गया है। मगर इतना तो जरूर चाहता हूं कि सब लोग इस पर ध्यान दें।

16

महरौली टी० बी० अस्पताल का निरीक्षण

बहनो और भाइयो,

इस अस्पताल मे बडे पैमाने पर काम हो रहा है और आज यहा आकर जो कुछ मैने देखा और जो रिपोर्ट आपने मुझे बताई, उससे मेरा यह विश्वास और भी दृढ हो गया है कि जो हमारे देश के धनी-मानी दानी लोग है वे अगर अपनी ओर से कुछ करते है तो उसमे गवर्नमेट की सहायता भी मिल जाती है। यह बीमारी इतनी ज्यादा बढ गई है कि जब तक बहुत बडे पैमाने पर सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाये मिल कर काम न करेगी तब तक इस बीमारी को इस देश से निकालना बहुत मुश्किल होगा । यह बीमारी गरीबी की भी है, क्योंकि जब पूरा खाना नही मिलता, अच्छा खाना नही मिलता और शरीर कमजोर हो जाता है, तो मैने सुना है कि यह बीमारी घर पकड लेती है। मगर इसके अलावा यह बीमारी छूत से भी फैलती है । यह छूआछूत की बीमारी है । इसलिये कही किसी का पता लग जाय तो उसे औरो से अलग रख कर उसका इलाज किया जाय, सुश्रूषा की जाय तो सब से अच्छा है।

इस देश मे जहा तक मैने सुना है, संख्या तो मुझे ठीक मालूम नही पर यह बीमारी बहुत बडे पैमाने पर फैली हुई है । पहले तो यह बीमारी खासकर शहरों में ही हुआ करती थी अब गावो मे भी फैल गई है और फैलती जा रही है। कुछ दिनो से बी० सी ० जी० इन्जैक्शन का काम हो रहा था और मै समझता हू शायद अभी भी हो रहा है। उससे बहुत बडी आशा की जाती है कि यह बीमारी ज्यादा न फैलने पायेगी। जो लोग इसके शिकार बन गये है उनके लिये इस तरह के अस्पताल, इस तरह की सस्थाये जितनी भी तादाद मे और जितनी ज्यादा जगहों मे हो सकें उतना ही हमारे देश के लिये लाभदायक है।

यहां जो रोगियो को सुविधायें मिलती है उन्हे जानकर मुझे खुशी हुई, क्योंकि हमारे साथ राष्ट्रपति भवन में एक आदमी है जिसकी बहिन बहुत बीमार थी। उसे यहां लाया गया और मैंने सुना कि उसका आपरेशन भी हुआ और वह अच्छी होकर यहां से वापस गई है। हर हफ्ते वह यहां उसे देखने आया करता था और यहां के बारे में मुझे बताया करता था । तभी से मेरा खयाल था कि मै यहां आकर यह अस्पताल देखू। तो जब आपका निमन्त्रण मुझे मिला मैंने

टी० बी० अस्पताल, महरौली में भाषण, 8 जनवरी, 1960

बड़ी खुशी से उसे मजूर कर लिया । यदि यह निमन्त्रण कुछ और पहले मुझे मिला होता तो उसको भी मै यहा देखता । मगर बेहतर है कि उसके यहां से ठीक होकर चले जाने के बाद ही मै यहा आया ।

इस तरह की बहुत स्त्रिया होगी, बहुतेरे बच्चे-बच्चिया होगी, जो ठीक होकर अपने घर गये है और उनके घर के लोग सब को आशीर्वाद देते है। दान देने वालों को तो आशीर्वाद मिलता ही है, गवर्नमेंट को भी आशीर्वाद दिया जा सकता है। जो लोग दिलचस्पी से काम करते है, चाहे वह डाक्टर की हैसियत से है, या नर्स की हैसियत से या और भी छोटे काम करते है सब को आशीर्वाद मिलता है। यह बीमारी बहुत बुरी बीमारी है, जिस से लोग डरते बहुत है । पुराने जमाने में तो जिसे यह बीमारी हो जाती थी तो समझ लिया जाता था कि वह आदमी हजार दिन अर्थात् तीन साल के अन्दर चला जायगा। अब तो जैसा मुझे बताया गया एक फेफड़ा निकाल कर भी आदमी जिन्दा रह सकता है और बरसों तक आदमी बडे-बड़े काम कर सकता है। यह साइन्स का युग है। साइन्स की तरक्की के कारण अब आदमी बेवक्त नही मर सकता। मरना तो सब को है ही, पर बेवक्त 'बीमारी की वजह से मरने के मौके बहुत कम हो गये है और होते जा रहे है। इसलिये जहा तक और जितनी संख्या मे इस तरह की संस्थाएं इस देश में कायम की जायेगी इस देश को लाभ होगा ।

जो लोग यहां से ठीक होकर जाते है उन्हे कितनी खुशी होती है और जिन्हे यहा आने का मौका मिलता है उनको भी यह आशा हो जाती है कि व भी ठीक होकर कुछ दिनो के बाद अपने बाल-बच्चो में जाकर रह सकेगे। यह बहुत पुण्य का काम है। इस तरह के काम को सब धर्मो वाले और विचार वाले लोग बहुत बडा पुण्य का काम कहते है। रोगियो की सेवा बहुत बड़ी सेवा है। चूकि यह रोग बहुत बुरा है, इस की सेवा भी उतनी ही कठिन है और पुण्य की सेवा भी है ।

मै इतना ही कहना चाहता हूं कि जो लोग यहा बीमार है वे आशा रखे कि जहा तक हो सकता है उनकी देखभाल अच्छी तरह से हो सकेगी और वे बच जायेंगे। जो लोग सहायता देते है और आइन्दा देते रहेंगे, उन सब को मै धन्यवाद देना चाहता हूं । टी० बी० एसोसियेशन जो केवल यहां ही नही बल्कि और जगहों में भी जाकर काम करती है, मै उसे भी धन्यवाद देता हूं। मुझे खुशी है कि मेरा इस अस्पताल के साथ पहले से ही ताल्लुक रहा है और अब तो वह और भी गहरा हो गया है ।

18

रूस के राष्ट्रपति का आगमन

महामहिम,

आपका और आपके सम्मानित साथियो का आज यहा होना हमारे लिये बडे हर्ष का विषय है; जैसा कि मैंने आज सवेरे कहा था हम इस अवसर की बहुत समय से प्रतीक्षा कर रहे थे और मेरे लिये यह दोहराना अनावश्यक है कि हम आपका उस महान् देश के राष्ट्रपति के रूप मे स्वागत करते है जिसने अपनी क्रान्ति द्वारा मानव समाज के इतिहास मे एक नये दौर का आरम्भ किया। युद्ध की उथल-पुथल के बावजूद आपके देश ने विज्ञान और टैक्नोलाजी के क्षेत्र मे असाधारण प्रगति की है। आपके वैज्ञानिको ने आन्तरिक्ष पर विजय पा ली है और इस प्रकार एक सर्वथा अप्राप्य दिखाई देने वाली चीज को वे मानव की पहुच के अन्दर ले आये है। सस्कृति और कला के क्षेत्र मे आपकी उत्कृष्टता बराबर बनी है जिसको सारा संसार सराहता है ।

यद्यपि अपने देश की क्रान्ति को हमने भिन्न ढाचे मे ढाला है, फिर भी हमारे दोनों देशों मे बहुत कुछ सामान्य है। सोवियत समाजवादी गणतन्त्रसंघ की तरह, हमारा देश भी विभिन्न लोगों, जातियो, संस्कृतियों और भाषाओ के सामंजस्यात्मक समन्वय का प्रतिनिधि है। अपने विशाल देश मे हम अपने लोगों के जीवन-स्तर को उन्नत करने के लिये कृत-संकल्प है। विश्व में शान्ति और राष्ट्रों के बीच सद्भावना बनाये रखने का हमारा प्रयास भी आपके और हमारे सामान्य उद्देश्य की ओर इशारा करता है, महामहिम, आपके नेताओ की तरह हमारा भी यह विश्वास है कि स्थायी शांति की स्थापना की ओर, जिससे विध्वंसात्मक युद्ध का भय दूर हो और मानव की शान तथा बौद्धिक विलक्षणता अच्छे कामों मे लग सकें, सभी प्रयत्न किये जाने चाहिएं।

करीब पाच वर्ष हुए हमारे प्रधान मन्त्री सोवियत संघ गये थे और उसके कुछ महीने बाद ही रूसी नेताओं का इस देश मे स्वागत किया। हमारे देशों के पारस्परिक सम्बन्धों के इतिहास मे यह एक नये प्रकरण का आरम्भ था। हमारे आपसी सम्बन्धों का विस्तार अब उद्योग टैक्नोलाजी, संस्कृति और अर्थ-व्यवस्था के क्षेत्रों मे हो चुका है। आपके देश के इन्जीनियरों

राष्ट्रपति वोरोशिलोव के सम्मान में दिये गये सान्ध्य भोज के अवसर पर भाषण; नई दिल्ली, 20 जनवरी, 1960

ग्रौर टैक्नीशियनो ने हमारे इन्जीनियरो के साथ मिल कर काम करके ग्रभी भिलाई में इस्पात का बहुत बड़ा कारखाना तैयार किया है, जो हिन्द-सोवियत सहयोग ग्रौर सहकारी प्रयत्न के प्रतीक के रूप में खडा है। जो ग्रार्थिक ग्रौर टैक्नीकल सहायता सोवियत संघ से हमें मिली है, उसके लिये हम ग्राभारी हैं ग्रौर उसके कारण ग्रधिक सम्पन्न ग्रौर ग्रधिक सुखी भारत का निर्माण करने की हमारी योजनाग्रों को जो बढावा मिला है उसे हम पूरी तरह से स्वीकार करते हैं। हमें खुशी है कि भिलाई ग्रौर इसी प्रकार की दूसरी योजनाग्रो द्वारा हमारे देशों को ग्रापस मे मिलने ग्रौर एक दूसरे को समझने का ग्रवसर मिला है। हमारे देश से जिन सास्कृतिक ग्रौर दूसरे प्रतिनिधि मंडलों ने ग्रापके देश की यात्रा की है, वे वहां से बहुमूल्य ग्रनुभव लेकर ग्रापस ग्राये हैं। हमारे विद्यार्थी ग्रापके विश्वविद्यालयो ग्रौर शिक्षा संस्थाग्रो में सांस्कृतिक ग्रध्ययन ग्रथवा ग्राधुनिक विज्ञान तथा उच्च उद्योग धन्धो की टैक्नीकल ट्रेनिग ले रहे हैं। हमें ग्रापके देश से ग्राये हुये राजनीतिज्ञो, विद्वानों, वैज्ञानिकों ग्रौर जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित लोगों का स्वागत करने का सुग्रवसर मिला है, ग्रौर इस प्रकार हमारे सम्पर्क व्यापक हुए हैं ग्रौर हमारी एक दूसरे में पारस्परिक दिलचस्पी बढी है।

महामहिम, को ज्ञात है कि हम विश्वशान्ति को कितना ग्रधिक महत्व देते हैं। यह एक ऐसा लक्ष्य है जिसकी प्राप्ति के लिये ग्राप भी उतने ही प्रयत्नशील हैं। हमारे दोनों देशो की सरकारें एकमत है कि नि.शस्त्रीकरण विश्वशान्ति का ग्राधार है। सोवियत संघ ने ग्रपने सैन्यबल मे जो हाल ही मे कमी की है उसे हमने विशेष सन्तोष के साथ देखा है। महान् शक्तियो मे जो बातचीत होने वाली है, जिसे मेरे देश की ग्रौर ग्रापकी सरकार ने ग्रत्याधिक महत्व दिया है, उसकी यह शुभ भूमिका है। ग्राज ससार मे बहुत कुछ इस बातचीत पर निर्भर करता है, ग्रौर हम यह महसूस किये बिना नही रह सकते कि इस बातचीत के परिणामस्वरूप जो समझौता होगा उससे ही यह सम्भव हो सकेगा कि एशिया ग्रौर ग्रफ्रीका के विशाल क्षेत्रो मे विज्ञान ग्रौर उन्नत देशों की प्रतिमा ग्रौर सम्पन्नता का विस्तार किया जा सके। दुर्भाग्य से हमे ग्रपने क्षितिज पर नई समस्याग्रों का सामना करना पड रहा है, किन्तु मै महामहिम, को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हम बातचीत ग्रौर मेलमिलाप की ग्रपनी परम्परागत भावना के ग्रनुसार इन समस्याग्रों का शान्तिपूर्ण हल ढूड निकालने के लिये दृढ़-संकल्प हैं।

महामहिम, आप एक सैनिक और राजनीतिज्ञ है, श्रेष्ठ और सम्मानित देशभक्त है और आप पहली बार भारत की यात्रा कर रहे है। आप अपनी यात्रा मे हमारे देश के कई पहलू देखेंगे—हमारी औद्योगिक और कृषि-सम्बन्धी योजनाये, अपने भविष्य को उज्ज्वल और बेहतर बनातने के हमारे प्रयत्न और, इन सब से ऊपर आप इस देश के लोगों मे सुख और शान्ति का संचार करने की हमारी उत्कट इच्छा देखेगे। मै आशा करता हूं कि आप और आपके माननीय साथी कम से कम कुछ अंशो में वह मैत्री और आदर की भावना अपने साथ ले आयेंगे जो हमारे लोगों मे आपके लिये और आपके देश के लिये मौजूद है।

21

पालम हवाई अड्डे पर स्वागत भाषण

भारत के लोगो, भारत सरकार और अपनी तरफ से आज महामहिम का हार्दिक स्वागत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। अपने बीच आपका अभिनन्दन करने के लिये हम इस अवसर की उत्सुकता से प्रतीक्षा करते रहे हैं। एक महान् और मित्र देश, सोवियत समाजवादी गणतत्र सघ के राष्ट्रपति हमारे देश मे आएं और कुछ दिन यहा प्रवास करे, यह बहुत दिनो से हमारी इच्छा थी और आपकी यात्रा उस इच्छा की पूर्ति है।

हाल के वर्षो मे हमारे दोनो देश एक दूसरे के निकट आये है। दोनों देशों के नेताओं ने एक दूसरे के देश की यात्रा की है और इन यात्राओ से तथा पारस्परिक आदान-प्रदान के द्वारा हम एक दूसरे के विचारो और रहन-सहन को समझने और उनका आदर करने लगे है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपकी यात्रा के फलस्वरूप हमारे दोनो देश एक दूसरे के और भी निकट आ जायेंगे।

राष्ट्रों के बीच सद्भावना को अनुप्राणित करने और प्रोत्साहन देने की दिशा में हम बराबर प्रयत्न करते रहे हैं। हमे आशा है और हमारी यह प्रार्थना है कि स्थायी शान्ति की प्राप्ति के लिये ससार के महान् देशों के प्रयत्न सफल होंगे। संसार के अर्ध-विकसित देश स्थायी शान्ति मे ही अपने लोगो के कल्याण के और उनके भविष्य के उज्ज्वल बनाने के महान् कार्य को हाथ मे ले सकते है। महामहिम, आप हमारे देश मे प्रवास के समय हमारे सामुदायिक विकास केन्द्र और हमारी नयी औद्योगिक योजनाये देखेगे। इन मे से कुछ आपके देश की उदार सहायता के फलस्वरूप कार्यान्वित की जा रही है। आप हमारी प्राचीन सभ्यता और ऐतिहासिक महत्व के केन्द्र भी देखेगे। हमे आशा है कि ये सब चीजे आपके सामने भारत का वह चित्र प्रस्तुत कर सकेंगी जिसमें यहा की उत्कृष्ट और प्राचीन परम्पराओ और आधुनिक समाज की आवश्यकताओं मे समन्वय स्थापित किया जा रहा है।

महामहिम, एक बार फिर मै भारत सरकार और इस देश के लोगों की ओर से आपका हार्दिक स्वागत करता हू।

पालम हवाई अड्डे पर स्वागत भाषण; 20 जनवरी, 1960

भारत-रूस मैत्री का दृढ़ आधार

महामहिम, जो सुन्दर शब्द आपने हमारे देश और भारत के लोगों के लिये कहने की कृपा की है, उसके लिये मै आपका आभारी हूं। आपके यहां आगमन के समय से, जिस स्निग्ध और मैत्री के भाव से आप हमारे देशवासियो के सम्बन्ध मे सद्विचार प्रगट कर रहे है और हमारे देश के आर्थिक विकास के लिये तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे विश्व-शान्ति और सद्भावना को उन्नत करने की दिशा मे, हम जो कुछ थोडा बहुत अभी तक कर पाये है, उसके लिये जो सद्भाव आपने प्रगट किये है, उससे हम बहुत प्रभावित हुए है। महामहिम, यदि मै यह कहू कि आपके इन मैत्रीपूर्ण विचारो और आपके देश की सद्भावना की हम बहुत कद्र करते है, तो आप उसको औपचारिकता मात्र न समझें।

जैसा उस दिन मैने कहा था, राष्ट्रो के नि.शस्त्रीकरण का प्रस्ताव सामने रख कर और शीत युद्ध समाप्त कर के विश्वशान्ति के पक्ष को दृढ बनाने के आपकी सरकार के प्रयत्नों को हमने प्रशंसात्मक दृष्टि से देखा है। वास्तव मे इस दिशा मे अपनी ही प्रेरणा से अपने सैन्यबल को कम करके आपके देश ने पहले ही अपनी सच्चाई का सबूत दे दिया है। हमे आशा है कि युद्ध से थका हुआ और लड़ाई के भय से त्रस्त ससार इस प्रस्ताव का जोश के साथ स्वागत करेगा। कम से कम हम भारतवासी उन सब बातों के लिये आपकी सरकार की सराहना करना चाहेगे जो वह देशो मे शान्ति और पारस्परिक मैत्री की भावना को बढ़ावा देकर युद्ध को समाप्त करने के लिये कर रही है। शान्ति, जो अपने आप मे बहुत बड़ा वरदान है, केवल वांछनीय ही नही, बल्कि हमे इसकी अनिवार्यता को स्वीकार करना होगा, यदि हम चाहते है कि दुनिया के देश आधुनिक विज्ञान और टैक्नोलाजी की प्रगति से लाभ उठायें और मानव समाज बराबर जीवित बना रहे।

विज्ञान और टैक्नोलाजी के क्षेत्र मे सोवियत सघ ने जो उन्नति की है, उसकी सराहना करने के लिये सारा संसार बाध्य है। हमे खुशी है कि यह प्रगति युद्ध के हथियार बनाने तक ही सीमित नही और आपने इस उद्योग, खेती, शिक्षा और मानव जीवन के दूसरे क्षेत्रों पर भी लागु किया है। नये टैक्नीक की सहायता से आपको इस काम मे जो सफलता मिली है वह

भारत के राष्ट्रपति के सम्मान मे दिये गये सान्ध्य भोज में भाषण, नई दिल्ली, 22 जनवरी, 1960

सर्वथा आश्चर्यजनक है। आपने जिस प्रकार अपने महान् दश क भौतिक माधनो का विकास किया है, वह दूसरे देशों के लिये उदाहरण हो सकता है। केवल यही नही, आपके वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने आपके परराष्ट्र सम्बन्धो को भी स्पर्श किया है। स्वयं अपने देश मे उद्योग और खेती के क्षेत्रों मे हिन्दी-रूसी सहयोग की बढ़ती हुई भावना को देखकर हमे खुशी होती है। मुझे आशा है कि यह सहयोग दोनों देशो के लोगो के हित मे बराबर बढ़ता रहेगा।

महामहिम, अपने देश के निर्माण-कार्य मे और अन्तराष्ट्रीय शान्ति के लिये आपने जिस प्रकार भरपूर प्रयत्न किये है, उन सब के लिये क्या मै आप तक और आपके द्वारा सोवियत सघ के लोगों तक अपना हार्दिक सन्तोष और प्रशसा पहुचा सकता हू और क्या मै आपको भारत के समर्थन का विश्वास दिला सकता हू ?

देवियो और सज्जनो, अब मै सोवियत संघ के राष्ट्रपति के स्वास्थ्य और उनके महान् देश के लोगो की सुख-स्मृद्धि का प्रस्ताव प्रस्तुत करता हू।

सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती के अवसर पर

जेनरल भोसले, बहनो और भाइयो,

मै अपने लिये इसे एक बडा सौभाग्य मानता हूं कि आपने मुझे यह मौका दिया कि मै भी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के प्रति अपनी श्रद्धाजलि दे सकू। मै इसके पहले और भी इस मौके पर सभा मे यहा शरीक हो चुका हू और मै आपको नेता जी के सम्बन्ध मे कुछ ज्यादा न कह करके कुछ ऐसी बाते कहना चाहता हू जिससे आप अपना कर्तव्य पालन करने मे कैसे समर्थ हो सकेगे सीख ले।

नेताजी के सम्बन्ध मे आपने सुना है कि बचपन से उनके दिल मे देश की आजादी के लिये, अपनी आजादी के लिये एक ऐसी लपट थी जो अन्त तक बुझी नही और जैसे-जैसे समय बीतता गया और स्वराज्य के लिये हमारा आन्दोलन जोर पकडता गया वैसे उनकी ख्वाहिश और भी मजबूत और जबर्दस्त होती गयी, उनका कदम और भी तेजी के साथ बढ़ता गया और उनकी कुर्बानी और भी जोर पकडती गयी और इन्ही सब का नतीजा हुआ कि हम आजाद हुए और और हम ऐसी हालत मे है कि अपने को आजाद कह सकते है और अपने भाग्य का निर्णय कर सकते है।

क्या आपने कभी सोचा कि इस तरह की लगन जो कभी दबे नही, जो किसी किस्म की मुश्किल से कभी हार न माने और जो हमेशा अधिकाधिक जाग्रत होती जाय क्योकर नेताजी के दिल मे आयी जो लोग उनके जीवन मे वाकिफ है वे जानते है कि जब वह आजादी की लडाई मे लगे थे, मुल्क आगे बढ़ाने और मुल्क की हालत हर तरह से सुधारने मे लगे थे मगर उनके दिल के अन्दर वह सच्ची धार्मिक भावना थी, वैसा विश्वास था जिसके बिना कोई भी काम पूरा नही हो सकता और यद्यपि सब लोगो ने इसे नही सुना है मगर बात सच है। मौके-मौके पर वह कभी एकान्त मे इस तरह से बैठ जाते थे या यो कहो, छिप जाते थे जिस तरह से कोई योगी छिप करके अपनी उस शक्ति का सचय करता है जिस शक्ति के बल से वह सारी दुनिया को झुका सकता है और यह उनकी तपस्या बहुत छोटी उम्र मे शुरु हुई और वह उस समय तक जब ऐसा मौका आया जब अपने देश को छोड़कर विदेश मे जाकर

पैरेड ग्राउन्ड मे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की जयन्ती के अवसर पर भाषण; 23 जनवरी, 1960

वहां से देश की आजादी के लिये काम करना पड़ा उस वक्त तक बनी रही और वह इस तरह मे छिपे रहे जिसकी खबर किसी को नही। मै मानता हूं कि वह समय भी एक प्रकार मे उनकी समाधि का ही समय था और वह अपने को तैयार कर रहे थे।

मैं इस चीज की तरफ आप सबो का ध्यान इसलिये दिलाता हूं कि मै देखता हू कि आजकल हमारे लोगो मे और खास करके युवको मे इस तरह के विश्वास, इस तरह की धार्मिक भावना की कमी देखने मे आती है और इसी वजह से बहुत तरह की बुराइया भी पैदा हो रही है और इसका फल यह होगा कि हमारा देश कमजोर हो जायगा, हमारा मस्तिष्क काम करे तो करे, हमारे हाथ-पैर चले भी मगर हमारा दिल आगे नही बढ पायगा। इसलिये आज नेताजी सुभाषचन्द्र की जीवनी से हम यह सीखे कि अन्दर की शक्ति कैसे हासिल करे और उस शक्ति को जन-साधारण की सेवा मे लगाये और उसको इस तरह मे लगाये जिसमे चाहे कोई भी कठिनाई सामने आवे तो उस से दबने का अवसर नही हो, चाहे कितनी भी मुश्किले सामने आवे उनके बीच होकर हम आगे बढे।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने पुकार की कि अपना खून दो और उसके बदले मे देश को आजादी दूगा। यह खून कौन दे सकता है, जिसके दिल मे शक्ति है। उस शक्ति का हम सचार करे और जिस आजादी को इतने त्याग से उन्होंने और उनके साथ देश के लोगो ने हासिल किया उसको हमेशा के लिये महफूज रखे। इस देश के चप्पे-चप्पे को जिसके लिये इतने लोगो ने और उनमे से सबसे आगे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने इतनी कुर्बानी की उसकी आजादी महफूज रखने के लिये हम कटिबद्ध हो जाये जिसमे चाहे कोई भी मुसीबत क्यो न आवे, कठिनाई क्यो न आवे, इस देश को हम सुरक्षित रखे। अगर उनके जीवन से हम ने इतना सीख लिया तो बहुत सीख लिया। पर अफसोस की बात यह है कि हम अपने देश और अन्य देशो के बडे लोगों का जीवन पढ़ते है मगर भूल भी जाते है।

मै आशा करता हूं कि नेताजी सुभाषचन्द्र का जीवन हमारे लिये दीपक की तरह नही सूर्य की तरह रास्ता दिखाता रहेगा और हम उनसे रोशनी ही नही पायेगे बल्कि शक्ति भी पायेगे और उस शक्ति से हम जो कुछ करना चाहते है उसको हासिल करेगे। जय हिन्द।

भारतीय समाज में अध्यापकों का स्थान

देश भर के प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलो के अध्यापको को आज दूसरी बार राष्ट्रीय पुरस्कार दिये जा रहे है। जब ये पुरस्कार पिछले साल दिये गये उस समय भी सौभाग्य से मै उत्सव मे शरीक हुआ था और मैने उस समय उन सभी बातों को सुना जिन के कारण सरकार द्वारा इन राष्ट्रीय पुरस्कारो की परिपाटी चलाई गई। मुझे खुशी है कि आज भी मै यहा उपस्थित हू। कम से कम इसके कारण मुझे अपने देश की एक महान् राष्ट्रीय समस्या पर अर्थात् सार्वजनिक शिक्षा तथा अध्यापको और विद्यार्थियो के कल्याण के प्रश्न पर फिर से विचार करने का अवसर मिल रहा है। यह कहना गलत न होगा कि इस एक वर्ष की अवधि मे यह समस्या, जो सदा ही आवश्यक थी, और भी अधिक आवश्यक और गम्भीर बन गई है।

शिक्षा मन्त्री, डा० श्रीमाली आप से पहले ही बता चुके है कि समाज मे अध्यापक की स्थिति को सुधारने के उद्देश्य से जिससे कि जन-साधारण मे अध्यापक वर्ग के प्रति वही आदर की भावना पैदा हो जो गुरु तथा राष्ट्र निर्माता के प्रति होनी चाहिये, सरकार ने यह कदम उठाया। बहुत समय से यह शिकायत सुनने मे आ रही है, और यह निराधार भी नही कि अध्यापको को उनकी भारी जिम्मे-दारियो को देखते हुये समाज द्वारा न पर्याप्त मान्यता दी गई है और न भौतिक सुख-समृद्धि के साधन। अपने सीमित साधनो के कारण अध्यापक अपनी जीविका की समस्या में ही उलझा रहता है और अपने कार्य को पूरे दिल से करने की न उनमे रुचि हो सकती है और न उनके पास समय ही रहता है। ऐसे समाज मे जहां वित्त और लौकिक साधनो द्वारा ही आदर की भावना को आका जाता है, अध्यापक अपने आप को ऐसे यात्री के समान समझता है जिसे किसी न किसी प्रकार जीवन की लम्बी और दुखद यात्रा तय करनी है। वास्तव मे अध्यापक की अवस्था ऐसी दयनीय रही है कि उसे जन-साधारण की सहानुभूति ही नही मिली बल्कि हमारे आधुनिक समाज की अव्यवस्था का उसे सर्वोत्तम उदाहरण मान लिया गया है।

फिर भी अध्यापन एक उत्तम वृत्ति है, और इसकी उत्कृष्टता का आधार केवल अलौकिकता अथवा पुण्य की भावना न होकर इस लोक मे ठोस भौतिक सम्पन्नता है। कौन सा ऐसा समाज होगा जिसमे बच्चो के पढ़ने-लिखने की व्यवस्था सन्तोषजनक न हो और वह एक प्रगतिशील राष्ट्र के निर्माण

अध्यापको को राष्ट्रीय पुरस्कार दिये जाने के अवसर पर भाषण, नई दिल्ली, 25 जनवरी, 1960

का भार सह सके अथवा उस का मार्ग प्रशस्त कर सके। असन्तुष्ट और अभाव-ग्रस्त अध्यापक से यह आशा करना कि वह इस राष्ट्रीय दायित्व को वहन कर सकेगा, मनुष्य से अत्यधिक आशा रखने के समान है। उसकी वृत्ति या पेशे की सात्विकता अथवा उत्कृष्टता के नाम पर उसकी आर्थिक स्थिति में सुधार किये बिना, यह अपील करना कि अध्यापक अपने काम को जी-जान से करे दुराशा मात्र है। हो सकता है कुछ लोग इसे आडम्बर तक कह डाले।

अधिकारी वर्ग, विशेषकर केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय इस प्रश्न पर बराबर उस समय से ही ध्यान देता रहा है जब से हम देश के भविष्य के सम्बन्ध मे आयोजन करने के लिये स्वतन्त्र हुए है। वास्तव मे यह सवाल भौतिक साधनो का है, क्योंकि अध्यापको को अच्छे वेतन मिलने चाहिए और देशव्यापी साक्षरता आन्दोलन को देखते हुए प्रतिवर्ष अध्यापको की सख्या मे वृद्धि की व्यवस्था होनी चाहिए। मै जानता हूं कि बहुत से राज्यो मे अध्यापको के वेतन-स्तर मे सुधार हुआ है, परन्तु खेद है कि अभी तक जो कुछ भी हुआ है वह पूर्ण रूप से प्रभावोत्पादक या सन्तोष-जनक नही कहा जा सकता। शिक्षा के मद में हम जितना भी धन दे सके थोड़ा है।

आज की जो दुर्भाग्यपूर्ण और दुखद अवस्था है उसके कारण विचित्र उलझने पैदा हो जाती है। हम प्रायः अनिवार्य शिक्षा के सम्बन्ध मे बहुत कुछ सुनते है, जबकि हालत यह है कि जो लोग इस समय बच्चो को पढ़ाने के लिये उत्सुक है उन्ही के पठन-पाठन का प्रबन्ध हमारे पास नही। जहां तक मुझे याद है किसी भी दूसरे प्रश्न को लेकर दिल्ली के लोगो मे इतनी उत्तेजना पैदा नही होती जितनी प्रतिवर्ष स्कूलो और कालेजो मे प्रवेश के समय होती है। इस नगर मे बहुतेरे स्कूल अभी भी तम्बुओ या गन्दे मकानो मे चल रहे है। यदि देश की राजधानी मे स्कूलो का यह हाल है तो यह सहज ही कल्पना की जा सकती है कि दूसरे शहरो या ग्रामो मे स्थिति कैसी होगी ?

खैर, इस आत्म-विवेचन तथा आलोचना का भी काफी लाभ हुआ है। इसके कारण अब यह महसूस किया जाने लगा है कि शिक्षा की समस्या को अधिक गम्भीरता से हल करना होगा और इस दिशा मे पहला काम अध्यापक की सामाजिक और आर्थिक स्थिति मे सुधार होना चाहिये। जैसा मैंने अभी कहा अध्यापको के वेतन-स्तर मे सुधार हुआ है और यह प्रश्न बराबर विचाराधीन है। शिक्षा मंत्रालय और राज्यो के शिक्षा विभागों को इस बात का श्रेय मिलना चाहिये कि उन्होंने इस प्रश्न को अपनाया और अध्यापको की मागो पर बहुत ही सहानुभूति से विचार

किया। आर्थिक सहायता के अतिरिक्त, जो निःसन्देह बहुत आवश्यक है, अध्यापकों की सामाजिक स्थिति मे सुधार करना सम्भव है । इसी विचार को लेकर शिक्षा मन्त्रालय ने प्रमुख और सर्वश्रेष्ठ अध्यापकों को राष्ट्रीय पुरस्कार देने की प्रथा स्थापित की। मेरा विश्वास है कि यह कदम हमने ठीक दिशा मे उठाया है । राष्ट्रीय पुरस्कार कलाकर, विद्वानो, किसानो आदि को भी दिये जा रहे है । अध्यापको को भी इस श्रेणी मे शामिल करके सरकार ने समाज मे अध्यापन वृत्ति का मान बढ़ाया है और अध्यापकों को आगे बढने के लिये उत्तेजना दी है ।

मै आशा करता हू कि जिन लोगो को पुरस्कार मिले है वे दुगने उत्साह के साथ अध्यापन के कार्य मे लगेंगे । आप लोग देश के सब भागो से आये है । अपने उदाहरण से आप समस्त वातावरण को बदल सकते है और अध्यापन के काम के लिये समाज मे वह स्थान पैदा कर सकते है जिसका वह अधिकारी है और शिक्षा की कोटि को भी ऊचा कर सकते है ऐसा करने से आपको यह सन्तोष मिलेगा कि आपने अपने दायित्व का पालन किया और नवीन भारत के निर्माण मे हाथ बटाया।

मै नही जानता कि वेतन-स्तरो के अतिरिक्त आपने अध्यापकों को दूसरी सुविधायें देने पर विचार भी किया है । मै समझता हू कि अध्यापको को अपने बच्चो क शिक्षण, डाक्टरी सहायता और घरो के सम्बन्ध मे कुछ सुविधाये मिलनी चाहिये । उन्हे वे सब सुविधाये भी दी जा सकती है जो साधारणत. सरकारी कर्मचारियो को उपलब्ध है । अनिवार्य प्रोविडेन्ट फण्ड और बीमा आदि की सुविधाये भी अध्यापको को दी जा सकती है ।

जिन्हे आज राष्ट्रीय पुरस्कार मिले है मै उन सब को बधाई देना चाहता हू । मै आशा करता हू कि जो सम्मान आज आपको मिला है उससे आप ज्ञान और विद्या की ज्योति को देश भर मे फैलाने मे समर्थ होगे । हमारे शास्त्रो मे और हमारी राष्ट्रीय परम्परा मे विद्यादान को जीवन का सबसे बड़ा दान माना गया है । मेरी यह आशा और प्रार्थना है कि सेवा की भावना और ज्ञान के प्रसार की इच्छा से आप प्रेरित हो और आपके द्वारा यह प्रेरणा समस्त अध्यापक जगत मे फैल जाय ।

29

प्रवासी भारतीयों का अभिनन्दन

एक बार फिर गणतन्त्र दिवस के शुभ अवसर पर आप लोगो का अभिनन्दन करने मे मुझे खुशी हो रही है। हम अपने घरेलू कामो मे चाहे कितने ही वयस्त हो आप लोगो की तरफ हमारा खयाल प्राय जाता है और आपका कल्याण हमे बहुत प्रिय है। मेरी यही कामना और प्रार्थना है कि आप लोग सुखी रहे और अपने सत्कर्मों और अच्छे व्यवहार से अपने देश का नाम उज्ज्वल करे।

आज हमारा गणराज्य अपने जीवन के ग्याहरवे वर्ष मे प्रवेश कर रहा है। इन 10 वर्षों मे हम अपने भौतिक साधनो का विकास करने और भारत को शान्ति और सम्पन्नता का देश बनाने मे प्रयत्नशील रहे हैं। हमने औद्योगीकरण का मार्ग ग्रहण किया है और द्वितीय पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत जो योजनाये हमने हाथ में ली थी उनमे से आंशिक अथवा पूर्ण रूप से कइयो को हम कार्यरूप दे सके है। जब कभी भी आप अब स्बदेश आयेगे मेरा विश्वास है कि आपको कई सुखद आश्चर्य देखने को मिलेंगे। कई राज्यो के देहातो मे आप बिजली की चमक-दमक देखेंगे, नई सडके और रेले बनी देखेंगे, वरद जल से पूर्ण बहती हुई नहरे आपको मिलेगी और आप इस्पात के तीन महान् कारखाने हर समय लोहा उगलते हुए देखेगे। इसके साथ ही देश-भर मे सामुदायिक विकास और समाज सुधार के केन्द्रो का जाल बिछा हुआ भी आप देखेगे।

मै जानता हू कि यह सब देखकर आपको खुशी होगी। किन्तु आप यह समझ ले कि यह इस क्रम का आरम्भ मात्र है। हमारे महान् लक्ष्य तक पहुचने का मार्ग बहुत लम्बा और कष्टप्रद है। फिर भी भारत के भविष्य मे हमारी आस्था और हमारे लोगो के सकल्प ने इस महान कार्य मे हमें यथोचित बल दिया है। ऐसे बड़े काम मे कठिनाइया और जोखिम होना स्वाभाविक है और निश्चय ही इन सब से हमे लोहा लेना पड़ रहा है, यद्यपि अन्त मे ईश्वर की कृपा से निश्चय ही हम इस पर विजय पा सकेंगे और अपने लक्ष्य को प्राप्त करनें मे सफल होगे।

बहनों और भाइयो, आप भी आज भारत के सम्बन्ध में सोच रहे होंगे। मै चाहूंगा कि आप भारत के आध्यात्मिक और नैतिक आदर्शो का भी ध्यान करे जिनमे हमने अपनी घरेलू और विदेशी नीतियो के निर्धारण में प्रेरणा ली है।

आप लोग जहां भी है और जैसे भी है, एक बार फिर मै आप सब की सम्पन्नता और सुख की कामना करता हूं। जय हिन्द।

प्रवासी भारतीयों के लिये संदेश; 25 जनवरी, 1960

गणतंत्र दिवस के अवसर पर

दसवें गणतन्त्र दिवस के अवसर पर मै अपने देशवासियो का अभिनन्दन करता हू और नये वर्ष मे उनकी सुख-समृद्धि की कामना करता हूं । इस शुभ अवसर पर हम हर साल एक दूसरे को बधाई देते है, देश की स्थिति पर दृष्टि डालते है और राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था तथा साधनो का विकास होते देख खुश होते है । इन घटनाओं की हम अपनी दीर्घकालीन योजनाओ और अपने सुनहले स्वप्नो से तुलना करते है । करोड़ो की आबादी वाले एक पिछड़े हुए देश को ऐसे सम्पन्न राज्य मे बदल देना जिसका प्रत्येक नागरिक जीवन की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिये विश्वस्त हो सुखी जीवन बिता सके—यही हमारा स्वप्न है । राज्य की सारी शक्तियां ही नही बल्कि राष्ट्र के सभी साधन इसी एक स्वप्न को यथार्थ मे बदलने के लिये लगाये जा रहे है ।

जब से हम स्वाधीन हुए और हमने शासन व्यवस्था अपने हाथ मे ली हम अधिकतर घरेलू कामकाज मे अर्थात् अपनी आन्तरिक समस्याओ को निबटाने मे व्यस्त रहे है, यद्यपि, जैसा कि सभी जानते है, इस अवधि मे हम बराबर अपनी विदेश नीति का निर्धारण करते रहे है, ऐसी नीति जिसे हम भारत के लिये सर्वोत्तम समझते है । दूसरे देशों की स्वाधीनता का आदर करना, अन्य राष्ट्रो के प्रति दोस्ती की भावना रखना, प्रत्येक देश अपने विचारो और इच्छा के अनुसार अपने जीवन का नियमन करने मे स्वच्छन्द है, इस बात मे विश्वास रखना, हिंसा और पशुबल के प्रयोग का परित्याग करना और विश्व शान्ति के लिये सदा प्रयत्न करते रहना—हमारी विदेश नीति के ये कुछ प्रमुख सिद्धान्त है । इस नीति को जिसे शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का नाम भी दिया गया है, ससार के बहुतेरे देशो ने भी अपनाया है ।

इधर कुछ घटनाये ऐसी घटी है जिनसे इस सिद्धान्त मे हमारी आस्था को कुछ धक्का लगा है । हमारे एक पडोसी ने जिसके साथ सदा से हमारे सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण रहे है और जो पचशील के सिद्धान्तो के प्रतिपादन मे हमारे साथ था, हमारी सीमा मे आकर हमारे देश के कुछ भाग पर कब्जा कर लिया है । देश में व्यापक क्षोभ की भावना होते हुए भी, हम इस या और भी किसी प्रकार के झगड़े को शान्ति के साथ मैत्रीपूर्ण ढंग से सुलझाने के लिये बराबर बातचीत पर ही भरोसा करते आ रहे है । किन्तु मैत्री बनाये रखने और बल का प्रयोग न करने की हमारी उत्कण्ठा की दूसरी ओर से अभी तक अभीष्ट प्रतिक्रिया नही हुई है । मंगल कामना करते हुए

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर ब्राडकास्ट भाषण; 25 जनवरी, 1960

हमें सतर्क और संगठित रहना होगा। यद्यपि शान्ति और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व मे हमारा विश्वास पहले की तरह ही दृढ बना है, फिर भी इस हम इस बात की अवहेलना नही कर सकते कि सतत सतर्कता ही एक राष्ट्र की स्वाधीनता का मूल्य होता है।

हाल की घटनाओ के कारण सुरक्षा व्यवस्था की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, हम राष्ट्र-निर्माण की योजनाओ को कार्यरूप देने के लिये पूरी तरह से कटिबद्ध है। हमारी कुछ योजनाए पहले ही पूरी हो चुकी है या पूरी होने जा रही है। दूसरी योजनाओ पर कार्यक्रम के अनुसार काम चल रहा है। बिहार मे गगा पर पुल बन कर तैयार हो चुका है और इसी वर्ष यातायात के लिये खोल दिया गया है। इसके फलस्वरूप उत्तर बिहार और आसाम का दक्षिण बिहार और पश्चिम बगाल से सीधा सम्पर्क हो गया है। इस महान सफलता से प्रेरणा पाकर अब हमने गौहाटी के निकट ब्रह्मपुत्र पर पुल बनाने का निश्चय किया है और इसी महीने हमारे प्रधान मन्त्री ने इस पुल की नीव रखी है। भाखडा, नागार्जुन-सागर, चम्बल, नीवैली और कुण्डा नदी घाटी योजनाओ के काम मे भी प्रगति हो रही है। लोहे के तीन बडे कारखाने, रूरकेला, भिलाई और दुर्गापुर मे चालू हो गये है और भट्टिया लोहा तैयार करनेलगी है। आशा है कि इन कारखानों द्वारा हमारी घरेलू जरूरतों से भी अधिक लोहा तैयार किया जा सकेगा।

कुछ समय हुआ इस वर्ष खाद्य स्थिति कुछ अधिक गम्भीर होती दिखाई दी थी, किन्तु देश भर मे सस्ते अनाज की दुकाने खोलने और सप्लाई की स्थिति मे सुधार कर देने से जल्दी ही कीमते उचित स्तर पर आ गई। तब से स्थिति मे सुधार के लक्षण दिखाई दे रहे है और मौजूदा फसलो की स्थिति और काफी मात्रा मे विदेशों से अनाज के आयात को देखते हुए ऐसा विश्वास करने के कारण है कि इस प्रवृत्ति से स्थिति मे और भी सुधार हो सकेगा।

बहनों और भाइयो, मै चाहता हू कि आप सब इन गम्भीर प्रश्नों पर विचार करे जो हमारे देश के सामने है। मुझे आपको यह विश्वास दिलाने की जरूरत नही कि आपके नेतागण जिनके हाथों मे आपने देश की व्यवस्था सौपी है, इन प्रश्नों पर पूरी तरह से विचार कर रहे है, किन्तु एक प्रजातन्त्र राज्य मे राष्ट्रीय महत्व के प्रश्न प्रत्येक नागरिक द्वारा विचार का विषय होते है।

एक बार फिर मै आप सब का अभिनन्दन करता हूं और सब की सुख-समृद्धि की कामना करता हू। जय हिन्द।

संसद् के समक्ष अभिभाषण

ससद् के सदस्यगण,

एक बार फिर ससद् के नये सत्र का भार सभालने के समय मै आपका स्वागत करता हू ।

2. बीते वर्ष मे मेरी सरकार और हमारे लोग पहले से कही अधिक राष्ट्र-निर्माण के काम मे सलग्न रहे । देहातों और शहरों में रहने वाले हमारे लोग आर्थिक और सामाजिक उन्नति की आवश्यकताओं और सफलताओं को अधिकाधिक समझने लगे हैं और इन्हे अपने दैनिक जीवन के लिये महत्वपूर्ण और अपनी स्थिति और रहन-सहन के स्तर मे सुधार के लिये आधारभूत मानते हैं ।

3. हमारी परम्परागत और सुपरिचित सीमाओं को लाघ कर, भारतीय गणराज्य की भूमि के कुछ भागों पर चीनी लोगों के घुस आने से हमारे लोगो को भारी दुख हुआ है और उनमे ठीक ही व्यापक क्षोभ की भावना फैली है । इनके कारण हमारे साधनों और राष्ट्र-निर्माण के प्रयासो पर बहुत भार पड़ा है । हमे इन सीमावर्ती घटनाओं का दुख है और अफसोस भी है । हमारे आपसी सम्बन्धों के निर्धारण के लिये जिन सिद्धान्तों को हमने परस्पर स्वीकार किया था चीन द्वारा उनकी अवहेलना के कारण ही ये घटनाये घटी हैं । हमारी सम्पूर्ण सत्ता के लिये पैदा हुए इन खतरों का मुकाबला करने के हेतु मेरी सरकार ने प्रतिरक्षा और राजनयन के क्षेत्रों में सत्वर और सुविचारित कई कदम उठाये हैं ।

4. मेरी सरकार को खासतौर से इस बात का अफसोस है कि हमारे पडोसी ने हमारी सामान्य सीमा पर, जहा हमारी सेना तैनात नही थी, सैनिक बल का एकतरफा प्रयोग किया । यह विश्वासघात है, किन्तु उन सिद्धातों मे जिन्हे हम अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के लिये आधारभूत मानते हैं अभी भी हमारी आस्था है ।

5. संसद् के सदस्यगण, समय-समय पर हमारे प्रधान मंत्री और चीन के प्रधान मंत्री के बीच पत्र-व्यवहार के प्रकाशन द्वारा आप को, हमारे दोनों देशों के बीच जो स्थिति रही है, उससे अवगत रखा गया है । मेरी सरकार ने यह असन्दिग्ध रूप से स्पष्ट कर दिया है कि इन विवादग्रस्त मामलों को सुलझाने के लिये हम शान्तिपूर्ण प्रयत्न करना चाहते हैं । उतनी ही स्पष्टता से हमने यह भी

संसद् के समक्ष अभिभाषण; 8 फरवरी, 1960

कहा और दोहराया है कि चीन ने जो रुख अपनाया है और जो एकतरफा कार्य या निर्णय किया है, वह हमें मान्य नही होगा। इसलिये मेरी सरकार, उचित शर्तो के साथ और उचित अवसर पर, शान्तिपूर्ण बातचीत और इसके साथ ही दृढता से देश की प्रतिरक्षा की तैयारी की नीति का अनुसरण कर रही है।

6. हम आशा करते है कि हमारी कार्यवाही और संसार भर का प्रतिकूल जनमत देर-सवेर चीन को इस बात के लिये प्रेरित करेगा कि वह संधियों और परम्परा द्वारा स्थापित हमारी सामान्य सीमाओं के सम्बन्ध मे हम से समझौता करे। केवल इसी प्रकार अपने महान पड़ोसी के साथ हमारे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध, जिनके लिये हमारी सरकार और भारत के लोग आकाक्षी है, यथार्थ हो सकते है और दोनों देशों के हित मे स्थाई बन सकते है। यह आशा की जा सकती है कि जो कार्यवाही हमने की है और जो नीति हमारी सरकार ने अपनाई है, वह चीन को हमारी नीति और दृढता का विश्वास दिलाने के लिए पर्याप्त होगी।

7. ससद् के सदस्यो, हमारी सीमा पर जो स्थिति पैदा हो गई है और उस से जो समस्याए और परिणाम निकलते है, उनके सम्बन्ध में मैने कुछ विस्तार से आपसे कहा है। मेरा यह कहना अनावश्यक है कि मैने जो कुछ भी बताया वह हमारे देश और लोगों की भावनाओं और अपनी सीमाओं की रक्षा के दृढ़ निश्चय को दोहराना मात्र है। किन्तु रक्षा तभी प्रभावी हो सकती है जब उसके पीछे राष्ट्रीय एकता और दृढ़ता हो। हमारी आर्थिक और औद्योगिक उन्नति, उत्पादन की योजनाओ पर अधिक तेजी और परिश्रम से अमल जिससे कि देश को आधुनिक रक्षा के साधन उपलब्ध हो सके, और इसके साथ ही राष्ट्र में बल और अनुशासन की भावना का सचार हो सके, ये सब बाते ही देश की सुरक्षा का आधार ह।

8. चीनी-भारतीय सीमाओ पर घटी घटनाये नि:सन्देह दुखपूर्ण है, किन्तु हमे अपने देश की उन्नति और आर्थिक व्यवस्था के योजनाबद्ध विकास के प्रयत्नों को ढीला नहीं करना चाहिये और न हम ऐसा कर रहे है। वास्तव में इन घटनाओं के कारण मेरी सरकार आर्थिक विकास को अधिक गतिमय और व्यवस्थित करने की दिशा मे कदम उठा रही है।

9. तीसरी पंचवर्षीय योजना की रूपरेखा तैयार करने का काम कुछ और आगे बढ़ा है। इस योजना का क्षेत्र अधिक व्यापक है और इसके लक्ष्य अधिक ऊंचे है। तीसरी पंचवर्षीय योजना का ध्येय, 1950-51 के मुकाबले में राष्ट्रीय आय को लगभग दोगुना करना और कृषि उत्पादन तथा हमारी खुराक की

जरूरतों, भारी मशीनी औज़ार निर्माण और लोहा, ईंधन तथा बिजली जैसे मौलिक उद्योगों की ओर अधिक ध्यान देना है। छोटी और ग्रामीण दस्तकारियो का और हमारी देहाती आर्थिक व्यवस्था का स्वस्थ और अविलम्ब विकास और औद्योगिक केन्द्र तथा देहाती लोगों के बीच उचित सम्बन्ध स्थापित करना, ये बाते उस योजना के प्रमुख उद्देश्यों मे शामिल है।

10. तीसरी पंचवर्षीय योजना हमारे राष्ट्रीय विकास के नाजुक दौर की द्योतक है। इसका ध्येय हमारी आर्थिक व्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाना और इस योग्य करना है कि इस से हमारे उत्पादन के साधन बढ़ सके और उनका आप से विस्तार हो सके। इसके लिये लोगो से निरन्तर प्रयास करते रहने और धैर्य रखने की अपेक्षा की जाती है। इस प्रकार हमारी तीसरी योजना मे इस की विकास सम्बन्धी आवश्यकताओ और आगामी चौथी योजना की जरूरतों को सामने रखा गया है। विदेशी सहायता और ऋण के लिए, जो हमारे विकास की मौजूदा हालत में जरूरी है, हम आभारी है, किन्तु अपने हित ही मे और अपने अच्छे और उदार मित्रो के हित मे और ससार के अर्द्धविकसित क्षेत्रों की आवश्यकताओ की दृष्टि से, हमे निर्भरता से मुक्त होने का यत्न करना चाहिए।

11. देश की विदेशी-मुद्रा-स्थिति अधिक नही बिगडी और वह प्रायः यथापूर्व है। इसलिए मेरी सरकार व्यापार के लिए ऐसी नीति अपनाना चाहती है जिससे विदेशी-मुद्रा की आमदनी अधिक हो और इसके लिए वह आयात पर सख्त नियत्रण करके निर्यात को बढ़ाने मे प्रयत्नशील है। मेरी सरकार का यह प्रयत्न होगा कि वह विदेशी वित्त साधनो को सुरक्षित रखकर हमारे अदृश्य निर्यात की मात्रा को बढ़ावे, जिसके लिये अभी भी बहुत बडा, अप्रयुक्त और बढ़ता हुआ क्षेत्र हमारे पास है।

12. हमारा औद्योगिक उत्पादन उन्नति की ओर अग्रसर है। वर्ष के प्रथम दस महीनों में पिछले वर्ष की अपेक्षा उत्पादन 138 से 149.3 हुआ है और उत्पादन में दस मात्रा से अधिक की वृद्धि हुई है। यह वृद्धि सर्वतोमुखी है जिसमे सभी उद्योगों का योगदान है, किन्तु धातु-सम्बन्धी उद्योगों की उन्नति से उत्पादन को विशेष बढावा मिला, यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है। राउरकेला, भिलाई और दुर्गापुर के इस्पात के कारखानों में उत्पादन 1959 से आरम्भ हो गया है। कच्चे लोहे के उत्पादन में पचास प्रतिशत और इस्पात के उत्पादन में भी काफी, पर इससे कुछ कम, वद्धि हुई है।

13. लोहे और इस्पात के उत्पादन से भारी मशीनों को बनाने की योजनाओ को बढावा मिलेगा। मेरी सरकार ने तृतीय पंचवर्षीय योजना मे पहले से ही अनेक मशीन बनाने की व अन्य योजनाओं को स्वीकृत किया है। इनमें राची की भारी मशीन योजना और भिलाई मे इस्पात उत्पादन, को दोगुना करना, भोपाल की भारी बिजली यत्र निर्माण योजना का विस्तार, और बिजली, खाद और मशीनी औजार बनाने की कई एक योजनाए शामिल है।

14 रासायनिक उद्योग ने भी सराहनीय प्रगति की है। रगाई के साधनों, दवाओ, विस्फोटकों और प्लास्टिक के लिये मौलिक कच्चे साधनो की उपलब्धि के लिए एक आरम्भिक मशीन स्थापित की गई है।

15. अपने रेल विभाग के प्रयत्नों से हम न केवल इजनो, रेल के डिब्बों, वेगनो, सिगनल और बत्ती के साधनो की आवश्यकताओ को पूरा करने मे आत्म-निर्भर हुए है, बल्कि इनका उत्पादन इतनी अधिक मात्रा मे होता है कि निर्यात के लिए भी कुछ सामान बच रहता है।

16. सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत खान उद्योग भी काफी मात्रा मे बढ़े है। नयी खोज और अप्रयुक्त क्षेत्र मे धातुओ की गहरी छानबीन के लिये जो हमारी आर्थिक उन्नति के लिये आवश्यक है, भारत के भूगर्भ विज्ञान पर्यवेक्षण का विस्तार हुआ है।

17. एक स्थायी तेल और प्राकृतिक गैस कमिशन की भी स्थापना हुई है। देश के विभिन्न स्थानो मे तेल की प्राप्ति की ढूढ़ खोज जारी है। तेल के उत्पादन के लिए नहरकटिया मे साठ तेल-कूप खोदे गये है। यह तेल आसाम और बिहार की सरकारी रिफाइनरीज के लिये आवश्यक है। आसाम की रिफाइनरी के निर्माण की प्रगति जारी है।

18. बिहार मे बरौनी की रिफाइनरी को बनाने के हेतु मशीनो और अन्य साधनो की प्राप्ति के लिये मेरी सरकार ने सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ के साथ समझौता किया है।

19. मेरी सरकार देश की आर्थिक उन्नति के लिये वैज्ञानिकों, तकनीकियों, और टेकनोलोजिस्ट्स की आवश्यकताओं के प्रति जागरूक है। वैज्ञानिको की संख्या में वृद्धि, ऐसे पुराने और नये वैज्ञानिकों के पद ऊंचे करने के लिए, नौकरी की अधिक अच्छी सुविधाएं और सुअवसर देने के लिए कदम उठाए जा रहे है। हमारी बढ़ती हुई आर्थिक स्थिति के साथ इन क्षेत्रो मे नौकरी के सुअवसर

नित्य बढ़ते जा रह है । आधुनिक तरीकों पर आधारित हमारे योजना-बद्ध विकास के लिये यह परमावश्यक है ।

20. हमारे एटमिक विभाग ने बडी सराहनीय प्रगति की है । आईसोटोप का अधिक उत्पादन, ईधन तत्वों का संग्रह, ट्रोम्बे में यूरेनियम मैटल प्लाट उपयोग मे लाये हुए ईधन से प्लुटोनियम का निकालना और यूरेनियम की खान का संचालन—ये इस विभाग के सफल कार्य रहे है । प्रथम न्युक्लियर पावर स्टेशन की स्थापना का प्रारम्भिक कार्य हाथ मे है । यूरेनियम, जो कि बिहार मे खोदा जाएगा, इस प्रथम न्युक्लियर पावर स्टेशन को पर्याप्त कच्चा माल दे सकेगा ।

21. एक लाख ग्रोस टन के जहाज भारतीय व्यापारी बेडे मे जोडे गये है । राष्ट्रीय शिपिग बोर्ड और एक वैधानिक नानलैप्सिग शिपिग विकास फड की स्थापना की गई है । भारतीय जहाजरानी को, जिसे स्वाधीनता से पहले बहुत अवरोध सहने पडे, अब विकास और आधुनिकीकरण के लिए बराबर हर सम्भव सहायता मिलती रहेगी । मेरी सरकार देश की अर्थ-व्यवस्था में व्यापारी बेडे के महत्व को समझती है । विदेशी मुद्रा के उपार्जन और उसे सुरक्षित रखने के लिए और हमारे लम्बे तट की रक्षा के कार्य मे सहायक के रूप मे और आवश्यकतानुसार उपयोग के लिए इस बेड़े का बहुत महत्व है ।

22 1958 मे बनाई गई अनुशासन नियमावली मे देश के औद्योगिक सम्बन्धो मे सुधार हुआ है और उसकी कार्यकुशलता मे वृद्धि तथा औद्योगिक शाति बनाये रखने की स्थिति पर अनुकूल प्रभाव पडा है । पिछले वर्ष की अपेक्षा 1959 में काम के मजदूर दिनो का नुकसान कही कम हुआ है ।

23. राजकीय कर्मचारी बीमा योजना का और अधिक विस्तार किया गया है और अब इसके अन्तर्गत साढे-चौदह लाख कारखानों के मजदूर आते है, जबकि योजना के अन्तर्गत दवा दारू की सुविधाओ को मजदूरों के परिवारों तक बढाकर करीब 12 लाख व्यक्तियो पर और लागू कर दिया गया है ।

24. राष्ट्रीय शिक्षा के क्षेत्र मे विज्ञान का शिक्षण, लडकियो की शिक्षा का विस्तार और अध्यापिकाओ की ट्रेनिग के सम्बन्ध में अच्छी प्रगति हुई है, और यह योजना तेजी से आगे बढ रही है । अनुसूचित जातियो तथा जनजातियों के योग्य विद्यार्थियों को छात्र-वृत्तिया दी जा रही है ।

25. हमारी आर्थिक व्यवस्था की स्थिरता, विस्तर और दृढता के लिये अनाजो के उत्पादन मे वृद्धि अत्यन्त आवश्यक है । 1958-59 में अनाज का

उत्पादन 7 करोड 35 लाख टन हुआ और नकदी फसलों की पैदावार मे भी सन्तोषजनक वृद्धि हुई, जिससे कुल मिलाकर कृषि उत्पादक का मूलांक बढ कर 131 हो गया, जो पिछले वर्ष की अपेक्षा 14.3 प्रतिशत अधिक है। किन्तु देश मे खाद्य उत्पादन की स्थिति मे निश्चिन्त तो क्या हम सन्तुष्ट भी नही है। हर वर्ष हमे खाने के लिये और सचय के लिये भारी मात्रा मे अनाज विदेशो से मगाना पड़ता है, जिससे विदेशी मुद्रा के हमारे क्षीण साधनो पर बहुत दबाव पड़ता है और जो हमारे आत्मनिर्भरता के लक्ष्य के प्रतिकूल है। प्रति एकड पीछे हमारा उत्पादन एशिया, यूरोप और अमरीका के बहुत से देशो के उत्पादन की अपेक्षा कम है। मेरी सरकार वैज्ञानिक खाद्य के उत्पादन और अच्छे बीजो की सप्लाई की तरफ अधिक ध्यान दे रही है। किन्तु व्यक्तिगत और राष्ट्रीय सम्पन्नता के लिए यह आवश्यक है कि भूमि की अच्छी जुताई हो, कीड़ो से फसलो की बरबादी को रोका जाये, पशु पालन मे सुधार हो, खेती और हाट व्यवस्था मे सहकारिता को अधिकाधिक स्थान दिया जाये और आत्मभरित होने के लिये लोग दृढ़-सकल्प हो।

26. देश के आर्थिक विकास मे और राष्ट्र के प्रशासन-सम्बन्धी कार्यो मे लोग अधिक से अधिक हिस्सा ले, इसके लिये मेरी सरकार ने हमारे महान और बढ़ते हुए प्रजातन्त्र के मौलिक स्तर पर जन-साधारण की सस्थाओ के पक्ष मे विकेन्द्रीकरण की योजनाओ को प्रोत्साहन दिया है। "पचायती राज" की यह योजना राजस्थान और आध्र प्रदेश मे पहले ही लागू हो चुकी है और दूसरे राज्यो मे शुरू होने जा रही है। "पचायती-राज" प्रणाली को कुशल बनाने के लिये सभी श्रेणियो के गैर-सरकारी कर्मचारियो के प्रशिक्षण का विस्तृत कार्यक्रम हाथ मे लिया गया है।

27. प्रतिरक्षा सम्बन्धी उत्पादन मे सन्तोषजनक प्रगति हुई है। इस दिशा मे उत्पादन और उसके साधन दोनो प्रकार विस्तार की योजनाये विचाराधीन है और उनपर उत्तरोत्तर अमल किया जायगा।

28. आगामी वर्ष मे मेरी सरकार ने नेशनल कैडिट कोर का विस्तार करने और लड़कियों के लिये नर्सिग और सहायक टुकड़िया संगठित करने की दिशा मे कदम उठाये है। टैरिटोरियल आर्मी और लोक सहायक सेना की सख्या मे भी वृद्धि की जायगी और उनकी ट्रेनिग तथा भावी जिम्मेदारियो मे कुछ सशोधन किये जा रहे है।

29. सशस्त्र सेनाओ के विभिन्न दलो की सेवा-सम्बन्धी परिस्थितियो मे कई एक सुधार किये गये है।

30. भूतपूर्व सैनिको को फिर से बसाने और अनुशासित जनशक्ति के इस साधन का उपयोग करने पर सरकार बराबर विचार कर रही है। टेक्नीकल और पेशावर ट्रेनिंग तथा पथ दर्शन और सहकारी समितियों द्वारा आत्म-सहायता की योजनाओं को चालू किया गया है। भूतपूर्व सैनिको का पुन: सस्थापन और कल्याण प्रतिरक्षा की योजनाओ का आवश्यक अंग है और यह सशस्त्र सेनाओं मे काम करनेवालों मे उचित आशा का उत्साह और स्थिरता की भावना संचार करने का साधन है।

31. ससद् के सदस्य इस बात सुपरिचित है कि केरल राज्य के सम्बध में 31 जुलाई, 1959 को जारी होने वाली उद्घोषणा मे, जिसका अनमोदन लोक सभा और राज्य सभा ने अपने प्रस्तावो द्वारा किया, यह व्यवस्था की गई थी कि राज्य की विधान सभा के लिये जितनी भी जल्दी सम्भव हो चुनाव किये जाये। तदनुसार साधारण चुनाव हुए और सारे राज्य मे 1 फरवरी को मतदान हुआ। इस चुनाव मे मत देने वालो की सख्या अभी तक अधिकतम मतदान वाले चुनावो मे से रही। शीघ्र ही उद्घोषणा को वापस ले राज्य मे साधारण वैधानिक व्यवस्था लागू की जायेगी।

32 ससद् के पिछले सत्र मे अनुसूचित जातियो और जन-जातियो के सदस्यो के लिए लोक सभा मे और राज्यो की विधान सभाओ मे सीटे सुरक्षित रखने सम्बन्धी अभिरक्षण को 10 साल तक और बढाने का निश्चय किया गया था, और इस निर्णय से सम्बन्धित सविधान (आठवा सशोधन) अधिनियम के लिए मै अपनी स्वीकृति दे चुका हू। हमारे सविधान के अनुच्छेद 339 के अनुसार, अनुसूचित क्षेत्रो के प्रशसन और राज्यो मे जन-जातियो के कल्याण के सम्बन्ध मे जाच के लिए सरकार एक आयोग की नियुक्ति करने का विचार कर रही है।

33 1959 मे ससद् ने 63 विधेयक पारित किये। 15 विधेयक आपके समक्ष विचाराधीन है। विधयको और संशोधनो के रूप मे मेरी सरकार कई वैधानिक प्रस्ताव प्रस्तुत करना चाहती है। इन प्रस्तावो मे निम्नलिखित शामिल होगे :—

दि ऐटमिक एनर्जी बिल।

दि इंडियन टेलिग्राफ (अमेंडमेट) बिल।

दि एग्रीकल्चरल प्रोड्यूस (डिवेलपमेट ऐंड वेयरहाउसिग) कारपोरेशन बिल।

दि फारवर्ड कांट्रेक्ट्स (रेग्यूलेशन) अमेंडमेट बिल।

दि इंडियन पेटैंट्स ऐंड डिजाइन्स बिल ।

दि एम्प्लाईज प्राविडेंट फण्ड (अमेंडमेंट) बिल ।

दि डौक वर्कर्स (रेग्यूलेशन आव एम्प्लायमेंट) बिल ।

दि प्लांटेशन लेबर (अमेंडमेंट) बिल ।

दि सैंट्रल मेटर्निटी बेनिफिट बिल ।

दि इंडियन सेल आव गुड्स (अमेंडमेंट) बिल ।

दि रिलिज्यस ट्रस्ट्स बिल ।

दि टू-मेम्बर कांस्टिट्यूएंसीज (अबोलीशन) बिल ।

और, दि पेमैंट आव वेजेस (अमेंडमेंट) बिल ।

34. मौजूदा बम्बई राज्य के पुनर्गठन और दो अलग राज्यो के सस्थापन के लिये मेरी सरकार एक विधेयक प्रस्तुत करेगी ।

35. वेतन आयोग की प्रमुख सिफारिशो पर मेरी सरकार अपना निर्णय पहले ही घोषित कर चुकी है । दूसरी सिफारिशें सक्रिय रूप से विचाराधीन है। जगन्नाथदास आयोग जाच के अन्तर्गत आने वाली सेवाओं के कर्मचारियो के वेतन, भत्ते और पेन्शन आदि मे वृद्धि के कारण, अनुमान है, करीब 31 करोड रुपये प्रतिवर्ष का अतिरिक्त व्यय बैठेगा ।

36. 1960-61 वित्तीय वर्ष के लिये भारत सरकार के आय-व्यय के अनुमानित आकडे आपके सामने रखे जायेगे ।

37. ससार मे तनाव की भावना मे ढिलाई और नि शस्त्रीकरण और शान्ति की स्थापना के उद्देश्य से राष्ट्रों के अध्यक्षों के बीच उच्च स्तर के सम्मेलनों की सभावनाओ पर मेरी सरकार सन्तोष प्रगट करती है । महान राजनीतिज्ञो, विशेषकर अमेरिका के राष्ट्रपति और सोवियत सघ की मन्त्री परिषद् के अध्यक्ष, हमारे देश और देशवासियो की प्रशसा और सद्भावना के अधिकारी है। स्वेच्छा से अपने-अपने देश में न्यूक्लीयर विस्फोटो के स्थगन को जारी रखने और इन समस्याओं को सुलझाने के लिये अमेरिका और सोवियत सघ के बढ़ते हुए प्रयत्नो का मेरी सकार स्वागत करती है, पर इस विचार को फिर से दोहराती है कि जन-विध्वस के अस्त्रो का परीक्षण बन्द होना चाहिये ।

38. बड़े राष्ट्रो के नेताओं मे प्रत्यक्ष सम्पर्क और इन प्रवृत्तियो का हम स्वागत करते है और इन प्रयासों की सफलता चाहते है । हमे विश्वास है कि ये

प्रयास विश्व शान्ति के लिये और शस्त्रोस्त्रों के सचय की दौड़ को रोकने की सच्ची इच्छा से प्रेरित हुए हैं ।

39. शस्त्रास्त्रो की भयानक उत्पत्ति और उनसे पैदा होने वाले तथा उन पर आश्रित भय और द्वेषो के बीच मेरी सरकार दिल से ऐसे युद्धहीन विश्व की कल्पना जागृत करने वाली नई घटनाओं का स्वागत करती है जिनमे राष्ट्र हथियारो को ही नही त्याग देंगे बल्कि आपसी झगडे के निपटारे के लिये युद्ध का परि-त्याग कर देंगे और अपनी सभी शक्तियो और साधनो को शान्तिपूर्ण विश्व के निर्माण में लगा देंगे ।

40 हमारी सरकार और लोग ससार मे शान्ति और सहयोग बनाये रखने के लिये तत्पर हैं । वे शान्तिपूर्ण उपायो और तटस्थता की नीति पर, जिसका आधार हमारा इतिहास और दृष्टिकोण, हमारा विश्वास और व्यवहार और हमरे लोगो की उत्कट इच्छाय तथा धारणाये है, स्थिर रहने के लिये दृढ-सकल्प है । इस नीति का संसद् ने कई अवसरो पर स्पष्ट शब्दो मे समर्थन किया है ।

41. मुझे कम्बोडिया, वियेतनाम गणराज्य, वियेतनाम प्रजातन्त्रात्मक गणराज्य, लाओस और श्रीलका की यात्रा करने का सौभाग्य मिला और इन देशो की सरकारो तथा लोगो द्वारा सुखद और उदार स्वागत का मुझे श्रेय प्राप्त हुआ ।

42. मुझे अपने देश की राजधानी मे अमेरिका के राष्ट्रपति और बाद म सोवियत संघ के राष्ट्रपति का स्वागत करने का हर्ष हुआ । ये दोनो महानुभाव अपने व्यक्तित्व मे अपने देशो की शक्ति और मानताओ का प्रतिनिधित्व ही नही करते, बल्कि विश्व शान्ति के लिए अपने देशवासियों की प्रबल इच्छाओं के प्रतिबिम्ब हैं । सोवियत सघ की मत्री परिषद् के अध्यक्ष, श्री ख्रुश्चेव के आगमन की, जो ससार मे एक और शान्ति दूत है, हम उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं । निःशस्त्रीकरण और शन्ति की खोज मे इन दोनो महान देशों और दूसरों के भी प्रयत्नो के पीछे हमारी पूर्ण सद्भावना और नैतिक समर्थन होगा ।

43. मेरी सरकार को अफगानिस्तान, आस्ट्रेलिया, कम्बोडिया, घाना, नेपाल और स्वीडन के प्रधान मत्रियो का स्वागत कर खुशी हुई । संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति नासर, महामहिम मुरक्को सम्राट और फिनलैंड के प्रधान-मन्त्री की हम उत्सुकता से राह देख रहे हैं ।

44. हमारे उप-राष्ट्रपति ने फिलिपीन्स, नारवे, स्वीडन, डेन्मार्क और फिनलैंड की यात्रा की और इन सभी जगह की सरकारो और लोगो ने उनका हार्दिक स्वागत किया ।

45. हमारे प्रधान मत्री ने अफगानिस्तान, ईरान और नेपाल की यात्रा की और वहा उनका सद्भावना से ओतप्रोत स्वागत हुआ ।

46. भारत और नेपाल के प्रधान मत्रियो की एक-दूसरे के यहा यात्राओ के फलस्वरूप दोनो देशो के बीच मैत्री और निकटता की भावना को और दृढ़ता मिली और दोनो देशो के हित मे सहयोग का निश्चय हुआ और उसके लिये प्रबल इच्छा प्रकट हुई ।

47. राष्ट्रमडल के देशो के साथ हमारे सम्बन्धो को कई राष्ट्रमडलीय सम्मेलनों मे हमारे भाग्र लेने के कारण बढ़ावा मिला और हमारे आन्तरिक और विदेश नीतियो तथा हमारे आर्थिक विकास कार्यक्रम के प्रति अधिक सद्भावना पैदा हुई ।

48. मुझे खुशी है कि हमारे और पाकिस्तान के बीच सीमा सम्बन्ध झगड़ो पर समझौता हो गया है । मेरी सरकार को आशा है कि पाकिस्तान के साथ इस समझौता के फलस्वरूप हमारे पड़ौसी के साथ, जिससे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखने की हमारी हमेशा इच्छा रही है, सीमा निर्धारण का कार्य सफलतापूर्वक हो सकेगा ।

49. भारत और पाकिस्तान के बीच आर्थिक मामलो को सुलझाने की दिशा मे भी गति हुई है और आशा यह है कि नहरो के पानी सम्बन्धी पुराना झगड़ा शीघ्र ही तय हो जायेगा । इन घटनाओ का, जिनसे हमे पूर्ण आशा है कि दोनो देश एक-दूसरे के निकट आयेंगे, मैं स्वागत करता हू ।

50. गत 25 सितम्बर, 1959 को स्वर्गीय एस० डब्लू० आर० डी० भंडारनायके, श्रीलका के प्रधान मंत्री, की हत्या के समाचार से भारत के लोगो और सरकार को बहुत दुख हुआ और चोट पहुंची । वे भारत के बडे मित्र थे और हमारे देश में कई बार आये थे । श्रीमती भडारनायके, उनके बच्चो और श्रीलंका के लोगों और सरकार के प्रति हमने हार्दिक सम्वेदना प्रकट की ।

51. सयुक्त राष्ट्र में हमारे प्रतिनिधि ने, उपनिवेश देशो की आजादी की समस्या, विशेषकर अल्जीरिया के लोगो के निरन्तर स्वातत्र्य युद्ध के प्रति, हमारे देश के लोगो की सहानुभृति पूर्ण भावना प्रकट की ।

52. केमरून की, जो अभी तक फ़ांसीसी शासन के अधीन था, स्वाधीनता का हम स्वागत करते है। हम आशा करते है कि आगामी वर्षो मे अफ़्रीका के कई और उपनिवेश देश इसी प्रकार राष्ट्र पद प्राप्त कर लेगे।

53. दक्षिण अफ़्रीकी संघ की सरकार की जाति के आधार पर पृथकता की नीति के कारण उस देश के अधिकाश लोगो को जो उस देश के नागरिक है अनेक कष्ट और अपमान सहने पड रहे हैं। इन लोगो मे बहुत से मूल भारतीय भी शामिल है। यह नीति संयुक्त राष्ट्र के अधिकारपत्र मे दिये गये मानवीय अधिकारो के प्रतिकूल है और सयुक्त राष्ट्र की साधारण सभा के पिछले सत्र मे इस नीति की फिर से घोर निन्दा की गई।

54. मेरी सरकार ने दक्षिण अमेरिका मे क्यूबा, वेनज्वेला और कोलम्बिया से तथा अफ्रीका मे गिन्नी के साथ राजनैतिक सम्बन्ध स्थापित करने का निश्चय किया है।

55. संसद् के सदस्यगण, मैंने आपके सामने गत वर्ष की प्रमुख घटनाये, सफलताये और चिन्ताये रक्खी है। मैंने आप को उन सब महान कार्यों और भारी जिम्मेदारियो का दिग्दर्शन कराया जो इस समय हमारे सामने हैं। ये सब आपके गम्भीर चिन्तन की अपेक्षा करती हैं। हमारे आर्थिक आयोजन, देश की प्रतिरक्षा और विश्व शान्ति मे हमारे योगदान के लिये, देश की सरकार और लोगो को अधिकाधिक आपकी सूझबूझ तथा सहयोग की आवश्यकता है इस प्रकार ससद् स विधान के द्वारा इस ऐतिहासिक कार्य को सम्पन्न करेगी।

56. हमने इस वर्ष अपने नन्हें गणराज्य की 10वी वर्षगाठ मनायी। हमारा संविधान, जो हमने अपने लिये निश्चित किया और जिसके अनुसार समस्त सत्ता देश की जनता पर आश्रित है और जनता से ही प्रवाहित होती है, स्थिर रहा और उसमें शक्ति का सचार हुआ। मेरी सरकार और हमारे लोगो की नीतियो तथा सफलताओ से हमारे प्रजातन्त्र को बल मिला और उसमे आर्थिक और सामाजिक कल्याण की क्षमता बराबर बढ़ती जा रही है।

57. हमारा यह सौभाग्य है कि हमारा स्वातंत्र्य युद्ध ऐतिहासिक दृष्टि से इस प्रकार विकसित हुआ कि अपने राष्ट्रपिता के जीवन और उदाहरण से हमें प्रेरणा मिली। अपने नन्हे गणराज्य के इस 11वें वर्ष मे हम अपने अतीत और भविष्य को गर्व और विश्वास के साथ, किन्तु अत्यधिक निश्चिन्तता के साथ नहीं, देख सकते हैं। हमारे सामने जो कार्य हैं, विशाल है। उन्हें सम्पन्न करने

के लिये अपने लोगों और देश के प्रशासन मे निरन्तर सतर्कता, अधिकाधिक दृढ़ता अनुशासन और उद्देश्य की भावना की जरूरत है। इस प्रकार ही देश के जन गण के लिये हमारा प्रजातन्त्र यथार्थ और सच्चा हो सकता है।

58. हमारे विस्तृत साधन और हमारे लोगों की योग्यतायें, निर्माण और उन्नति के उस महान कार्य मे लगी है, जो हमारे सामने है। इसके लिए यह अत्यन्त आवश्यक और विचारणीय है कि हमारे प्रशासन की योग्यता भी उसी कोटि की हो, उसमें बराबर बढती हुई शीघ्रता की भावना लाई जाय, कार्य-प्रणाली को सरल और सुबोध बनाया जाय और उसे इस प्रकार चलाया जाय कि उस मे सभी वर्गो और श्रेणियो के लोगो का विश्वास बढता जाय और जनशक्ति तथा समय का अपव्यय न हो।

59. मेरी सरकार का यह बराबर यत्न रहेगा कि नीतियों के निर्माण और उनको कार्यान्वित होने में जो समय लगता है वह कम से कम हो, सभी वर्गो और आर्थिक तथा सामाजिक स्तरों के लोग हमारी योजनाओं मे भाग ले सके और इस प्रकार योगदान देकर वे आत्मोपयोगिता और गर्व की भावना का अनुभव कर सकें जो हमे स्वतन्त्रता से मिली है।

60. मेरी सरकार मातृभूमि की स्वाधीनता और हमारे लोगो की गरिमा को बनाये रखने, एकता की भावना को प्रोत्साहित करने, सामाजिक कल्याण को आगे बढ़ाने और ऐसे प्रजातंत्रात्मक समाजवादी समाज का गठन करने के लिये, जिसमें उन्नति लोगो की सहमति और शान्तिपूर्ण ढग से ही प्राप्त की जाय, संगठित करने के लिये कृतसकल्प है।

61. संसद् के सदस्यगण, अब मै आप के नये सत्र का काम आपको सौपता हू और आपकी सफलता की कामना करता हू। मेरी यह सत्यकाक्षा है कि बुद्धिमानी, सहिष्णुता और सहयोग की भावना आपके प्रयत्नो का मार्ग दर्शन करें। आपके प्रयत्न, देश के और देशवासियो के तथा समस्त विश्व के, जिस की सेवा करना हमारे लिये गौरव का विषय है, हित मे सफल हो, यही मेरी प्रार्थना है।

श्री क्रुश्चेव का स्वागत

भारत सरकार और यहा के लोगों तथा अपनी तरफ से आज महामहिम का हार्दिक स्वागत करते हुए मुझे वहुत खुशी हो रही है। करीब ४ वष हुए जब आप एक बार पहले हमारे देश मे पधारे थे तब हमारा आपसे मिलना हुआ था। एक बार आपसे मिल लेने की वजह से इस अवसर पर आपका स्वागत करने की हमारी इच्छा और भी प्रबल रही है।

मुझे खुशी है कि इन वर्षों मे हमारे दोनो देश और भी एक-दूसरे के नजदीक आये है। आर्थिक और औद्योगिक निर्माण के क्षेत्र मे हमारा महयोग अब फल देने लगा है। किन्तु ससार की समस्याओं पर खासकर देशो के बीच शान्ति को बनाये रखने के सवाल पर हमारे दोनो देशो का सामान्य दृष्टिकोण भी कम महत्वपूर्ण नही। मै यह कहने की अनुमति चाहूंगा कि इधर कुछ समय से आपके नेतृत्व में सोवियत संघ शान्ति के पक्ष में जो यत्न कर रहा है उनका संसार भर मे स्वागत हुआ है। इस महान प्रयास मे हमारी शुभकामनायें आपके साथ है।

इस बार यद्यपि हमारे देश मे महामहिम का प्रवास सक्षिप्त है पर फिर भी हम इस बात के लिये आपके आभारी है कि आपने हमारा निमन्त्रण स्वीकार किया। एक बार फिर में आपके आगमन पर आपका स्वागत करता हू और यह आशा करता हू कि आपका प्रवास यहां सुखद होगा।

पालम हवाई अड्डे पर श्री क्रुश्चेव स्वागत भाषण, नई दिल्ली, 11 फरवरी, 1960

रूस की आश्चर्यजनक प्रगति

सोवियत संघ की मंत्री परिषद् के अध्यक्ष, महामहिमश्री निकिता ख्रुश्चेव का आज हम अपने बीच स्वागत कर रहे है, यह हर्ष का विषय है। करीब 4 वर्ष हुए जब आप इस देश मे आये थे, आपकी यात्रा का यहा के लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ा था। उस समय की याद करके हमे बहुत सन्तोष होता है। आपके हमारे देश मे आने से और हमारे प्रधान मन्त्री द्वारा आपके देश की यात्रा करने के फल-स्वरूप हमारे दोनों देश एक-दूसरे के अधिकाधिक नजदीक आते रहे है। यह देखकर हमे बहुत खुशी होती है कि समय के साथ-साथ दोनो देशो के बीच सद्-भावना बढ रही है और अब हम एक दूसरे के आदर्शो, महत्वाकाक्षोओं और जरूर-तों को अधिक अच्छी तरह से समझने लगे है। हमारा आपसी आदान-प्रदान आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्र तक ही सीमित नही रहा। कई सास्कृतिक प्रति-निधिमंडल भी दोनो देशों के बीच आते-जाते रहे है।

एक समय था जब महान घटनाओं की यादगार बनाये रखने के लिये पत्थर या ईट-चूने के स्मारक खडे करने का रिवाज था। वे सब स्मारक अपने तौर पर कीमती चीजे है, पर मेरे विचार से राष्ट्रो के बीच सद्भावना और पारस्परिक सहयोग के बल पर खडे किये जाने वाले नये उद्योग-धन्धे और मानवीय प्रगति के साधनो का निर्माण ही आज के युग मे सच्चे समारक हो सकते है। विज्ञान की आश्चर्यजनक प्रगति और सब आधुनिक अविष्कारो को इतिहास मे मानव का एक-पक्षीय विकास कहा जायगा, यदि इन धटनाओ के परिणामस्वरूप मानव समाज ने यह न समझा कि सारा संसार वास्तव में एक परिवार के समान है और विभिन्न राष्ट्र उस परिवार के सदस्य है। विचारक और आदर्शवादी लोग सदियो से ऐसी कल्पना करते आये है, किन्तु जो विचार अभी तक रूपक मात्र समझा जाता था, आज एक ठोस वास्तविकता बन गया है। मानव द्वारा फासले पर विजय और यातायात के अधिक अच्छे और गतिमय साधनों के कारण, विभिन्न देशो के लोगो के बीच बराबर सम्पर्क बढ़ रहा है। इसका स्वाभाविक फल यह होना चाहिये कि राष्ट्रो मे सद्भावना और सहिष्णुता का सचार हो, जिससे कि सब आपसी मतभेद अथवा झगड़े पारस्परिक बातचीत द्वारा सुलझाये जा सके और बल का प्रयोग अवैध माना जाय।

सान्ध्य भोज के अवसर पर भाषण, नई दिल्ली, 11 फरवरी, 1960

मै इस शुभ अवसर पर महामहिम को उनके प्रयत्नों के लिये बधाई देता हू, जिनसे संसार मे तनाव की भावना कम हुई है और जिनके फलस्वरूप शांति के लिये संसार भर में निःशस्त्रीकरण को प्रोत्साहन देने के हेतु राष्ट्रों के अध्यक्षों की उच्च-स्तरीय परिषद् का होना सम्भव हुआ हैं। मैंने पहले भी कहा है और आज मै इसे फिर दोहराना चाहूंगा कि हमारे देशवासी इस दिशा में आपकी पहल की सराहना करते है। हम इस विचारधारा का और महान राष्ट्रो के नेताओं के बीच सीधे सम्पर्क का स्वागत करते है तथा उन प्रयत्नों की सफलता की कामना करते है। हमे विश्वास है कि ये प्रयत्न शस्त्रीकरण को रोकने के लिये तथा संसार मे शांति की शक्तियो को मजबूत बनाने की सच्ची इच्छा से प्रेरित हुए है।

हमारे निमन्त्रण को आपने स्वीकार किया, इसके लिये हम महामहिम के आभारी है। देश भर के लोगो की तरफ से तथा भारत सरकार और अपनी ओर मे मै हर्ष के साथ आपका यहा स्वागत करता हूं। संसार मे स्थाई शाति स्थापित करने, और राष्ट्रों मे सद्भावना का सचार करने की दिशा में आप का प्रयत्न सफल हो और विज्ञान तथा टैकनौलोजी के क्षेत्र मे जो महान प्रगति हुई है, वह मानव तथा मानव समाज के सुख और कल्याण के लिये हो, यही हमारी कामना तथा प्रार्थना है।

47

राष्ट्रपति नासिर का स्वागत

महामहिम,

आज के शुभ दिन हिन्दुस्तान मे आपका स्वागत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। आप की इजाजत से मै आप को और आप के साथियों को "ईद मुबारक" कहना चाहूगा ।

भारत और आप के देश और वास्तव मे सारे अरब ससार के बीच दोस्ताना सम्बन्ध इतिहास से भी ज्यादा पुराने है। प्राचीन काल से हमारे देशो में आपसी सहयोग रहा है। यह बात आज के हिन्दुस्तान और सयुक्त अरब गणतन्त्र के बीच दोस्ती के सम्बन्धो से और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

ठीक पाच वर्ष हुए जब आप कुछ ही दिनो के लिये हमारे देश मे पधारे थे, लेकिन उस मौके पर आप घूम फिर कर यह नही देख सके थे कि आर्थिक आयोजन द्वारा हम अपने देश के विकास के लिये क्या कुछ कर पाये है या कर रहे है। इस लिये यह जानकर हमे बहुत खुशी हुई कि इस बार आप हमारे देश मे 12 दिन तक ठहरेगे। अगरचे वक्त कम है, मुझे पूरी आशा है कि हिन्दुस्तान मे आपका क्याम खुशगवार और सुखद होगा ।

एक बार फिर मै अपने देश के लोगो की तरफ से, भारत सरकार और अपनी ओर से हिन्दुस्तान मे आप का हार्दिक स्वागत करता हू ।

पालम हवाई अड्डे पर राष्ट्रपति नासिर के आगमन पर स्वागत भाषण; 29 मार्च, 1960

भारत-मिश्र सम्बन्ध इतिहास से भी अधिक पुराने

महामहिम गण, देवियो और सज्जनो,

संयुक्त अरब गणतन्त्र के राष्ट्रपति महामहिम जमाल अब्दुल नासिर का अपने बीच आज स्वागत करते हुए हमे बहुत खुशी हो रही है। जैसे मैं ने कुछ घंटे पहले पालम हवाई अड्डे पर कहा था ईद के शुभ दिन हमारे देश में आकर आपने हमे गौरवान्वित किया है और व्यक्तिगत रूप मे ईद की शुभ कामना भेट करने का हमें अवसर दिया है।

राष्ट्रपति नासिर अरब संसार मे जन जागरण की भावना के प्रतीक है। अरब राष्ट्रीयता के आन्दोलन के वे नेता है और उनके नेतृत्व का आधार संकीर्णता नही। असल मे, यह आन्दोलन समस्त एशिया और अफ्रीका मे होने वाले नव जागरण का एक अंग है। अरब राष्ट्रीयता, जिसके राष्ट्रपति नासिर प्रतीक है, स्वाधीनता, एकता और प्रगति की चाह की द्योतक है। हम इसी तरह की कई समस्याओं का सामना कर रहे है, इसलिये हम इस चाह को अच्छी तरह समझते है। हम आशा करते है कि एकता और उन्नति के ध्येय को प्राप्त करने मे अरब देश सफ़ल होगे।

सयुक्त अरब गणतन्त्र कहे जाने वाले क्षेत्र और हिन्दुस्तान के आपसी सम्बन्ध इतिहास से भी अधिक पुराने है। उनकी जडे प्रागैतिहासिक काल में है। अपने लम्बे इतिहास मे हमारे प्राचीन देश ने बहुत से उतार-चढ़ाव और काल के परिवर्तन देखे है। हमने बडे-बड़े साम्राज्यों का उदय और भयावह सम्राट देखे है, किन्तु किसी प्रकार हम सब इन्कलाबो से निकल अभी भी जिन्दा है और अब आधुनिक-काल मे हमारे दोनों देश सदा के लिये अन्धकार मे ऊपर उठ चुके है। अब हम अपने देश के पुर्ननिर्माण के लिये, अपने भाग्य के विधान के लिये, स्वतन्त्र है। इसमे शक नही कि हमे भारी कमियों को पूरा करना है। अपने देश मे हमने अपने साधनो के अनुसार आर्थिक पुर्ननिर्माण का काम हाथ मे लिया है। देश मे सम्पन्नता और विश्व मे शान्ति हमारा नारा है।

हमे खुशी है कि हमारे देश की कुछ छोटी और बड़ी योजनाओ का दौरा आपके कार्यक्रम मे शामिल है। हमारी कुछ योजनाये पहले ही पूरी हो चुकी है

राष्ट्रपति नासिर के सम्मान में दिये गये सान्ध्य भोज के अवसर पर भाषण; 29 मार्च, 1960

और कुछ पर कठिनाइयो के बावजूद काम बराबर जारी है। हमारी सरकार के संकल्प से और भारत के भविष्य पर हमारे लोगों की दृढ़ आस्था से हमे सब कठिनाइया पर पार पाने और अपने मक्सद को हासिल करने की ताकत मिलेगी। इसमे हमे जरा भी संदेह नही।

यह जानकर हमे बहुत सन्तोष होता है कि आपके और आप की सरकार के प्रेरणादायक नेतृत्व में संयुक्त अरब गणतन्त्र बराबर आगे बढ रहा है। आपके देश के लोगो के प्रति भारत के लोगो की अधिक से अधिक मैत्रीपूर्ण भावना है। इसलिये आपके देश की उन्नति के समाचार से उन्हे खुशी होती है।

मैं महामहिम जमाल अब्दुल नासिर का इस देश मे स्वागत करता हू, और, देवियो और सज्जनो, आपसे प्रार्थना करता हू कि उनके सुख तथा स्वास्थ्य की कामना करने मे आप भी मेरे साथ शामिल हो।

महावीर स्वामी की दिव्य शिक्षा

मुझे बडी खुशी है कि भगवान महावीर जयन्ती के अवसर पर दिल्ली के लोगों ने जो उत्सव किया है उसमे मै शरीक हो सका हू। भगवान महावीर के ऊंचे आदर्शो, उपदेशों और पुनीत जीवन के सम्बन्ध मे जब कभी भी चिन्तन करने का अवसर किसी को मिल सके, तो यह सौभाग्य की ही बात है। आज दिन के समारोह का सम्बन्ध भगवान महावीर से है। इसलिए उनकी शिक्षा और उपदेशो पर विचार करना और उनके प्रति विनम्र तथा आदरपूर्ण श्रद्धाजलि अर्पित करना सभी विचारशील लोगों के लिए स्वाभाविक है।

जब कभी भी मै भारत के अतीत पर दृष्टिपात करता हू और प्राचीन काल को युगान्तरकारी घटनाओ के बारे मे सोचता हू, तो वर्द्धमान महावीर का जीवन और जैन मत का उदय इतिहास की उन्ही घटनाओ मे से एक दिखाई देता है। बोद्ध धर्म की तरह जैन मत का सूत्रपात भी बिहार मे हुआ और वह भी धीरे-धीरे देश के अन्य भागो मे फैल गया। बौद्ध मत देश की सीमाये लाघ कर एशिया के अधिकाश देशों मे फैल गया, किन्तु जैन धर्म भारत की सीमाओ मे ही रहा। फिर भी, प्राय: डेढ़ हज़ार वर्षो के बाद ऐसा समय आया जब बोद्ध धर्म विदेशो मे फलता-फूलता रहा और आज भी फल रहा है, किन्तु भारत मे लुप्तप्राय हो गया। इसके विपरीत, जैन धर्म की जडे भारत मे सदा गहरी रही है और आज तक वह थोड़ा या अधिक देश के सभी भागो मे प्रचलित है। बोद्ध मत इतना विस्तृत होते हुए भी इस देश से कैसे लुप्त हो गया और जैन धर्म सीमाओ के बीच रहते हुए भी क्योकर भारत मे बराबर बना रहा, यह इतिहासज्ञो के विवेचन या शौध का विषय है। हम केवल इतना ही कह सकते है कि प्राचीन काल से भारत की परम्परागत विचारधारा तथा सामाजिक और सास्कृतिक मान्यताओ पर भगवान महावीर के उपदेशो का गहरा प्रभाव पडा है।

महावीर अत्यन्त असाधारण, बल्कि कहना चाहिए, एक अलौकिक विभूति थे। इसलिए अहिसा और अपरिग्रह सम्बन्धी सिधान्तो को पूर्ण रूप से अपने जीवन मे उतारना उनके लिए सम्भव था। यदपि साधारण सभी पुरुष उन सिद्धान्तों में आज भी आस्था रखे है और आदर्श के रूप में उन्हे मानते है, पर जीवन को विषमताओं और बराबर बढ़ते हुए विरोधाभासों से हमेशा ऊपर न उठ सकने कारण अधिकाश लोग आशिक रूप से ही उनका अनुसरण कर पाते है। जो भी हो, साधारण मानव को असमर्थता और दुर्बलतायें महावीर स्वामी के आदर्शो की महानता को तो

महावीर जयन्ती के अवसर पर भाषण; नई दिल्ली, 9 अप्रैल, 1960

कम नही कर सकती। वे आदर्श आज भी उतने ही महान् है जितने पहले थे, बल्कि यह कहना गलत न होगा कि आधुनिक युग के लडाई झगड़ो और पारस्परिक युद्धो के कुछ अनुभव के बाद मानव को अहिंसा का सिद्धान्त और भी ऊचा अगर दिखाई देने नही लगा है तो शीघ्र ही प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने लगेगा। उसे अब यह विश्वास होने लगा है कि अहिसा को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो मे स्थान देना अब आवश्यक होता जा रहा है। अर्थात, जिस परिणाम पर महावीर स्वामी अपने चिन्तन और आत्मानुभूति के बल पर ढाई हज़ार वर्ष पहले पहुचे थे, उसी सत्य को आधुनिक ससार सैकडों वर्षो के अनुभवो के बाद समझने लगा है। यह इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है कि भगवान महाबीर तत्वदर्शो और सूक्ष्म-दृष्टा थे।

धार्मिक आस्थाओ को भले ही हम प्रत्येक व्यक्ति को निजी आत्मगत सम्पत्ति माने, पर अब यह आवश्यक हो गया है कि इन आस्थाओ और मानव के दैनिक व्यवहार को एक-दूसरे के निकट लाया जाये, अर्थात, धर्म और आचरण के बीच निकटतम सम्बन्ध स्थापित किया जाए। धर्म ऐसी चीज़ नही जो केवल मानसिक अथवा सैद्धातिक आस्था के सहारे ही फलता फूलता रहे। वृक्ष की तरह, धर्म की जड़े तभी गहरी होती है। वृक्ष की जड़े भूमि मे होती है तो धर्म की मानव के आचरण और दैनिक कर्म मे। और यदि धर्म व्यवहार अथवा आचार से एकदम विलग हो जाय तो उसे निर्मूल ही कहा जा सकता है और जो आचार धर्म के प्रभाव से शून्य रहे उसे धर्महीन ही कहना उचित होगा। यह बात सभी धर्मो और सभी लोगो पर लागू होती है।

इसलिए मै समझता हू कि धर्म का प्रभाव मानव के तीन पहलुओ पर पडना चाहिए। हमारा व्यक्तिगत जीवन धर्म से प्रेरणा लेकर ही सुखी और सफल हो सकता है। दूसरे, समाज मे और सामाजिक जीवन मे व्यवस्था तथा प्रगतिशीलता तभी रह सकती है जब सत्य और धार्मिक सिद्धान्तों द्वारा उसका नियमन किया जाय। अराजकता, उश्रृखलता और अव्यवस्था की रोकथाम का यही सफल उपाय हो सकता है। तीसरे, ससार आज इस बात को स्वीकार ही नही करता बल्कि उत्कठापूर्वक इस बात पर ज़ोर दे रहा है कि धार्मिक तथा आध्यात्मिक तत्वो को ग्रहण किए बिना यह विज्ञान को प्रगति और भौतिकता का चमत्कारपूर्ण भवन रह जायगा। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को भित्ति पर जो किले मानव ने बनाये है और बनाता जा रहा है, उनकी सुरक्षा के लिए आध्यात्मिक तत्व का सहारा लेना अत्यन्त आवश्यक है। भगवान महावीर के जीवन-चरित्र से और उनकी शिक्षा से हमें वे तत्व आसानी से मिल सकते है।

अमीर खुसरो के उर्स के मौके पर

हजरत अमीर खुसरो के उर्स के मौके पर आपने मुझे यहा आने की दावत दी, इसके लिये मै आभारी हूं और मुझे यहा आ सकने की बहुत खुशी है।

हजरत अमीर खुसरो उन हस्तियो मे से थे जिनका सत्कार या ताजीम करने के अनेक कारण है। सब से बडी बात तो यह है कि उनकी अपनी शखसीयत बहुत ऊची थी। बचपन से ही उन्हे भाषाए सीखने और जहा से भी हो सके विद्या और हर तरह का इल्म हासिल करने का शौक था। ऐसे वक्त जब कि मुसलमान और हिन्दू अभी आपस में हिलमिल कर रहने नही लगे थे या कम से कम एक-दूसरे से अपने आपको दूर महसूस करते थे, अपने गुरु हजरत निजामुद्दीन के आशीर्वाद से अमीर खुसरो ने दोनो कौमो को एक-दूसरे के नजदीक लाने की कोशिश शुरू की। उनकी सच्चाई और बढाई इसी बात मे जाहिर है कि इस बडे काम को हाथ मे लेने से पहले उन्होने इस्लाम और हिन्दू धर्म को पूरी तरह समझने की कोशिश की। उन्होने संस्कृत पढी और इस मुल्क के पुराने रस्मोरिवाज और विचारो को समझने की कोशिश की। उन्होने देखा कि हिन्दुओ और मुसलमानो की जबाने अलग-अलग है और जब तक वे अलग-अलग रहेगी इन दोनो जातियो का मेलजोल ऐसा नही हो सकेगा जैसा होना चाहिये। यही वजह थी कि अमीर खुसरो ने एक ऐसी जबान मे लिखने का काम हाथ मे लिया जिसको दिल्ली और उसके आस-पास के हिन्दू और मुसलमान दोनो समझ सके। उनकी यह कोशिश सफल ही नही हुई बल्कि एक बहुत बडा अचम्भा बन कर रह गयी। आज से 700 वर्ष पहले उन्होने जो कुछ हिन्दुस्तान की बोलचाल की भाषा मे लिखा वह मौजूदा हिन्दी और उर्दू दोनो जबानो के लिये बुनियाद की अहमियत रखता है।

हमे हिन्दी और उर्दू के झगडे मे पडने की जरूरत नही और न इस बात पर गौर करने की ज़रूरत है कि कौनसी जबान कब और कैसे बनी। इस बात से कोई इन्कार नही कर सकता कि दोनो ही जबानो का सब से पहला और सब से अच्छा नमूना हमे अमीर खुसरो की किताबो मे मिलता है। उन्होने फारसी और संस्कृत और बहुत से आम बोलचाल के लफ्जो और मुहावरो को लेकर एक ऐसी नई शैली को जन्म दिया जिसे मौजूदा हिन्दुस्तानी की मा कहा जा सकता है। हिन्दुस्तान के साहित्य और अदब को अमीर खुसरो की यह बहुत बडी देन है।

अमीर खुसरो के उर्स के मौके पर भाषण; नई दिल्ली, 14 अप्रैल, 1960

साहित्य के क्षेत्र मे अमीर खुसरो ने जो काम किया उससे कही बढ़कर उनका काम समाजी मैदान में था। जिसे हम आज हिन्दुस्तान की मुश्तरका तहज़ीब या मिलीजुली संस्कृति कहते है, उसकी शुरुआत भी अमीर खुसरो से ही हुई। हिन्दुस्तान मे आ बसने वाले मुसलमा ों के रस्मोरिवाज और उनके रहन-सहन के तौर-तरीके के बारे मे उन्होने आम फहम ज़बान मे चर्चा की और बहुत कुछ लिखा। दूसरी तरफ हिन्दुओ के रीति रिवाजो और परम्परा से चले आये उनके विचारो की सही तर्जुमानी उन्होने मुसलमानो के लिये की। अमीर खुसरो की कोशिशो का नतीजा यह हुआ कि हिन्दू मुसलमानो को मुसलमान हिन्दुओ को ज्यादा अच्छी तरह समझने लगे और एक-दूसरे के नजदीक आ आपसी हमदर्दी का एहसास करने लगे। हमारी तारीख इस बात की गवाह है कि अमीर खुसरो और दूसरे सूफियो, सन्तो और पीरों के उपदेशो और नसीहतो के असर की वजह से ही चौदहवी सदी मे और उसके बाद दिल्ली की सल्तनत की बुनियाद बराबर वसीह होती गयी और हुकूमत की शक्ल धीरे-धीरे बदलने लगी। इसलिये, अगर अमीर खुसरो के प्रशसको या मद्दाहो मे हमेशा हिन्दु और मुसलमान दोनो ही शामिल रहे इसमे किसी को ताज्जुब नही होना।

अगर्चे हजरत अमीर खुसरो का उर्स लोग सैकड़ो सालो से मनाते आ रहे है, लेकिन मै समझता हूं कि आज हमे उन्हे याद करने की खास वजह है। हिन्दुस्तान आज एक आजाद मुल्क है, ऐसा मुल्क जिसके आईन के मुताबिक यहां के सभी लोगो को एक जैसे हकूक हासिल है। किसी को भी मजहब या मिल्लत की बिना पर अपने आपको बड़ा या छोटा समझे जाने का हक या डर नही। मुल्क के सभी शहरी, कानून और आईन के सामने, एक जैसे है। हिन्दुस्तान इस बात पर फख्र करता है कि हज़ारहा साल मे इसमे मुख्तलिफ कौमो और मजहबों के लोग रहते आए है। आज भी दुनिया का शायद ही कोई ऐसा मजहब हो और शायद ही कोई ऐसी कौम हो जिसके थोड़े-बहुत लोग हमारे मुल्क मे न रहते हो। हिन्दुस्तान के कल्चर की इस अनेकरूपता पर हमें फख्र है और हम इसे एक खूबी तसलीम करते है।

मगर इतना ही कह देना काफ़ी नही। इस अनेकरूपता पर हमारा फक्र करना तभी जायज़ होगा जब इस मुल्क मे रहने वाले हम सब लोग अपने अन्दर तहम्मुल और बुर्दबारी का जज़बा पैदा करे जिससे कि यहां सभी कौमो और मज़हबों के लोग अपने आपको हिन्दुस्तानी कहते हुए अपने-अपने अकीदों के मुताबिक पूजा या इबादत करते हुए हसी-खुशी रह सकें। हमारे आईन का

गह बुनियादी असूल है और इस जजबे को उभारना हिन्दुस्तान की बहबूदी मे दिलचस्पी रखने वाले हर आदमी का पहला फर्ज़ है ।

इस काम को अजाम देने के लिये इससे बढ़कर मौजू काम और क्या हो सकता है कि हम हज़रत अमीर खुसरो जैमी हस्तियो के कामो का दिली एतराफ करे और उनके बताये हुए रास्ते पर चलने की कोशिश करे। मजहबी असूलो और खुदाई निजाम मे एतकाद रखना और खुदा के मब बन्दो को एक जैसा समझना और उनके लिए दिल मे हमदर्दी रखना, दो अलग-अलग चीजें नही, असल मे एक ही बात है। हजरत निजाम्मुद्दीन और अमीर खुसरो की जिन्दगी और उनके कारनामो से इस बात पर पूरी रोशनी पडती है ।

मै ममझता हू अगर्चे इन बडी हस्तियो की जिन्दगीयो के बारे मे जानना और समझना हिन्दुस्तान के सभी लोगो का फर्ज है, मगर हम लोग जो दिल्ली मे रहते है उनके लिये और भी जरूरी है कि आम फहम जबान और मुश्तरका तहजीब के बानी अमीर खुसरो की जिन्दगी से हम सबक सीखे और उनके नक्शे-पा पर चलने की कोशिश करे। उनकी ज़िन्दगी का ज्यादातर हिस्सा दिल्ली में ही बीता और यही उनकी दरगाह है। मेरे खयाल मे अमीर खुसरो का दर्जा एक कौमी रहनुमा का है। मुझे खुशी है कि हिन्दुस्तान की सरकार इस बात से बाखबर है और अमीर खुसरो की याद लोगो के दिलों मे ताजा रखने के सिलसिले में शायद कुछ किया जा भी रहा है ।

इस जल्से का इन्तज़ाम करने वाले भाइयो को मै मुबारकबाद देता हूं और यह उम्मीद करता हू कि अमीर खुसरो की जिन्दगी से और उनके नुमाया कारनामों से हम प्रेरणा लेगे और आपसी मेल-मिलाप का सबक सीखेंगे। तभी हम हजरत अमीर खुसरो की यादगार कायम रखने और उनके तई खराजे तहसीन अदा करने के हकदार समझें जायेगे ।

55

ताड़गुड़ कार्यकर्ता सम्मेलन

अखिल भारतीय ताड़ गुड़ कार्यकर्ता सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए यहा आ सकने की मुझे बहुत खुशी है। मीरा से गुड़ और चीनी बनाने की योजना बहुत आकर्षक है, पर मुझे अक्सर आश्चर्य होता है कि उद्योग-धन्धे की दृष्टि से इतनी उपयोगी होते हुए भी इस योजना पर हम अभी तक अमल क्यो नही कर कर पाए और यह जानते हुए भी कि ताड वृक्ष हमारे लिए कितने उपयोगी है हम अभी तक उन से यथोचित लाभ क्यो नही उठा पाए है।

गुड और चीनी की बढ़ती हुई माग और इस माग के कारण चीनी की कमी के भय से अभी तक हमे सतर्क हो जाना चाहिए था। खूराक मे गुड और चीनी जैसी जरूरी चीज के इस महत्वपूर्ण साधन की तरफ हमारा ध्यान जाना चाहिए था। इस उद्योग को उन्नत करने और आगे बढ़ाने के कारण इतने स्पष्ट है कि उन पर जोर देना समय और शक्ति को नष्ट करना है। परन्तु इस उद्योग के बारे में जो अज्ञानता फैली हुई है, उसे दूर करने के लिये हमे यह भी करना होगा। इसलिये मै आप सब से यह आग्रह करूगा कि ताड़ के पेड से गुड और चीनी बनाने के उद्योग के बारे मे सभी प्रकार की जानकारी का आप अधिक से अधिक व्यापक विचार करें और इसके लिये प्रचार के सभी साधनो को काम मे लाये। इस उद्योग को समझने और समझ कर अपनाने के लिये इसे पूरी तरह से जान लेना ही काफी है।

गुड और चीनी के इस अतिरिक्त साधन का हमें स्वागत करना चाहिये, केवल इसीलिये नहीं कि इस पदार्थ की मांग सप्लाई की अपेक्षा बढ़ जाने का डर है। यद्यपि यह कारण भी कम महत्व का नही, किन्तु और भी बहुत सी बाते है जिनके कारण ताड गुड बनाने का धन्धा हमारे ग्रामीण क्षेत्रो के लिये एक आदर्श व्यवसाय है। एक तो, जैसा मै ने कहा, गुड़ और चीनी की मांग देश में बराबर बढ़ती जा रही है और इसे पूरा करने के लिये गुड के सभी साधनों का उपयोग जरूरी है। दूसरे, जिस उपजाऊ भूमि में आजकल गन्ना बोया जाता है उसकी हमें अनाजों को उपजाने के लिये जरूरत है। विभिन्न किस्म के खजूर और ताड़ के पेड़ अधिकतर ऊसर भूमि पर उग सकते है।

इसलिये हमें मौजूदा पेड़ो का अधिक से अधिक उपयोग ही नही करना है, बल्कि योजना के अनुसार बंजर भूमि पर, खास कर नहरों, रेलो, सड़कों और

अखिल भारतीय ताड़ गुड कार्यकर्ता सम्मेलन में भाषण; नई दिल्ली, 29 अप्रैल, 1960

खेतों के किनारों पर फालतू भूमि मे ग्राड के पेड़ लगाने के कार्यक्रम को हाथ में लेना चाहिये । जैसा कि आपकी रिपोर्ट मे कहा गया है, हमारे देश में बहुत सी ऐसी फालतू भूमि है जिस से हम कुछ भी पैदा नही करते । रेलों, सडकों आदि के किनारे इतनी अधिक भूमि का अपव्यय होते देख मुझे दुख होता है किन्तु मै ने सुना है कि इस भूमि को काम मे लाने की योजनाओं पर अब विचार हो रहा है । मैं नही समझता कि किसी भी प्रगतिशील देश में इतनी अधिक भूमि खाली छोड दी जा सकती है । रेलो और सडको के साथ-साथ मैं ने जापान मे लहलहाती फसलो को देखा है । रेल की लाइन के दोनों तरफ करीब दो फुट के फासले पर ही वहा खेती शुरू हो जाती है । जब हमारे देश मे भूमि पर इतना दबाव है, हमे भी इस फालतू भूमि का पूरा उपयोग करना चाहिये, अच्छी भूमि मे अनाज पैदा करना चाहिये और बजर भूमि मे ताड के पेड लगाने चाहिये । इस समय करीब चालीस लाख एकड़ उपजाऊ भूमि मे हमारे देश मे गन्ना बोया जाता है । अगर इसमे से कुछ भूमि भी गन्ने की खेती से छुडा कर अनाज पैदा करने के काम मे लाई जा सके, तो खाद्य की समस्या को हल करने की दिशा मे यह एक ठोस कदम होगा ।

इन सब बातो के अतिरिक्त ग्रामीण लोगो के लिये रोजगार का भी सवाल है । नशाबन्दी कानून लागू करने के बाद यह कहा जाता था कि ताड़ी उद्योग मे लगे हजारों लाखो आदमी बेकार हो जायेंगे । मैं नही समझता कि नशाबन्दी के कारण ताड़ के पेडो को छेदने के उद्योग पर बुरा प्रभाव क्योंकर पड सकता है, क्योंकि नीरा की तो हमें बराबर अधिक से अधिक जरूरत है । यह एक स्फूर्तिदायक पेय है और फिर इससे हम गुड और चीनी बना सकते है । इस समय हमारे देश मे बीस लाख से भी कम ताड़ी छेदक है जबकि हमे इस से दुगुने से भी अधिक की आवश्यकता है । देश के विभिन्न भागो मे, खासकर पश्चिमी बगाल और बम्बई राज्यों मे इन छेदकों और नीरा से गुड़ तथा चीनी बनाने वालों की ट्रेनिंग का प्रबन्ध कया गया है और इसके लिये केन्द्र खोले गये है । इस उद्योग के कारण रोजगार का एक बडा साधन हमारे हाथ लगा है । ग्रामीण लोग दिन भर काम करके या अपना फालतू समय लगा कर नीरा निकालने और उस से गुड़ और चीनी बनाने में अच्छा रोजगार पा सकते है ।

देश भर की गुड़ और चीनी की जरूरतों को ताड़ गुड द्वारा पूरा किये जाने की संभावना, अधिक अनाज पैदा करने के लिय गन्ने की खती से लाखों एकड़ उपजाऊ भूमि छुडाई जा सकने की संभावना और इस उद्योग द्वारा रोजगार के

व्यापक अवसर और देहातो की खुशहाली की सभावना—जब हम इन सब बातो पर विचार करते है तो यह महसूस किये बिना नही रह सकते कि इस उद्योग को हमने अभी तक उतना प्रोत्साहन नही दिया जितना देना चाहिये था और जितने का यह अधिकारी है। मै अपने व्यक्तिगत अनुभव से कह सकता हूं कि यदि बिहार मे पाए जाने वाले ताड और खजूर के सब पेडो को छेदा जाय, उनसे प्राप्त नीरा से हम इतना गुड़ और चीनी बना सकते है जितनी बिहार के सब चीनी के कारखाने मिल कर बनाते है। हम जानते है कि उत्तर प्रदेश के बाद बिहार मे चीनी के सब से अधिक कारखाने है। इसलिये जो मैने कहा उससे इस बात का अन्दाज लग सकता है कि चीनी की हमारी जरूरतों को पूरा करने की जितनी अधिक क्षमता इस ताड़ गुड़ उद्योग मे है। जो तथ्य और आकड़े हम ने दिए है, यदि वे ठीक है, तो कोई कारण नही जान पड़ता कि हमारी देहाती कल्याण योजनाओ मे इस उद्योग को अधिक से अधिक प्राथमिकता क्यों न दी जाय।

यही कारण है कि मैने अखिल भारतीय ताड गुड सहकारी महासघ की योजना को बहुत ध्यान से पढा। यह ठीक है कि इस उद्योग को उन्नत करने मे हम सभी ग्रामीण सस्थाओं से सहयोग की आशा कर सकते है। किन्तु हमे यह साफ-साफ समझ लेना चाहिये कि इस योजना को अमल मे लाने और इसमे निर्धारित लक्ष्यो को प्राप्त करने की जिम्मेदारी अधिकतर ताड़ गुड कार्यकर्ताओ पर ही है। मुझे आशा है कि आप इस काम को उत्साह से करेंगे जिससे कि गुड और चीनी उत्पादन के जो लक्ष्य आपने अपने सामने रखे है वे सब राज्यो मे पूरे किये जा सके।

यद्यपि यह देख कर कि मौजूदा ताड वृक्षो मे अभी भी करोड़ों ऐसे है जो कभी छेदे नही गए उत्साह कुछ भग होता है, फिर भी मै बजर और पथरीली भूमि मे अधिक से अधिक ताड और खजूर के पेड़ लगाने के कार्यक्रम को हाथ मे लेने पर जोर देना चाहता हू। ये पेड़ आसानी से लगाए जा सकते है और इनकी देख-रेख और भी सहल है, और तो भी राष्ट्र के लिये यह एक बहुमूल्य सम्पत्ति है। जिस प्रकार हम हर वर्ष वन महोत्सव मनाते है उसी प्रकार ताड़ के पेड़ लगाने का कार्यक्रम भी निश्चित कर सकते है।

मुझे आशा है कि ताड़ गुड उद्योग कार्यकर्ता सम्मेलन इन सभी प्रश्नों पर विचार करेगा और उन्हे इस ढंग से सुलझाने का यत्न करेगा जिससे कि ताड़ गुड़ की अधिक से अधिक उन्नति हो।

जिला पंचायतों के प्रधानों से

महामान्य राज्यपाल जी, मुख्य मंत्री जी, बहिनो और भाइयो,

मै कई वर्षो के बाद आपके इस प्राचीन नगर मे आ सका, इसकी मुझे बहुत खुशी है। मै जिस काम के लिये खासकर के आया था वह काम एक सुन्दर लोक सेवा का काम है। यहां आकर के आप सब भाई बहिनो मे मिलने का सुअवसर भी मिला जिससे मेरी यात्रा अधिक सफल बन गई है।

हमारे देश मे महात्मा गाधी जी ने बहुत बडे पैमाने पर गाव क लोगो में जागृति पैदा की है। उसके पहले जो एक लोक सेवा सस्था थी काग्रेस के नाम से, वह शहरो के कुछ हिस्सो को छोड कर के अधिकांश हिस्सो मे, गाव-गाव में नही पहुचती थी। गाधी जी ने आकर के गावों मे जाने और गावो मे सब लोगों को भेजना आरम्भ किया था। एक प्रकार से उन्होंने एक योजना, रूपरेखा तैयार कर ली है जिसको हम अच्छी तरह से आज भी चरितार्थ नही कर पा रहे है। यहा की पचायतो को नये सिरे से सगठित करने का जब आपने निश्चय किया है तो हम आशा करते हैं कि वह सरकारी दफ्तर या महकमे न रह कर सच्चे माने में एक सेवा समितियां हो जायं। आजकल, मै समझता हूं, सारी दुनिया मे और हमारे देश मे भी ऐसी एक हवा चल रही है जिसमें केन्द्रीकरण को बहुत बल मिल रहा है। चाहे आप ऐसे देशो को लीजिये जो कम्यूनिस्ट समझे जाते है अथवा ऐसे देशो को भी लीजिये जो कम्यूनिस्ट नही और कम्यूनिज्म का विरोध करते हैं, उन देशों मे भी, केन्द्रीकरण की बाते अगर बहुत कही नही जाती तो काम में बहुत आ रही हैं। इसलिये यह एक चमत्कार ही होगा यदि ऐसी परिस्थिति में, जैसा कि आपने निश्चय किया है, हम विकेन्द्रीकरण के रास्ते पर चल सके। मैं विकेन्द्रीकरण का केवल पक्षपाती नही हू बल्कि मै समझता हू कि बहुत बातो में विकेन्द्रीकरण से सारी दुनिया के अन्दर वह शान्ति आ जायगी जिसकी हम सब को ख्वाहिश है। विकेन्द्रीकरण का अर्थ तो सचमुच विकेन्द्रीकरण ही नही है जो केवल व्यावहारिक है, मगर पक्का विकेन्द्रीकरण तभी होगा या उसे हम कह सकते हैं जब हरेक मनुष्य अपने स्थान पर इस तरह से रहेगा और इस बर्ताव से काम करेगा कि न तो उसे दूसरे किसी को दबाने की जरूरत पडेगी और न किसी के सामने दबने की जरूरत पडेगी, न दूसरों को उसको दबाने की जरूरत पडेगी।

जिला पंचायत प्रधानो के सामने भाषण; उदयपुर, 2 मई, 1960

यह एक आदर्श की बात है कि जिस तक कोई पहुंचेगा या दुनिया पहुचेगी या नही यह कहना मुश्किल है। मगर जितने छोटे से ऐसे सत्य है उन सत्यो को जीवन में हम पूरी तरह से उतार नही सकते तो आंशिक रूप मे हम अपने जीवन में उतार सकते है और उतने मे ही हमे सतोष कर लेना चाहिये। अगर कोई यह समझ कि इस चीज को मै अपने जीवन मे पूरी तरह से उतार नही सकता इसलिये इस चीज को अच्छा होने पर भी आशिक रूप मे हम उतारेगे नही यह गलत है। मामूली-सी चीज सच बोलने की बात को लीजिये। क्या कोई यह प्रतिज्ञा करता है कि हम सत्य से विचलित नही होगे और अगर कोई ऐसा करे तो वह मनुष्य नही देवता हो जायगा, देवता से भी ऊचा। मगर हम इन छोटी-छोटी बातो का पालन नही कर सकेगे। बाजारो मे हम सौदा करना चाहे तब भी हम इन बातो को देख सकते है। ठीक है कि हम आदर्श तक नही पहुच सकेगे मगर जहा तक शक्ति है उस शक्ति के भरोसे पर हमे चलना चाहिये और साथ-साथ जो इस तरह का प्रयत्न करता है उसे आगे बढ़ने मे सुविधा मिलती है।

अभी, जैसा कि मैने कहा, सभी देशों मे यह देखा गया है कि जो वहा की गवर्नमेंट है वे वहा की सत्ता को अपने हाथ मे लेना चाहती है। इसका नतीजा यह होगा कि सरकार जनता के जीवन मे हस्तक्षेप करना चाहती है, उनका दायरा बहुत बढ़ता जा रहा है, और मनुष्य समाज का या मनुष्य की व्यक्तिगत जो स्वतन्त्रता होनी चाहिये वह स्वतन्त्रता दिन ब दिन कम होती जा रही है। अगर हम डेमोक्रेसी को मानते है जिसका अर्थ यह होता है कि लोग अपने-अपने प्रतिनिधि चुन ले और उन प्रतिनिधियो की राय लेकर जो बहुमत है उस बहुमत के अनुसार सरकार का काम चलाया जाय। आजकल डेमोक्रेसी चल रही है उसका यह एक सुन्दर नमूना है इसमें कोई शक नही है। मगर जो प्रतिनिधि मिल करके तय कर लेते है वह हमेशा सच्चा, हमेशा ठीक है उस पर न कोई खण्डन कर सके, न कोई उसमें भूल दिखला सके यह जो केन्द्रीकरण की हवा वह रही है उस हवा के विरुद्ध एक छोटे पैमाने पर ही सही हम विकेन्द्रीकरण की तरफ बढ़ें तो मै उससे बहुत आशा रखता हू। म समझता हू कि अगर एक जगह एक मत शुरू होगा, आज नही हम कह सकते, उसकी शक्ति कितनी और कहां तक जा सकती है। इस समय जो रुख लिया है यदि वह ठीक है तो आग चलकर उससे बहुत बड़े-बड़े नतीजे निकल सकते है। विकेन्द्रीकरण का अर्थ यही है कि हम उन संस्थाओ को, मंडलियो को जो राजकीय बल से चलती है उन को

हम लोगो के नजदीक मे नजदीक ले जायें । दिल्ली मे 500 आदमी सारे भारतवर्ष से चुनकर आये है और वे लोग जो कानून ससद मे बनाते है वह सब पर लागू होता है, सब को उसे मानना पड़ता है हालाकि यह एक तरह से ठीक है जो कानून बनाते है उनमें अधिकाश ऐसे लोग है जिनको न कानून का ज्ञान और न किसी चीज का ज्ञान है। मगर उनके द्वारा पास किये गये कानून माने जाते है। इसलिये विकेन्द्रीकरण के द्वारा यह आशा रखी जाती है ऐसे देश के मामलो मे सब कोई हिस्सा लें। जिसको हम हक समझते है उसे छोड कर हमारी यह भावना है कि हम सेवा करे, सेवा की भावना से प्रेरित होकर सब प्रतिनिधि काम करने लग जाय तो वे सचमुच विकेन्द्रीकरण के रास्ते पर चलते है। अगर मनुष्य सब इस भाव से प्रेरित होकर काम करे तो दुनिया स्वर्ग बन जाय। शासन का विकेन्द्रीकरण हम इसलिये करते है और चाहते है जिसमे लोग अच्छी तरह से सब बातो को समझे वे यह न समझे कि ऊपर से कोई चीज़ उन पर लादी जा रही है बल्कि अपनी इच्छा से करते है। जिसमे सब की तरक्की हो। मगर आप ऐसा नही कर सकते तो कम से कम मदद ऊपर से या सरकार से ले, मदद की जरूरत है। जब बच्चा पैदा होता है, चलने लगता है तो किसी चीज के सहारे वह चलने लगता है। किसी को पकड कर खड़ा होता है। बाद मे वह खुद-ब-खुद चलने लगता है। सरकारी अफसरो का काम है वे इस आन्दोलन की ओर सहानुभूति पूर्वक देखे और जो कमजोर है उसकी मदद करें। अपना सहारा देकर उसको स्वावलम्बी बनाना है और लोगों को यह समझना है कि वे हमेशा सरकार पर भरोसा न करे। मा के कंधो पर चढकर नही चलना है अपने पैरो पर चलना है।

अब जब इन पचायतो के काम की ओर जब हम ध्यान देते है तो जैसा कि आपने कहा है, मुख्य काम इनके द्वारा जो हो सकता है वह अन्न की पैदावार को बढ़ाना है। जितने अन्न की जरूरत हो वह हम पैदा करें। इस तरह से हम अपने जीवन को बनावे जिसमे जरूरत की चीजो के लिये दूसरो पर भरोसा न करना पड़े।

अब समय बहुत बदल गया है। हमारे ऊपर रुपया हावी हो गया है। इस वजह से हमारा सुख-दुख सब कुछ अब चीजो के दाम पर निर्भर हो गया है। चीजों के दाम आप यहा इस रेगिस्तान में बैठकर तय नहीं कर सकते। दाम तो दूसरों के द्वारा दूसरे बाजारो में तय होते है। इसलिये आवश्यकता है कि इन पचायतों के द्वारा स्वावलम्बी होने के भाव का हम प्रचार करे। जितनी चीजें मनुष्य के जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक है, भोजन, कपड़ा, घर आदि उन्हें गावों में ही हम पैदा करें। अगर हम गावो को स्वावलम्बी बना देते है तो

आप समझें कि हमारा बहुत कुछ कष्ट, या खाने की जो कमी है वह नहीं होगी। आजकल जहा देखों वहा बड़े-बड़े कारखाने हैं। काम करने वालों की तादाद दिन ब दिन कम होती जा रही है। कारण रुपया आ गया। मैंने आपका इतना समय इसलिये लिया कि आप नींव के पत्थर की तरह जमीन के अन्दर रह जायं। जो भी इमारत हम बनावें बगैर नींव के हम नहीं बना सकते। इसलिये आप लोगों का काम नींव का काम है और उसके ऊपर एक बड़ी इमारत बनेगी, जितनी ऊंची आप चाहे बना सकते हैं। मगर नींव पक्की हो। इसलिये आप जहा हो वहा अपने कर्तव्य को समझकर काम करने के लिये तैयार हो। मैं आशा करता हू कि आप जो कुछ अपनी बुद्धि के द्वारा हो सकता है करें और दूसरों की मदद भी लें। आप यह न समझें कि हम ने प्रस्ताव पास किया तो हमारा काम पूरा हो गया। मुझे खुशी है कि आप ऐसे एक रास्ते पर जा रहे हैं जिससे राष्ट्र का कल्याण होगा।

यक्ष्मा आरोग्य सदन का उद्घाटन

महामहिम राज्यपाल महोदय, श्री मुख्य मंत्री जी, श्री बद्रीप्रसाद जी, सेठ भुवालका जी, बहिनों और भाइयो,

राजस्थान और विशेष करके उदयपूर मे जाने के लिये किसी भी देश से प्रेम रखने वाले के लिये कोई भी बहाना मिल जाय तो वह सब से अच्छा होता है। यहां आने के लिये तो आपने मेरे जिम्मे ऐसे सुख का काम भी लगा दिया है कि उससे यहा आने की इच्छा और प्रबल भी हो गई और मै आज कई वर्षो के बाद फिर यहा आ सका। राजस्थान का इतिहास बहुत ही गौरवपूर्ण है और राजस्थान मे भी, खास करके, जयपुर और उदयपुर का इतिहास तो और भी अधिक गौरव-मय है। यह लडको और लड़कियों को हमेशा सीखना और पढ़ना चाहिये और उससे उनको प्रेरणा मिलनी चाहिये जिस तरह से आजादी और स्वतन्त्रता के लिये यहा के लोगों ने अपने खून को पानी की तरह बहाया है और जिस तरीके से उन्होंने धर्म, जाति और संस्कृति की रक्षा जिस उत्साह और उत्सुकता के साथ की है उस तरह के नमूने बहुत कम मिलते हैं। मगर कुछ समय का ऐसा चक्कर रहा है, ऐसा फेर रहा है कि जिस स्वाधीनता के लिये इतना प्रयत्न किया गया है वह पूरी तरह से उन लोगो के हाथ मे नही आयी जिस तरह वह आज, हमारे सौभाग्य से, हमारे हाथो मे आ गई है। और इसलिये हमे इस चीज को कभी नही भूलना चाहिये कि आज जब हम इस देश मे हम इस योग्य बन सके है कि सर उठाकर संसार भर के लोगो के सामने यह दावा कर सके कि हम भारत-वासी भी हर तरह से स्वाधीन हैं और हर प्रकार से प्रभुता सम्पन्न है तो यह दावा गलत नही होगा मगर यह भी इस सम्बन्ध मे याद रखना होगा कि यह चीज़ केवल हमारी कमाई नही है, यह केवल इस पीढी की कमाई भी नही है बल्कि न मालूम कितनी पीढ़ियां इस प्रयत्न में सड़ गल गई है और कितनो ने अपना तन बलिदान कर दिया कि उनके नाम तक, उनकी स्मृति तक आज हमारे पास नही है। किसान लोग जानते हैं कि मामूली खेती के काम मे जब वह जाते है खेत मे बीजो को लेकर के तो सब से अच्छा अन्न बीज के लिये रखा जाता है जिससे कि उसको खा ले तो अधिक पुष्ट हो जाय। उसको ले जा कर मिट्टी में डाल देते है जिससे कि वह सड़ जाय गल जाय और जो बीज सड़-गल कर तैयार हो जाता है तो उसमे अंकुर निकलता है और वही अकुर समय पर जाकर ठीक सुन्दर फल देता है, अगर किसी

रामविलास भुवालका यक्ष्मा आरोग्य सदन के उद्घाटन के अवसर पर भाषण; उदयपुर, 2 मई, 1960

अनाज का बीज हुआ तो सुन्दर अनाज खाने के लिये हम को मिलता है। मगर अनाज तैयार हो जाने पर, फल मिलने पर फिर शायद ही कोई याद रखता है। बीज का काम तो यही था कि उसने अपने को सड़-गला करके एक बडी निधि दूसरों के लिये तैयार कर ली है और जिनको वह निधि मिले वह सुख चैन से रहने लगे। उनको सुख और जो आराम मिला वही उस बीज के लिये सब से बड़ा सतोप का विषय होता है। इसी तरह से आज तक हमारे देश के इतिहास में जिन लोगो ने देश हित के लिये कुरबान किया है, जिन्होने अपना सर्वस्व त्याग दिया है, जो जान देकर संसार से उठ गये हैं, उन सभी ने उस गले हुए बीज की तरह आज भी भारत की स्वतन्त्रता के रूप मे पल्लवित और प्रफुल्लित होकर हमें फल दिखलाया है। तो हमें इस बात को नही भूलना है कि बीज का नतीजा ही आज हम पा रहे है। और इसलिये जब कभी इस तरफ ध्यान दिया जाता है तो हमे इस बात को मानना ही पड़ता है कि बहुत बीज राजस्थान ने लगाया है और उन बहुत बीजो का मिलजुल कर आज हमको फल मिल रहा है।

मै जब यहा आ रहा था रास्ते मे लोगो को देखता हू और दूसरी जगहो मे जब कभी जाता हूं तो रास्ते मे जो भीड जमा रहती है उसकी तरफ निगाह डालने से तो मुझे एक बात देख करके खुशी होती है वह यह कि ऐसी भीड़ मे अधिकाश क्या आप समझो सौ मे से सत्तर, अस्सी से ज्यादा नवयुवक हुआ करते है। अर्थात् ऐसे लोग जो चालीस साल के नीचे बल्कि अधिक तो आप समझो 30, 32 के नीचे हुआ करते है। उन लोगो के हृदय में यह भावना पैदा होती है कि देश का कुछ काम होने जा रहा है इसलिये थोडी देर के लिये ही सही उसमे शरीक हो जाय तो यह भावना बडी कीमती चीज होती है। यही देख करके भारत के भविष्य के सम्बन्ध मे आशा बनती है। हम एक बार स्वतन्त्र हो गये है तो उस स्वतन्त्रता को फिर हमारी सतान किसी तरह से खो जाने न दे और उसकी रक्षा के लिये जो कुछ भी उसे करना होगा वह हमेशा करने के लिये तैयार रहे। हमेशा जागरूक रहना आवश्यक है। क्योकि जब थोडी गफलत अगर कही हुई तो उसका नतीजा भयकर हो सकता है। प्रहरी दिन रात जागे रहे और ऐन मौके पर अगर दस, पाच मिनट के लिये कही ऊघ जाय, सो जाय तो उस बीच मे सारा माल वहा से लुट जा सकता है, कोई चोर ले जा सकता है। इही तरह से इस स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये हमें लम्हा लम्हा हमेशा जागरूक रहना चाहिये और तभी उसे सुरक्षित रख सकेंगे। हम को नहीं मालूम कि किस चीज का क्या नतीजा कुछ दिनों के

बाद होनेवाला है । कौन जानता था कि जिस वक्त मुगल बादशाहो के दरबार में एक व्यापारी अंग्रेज आया और उसने दरखास्त की कि हमें थोड़ी सी जगह दो जहां दुकान खोल सकें। उस वक्त कौन कह सकता था कि उस थोडी सी और उसी दिन ब्रिटिश साम्राज्य का किस तरह से भारतवर्ष मे आरम्भ हुआ । यह तो एक तरफ की घटना हुई । दूसरी ओर की घटना है जिस वक्त हमारे देश को फिर आजाद करने का काम आरम्भ किया था जो छोटी-छोटी घटनाए होती थी या जिस संस्था के द्वारा यह काम आरम्भ किया गया था वही आगे चलकर एक जबर्दस्त संस्था और आन्दोलन बन जायगा जिसका मुकाबला ब्रिटिश सरकार भी आखिर मे नही कर सकी । तो इसलिये अगर कही थोडी-सी गफलत होती है तो उस गफलत मे हमेशा होशियार रहना चाहिये जिसमे कोई खतरा न होने पावे । खासकर भारतवर्ष जैसे देश मे जो इतना लम्बा-चौडा है, अगर कही छोटा-सा टुकडा दूसरे के हाथ मे गया तो उस टुकडे की कीमत नही है जितना उस पर कब्जा हो जाने की कीमत है । वह हमारे पास रहे तो उससे हम कुछ भी पैदा नही कर सके, मगर पैदा करने या न करने का सवाल तो उठता ही नही । वह चीज हमारे पास रहनी चाहिये यही प्रश्न है और इसी चीज को हमेशा कायम रखना है । और जब उस चीज की रक्षा कर सकेंगे तब भारतवर्ष की हम रक्षा कर सकेंगे । अगर छोटी चीज़ है उसे नगण्य समझ कर उसकी परवाह नही करते तो अपनी लापरवाही के कारण आप समझो कि हम एक भारी कदम उठा रहे है और वह कदम ज़बर्दस्त और कड़ा कदम होगा । इसी भावना को लेकर के देश की रक्षा करेगे । तो हम यह चाहते है कि जो इतने नवयुवक इन सभाओ मे आते है और रास्ते मे खडे होकर हम लोगो का स्वागत किया करते है क्या वे सचमुच इस देश की महानता को और उसके गौरव को समझ करके करते है या यो ही इकट्ठा होकर चले जाते है न उसका महत्व समझते है और न उसमे क्या त्याग देना हो सकता है उसकी ओर ध्यान जाता है । मै चाहता हू कि देश के लोग जो आजादी हमारे हाथ मे आई उसकी कीमत को समझे और उसकी रक्षा का भार अपनी जवानी ही नही उठावें बल्कि हर काम मे अपने हर कदम से उसका सबूत दे और उसकी रक्षा करेंगे और करते रहते है ।

हमारे देश के अन्दर बडे-बडे प्रश्न और बडी-बड़ी समस्याएं है । कितने ही दिनो तक वैदेशिक शासन के मातहत रहने की वजह से हम लोग बहुत बातो मे पीछे पड़ गए है । जिस वक्त इस देश मे अंग्रेज़ आये उस वक्त तक किसी भी देश के मुकाबले में किसी बात मे कम नही था सिवाय एक बात की शक्ति की कमी नही

थी, संपत्ति की कमी नही थी, उसके पास विद्या की कमी नहीं थी उसके पास हुनर की कमी नही थी यह सब चीज थी। कमी या कमजोरी यही थी कि ग्रापस में मेल नहीं था। उसी एक चीज की वजह से यहां का सारा तख्त उलट गया। ग्रौर एक नया शासन स्थापित हो सका। ग्राज तक हमारे सामने वह ग्राशका मौजूद है कि छोटे-छोटे भेदो को देखकर हम लोग देश को भूल जाते हैं ग्रौर ग्रापस मे नगण्य-सी चीज़ो के लिये झगड़ने लग जाते हैं। भारत तो एक महान देश है ग्रौर इस महान देश की एकता बडी चीज है। ग्रगर कोई यह कहे कि इस बात को हम बराबर ग्रांख के सामने रखेगे तो विभिन्नताग्रो के रहते हुए भी सारे देश के ग्रन्दर जो ऐक्य, एकता है उस एकता को कायम रखना हमारा काम है। ऊपर से चाहे जितनी विभिन्नताएं हों, भाषा के, धर्म के, मजहब के, रहन-सहन के—उन सभी विभिन्नताग्रो को हम रखें मगर साथ-साथ एक चीज जो सब को काम में लाने की है देश की एकता ग्रर्थात् सारे देश के प्रति सब का एक समान प्रेम। इसी चीज की कमी थी जिसकी वजह से विदेशी ग्राये ग्रौर ग्रब जब हम स्वतन्त्र हुए हैं इस देश को जहा तक हो सके हमें मजबूत बनाना है उसमे कोई कमजोरी न ग्राने पावे यह देखना है।

इस वक्त हम बड़ी-बड़ी योजनाए कर रहे हैं, बड़ी-बड़ी योजनाएं सारे देश में हम लागू कर रहे है। उन सभी योजनाग्रो से सब को लाभ होगा। ग्रगर कोई यह समझे कि किसी से हमे लाभ नही है हम उसको छोड दे यह ठीक नही है। योजनाएं सब के लिए ग्रौर ग्रगर उससे दूसरो को लाभ पहुंचता है ग्रौर हमे नहीं पहुंचता है तो समझना है कि उसमे ग्रपना लाभ है। महात्मा जी के सबध में कहा जाता है कि देश के धनी लोगो की सपत्ति को वे देश भर के लोगो के लिये एक प्रकार से सौंपी हुई निधि मानते हैं जिससे सारे देश के फायदे के लिये, सब लोगों के हित्त के लिये खर्च किया जा सकता है। केवल ग्रपने स्वार्थ के लिये या ऐश-ग्राराम के लिये खर्च नही होना चाहिये। इसी को वे ट्रस्टी कहा करते थे। जो लोग ग्रपनी कमाईको ग्रथवा ग्रपने बाप-दादाग्रो की संपत्ति को केवल ग्रपना न समझ करके सब का समझ कर के सब के लिये खर्च कर सके हम चाहते हैं कि यह भावना लोगों में पैदा हो। तब एक समय ऐसा भी ग्रा सकता है जब टैक्स लगाने की जरूरत न रह जाय। ग्रगर सब लोग खुद जितनी जरूरतें हो सकती हैं सब को पूरा करने के लिये हमेशा तैयार रहे तो फिर टैक्स लगाने की या मांगने की क्या जरूरत है ग्रौर टैक्स के संबंध में जबर्दस्ती करने की क्या जरूरत है। मगर वह तो एक ग्रादर्श की बात है। दिन-प्रति-दिन के काम में उसको इसलिये करना पड़ रहा है कि जिसके पास कुछ मिल सकता है उससे कुछ सब के हित के लिये लें इसी भावना से यह

किया जाता है। हमारे पुराने रिवाजों के मुताबिक भी टैक्स उस वक्त इतने नही लगाये जाते थे क्योकि सब काम जिसके पास पैसा होता है उससे करा दिया जाता था। हम नही जानते अंग्रेजों के राज्य के पहले मुगलों के जमाने मे हिन्दुस्तान गवर्नमेन्ट की कितनी आमदनी थी और कितना टैक्स के जरिये से वसूल किया जाता था। और कितना खर्च उस जमाने की गवर्नमेन्ट के दफ्तर पर पडता था। आज इन सब चीजो के लिये अलग-अलग आंकड़े ससद् के सामने, विधान सभाओ के सामने पेश किये जाते है और जो कोई जानना चाहेगा इन सब को देख सकता है। तो अभी भी जिसके पास अपनी जरूरत से ज्यादा होता है वह अच्छे काम मे पैसा लगाता है वह देश का उपकार करता है और इसलिये इसमे न तो आश्चर्य की बात होनी चाहिये बल्कि स्वाभाविक रीति से, एक मामूली काम समझकर जिससे जितना हो सके परोपकार के काम मे दान दिया करे। दान का काम आज भी इस देश मे होता है वह सुन्दर है।

हिन्दुस्तान मे क्षय रोग के लिये ही नही बल्कि बहुतेरे रोगो के लिये अस्पतालो की जरूरत है। जरूरत इसलिये है कि बहुत लोग बहुत प्रकार के रोगो से ग्रस्त है। अब कब समय आयेगा जब हमारा स्वास्थ्य इतना सुधर जायेगा कि अस्पतालो की जरूरत न हो। मगर अभी तो हम अपनी तरक्की अस्पतालो की सख्या बढाकर ही बता सकते है। सच्ची तरक्की अस्पतालो की सख्या को बढ़ाकर नही घटाकर ही बताई जा सकती है कि हमारे देश मे स्वास्थ्य इतना अच्छा है कि इतने अस्पतालो की जरूरत नही है। हमारी प्राचीन चीज यही है क्योकि चिकित्सा शास्त्र के नाम से बना है। उसका नाम दिया गया है आयुर्वेद अर्थात् किस तरह से जीते रहे यह शास्त्र उसका नाम आयुर्वेद है। बीमारियो से किस तरह से लोग मुक्त हो जाय, किस तरह से चलने से रोग न होने पाये। मगर आज की स्थिति मे अस्पतालो की जरूरत भी है और हम को जहां-जहा मौका होता है इस तरह के अस्पतालों को देखकर हमे खुद बहुत खुशी होती है। मै समझता हू कि जो लोग इन अस्पतालो को कायम करते हों उन्हें और भी ज्यादा खुशी हुआ करती है। इधर दस, बारह बर्षो से जब से हम स्वतन्त्र हुए है, बीमारियों को रोकने की दिशा में काफी काम हुआ है। बहुत-सी बीमारियां है जिनको काबू में कर लिया गया है। यह केवल हमारे देश के लोगों का ही काम नही है, बल्कि विज्ञान की प्रगति का नतीजा भी कहना चाहिये। सारी दुनिया की वैज्ञानिक मडलियों ने अपनी बुद्धि और अनुभव के द्वारा जो कुछ निकाला है, जो नये प्रयोग किये है उन सब से लाभ उठाकर इस देश में हम ने भी बहुत बीमारियों को काबू में कर लिया है। अब जैसे मलेरिया

है, मैंने सुना है कि बहुत हद तक वह काबू में आ गया है। जहां बहुत मलेरिया हुआ करता था वहां बहुत कम मलेरिया होता है और जहा थोड़ा-बहुत बाकी है उसको भी काबू करने का प्रयत्न किया जा रहा है । इस तरह की बीमारियो मे एक क्षय रोग, तपेदिक भी एक ऐसी बीमारी है जिसको मनुष्य काबू में कर सकता है । हमारे देश में उसको काबू मे करना और देशों के मुकाबले में सहज होना चाहिये । यहा की आब-हवा ऐसी है कि मनुष्य का अधिकाश जीवन खुले मैदान मे बीत सकता है और बीतता है । मै तो समझता हू जो लोग अपने को कमरो मे बन्द नहीं करके बाहर रहे तो बीमार बहुत कम हो जायं क्योंकि यहां की आब-हवा में आदमी आसानी से सूर्य की किरणो को काफी मात्रा में पा सकता है और खुली हवा भी मिल सकती है । यही दो चीजे तपेदिक में चाहिये जो अच्छी मात्रा मे हमारे देश मे मिलती हैं । मगर तपेदिक होता क्यो है ? इसलिये कि एक दूसरी चीज की कमी है और वह है अच्छी खुराक, पौष्टिक खुराक जिसके खाने से मनुष्य का शरीर अच्छा रहे । वह चीज बराबर सब लोगों को पूरी तरह से नही मिलती । हमारे देश मे कोई भी चीज खाने की अब आदमी इतमीनान के साथ नही खा सकता आटे मे, चावल, दूध और दही मे सब मे मिलावट है । इन सब चीजों को • • • रोककर अपने भोजन मे सुधार करे तो बहुत बडा फायदा हो सकेगा । इससे बहुत बड़ा काम हो सकेगा । ऐसा प्रबन्ध होना चाहिये कि जिससे आदमी बीमार ही न पड़े जिसमें दवा की जरूरत ही न पडे । मै आशा करता हू कि आपके इस अस्पताल का एक अग यह भी होगा जिसमे सादे जीवन पर भी जोर दिया जायेगा जिससे किसी को रोग ही न होने पावे । इसके प्रचार के लिये आप स्वय प्रयोग करके दिखलायेंगे । मुझे इस बात की बडी खुशी है कि सेठ भुवालका जी ने इतने उत्साह से इतना रुपया लगाकर इसको खोलने का निश्चय किया है और मै समझता हू कि इससे जो कुछ चारपाइयो की जरूरत पड़ेगी वह भी वे पूरी कर लेंगे और इससे यहा के लोगों को ही नही सारे देश के लोगों को लाभ होगा । मै आशा रखता हूं कि देश की स्वतन्त्रता की रक्षा अपना प्रथम कर्त्तव्य मानकर और देश के अन्दर जब हम रहते है, किसी भी श्रेणी या तबके के हों, सब की उन्नति के लिये जो कुछ सेवा हम कर सकते है करते रहेंगे ।

महाराष्ट्र राज्य का निर्माण

महाराष्ट्र प्रान्त के राज्यपाल महोदय, बम्बई शहर के मेयर महोदय, देवियो और सज्जनो,

मै बम्बई शहर में 30, 35 वर्षो से प्राय: हर साल एक बार या दो बार आता रहा और हर मौके पर जब कभी मुझे कोई काम पडा उसमे आपने पूरी सहानुभूति दिखलाई और साथ-साथ जहां मदद की जरूरत रही वहा आपने मदद भी की। मेरा विशेष सम्मान और मान आपने कई बार किया और आज भी उसका एक नमूना हम देख रहे है। इस सब के लिए मै आप सब को हृदय से धन्यवाद करता हूं।

इस समय हमारे देश के सामने बहुत-सी जटिल समस्याएं है। हम अभी 12 वर्षों से स्वतन्त्रता प्राप्त करके किसी न किसी तरह से प्रजातन्त्रात्मक सरकार इस देश में कायम करके अपना काम चलाने लगे है। इस अर्से मे बड़ी-बड़ी कठिनाइया हमारे सामने आई है। इसी बीच में हमने सब लोगों की सम्मति से, प्राय: एक-मत होकर के अपना संविधान भी तैयार किया है और उसी संविधान के अनुसार सारा देश कई भागो में बांटा गया है जिससे वहां काम ठीक तरह से सुचारु रूप से चलता रहे। आज भी, अगर कही जो कुछ उस वक्त तय किया गया था उसमें हेर-फेर करने की जरूरत पड़ती है और यदि हम समझते है कि उससे वहां का काम ज्यादा बेहतर हो सकेगा और लोगों की अच्छी तरह सेवा हो सकेगी तो इसी आशा से संविधान में भी जहां जरूरत पड़ती है उसमें हेर-फेर करते है और जो दूसरे शासन सम्बन्धी नियम बने हुए है उनमे भी जहां जरूरत समझी जाती है हेर-फेर कर लेते है। हम यह आशा रखते है कि अगर कही कोई ऐसी बात देखने में आवे जिससे देश के किसी दल को कोई बुरा मालूम हो, कोई ऐसी चीज नजर आवें जो देश के लिए ठीक नही है तो संविधान के मार्फत सभी गल्तियों को, सभी भूलो का सुधार करवा सकते है, दुरुस्त करवा सकते है। जब हमने प्रजातन्त्र का आश्रय लिया है तो उसी प्रजातन्त्र के नियमों के अनुसार हमें अपने सारे देश के काम को चलाना है और चलना चाहिए। इस प्रजातन्त्र के दो भागों को सब लोगों को समझ लेना चाहिए। एक भाग उसका यह है कि हमने संविधान के नियमों से यह बता दिया है कि किस तरीके से देश का शासन चलेगा और किस तरीके से जनसाधारण का मत जान करके हम उस मत के अनुसार

बम्बई नगरपालिका के नागरिक सम्मान के अवसर पर भाषण; 3 मई, 1960

देश का काम करेंगे। एक भाग उसका वह भी है जिसमें प्रत्येक स्त्री-पुरुष के क्या स्वत्व है, हक है उनको बताया गया है। सभी प्रजातन्त्रों में यह बात रहती है कि सब की राय से देश का शासन चलना चाहिए और हमारे संविधान मे भी ऐसी बातें है। साथ-साथ हमने कुछ ऐसे नियम बना रखे है जिनकी मान्यता सब को मिलनी चाहिए और जिनको मामूली तरह से, दिन-प्रति-दिन के ख्याल से चाहे कोई खास जरूरत हो तो उसके ख्याल से भी हरेक आदमी बदल नही सकता—इन्ही को हम मौलिक अधिकार कहते है। मेरा अपना विचार हमेशा यह रहा है कि जब तक हम लोग एक विदेशी शासन के साथ अपने देश को स्वतन्त्र बनाने के लिए लड रहे थे तब तक तो यह जरूरी था कि हम अपने स्वत्वो पर, राइट्स पर, ज्यादा जोर दे क्योंकि सब से बड़ी चीज जो उस वक्त चाहिए थी वह थी अपने देश को स्वतन्त्र बनाना और उस स्वतन्त्रता को रखने के लिए हम हक चाहते थे। मगर अब जब हमने स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है तो मेरे विचार से अब ज्यादा जोर स्वत्वों पर न होकर के हमारे कर्त्तव्यों पर होना चाहिए। राइट्स को छोड कर के देश के प्रति हमारी क्या ड्यूटी है उस पर ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिए। यदि इस तरफ ज्यादा ध्यान दिया गया है तो इसमें कोई शक नही है कि इस देश की स्वतन्त्रता सुरक्षित रहेगी, सिर्फ स्वतन्त्रता ही नही बल्कि इस देश के लोगों को सुखी बनाने में भी बहुत काम-याबी हो सकेगी। अब भी अक्सर मै देखता हू कि बहुत सी बातों मे, बहुत जगहों मे, जो आदत पहले से स्वत्वों पर जोर देने की रह गई उसके मुताबिक ऐसी-ऐसी चीजों पर जोर देते है जिन पर अगर ध्यान नही दिया जाता तो अच्छा होता अथवा यो कहिए कि उन पर जोर देकर के थोडे लोगो के स्वत्वो की रक्षा हम करते है। मगर अधिकाश को बदले में नुकसान ही पहुंचाते है। जब तक हम को विदेशियो से झगड़ना था तब तक तो स्वत्वों की रक्षा हमारे लिए आवश्यक थी और उस पर जोर देना भी जरूरी था। मगर अब हम को यह सोच लेना है कि सिर्फ हमे अपने को ही आगे नही बढ़ाना है बल्कि हमारा यह काम हो जाता है कि देश भर के सब लोगों को आगे बढ़ाने मे हम से जहां तक हो सके मदद करे। तो अब यह सोचना चाहिए कि लेने का वक्त गया है, देने का वक्त आया है, देने के सिवा दूसरा कुछ नही है। इस वक्त छोटी-छोटी पार्टियां बनाकर या गिरोह बनाकर अपने स्वत्वों पर हम जोर देने लग जाए तो देश पाश-पाश टुकड़े-टुकडे हो सकता है। इतिहास हम को बताता है कि आज तक हमारी सब से बडी कमजोरी यही रही है कि हम कभी सारे देश को एक नजर से शासन के मामले मे एक न मान करके हमेशा टुकडे करके एक-दूसरे

से झगड़ते थे और उसी का नतीजा यह होता गया कि कोई तीसरा आदमी आकर एक-एक को दबाकर सारे देश में बैठ गया है। एक दो नही इसका कई बार अनुभव हो चुका है। आज ईश्वर की दया से कहिए, महात्मा गान्धी जी की तपस्या के फलस्वरूप कहिए या देश के लोगो के अपने त्याग के फलस्वरुप कहिए, हम आज फिर स्वतन्त्र है और आज का भारतवर्ष जितना बड़ा है उतना भारतवर्ष एकछत्र के राज्य मे पहले कभी नही आया था। यो तो सांस्कृतिक दृष्टि से कन्या-कुमारी से हिमालय तक और दोनो तरफ समुद्र के किनारे तक यह देश हमेशा एक रहा है और विभिन्नताओ के होते हुए भी एकता का सूत्र अन्दर से ऐसा पिरोया हुआ है कि हम अपने हृदयो मे उसे देख रहे है। मगर जहा तक शासन का सम्बन्ध था, देश के टुकडे-टुकडे थे, छोटे-छोटे राज्य थे जो आपस में लडते थे और तीसरा बीच मे पडकर कभी इस ख्याल से कि हम उसकी मदद करेगे, अपनी मदद करने के लिए तीसरी शक्ति आ जाती थी और वह बैठ जाती थी। आज हम को उस इतिहास को याद रखना है। हमारी कमजोरी यह है कि हम इतिहास को याद नही रखते। हमारे सामने जो लोग जीवित है, मेरे जैसे को छोड़ दिया जाय, मुझसे कम उम्र के लोग है उनको यह देखना है कि उनकी जिन्दगी का कितना काम इस देश में हुआ है। अगर वह इसको अच्छी तरह से देखेगे और समझेंगे कि बहुत-सी ऐतिहासिक घटनाए घटी जिन्हे ससार समझेगा मगर अभी तक हमारे स्वाधीनता युद्ध का कोई सच्चा और ठीक इतिहास शुरू से लेकर अन्त तक का अभी तक नही लिखा गया है। यह भी एक कमजोरी रही है और इस कमजोरी का एक नतीजा यह है कि हम सारे देश को एक सूत्र मे बांध कर शासन के रूप से इकट्ठा नही रख पाए और नही रख सके। आज जब फिर स्वतन्त्र हो गए है तो हम को उस इतिहास को याद करना चाहिए, उससे सब सीख कर ऐसी कोशिश करनी चाहिए हमारी कमजोरी हट जाय, दूर हो जाय फिर हम पर कोई तीसरा नजर डालने की हिम्मत न करने पावे। तभी हम इस देश को सुरक्षित कर सकते है। आज जब ऐसी बात सुनने मे आ रही है कि हमारे देश के एक कोने में, थोड़ी-सी जगह में ही सही, दूसरा आकर बैठ जाने की हिम्मत करता है, बैठ जाता है तो उसको हिन्दुस्तान के प्रत्येक बच्चे-बच्चे को समझ लेना चाहिए कि कोने पर नहीं बैठा है छाती पर आकर बैठा है। जब यह भावना बच्चे-बच्चे के दिल में आ जायेगी तब यह देश सुरक्षित रह सकेगा और यदि यह भावना नही तो हम सुरक्षित नहीं रह सकेंगे। इसलिए मै चाहता हूं कि जब कभी सारे देश का मामला हमारे सामने आवे तो छोटे-छोटे भेदों को भूलकर उनको नजरन्दाज करके सिर्फ देश-हित की बात, सारे देश के

हित की बात सोची जाय और उस पर चलने का रास्ता क्या हो सकता है। हम अपने स्वत्वों को कम ध्यान मे रख कर अपने कर्त्तव्यो पर ज्यादा जोर दें तो हमारा कर्त्तव्य यह बताता है कि सारे देश की सुरक्षा, शाति के लिए प्रयत्न करना हमारा सब से बडा कर्त्तव्य है। इसलिए मै चाहता हूं कि अपने कर्त्तव्यो पर ज्यादा जोर दें और उनकी पूर्ति के लिए जो कुछ त्याग करने की जरूरत हो वह त्याग करने के लिए हम तैयार रहे। मै आशा करता हूं कि यह नवजात महाराष्ट्र—जो आज का नही बहुत वर्षो का है—मगर आज के सिलसिले मे तीन ही दिन का है अपने प्राचीन गौरव के अनुसार अपने को उठा ले और ऊंचे दर्जे तक पहुंचे और सारे देश का नेतृत्व कर सकें। इसका अर्थ यह नही है कि आप आज तक नही कर रहे है मगर यही है कि आज तक जो करते आए है वह आगे भी कर सकें जिसमें आपकी सेवा सारे देश के लिए हो—सिर्फ महाराष्ट्र के लिए नहीं—तो आप अपने प्राचीन गौरव को कायम रख सकेगे और उससे भी ऊंचा उठ सकेगे।

जब कभी मै यहा आता हू तो आप मेरे प्रति बडी मेहरबानी करते है इस बात से मुझे खुशी होती है और जब से मै प्रेसिडेन्ट बना हूं तब से आज तक भी, इस बात के लिए मै आपको धन्यवाद देता हू।

बरेली में सार्वजनिक स्वागत

देवियो और सज्जनो,

मै आप सब को हृदय से धन्यवाद देता हू । आपने जिस प्रेम को दर्शाया और जिस उत्साह के साथ जब से मै इस शहर में पहुचा हूं, मेरा आदर किया है वह सब मेरे लिए केवल आदर्श की वस्तु नहीं बल्कि याद रखने की जैसी चीज है । मैं आया तो एक काम को लेकर हूं मगर जब कही जाता हूं और कोई काम उसके साथ लग जाता है और उस वजह से जो थोडा समय रहता है वह आकर इतने थोड़े-थोड़े हिस्सों मे हो जाता है कि कही भी किसी को पूरी तरह से सतोष नही मिलता । मगर दुनिया ही ऐसी है, उसका सारा काम इसी तरह से चलता है । आदमी की जिन्दगी भी ऐसी ही है । आदमी कितने मन्सूबे बाधता है, कितनी ख्वाहिशें रखता है, कितनी अभिलाषाएं उसके मन में उठती है, उनमें कुछ पूरी हो जाती है, कुछ अधूरी रह जाती है और कुछ पूरी नही हो पाती है और जीवन इसी तरह से कट जाता है ।

हम अब स्वतन्त्र हो गए है और किसी भी स्वतन्त्र देश के लिए तीन-चार चीजे जरूरी है । एक तो उसकी स्वतन्त्रता को कायम रखे, अर्थात् उस देश की भूमि पर कोई लालच की नजर तक न लगा सके, कोई यहा आकर यहा की जनता की मर्जी के खिलाफ न बैठ जाय । दूसरी चीज देश के अन्दर लोगो के दिलो मे एक-दूसरे के प्रति प्रेम-भाव रखे जिसमे वहा हर तरह से शाति रहे । यह ठीक है कि शांति रखने के लिए पुलिस है पर सच्ची शाति तब होगी जब हम मे से सब लोग अपने कर्त्तव्यों को समझे और एक-दूसरे के प्रति प्रेम-भाव रखें और जो कुछ हमारा है वह हम रखे मगर उसकी वजह से दूसरे को कोई नुकसान न पहुंचे और इसका माने यह होगा कि हमारा अपना जो है वह सिर्फ हमारे लिए नही बल्कि और लोगो के लिए भी होगा । अगर इस भावना से प्रेरित होकर सब लोग अपनी-अपनी जगहों में काम करेगे तो देश की उन्नति बड़े पैमाने पर हो सकेगी । आज इस चीज को समझना बहुत जरूरी इसलिए हो गया है जब हम इस कोशिश में है कि अपने देश में हम हर तरह से उन्नति करें, लोगों की आमदनी बढ़ावें जिससे रहन-सहन का स्तर और ऊंचा हो जाय, कुछ अधिक आराम से रहा करें, बीमारी से मुक्त रहे, तालीम का प्रबन्ध हो जाय और हम हर तरह से आगे बढ़ें । आज हमारी योजना का उद्देश्य भी यही है और यह काम तभी पूरा होगा जब हम में से

बरेली नगरपालिका के नागरिक सम्मान के अवसर पर भाषण, बरेली, 16 मई, 1960

हर एक आदमी इस काम को अपना काम समझकर इस भावना से लगे कि दूसरों के लाभ में भी हमारा लाभ है तब तो आप समझो कि यह सारा प्रयत्न और प्रयास बहुत जल्दी सफल हो सकेगा और फल बहुत जल्दी देखने को मिलेगा। मगर अगर खेत में बीज के उगने के पहले ही हम घबरा जायं और घबरा कर उसे निकाल दें तो फल मिलने के बजाय जल्दी में वह बीज ही नष्ट-भ्रष्ट हो सकता है। इस वक्त अभी हम बीज बोने की हालत में है, कोई आश्चर्य नही कि वह उगेगा और फल देने लगेगा। मगर बीज बोने के बाद फल मिलने तक हम को इस बात की कोशिश करनी है कि जिसमें पौधे को पूरा मौका मिले कि वह खूब उगे, बढ़े, फले-फूले इस आशय के साथ यदि हम इसमे लग जाएंगे तो यह काम सफल हो जायेगा। दरख्त फल देता है, फल दरख्त में होते है, मगर दरख्त फल खाता नही खा भी नही सकता, वह सिर्फ फल पैदा कर देता है। मनुष्य इस बात को समझें और समझकर इस तरह से चलें कि फल हमारे लिए ही नही दूसरों के लिए भी है तो हर तरह से सुन्दर काम हो सकता है। इस वक्त मैं चाहूंगा कि हमारे देश के लोग इस बात को समझें। एक वक्त था जब हम ब्रिटिश गवर्नमेंट के खिलाफ लड रहे थे, उस वक्त हम लोगो के लिए एक किस्म की कुरबानी की जरूरत थी। देश के लोगों ने आवश्यक कुरबानिया की तभी हम कामयाब हुए। यह नही समझना चाहिए कि वह उस वक्त के लिए था और अब जमाना बदल गया है, फल खाने का वक्त आ गया है क्योंकि हम में से प्रत्येक यह चाहे कि उसको फल मिलना चाहिए तो यह संभव नही हो सकता। कही-कही कुछ फल मिल जायं। अन्त में दरख्त सूख जायेगा। तो सोच-समझ कर सच्चे देश-प्रेम और सच्ची भावना के साथ आज जो कुछ देश की उन्नति के लिए किया जा रहा है, वह सब के लिए है और सब को मिलकर करना चाहिए।

तीसरी चीज़ आपस में मेल रहे। मेल न रहे तो जिन्दगी मुश्किल हो जाय। तो मनुष्य के लिए स्वार्थ छोड़ना निहायत जरूरी है। उसके दिल में प्रेम की भावना हो, दूसरो के साथ हमदर्दी और सहानुभूति रखने की भावना हो यह सब चीजें जरूरी है। जिस प्रकार शरीर स्वास्थ्य के लिए अच्छा मजबूत बदन चाहिए साथ ही दिमाग और चरित्र बल की भी जरूरत है। तो इस वक्त हम इसी तरह से मिल करके काम करें तो इस योजना को हम पूरा कर सकेंगे। सब से बड़ी चीज है देश को सुरक्षित रखना। देश को सुरक्षित रख सकते है तो दूसरों को भी सुरक्षित रख सकते है, वरना नही। नही तो दूसरो के कब्जे में जा सकते हैं। यह तभी हो सकेगा जब हम अपनी तरफ से कुछ कुरबानी करने के लिए तैयार

हो जायं, तभी हम इस चीज को सुरक्षित रख सकेंगे। नही तो यह तो वैसी ही चीज होगी कि सपने मे राजा हो गए और आख खुलते ही सपना टूट गया और राजा घबरा गया। अभी स्वतन्त्रता मिले दस, बारह वर्ष हो गए। हमें इस चीज की पूरी शिक्षा नही मिली, अभी हमारी मुस्तैदी नही हुई, अभी हम शायद इस प्रश्न को ठीक समझे भी नही कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश के लोगों पर कितनी बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है। पहले दूसरों पर भरोसा था अब हमें अपने पर भरोसा रखना चाहिए। आज सब से बड़ा कर्त्तव्य हमारा यही है कि देश की स्वतन्त्रता की रक्षा और उसे दुश्मनो के कब्जे मे नही जाने देना चाहिए। तभी वह स्वतन्त्र रहेगा और भी हम अपनी इच्छाओं के अनुसार इस देश को उन्नत कर सकेंगे। यदि स्वतन्त्रता नही रहती तो हम इस देश की उन्नति किस के लिए करे, दूसरो के लिए क्यों करे। दूसरो के हाथ में जाने देने में दूरन्देशी नही है। मै आप लोगों से यही कहना चाहता हूं। मै जानता हूं कि महात्मा गांधी जी के द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन में भी आपके जिले ने अच्छा काम किया है। अब इस वक्त जिस तरह का काम पड़ गया है उसमे भी आप वैसी कुरबानिया करें और उसी तरह से आगे बढें। म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन साहब और अन्य पदाधिकारियों को फिर से एक बार धन्यवाद करता हूं। मैं आशा करता हूं कि आप जिस उत्साह के साथ शहर का काम चला रहे है उसे जारी रखेगे और इसे और भी सुन्दर बनाएंगे और इससे भी ज्यादा यहा के लोगों के चरित्रों की ओर भी आप ध्यान दें।

75

श्मशान वाटिका में भाषण

देवियो और सज्जनो,

मैं आपका सब से पहले आभार प्रकट करना चाहता हूं कि आपने मुझे सवेरे-सवेरे यहां आने का मौका दिया और जो कुछ आप यहां कर रहे है उसका अवलोकन करने का मुझे सुअवसर मिला था। मनुष्य के लिए जो चीज वह चाहता है न मिलने पर उसे दु:ख या रंज होता है और जो चीज वह नही चाहता है उसके मिलने पर भी उसको ऐसा दु:ख होता है। इसी तरह से जिस चीज को वह चाहता है वह मिल जाती है तो उसको वैसी खुशी होती है, जिस चीज को वह नही चाहता है वह नही मिलती है तो भी उसको खुशी होती है। मनुष्य का शरीर ही कुछ ऐसा है। अभी चन्द दिन हुए मै सन्त विनोबा के गीता सम्बन्धी प्रवचन को पढ़ रहा था। उसमें उन्होंने यही कहा है कि हमारे देश मे हम शरीर को इतना महत्त्व देते है जितना उसको नही मिलना चाहिए और जो चीज वास्तव मे है, जो नेचर के खिलाफ हो उस चीज को तो हम रोक नही सकते, बचा नही सकते। शरीर को हम हमेशा के लिए कायम नही रख सकते और इसी तरह से आत्मा जो अमर है उसका भी हम कभी विनाश नही कर सकते। जो नश्वर है उसको हमेशा बनाए रखने का यह जो प्रयत्न किया जा रहा है वह अन्त में जाकर निष्फल रहेगा, केवल आत्मा ही अनश्वर है। क्योकि जन्म तो निश्चित नही है, जन्म अनिश्चित है मगर जन्म हो जाने के बाद, मृत्यु तो निश्चित है। वह कभी अनिश्चित नही है। अनिश्चित उसका समय हो सकता है। मगर वह वस्तु अवश्य होनेवाली है और वह कभी अनिश्चित नही कही जा सकती। इसलिए हम अपनी माया में पडकर, मोह में पड़कर जो अनिश्चित है उसकी आराधना करते हैं और उसको बचाए रखने की कोशिश में अपनी सारी जिन्दगी लगाना चाहते है। जब बच्चा निरीह रहता है, कुछ समझ नही सकता उसी समय से हम इस शरीर के महत्त्व को उसे सिखलाने लगते है। जैसे-जैसे वह बढ़ता जाता है वैसे-वैसे शरीर के लिए उसका मोह बढता जाता है। अगर बच्चा खेलता है तो मां हमेशा इस कोशिश मे रहती है कि वह गिर न जाय क्योंकि गिर जाय तो थोड़ी-सी चोट आ सकती है। उसके हाथ-पैर जख्मी हो सकते है। यही बच्चा मां-बाप से सीखता है। इसलिए उसके शरीर की रक्षा के लिए पैदाइश से जो प्रयत्न होते है वह मरने तक हमेशा जारी रहते है चाहे वह गरीब हो

बरेली की श्मशान वाटिका में भाषण; बरेली, 16 मई, 1960

या अमीर, चाहे वह किसान हो या किसी भी वर्ग या जाति का हो या किसी भी देश का हो। विनोबाजी का ही नही शास्त्रों का भी यही मत है कि शरीर नश्वर है और यद्यपि उसे अच्छी तरह रखने की आवश्यकता है। उसको अच्छा इसलिए बनाकर रखना है क्योंकि उसके द्वारा अच्छा और सुन्दर काम हो सके जिसमें उससे सेवा हो सके। इसलिए उन्होंने यही मिसाल दी है। जिस तरह से हम रेलगाड़ी के इंजन में कोयला देते हैं जिसकी वजह से वह रेल चले, मनुष्य के लिए भी अपने शरीर को कुछ खाना देना जरूरी है जिससे शरीर आवश्यक काम कर सके। मगर हमारी कुछ ऐसी धारणा बन गई है कि घर में मृत्यु का नाम लेना भी अशुभ समझा जाता है और मर जाने के बाद भी बहुत से लोगो को गम होता है। हजारों तरीकों से अपने दु:ख को व्यक्त करते है। मनुष्य का अंतिम ध्येय क्या हो सकता है इसको समझना हम भूल गए। देह को मजबूत बनाना और सुन्दर बनाना यही हमारा ध्येय अब मालूम होता है। जब कोई श्मशान जाता है और वहां दूसरों के शरीरो को भस्मीभूत होते हुए देखता है उसके हृदय में ज्ञान पैदा होता है। दु.ख और सुख को श्मशान ज्ञान कहते है। जितना श्मशान ज्ञान मशहूर है उतना यह भी मशहूर है कि श्मशान ज्ञान स्थायी नहीं होता है। वहां से हटते ही लोग सब बातें भूल जाते है।

आपने जो यहां ज्ञान का रूप दे दिया और इस जगह को साफ और सुन्दर बनाया उससे मुझे आशा है कि मृत्यु से भय लोगो का कुछ कम होगा और श्मशान मे जाने का भी भय कम होगा। मैं आशा करता हूं कि जिस उद्देश्य से आपने इसको बनाया शंकर को याद करके उस श्मशान ज्ञान को स्थायित्व आप दे सकते हैं। मुझे इस बात की खुशी है कि मै यहां आ सका। मैं नही जानता और भी इस तरह के है या नही। मगर श्मशान को यहां जो रूप दिया गया है वह अच्छा है और उससे श्मशान के प्रति लोगो का भय कुछ कम जरूर होगा।

भरपट भोजन संसार में सब को मिलना चाहिये

मुझे खुशी है कि संयुक्त राष्ट्र की खाद्य और कृषि संस्था के तत्वावधान में आयोजित "भूख से छुटकारा आन्दोलन" का भारत में उद्घाटन करने के लिए मुझ से कहा गया है। मानव सभ्यता के आरम्भ से ही भूख के विरुद्ध समाज की लड़ाई चल रही है। आज संसार में थोड़े ही देश ऐसे हैं जो इतना पैदा कर पाते हों जितना उन्हें खाने के लिए चाहिए। खेती-बाड़ी का काम हर देश के राष्ट्रीय कार्यक्रम की परिधि में आता है, किन्तु संसार के सभी लोगों की खाने-पीने की जरूरतें पूरी हों इस सवाल का सम्बन्ध सारी दुनिया से है। इसलिए मैं समझता हूं यह ठीक ही है कि भूख से छुटकारा पाने का आन्दोलन अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य और कृषि संस्था की देखरेख में शुरू किया जा रहा है। इस संस्था, के भारत समेत, 88 सदस्य हैं और यह आन्दोलन उन सब को इस बात की याद दिलाता है कि उन्हें पूरा जोर लगा कर खुराक की समस्या को हल करना चाहिए। हमें इस बात से सन्तोष होता है कि इस नाजुक समय में इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के अध्यक्ष एक भारतीय अधिकारी हैं।

विज्ञान और टेक्नोलोजी की सर्वांगीण उन्नति और कुछ देशों के खेती के सुधरे हुए तरीकों को देखकर, हो सकता है हमें इस समस्या की भयानकता के दर्शन करने में कठिनाई हो। वस्तुस्थिति को ठीक-ठीक समझ लेना हमारे लिए अच्छा होगा। यह सच है कि दुनिया के इतिहास में अनाज की इतनी पैदावार पहले कभी नहीं हुई जितनी आज होती है, पर फिर भी प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसकी आवश्यकता के अनुसार खुराक उपलब्ध करने के लक्ष्य से अभी हम बहुत दूर हैं। वास्तव में खाद्य सम्बन्धी स्थिति जितनी चिन्ताजनक आज है उतनी पहले कभी नहीं हुई। इसका क्या कारण है। सब से बड़ा कारण संसार की आबादी में अभूतपूर्व वृद्धि है। 1650 से 1850 तक दो सौ वर्षों में दुनिया की आबादी दुगुनी हो गई। उसके बाद 1950 तक सौ वर्षों में फिर दुगुनी हो गई। जिस रफ्तार से आबादी बढ़ रही है उससे जान पड़ता है कि यह बराबर बढ़ती रहेगी और खुराक की समस्या व्यापक क्षेत्रों में गम्भीर बनी रहेगी। आज स्थिति बहुत चिन्ताजनक है और यदि संसार के देश पैदावार बढ़ाने के लिए ठोस कदम नहीं उठाएंगे तो भूख किसी भी युद्ध के अस्त्र की तरह विध्वंसक हो सकती है। इसलिए मानव समाज की सर्वप्रथम आवश्यकता यह है कि हमारी जरूरतों और संसार की बढ़ती हुई आबादी के साथ-साथ अनाज की पैदावार में भी वृद्धि हो।

भूख से छुटकारा आन्दोलन में भाषण; 25 मई, 1960

मैंने जो कुछ अभी ससार की स्थिति के बारे में कहा, पूरे जोर के साथ वह सब हमारे देश पर लागू होता है, जहा कि खुराक और पोषण सम्बन्धी मानक अत्यधिक नीचे है। खाद्य तथा कृषि संस्था के अधिकारपत्र के अन्तर्गत अपनी जिम्मेदारियो को निभाने का सर्वोत्तम उपाय हमारे लिए यह है कि हम अपने देश की पैदावार को अधिक से अधिक बढ़ाने का यत्न करें। हमारे देश की आबादी ससार की कुल जनसंख्या का पांचवा हिस्सा है। यह ठीक है कि अनाज की पैदावार हमारे देश मे बढ़ रही है। अपनी पहली और दूसरी पंचवर्षीय योजनाओ मे निर्धारित पैदावार के लक्ष्यो को हम प्राप्त कर चुके है। इसके अतिरिक्त देश के महत्त्वपूर्ण उद्योगों को चालू रखने के लिए हम जूट, रुई, तिलहन और गन्ना भी काफी मिकदार मे पैदा करते है। फिर भी इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि भारत के लिए जितना अनाज हमें चाहिए हम उतना नही पैदा कर पा रहे। हमारी खुराक असन्तुलित ही नही बल्कि पोषण की दृष्टि से अभावपूर्ण भी है। प्रत्येक व्यक्ति पीछे हमारे यहा कपडे की खपत भी शायद संसार भर मे सबसे कम है। हमारे देश के विस्तृत क्षेत्रो मे धरती के कटाव के कारण भूमि दिनोदिन अपना उर्वरापन खोती जा रही है। हमारे किसानों की आमदनी बेहद कम ही नही बल्कि सर्वथा मौसम अनिश्चित पर निर्भर रहने के कारण बहुत ही अनियमित भी है। दूसरी तरफ हमारी आबादी बराबर बढती जा रही है और तीसरी योजना के अन्त तक यह बढ़कर 48 करोड तक पहुच जा सकती है।

यह सब बाते कष्टप्रद और हमारे राष्ट्र के लिए, जो प्रधानतम खेतीहरों का देश है, लज्जाजनक है। यदि हमे स्थिति की चुनौती को स्वीकार करना है तो हमें पैदावार बढानी चाहिए और खेती के ऐसे सन्तुलित कार्यक्रम पर अमल करना चाहिए जिसमें हमारी निरन्तर बढती हुई शहरी आबादी की खूराक मे सुधार के लिए फलो, सब्जियों, घी, दूध और अण्डे-मुर्गी के उत्पादन की भी व्यवस्था हो। यह स्पष्ट है कि हमारे आयोजकों ने जो लक्ष्य निर्धारित किए हैं वे तभी प्राप्त किए जा सकते है जब सरकार, किसान, वैज्ञानिक और जन-साधारण के पूर्ण सहयोग के साथ एक सर्वांगीण खाद्य कार्यक्रम के अनुसार काम किया जाय।

अनाजों की पैदावार को उच्चतम प्राथमिकता देने के सम्बन्ध में सरकार आज जितनी जागरूक है उतनी पहले कभी नही थी। हमारी तीसरी पंचवर्षीय योजना को इस समय अन्तिम रूप दिया जा रहा है। इसमें खेती सम्बन्धी कार्यक्रमों

के लिए 600 करोड़ रुपये, छोटी-बडी सिंचाई योजनाओं के लिए 650 करोड रुपये, सहकारिता और सामुदायिक विकास के लिए 400 करोड़ रुपये और किसानों के लिए खाद उपलब्ध करने के हेतु 240 करोड रुपये की व्यवस्था रासायनिक खाद बनाने के कारखानों के लिए की गई है। यह सब योजनाए पैदावार बढ़ाने के उद्देश्य से किसानो की मदद करने के लिए बनाई गई है। किन्तु इस प्रकार की सहायक योजनाएं तभी सफल हो सकती है जब किसानो और खेतीहरों का उनके प्रयोग के सम्बन्ध मे पूरी तरह पथ-प्रदर्शन किया जाय। इसके लिए हमें देश-व्यापक आन्दोलन की जरूरत है। राष्ट्र के उच्च नेता, ग्रामों के नेता और संस्थाओं को इस आन्दोलन मे भाग लेना चाहिए जिससे कि वे लोग जो खेती के काम मे लगे है प्रेरित हो सकें और हमारे कार्यक्रम प्रत्येक गाव और हरेक किसान तक पहुच सके। भूख और अनाज की कमी के कारण जो भयानक हानि पहुच रही है उसे कम करने के लिए परिस्थितियो ने वैज्ञानिको को ऐसी चुनौती पहले कभी नही दी होगी। आमतौर से हमारे देश की भूमि उपजाऊ है और यदि हमारे जल साधनों का पूरा-पूरा उपयोग किया जाय, हमारे यहा पानी की भी कमी नही। प्रत्येक एकड पीछे पैदावार बढाने के लिए हमें केवल प्रयत्नो, वैज्ञानिक तरीको के प्रयोग और औजारो की जरूरत है। इसलिए यह चिन्ता केवल साधारण किसान के लिए नही बल्कि हमारे वैज्ञानिको और टैक्नीशियनों तथा सरकार के लिए भी है। इन सबका यह कर्त्तव्य है कि वे इस सहयोग और सम्मिलित प्रयत्न द्वारा इस समस्या को सुलझाएं। ऐसा करने से हम एक महान चिन्ता और सदा के सिर दर्द को ही दूर नही करेगे बल्कि इस दिशा में समार की स्थिति को दृढ करने मे भी सहायक होगे।

सौभाग्य से इस बात का काफी प्रमाण मौजूद है कि आर्थिक विकास और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग द्वारा खेती की पैदावार बढ़ाने के सम्बन्ध मे बड़े राष्ट्र अपने कर्त्तव्य की ओर अधिकाधिक जागरूक होते जा रहे है। इस सम्बन्ध मे हम पी०एल० 480 कार्यक्रम के अन्तर्गत 1 करोड़ 70 लाख टन अनाज भारत को दिए जाने के हेतु हाल मे हुए समझौते का स्वागत करते है, जो संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की ओर से हमारे राष्ट्रीय विकास के हित मे हमारी सहायता के लिए एक सद्भावना पूर्ण सकेत है।

मुझे पूर्ण आशा है कि सहयोग की यह भावना दृढ़ होगी और इसके फलस्वरूप "भूख से छुटकारा आन्दोलन", जिसका दुनिया भर में आज उद्घाटन

हो रहा है, कम विकसित क्षेत्रों की स्थिति में सुधार करने और मानव समाज के लिए विपत्ति और लज्जा का कारण अर्थात् भुखमरी दूर करने में अधिक सफल हो सकेगा ।

शिमला के नागरिकों द्वारा सम्मान

राज्यपाल महोदय, देवियो और सज्जनो,

जब-जब मुझे शिमले मे आने का सुअवसर मिला है, आपने बहुत प्रेम और श्रद्धा के साथ मेरा स्वागत किया है और उसी रीति से आज भी आपने स्वागत किया है। इस बात के लिए मै बहुत आपका आभार मानता हूं। आपने ठीक कहा है कि अग्रेज शासन के जमाने मे शिमला राजधानी का स्थान रखता था और इसलिए उस समय का शासक-वर्ग प्राय: 6 महीने यहा पर बिताया करता था चाहे भारत सरकार का हो, चाहे पजाब सरकार का हो। तो कुछ समय का ऐसा फेर हुआ जिसकी वजह से दोनो सरकारे यहां से अपना केन्द्र-स्थान हटाकर के दूसरी जगह ले गई और इसलिए अब सरकार के दफ्तरों के आने का वह तरीका जारी नही रह सका। मगर तो भी, एक दूसरे प्रकार से इस कमी को दूर करने के लिए कुछ न कुछ किया जा रहा है। और इसलिए भारत सरकार के कई दफ्तर यहा आ गए हैं और अगर जगह मिली और उपयुक्त स्थान यहा मिला, लोगो के रहने का भी, तो और भी दफ्तर यहा आ सकते है। मगर मैंने सुना है कि जगह की कमी महसूस होने लगी है और इस वजह से मुमकिन है कि शायद इसमे कोई दिक्कत आवे क्योंकि जो हिमाचल प्रदेश की सरकार है, उसके लिए भी, अभी इस बात की शिकायत सुनने मे आती है कि जितनी जगह चाहिए और जिस तरह के सुभीते के मकान चाहिएं वे अभी उसको पूरी तरह से नही मिल पाए है। तो ऐसी स्थिति मे, भारत सरकार के या पजाब सरकार के नए दफ्तरो के न आने में जरूर कुछ न कुछ दिक्कत होती रहेगी मगर अगर यह रास्ता साफ रहा और जगह मिली तो लोग जरूर सोचेंगे कि शिमला जैसी जगह को क्यो छोड़ दिया जाय। आपने जो मानपत्र दिया है उसमे कई बातो की आपकी तरफ से माग की गई है। जहा तक हिमाचल प्रदेश अथवा पजाब प्रदेश सरकारों का ताल्लुक है, दोनो के राज्यपाल अभी इस वक्त यहा मौजूद है और उन्होंने आपकी दरखास्ते सुन ली है और मै भी अपनी तरफ से जो कुछ उन सरकारो से मांगे है उनके सम्बन्ध मे उनके पास लिखवा भेजूगा और मै आशा रखता हूं कि उन सब चीजों पर सहानुभूतिपूर्वक सब विचार करेंगे। आपने मदद की बात कही है। यह सही है कि इस जमाने मे भारत सरकार पंजाब सरकार की काफी

नागरिकों के द्वारा दिए गए सम्मान के उत्तर मे भाषण; शिमला, 29 मई, 1960

रकम मे मदद किया करती थी और वह उनके घर-बार हट जाने की वजह से मुमकिन है कि वह मदद बन्द हो गई है या कम हो गई है। इस वक्त सरकर से तरह-तरह की मांगें है और सभी जगहों से तरह-तरह की शिकायते इस बात की पहुचती रहती है यहा की यह जरूरत पूरी नही हुई वहां की वह जरूरत पूरी नही हुई और उनको इनमें से तय करके कुछ न कुछ निश्चय करना पड़ रहा है कहा किस माग को मदद दी जाय और उसके मुताबिक वह जो मुनासिब समझते है मदद दिया करते है। मै आशा करता हूं कि आपकी दरखास्तों पर भी उसी प्रकार से सहानुभूतिपूर्वक विचार होगा और जो मुनासिब समझेगे वह वे लोग जरूर करेगे। आपने एक बात कही वह यह कि इस शहर के अन्दर इस वक्त बड़े-बड़े अस्पताल है। यह खुशी की बात है, खुशी की बात इसलिए भी है कि लोग बाहर से आते है उनको मौका मिलता है, खास शिमले के जो रहनेवाले है उनको भी फायदा मिलता है, इसके अलावा मै समझता हू कि शहर के लोग, गांव के लोग इनसे कुछ न कुछ लाभ जरूर उठाते होंगे। ऐसी स्थिति मे यहा पर मेडिकल कालेज का होना अच्छा ही हुआ और मुझे यह जानकर खुशी हुई कि हिमाचल प्रदेश सरकार की ओर से इस बात का विचार हो रहा है और वह बात बहुत आगे तक बढ़ गई है और आशा है जल्दी ही एक मेडिकल कालेज हिमाचल प्रदेश, शिमले के आसपास चाहे कही जगह मिले, वहां हो जाएगा। अगर यह हो गया तो आपकी जरूरत पूरी हो जायगी साथ ही साथ और भी एक जरिया सब के लिए खुल जायगा कि लोग यहा अधिक मात्रा मे आ सकें और दूसरे लोग इस कालेज से तथा इन अस्पतालों से लाभ उठावें। आपने यह कहा है कि जो लोग सैर के लिए सालाना यहां आते है उनके भी यहा आने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। जहा तक हो सकता है सभी जगह जिसको जहां की रुचि जैसी हो जाती है ले जाने का प्रयत्न करते है। आपकी दरखास्त को मै उस दफ्तर के पास भेज दूगा जिनको इस विषय में विचार करना और निश्चय करना है। सारे भारतवर्ष मे इस वक्त बहुत बड़े-बडे काम हाथ में लिए गए है और पुराने शहर जो है वे बहुत नए शहर बना दिए जा रहे है और सारे देश में इस बात की कोशिश की जा रही है कि किस तरह से लोगों के जीवन के स्तर को ऊंचा किया जाय, उनकी आमदनी बढ़े जिसमें वे अपने जीवन में सुख से रह सकें। दिक्कतें बहुत हैं और काम बहुत बड़ा है। गवर्नमेंट इस बात की, जहां तक हो सकता है, कोशिश कर रही है कि लोगों की हर तरह की मदद करनी चाहिए। पैसे की मदद जो हो सकती है होगी, लेकिन लोगों को ऐसे काम में उत्साह होना चाहिए

ग्रौर उत्साह के साथ लोग इन कामों को ग्रपना काम समझकर उनमे हाथ बटाएंगे। यह भी ग्राशा रखी जाती है कि सारे देश के लोग इस वक्त इस प्रयत्न मे जहां तक हो सके ग्रपनी ग्रोर से मदद करें। ग्रापको यह भी इस वक्त याद रखना है कि हिन्दुस्तान में, शिमला पहाड़ी इलाके में स्थित है ग्रौर यह वह पहाड़ी इलाका है जो हिमालय के बाजू मे है ग्रौर यहां से तिब्बत का रास्ता भी निकलता है ग्रौर ग्राप इस बात को भूल नही सकते है कि ग्रगर हिन्दुस्तान पर खासकर के तिब्बत की तरफ से ग्रगर कभी कोई खतरा ग्राया तो ग्राप महफूज नही रह सकेंगे। प्रत्येक भारतवासी को यह समझना जरूरी है कि भारतवर्ष का चप्पा-चप्पा उसकी जमीन का जर्रा-जर्रा उसका ग्रपना है ग्रौर चाह कुछ भी हो उसकी रक्षा करना, उसको सुरक्षित रखना उसको हर तरह के खतरे से बचाकर हमेशा के लिए महफूज रखना हरेक भारतवासी का धर्म है। कन्याकुमारी में चाहे वह रहता है चाहे हिमालय में, चाहे किसी भी हिस्से मे, हममें से हरेक को तैयार रहना है कि हम किस तरह से देश की रक्षा कर सकेंगे। इस मौके पर मै ग्रापको एक चीज की याद दिला दू कि ग्राप भी ग्रपनी तरफ से हमेशा इस बात के लिए तैयार रहें कि जब जरूरत पड़े मुल्क को बचाने के लिए, मुल्क की हिफाजत के लिए हर तरह की कुर्बानी करने के लिए तैयार रहेंगे। यदि हम स्वतन्त्र हो गए है तो उस स्वतन्त्रता को कायम रखना भी जरूरी है। हरेक ग्रादमी इस जरूरत को महसूस करे कि यह स्वतन्त्रता तभी कायम रह सकती है जब हरेक ग्रादमी इसको महफूज रखने के लिए तैयार रहेगा, ग्रौर ग्रगर किसी ने गफलत की है, चाहे वह किसी भी भाग में क्यों न हो, मुल्क की बर्बादी होगी, इसलिए इस स्वतन्त्रता को कायम रखना हरेक का सबसे बड़ा पहला कर्तव्य है। मैं ग्राशा करता हूं कि शिमले के लोग सिर्फ खास शिमले के लोग ही नही है, भारतवर्ष के दूसरे हिस्से के लोग भी बसते हैं वे इस चीज को ग्रौर ग्रच्छी तरह से महसूस करेंगे कि उनकी हिफाजत के लिए उसी तरीके से तैयार रहना है जिस तरीके से ग्राज शिमले के लोगों से उम्मीद रखी जाती है कि कोई खतरा ग्रावे तो उसकी हिफाजत के लिए तैयार रहेगे। ग्राप सब इस बात को महसूस करेंगे। ग्राप सबको मैं एक बार ग्रौर धन्यवाद करता हूं कि ग्रापने मेरा मान बढ़ाया है।

बिशप काटन स्कूल में

बिशप काटन स्कूल के हेडमास्टर साहब, बोर्ड के मैम्बरो, बहिनो और भाइयो, स्कूल के बच्चो,

मुझे इस बात की खुशी है कि आज मै कई बरसो से इतजार करने के बाद आपके इस स्कूल के समारोह मे शरीक हो सका। जहा तक मै ख्याल करता हूं, दो बरस या तीन बरस हुए होंगे जब मुझे यहा आने के लिए पहले-पहल निमन्त्रण दिया गया था। मगर किसी न किसी कारणवश मै या तो शिमला ही नहीं आया या अगर आया भी तो इस स्कूल में आने का मुझे समय नहीं मिल सका। इसलिए आज मेरी खुशी और भी ज्यादा है क्योंकि मै आज ही फिर शिमला पहुंचा हूं और यदि कोई दूसरी बात आ जाती तो मुमकिन था आज का आना भी मेरा संभव नही होता। मगर ईश्वर की दया से मै पहुंच गया हूं और आप सब से मिल सका।

हिन्दुस्तान में आजकल यों शिक्षा का प्रश्न बहुत ही जटिल और कठिन होता जा रहा है। हम लोग एक ऐसे जमाने में से गुजर रहे हैं जब हमारी बहुत सी पुरानी बातें हम भूल गए या भूलते जा रहे हैं और जो विज्ञान की नई चीजे है अभी पूरी तरह से मालूम नही हो पाई है या उनको हम अच्छी तरह से जान नही पाए। इसलिए जब मै यह देखता हूं कि वह वक्त जब मै इन बच्चों की तरह से किसी स्कूल मे पढ़ता था, उस वक्त क्या हालत थी और आज हिन्दुस्तान मे, करीब-करीब 60, 65 बरस के बाद क्या हालत हो रही है तो मुझे इसमे आश्चर्य नही होता कि आज शिक्षा की मांग सारे देश में इतने बड़े पैमाने में की जाती है और काफी बढ़ गई है। मै समझता हूं कि उस जमाने के मुकाबले में आज जिस तरह की शिक्षा हमारे स्कूल, कालेज और यूनिवर्सिटियो द्वारा मिलती है, शिक्षा की मांग करीब-करीब 50 गुना बढ़ गई है और उसी हिसाब से स्कूलों और कालेजों की संख्या भी जो 1900 या 1901 में थी उससे 50 गुना बढ़ गई है। तो यह एक तरह से बहुत ही शुभ लक्षण है। मगर इसके साथ-साथ दिक्कतें काफी बढ़ती गईं। बिशप काटन जैसे पब्लिक स्कूलों की जरूरत सारे देश में आज भी लोग महसूस करते है और यही वजह है आज, जैसा कि आपने कहा, बहुत दरख्वास्ते आती हैं और आपको उनमें से चुनकर के कुछ लड़कों को लेना पड़ता है और कुछ को आप अपने यहां दाखिला नही दिला सकते। और यही कैफियत मुल्क-भर

बिशप काटन स्कूल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर भाषण; शिमला, 1 जून, 1960

के स्कूलों की है । तो जहा एक तरफ से शिक्षा का फैलाव बढ़ता जा रहा है दूसरी ओर हम यह भी देखते हैं कि शिक्षा का स्तर कुछ गिरता जा रहा है और जो स्टैन्डर्ड पहले था वह स्टैन्डर्ड शायद आज नहीं है और उसका खास कारण जहां तक मैं सोच सकता हूं यह है कि शिक्षक और विद्यार्थियों के दर्मियान मे जितना सपर्क और जितना एक दूसरे के साथ मेल-मुरव्वत होना चाहिए वह आज नही है और यही कारण है कि लडकों पर शिक्षकों का उतना असर नही पडता, न तो उनके दिमाग इतने खिल पाते हैं और न उनका चरित्र उतना अच्छा हो सकता है, जितना अच्छा उसका होना चाहिए । हमारी पुरानी प्रथा यही थी, गुरुकुल मे जाकर विद्यार्थी चाहे वह गरीब से गरीब घर का हो, चाहे राजा के घर का हो, गुरुकुल में जाकर रहता था और सब विद्यार्थियो के साथ रहता था और गुरु के हाथ की शिक्षा पाता था। इसका नतीजा यह होता था गुरु के चरित्र और स्वभाव का असर बच्चे के दिल पर पडता था और जो प्रभाव छोटी उम्र में स्कूल के वक्त पड जाता है वह बहुत दिन तक रहता है । आज उसका अभाव है और इस वजह से जहा-तहा विद्यार्थियो मे, कही किसी बात को लेकर और कही किसी बात को लेकर, तरह-तरह के झगडे खडे हो जाते हैं और कही-कही तो शिक्षक और विद्यार्थी को जहा एक दूसरे के साथ प्रेम के साथ रहना चाहिए वे एक दूसरे के दुश्मन बन रहे हैं । तो जहा तक मैं सोच सकता हू इस ऐब को दूर करने का एक ही रास्ता है वह यह है कि शिक्षक और विद्यार्थी के दर्मियान में गहरा ताल्लुक, खूब नजदीक का संपर्क कायम हो जाय । जिसमें बच्चे गुरु से बहुत कुछ सीख सके, ले सकें और सबसे अधिक उसके चरित्र पर गुरु के चरित्र का असर अच्छी तरह से पड़ सके । इस तरह के पब्लिक स्कूल्स मे मैं देखता हूं और दूसरे स्कूलो में यह जो बड़ी कमी दिखाई दे रही है, नही है और यह कमी न होने के कारण ही उन स्कूलो के जो विद्यार्थी निकलते है वे बहुत सुलझे हुए निकलते है । आज सारे हिन्दुस्तान मे इस प्रकार के स्कूलों को कायम करना तो हमारे लिए सभव नही है क्योंकि अगर स्कूल अच्छे हैं तो खर्च भी ज्यादा पड़ता है और स्कूलों के मुकाबले में । न तो इतना खर्च गवर्नमेंट बर्दाश्त कर सकती है और न हमारे देश के लोग जिनको भोजन भी पूरा नहीं है वे यह ज्यादा खर्च बर्दाश्त कर सकते है ।

इस वजह से कुछ पिछड़े हुए स्कूल इस मुल्क में इतनी तादाद में चल रहे है और उनकी तादाद दिन-प्रति-दिन बढती जा रही है । इन स्कूलों को

सुधारने का एक रास्ता यही है कि उनके सामने कुछ ऐसे स्कूल कायम करे जिनको वे अपना आदर्श मानकर उनके पीछे चलने का कुछ न कुछ थोड़ा-बहुत प्रयत्न करते रहे और मेरा खयाल है कि इस किस्म के पब्लिक स्कूल इस तरह के आदर्श को पेश कर सकते है जिनमें बहुत कुछ स्कूल के शिक्षको से स्कूल के विद्यार्थी जान सकते है और सीख सकते है। आपने कहा कि आपकी शताब्दी मनाने के लिए आपने पारसाल समारोह किया था और स्कूल की तरक्की हुई और आप लोग इसी सिलसिले मे कुछ पैसा जमा करने का प्रयत्न कर रहे है, यह बड़ी खुशी की बात है। जैसा कि आपने कहा बिशप काटन अगर आज जिन्दा होते उनको यह देखकर खुशी होती कि 100 बरसो के बाद जिस पौधे को लगाया है वह पौधा आज बढ़कर फूलता-फलता जा रहा है और उसके निकले हुए फल और जगहो मे भी बीज का काम कर रहे है जब दूसरी जगहो मे इस तरह के शिक्षा के प्रचार मे यहा से निकले विद्यार्थी लग जाते है। मै इतना ही कहूंगा कि इस तरह से एक प्रकार से स्वतन्त्र रूप से बिना गवर्नमेंट की मदद के स्कूल चलते आए है और साधारण मदद के साथ उनका काम चलता आया है। आपने कहा कि गवर्नमेंट के ऊपर इस वक्त इतने प्रकार के तकाजे, इतनी मांगें है कि वह बहुत कुछ मदद नही कर सकती। हा, मदद करने की स्कीमे है और जहां तक मै जानता हू वे मदद करना भी चाहती है मगर यह भी विचार एक तरह से लाजमी हो जाता है कि वह इस बात की पूरी तरह से मदद नही कर सकती क्योंकि जो प्राइमरी स्कूल है जिसको वह सबसे जरूरी समझती है अभी प्राइमरी स्कूल्स के लिए भी काफी द्रव्य चाहिए, उतना उनके पास मौजूद नही है। तो हम तो इस चीज को मानते है कि इस प्रकार की शिक्षा ही है जो लड़कों की बुद्धि का विकास करती, उनका चरित्र बनाती और एक दूसरे के साथ मेल-जोल से काम करने के आदी भी बनाती है। यह सब उनके लिए तो अच्छा ही है और उनके मार्फत देश के लिए भी बहुत अच्छा होता है। साथ ही हमको यह देखना है कि सारे देश को किस तरह से उस स्तर तक हम पहुंचावे और जहा तक हो सके जो जहां है वहां पर इस चीज को पूरा करने मे मदद करना भी उसके लिए लाजमी है। इसलिए ऐसे स्कूल्स से भी यह आशा रखी जाती है कि उनके विद्यार्थी निकल करके शिक्षा के काम में जहा-तहां लग जाएंगे और शिक्षक के काम में लग जाएंगे और जो कुछ वह यहा पायेंगे उसको ले जाकर दूसरों मे बाट देंगे और यह परम्परा और भी अधिक देश के लिए अच्छी साबित हो सकती है और इससे और भी लाभ हो सकता है।

मै उन सभी विद्यार्थियों को, जिन्होंने अभी मेरे हाथ से इनाम पाये, बधाई देता हूं और मै अपने अनुभव से कह सकता हूं कि स्कूल के प्राइज डिस्ट्रिब्यूशन के वक्त प्राइज पाने से बच्चो के दिलो मे कितनी बड़ी खुशी होती है। मै आशा रखता हूं कि जिन्होने इस बार प्राइज नही पाये वे अपने को कुछ योग्य बना ले जिससे उनको अगले बरस मे प्राइज मिले।

आज तो हमारे देश की स्थिति ऐसी हो गई है कि हम छोटे से छोटे से लेकर और बडे से बड़े तक बन जाते है क्योकि जैसा हमारा राजकीय विधान बना है, जो कान्स्टिटयूशन बना है, उसमें एक महज देहाती, गाव के मेरे जैसे आदमी को प्रेसिडेन्ट बनाने का मौका मिला है तो हमारे गांव-गाव के बच्चो मे ऐसे निकले जो स्कूलों, कालेजो मे और यूनिवर्सिटियों में प्राइज पावें, देश के प्रेसिडेण्ट बन सके और भी बडे-बडे ओहदे जितने हो सकते है पहुंच सके। हरेक आदमी को यह आशा रखनी चाहिए अपने दिल के अन्दर उम्मीद रखनी चाहिए कि हम भी वहा तक पहुंच सकते है और अपने साहस और अपने परिश्रम से अपने उत्साह से ऊंचे से ऊंचे पद तक पहुंचने का प्रयत्न करना चाहिए। साथ ही मै आपको यह भी वार्निग दे देना चाहता हूं कि काम करो, दिल लगाकर करो, मगर यह आशा या उम्मीद लगाकर मत करो कि फल मिलना चाहिए, उम्मीद लगाकर करने से बडी परेशानी होती है और बड़ी ना-उम्मीदी होती है। अगर हम करम करते है तो उसका जो कुछ नतीजा होगा वह मिलेगा। नही सोचने से नही मिलेगा ऐसी कोई बात नही। नतीजा तो काम का फल होता है। सोचने से कोई फल नही मिलता। अगर किसी भी वजह से, किसी भी कारण से जहां तक मन्सूबा बांध कर रखते है वहां तक पहुंच गए तो खुशी होती है और अगर नही पहुंचे तो दुख होता है। इसलिए मोटी सी बात मगर बहुत गहरी बात जो हमारे पूर्वजों ने हम को सिखाई, जो गीता का सबसे बडा पाठ हमको मिला है वह यही है कि काम करते जाओ, फल की कोई आशा मत रखो या न करो काम करना ही उस काम का सबसे बड़ा फल है और दूसरी चीज जो मिलती है वह समझो ऊपर से कुछ मिल गई है। मै यह उम्मीद रखूगा कि इस भावना को लेकर के यहां के बच्चे अपने लिए ही नही, देश के लिए, समाज के लिए और सबके लिए काम करते रहेंगे और काम करते रहना चाहिए। मै सबको एक बार बधाई देता हूं खासकर के हैडमास्टर साहब और बोर्ड के लोगो का धन्यवाद करता हू कि उन्होंने मुझे यह मौका दिया। मुझे एक बात और याद आ रही

है। मैं जब बच्चा था तब कोई बड़े आदमी स्कूल में आते तो एक दिन की छुट्टी जो देते थे तो मैं बहुत खुश हुआ करता था। मै हैडमास्टर साहब से दरखास्त करूंगा कि वह इन बच्चो को दो दिन की छुट्टी दे दें तो मै भी ममनून हो जाऊंगा और बच्चे भी खुश हो जाएंगे।

सर्वोदय बाल आश्रम में

प्यारे बच्चो और बच्चियो,

कुछ दिन हुए मुझ से बहिन अम्तुस सलाम ने कहा कि मुझे इस आश्रम को देखना चाहिए क्योंकि यहा पर गौरा देवी जी बहुत दिनो से गरीब बच्चो की सेवा कर रही है। मैंने उसी समय निश्चय कर लिया कि किसी न किसी दिन मैं आकर इन बच्चो से मिल लू और इसलिए आज मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आज तुम सबसे मैं मिल सका और तुमने कुछ गान नाच दिखलाकर मुझे खुश भी किया। इस प्रकार के आश्रम आज भी देश मे जहा-तहा इक्के-दुक्के खड़े है और सेवा का काम कर रहे है। इन आश्रमो के द्वारा यह आशा की जाती ह कि जो बच्चे यहा शिक्षा पायेगे वे सच्चरित्र, सच्चे, अच्छे बच्चे तैयार होंगे और इस तरह के बच्चो से ही यह उम्मीद की जा सकती है कि वे देश के, समाज के रहनेवाले सभी भाई बहिनो की सेवा कर सकते है। तुम जो यहा पढ़ रहे हो और सीख रहे हो यह याद रखो यह चीज जो तुमको यहा मिलेगी वह सिर्फ अपने लिये ही नही मिलेगी बल्कि उसको जाकर के दूसरो को बाटना होगा। विद्या एक ऐसी चीज है जो बाटनेसे बढती है, घटती नही। तुम जो यहा से सीख करके जाओ, जिसको जहा मौका हो, जिसको जिस जगह पर रहने का, काम करने का सुअवसर मिले वही अपने चारो तरफ कुछ काम फैला करके दिखलाकर के लोगो की सेवा करे। मुझे याद है कि बहुत दिन पहले, 1922 या 24 की बात होगी, जिस वक्त यहा जितने लोग है उनमे अधिकाश लोग जन्मे भी न हो, राजगोपालाचारी ने पटने मे, बिहार विद्यापीठ के भाषण मे एक बात कही थी। उन्होने कहा था कि 1921 साल मे महात्मा गान्धी जी ने सारे देश भर मे जो जागृति फैलायी और जो रोशनी निकली उसी मे इस प्रकार के दिये जहा-तहा एक-एक करके टिमटिमाते है। मुझे आज बात याद आती है। उस समय तो शायद आज से भी ज्यादा दिये टिमटिमाते हो मगर दिये का यह गुण है एक दिये से आप हजार दिये जला सकते है और अगर उसका ठीक उपयोग कर लिया जाए तो जो छोटा काम देखने मे आता है वह बड़ा काम हो सकता है। तो मैं तो इन आश्रमों से यही आशा रखता हू कि यहा का एक-एक बच्चा एक-एक दिये का काम करेगा और वह दिया ऐसा जो केवल जिस जगह पर जलेगा वही रोशनी नहीं करेगा बल्कि एक साधन बन जायगा जिसके जरिये से और अनेकानेक

सर्वोदय बाल आश्रम मे भाषण; शिमला, 7 जून, 1960

दिये जलते रहेंगे और चारों तरफ रोशनी फैलायेंगे। मैं इसलिये जब कभी मौका मिलता है और कुछ नही कर सकता हू तो कम से कम जाकर के इन भावी दियों को देख लेता हूं और उनसे मिल लेता हूं। हो सकता है कि उनके जरिये से काम आगे बढ़े। मैं आशा रखता हू कि ये बच्चे जिस आबोहवा में, जिस तरह के वातावरण में यहा तैयार किये जा रहे है उसका फल यह होगा कि वे केवल अपनी सेवा ही नहीं करेंगे औरो की सेवा भी अपनी सेवा समझेंगे और जो जरूरी काम इस वक्त देश के अन्दर है उसमे अपना योगदान देकर के यश भी पायेंगे और काम भी करेंगे। मेरा सब बच्चो के लिये बहुत-बहुत आशीर्वाद है और गौरा बहिन और उनके साथ काम करने वाली और बहनो और दूसरों को जो काम मे मदद कर रहे है, बहुब-बहुत धन्यवाद और बधाई देता हू।

ताशकन्त हवाई अड्डे पर

सर्व परम श्रेष्ठ, देवियो और सज्जनो,

सलामालेकुम !

सोवियत सरजमीन पर कदम रखते ही मै सोवियत सरकार और अवाम का अपने मुल्क मे आने की मुझे दावत देने के लिए शुक्रिया अदा करके, इस मौके से फायदा उठाना चाहता हूं। आपके पुरखुलूस इसतकबाल से मै मुतास्सिर हुआ हूं। मै अपने साथ सोवियत सरकार और यहा के लोगों के लिए हिन्दुस्तान के लोगों और हुकूमत का सलाम लाया हू। अगरचे सोवियत संघ में यह मेरी पहली बार आमद है मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि मै अजनबी मुल्क में नही हूं। हमने गुजश्ता चालीस सालो मे सोवियत लोगो की कामयाबियों के बारे मे, खासकर पिछले सात सालो मे, इतना ज्यादा सुना है कि मुझे ऐसा महसूस हो रहा है मानो मै ऐसे मुल्क में आया हू जिससे मै पहले ही वाकिफ हू। मै आपके रहनुमाओ से मिलने और आपके कुछ नुमाया कारनामों को देखने का इश्तियाक से मुतजिर हूं। और अगर मेरी आमद की वजह से हमारे मुल्को के दरमियान मौजूदा दोस्ताना ताल्लुकात मे खफ़ीफ़ सा इज़ाफ़ा भी होता है, तो मै इसे जहे किस्मत समझूगा।

शुक्रिया और खुदा हाफ़िज।

ताशकन्त मे भाषण; 20 जून, 1960

मास्को में आगमन

मेरे यहा आगमन पर आज आपने जो मेरा भव्य और कृपापूर्ण स्वागत किया है, उसके लिए मै आप सब को हृदय से धन्यवाद देना चाहता हू। आपके देश के प्रतिष्ठित नेताओ मे से बहुतो का स्वागत करने का हमे सुअवसर मिला है। परमश्रेष्ठ श्री ख्रुश्चेव और सर्व परमश्रेष्ठ श्री वोरोशिलोव, श्री कोजलोव और श्रीमती फुर्तसेवा का कुछ ही महीने हुए भारत मे आगमन का हम हर्ष के साथ स्मरण करते है। इन यात्राओ से हमारे दोनो देशो के बीच अधिक जानकारी और सद्भावना का सचार हुआ है।

आपके देश की यात्रा करने की मै उत्सुकता से राह देखता रहा हू। भूगोल की दृष्टि से रूस भारत का पडौसी है। मुझे बहुत खुशी है कि मै अब यहा आ सका हू और मुझे विश्वास है कि व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए मेरी यह यात्रा सुखद ही नही ज्ञानप्रद भी होगी। आपके देश ने जो महान् और आश्चर्यजनक प्रगति की है और दूसरे विश्व-युद्ध के विध्वंस और कष्टो के बाद पुर्ननिर्माण के विशाल कार्य को जिस प्रकार पूर्ण किया है, इसके बारे मे हमने बहुत कुछ सुना है। विज्ञान और टेक्नोलोजी के क्षेत्र मे आपके वैज्ञानिको की अद्भुत सफलताओ तथा उनके द्वारा अन्तरिक्ष और दूसरे लोगो के अन्वेषण के सम्बन्ध मे भी हमने सुना है। और, सब से बढकर, आपने उद्योग और कृषि के क्षेत्रो मे जो तरक्की की है और जिसके फलस्वरूप सोवियत सघ सपन्न हुआ है और यहा के लोगों का रहन-सहन का मान बहुत ऊचा हुआ है, उसके बारे मे भी हमने सुना है।

हमे भारत मे अपने भाग्य का निर्णायक बने थोडा ही समय हुआ है। तब से हम औद्योगीकरण द्वारा और अपनी खेती के काम मे सुधार करके अपने राष्ट्रीय साधनो को और अपने रहन-सहन को उन्नत करने मे लगे है। इन दोनो क्षेत्रो मे हमें आपके देश से उदार सहायता मिली है। वास्तव मे विज्ञान की प्रगति के कारण दुनिया सिकुड कर इतनी छोटी हो गई है कि एक प्रकार से इसकी समस्याये सभी देशो की सामान्य समस्याये हो गई है। किन्तु इन सब समस्याओ पर विश्व-शाति का प्रश्न छाया हुआ है। मानव ने जो प्रगति की है शांति के अभाव मे वह सभी जगह और शायद सदा के लिए नष्ट हो जा सकती है। विश्व-शांति स्थापन के इस कार्य मे आपके महान्

मास्को में आगमन के अवसर पर भाषण; 20 जून, 1960

नेता श्री ख्रुश्चेव ने बहुत बड़ा हिस्सा लिया है। हम सच्चे दिल से आशा करते हैं कि इस दिशा मे उनके और अन्य बड़े देशो के नेताओं के प्रयत्न सफल होंगे जिस से कि मानव समाज युद्ध के भय से मुक्त हो सके।

क्या मै एक बार फिर आपके कृपापूर्ण स्वागत के लिए, जिसे मै भारतवासियो के प्रति महान् सोवियत राष्ट्र के लोगो को मैत्रीपूर्न भावनाओं का प्रतीक मानता हू, आभार प्रकट कर सकता हू और फिर कह सकता हू कि आपके देश की यात्रा करने, आपके देशवासियो से मिलने और आपकी कुछ विलक्षण सफलताओ को देखने के लिए मै बहुत उत्सुक हू ?

दुनिया सिकुड़ रही है—राजकीय भोज में भाषण

मेरे और मेरे देश के सम्बन्ध में आपने जो प्रशंसापूर्ण और हृदय-स्पर्शी उद्गार व्यक्त किये हैं उनसे मै बहुत प्रभावित हुआ हूं । मै इसे आपके महान देश की सरकार और यहां के लोगों की हमारे देश और भारत की जनता के प्रति स्नेह तथा सद्भावना की अभिव्यक्ति मानता हूं । यद्यपि भौगोलिक दृष्टि से आपके देश की सीमाए हमारे देश से बहुत दूर नही, फिर भी स्वाधीनता प्राप्त करने से पहले हम दोनों के बीच सीधा सम्बन्ध बहुत थोड़ा था । हमारे प्रधान मत्री श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा 1955 में सोवियत संघ को यात्रा और1956 में आपके प्रधान मंत्री, परमश्रेष्ठ श्री ख्रुश्चेव की भारत यात्रा से एक नए युग का आरम्भ हुआ है, जिससे हमारे दोनों देशो के बीच नये मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हुए है। हमे पूर्ण विश्वास है कि समय की गति के साथ ये सम्बन्ध अधिकाधिक दृढ होते जायेगे। सर्व महामहिम वोरोशिलोव, कोजलोव और श्रीमती फुर्तसेवा की भारत यात्रा के बाद ही आपके महान नेता श्री ख्रुश्चेव के पुन: भारत आगमन से पारस्परिक सद्भावना में वृद्धि ही नही हुई बल्कि दोनो देशो के नेता एक दूसरे के अधिक निकट आये और एक दूसरे को और भी अधिक समझ सके। दोनो देशों के लिये यह बहुत महत्वपूर्ण बात है। दिनोंदिन सिकुड़ती हुई दुनिया मे, जहा हर देश सभी दूसरे देशो का पड़ोसी बन गया है, आपके और हमारे नेताओ के आपसी निकट सम्बन्ध का बडा महत्व है, क्योंकि यद्यपि आपके और हमारे देश के आन्दोलनों का स्वरूप भिन्न रहा है फिर भी बहुत से ऐसे आदर्श है जो हम दोनों के लिये समान है। आपकी तरह हम भी अपने-अपने देश में सदियो से आर्थिक विकास की सुविधाओ से वंचित जन-साधारण के जीवन-स्तर को उन्नत करने में प्रयत्नशील है। कुछ दशक पूर्व जैसा आपने किया था हम ने भी अब बड़े पैमाने पर अपने देश के औद्योगीकरण की दिशा मे कदम उठाये है । इसके साथ ही हमने प्राचीन खेती के साधनों मे सुधार किया है, जो न केवल भारत का रूप बदल देगा बल्कि जिस से हमारे 40 करोड़ लोगों के लिये एक नये जीवन का अवसर प्राप्त होगा, जो उन्हें पहले प्राप्त नही था ? इसमे हमने आपकी सरकार की तथा अन्य मित्र राष्ट्रों की उदार सहायता पाई है । भिलाई में आधुनिक इस्पात का

सोवियत संघ द्वारा राष्ट्रपति क सम्मान मे दिये गये भोज के अवसर पर भाषण; 21 जून, 1960

कारखाना, जो उसे प्रदेश में स्थित है जिस ने सदियों से कोई परिवर्तन नहीं देखा था, सूरत गढ़ का विशाल कृषि फार्म, मशीन बनाने के बड़े-बड़े कारखाने जो शीघ्र ही राची में बनेंगे, बहुत से तेल-कूप जो भारत के पश्चिमी तट पर निकल रहे हैं—ये सब उन उद्योगों के नमूने है जिन में हमें आपकी तत्काल यथा समय सहायता मिली है। मुझे यह सोच कर खुशी होती है कि आपके विशेषज्ञों का बुद्धि-चातुर्य और अनुभव नव भारत का निर्माण करने में हमारा सहायक होगा।

किन्तु हमारे दोनो देशो के लोग एक दूसरे को इन कारखानों और फर्मों मे ही नही जानने लगे है। जैसा कि कहा जाता है कला और संस्कृति की कोई सीमाएं नही होती। इसलिये हमे खुशी है कि सोवियत संघ और भारत के बीच सास्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ रहा है। साहित्य की तो बात ही क्या—नृत्य और नाटक, फिल्म और संगीत के क्षेत्रों में भी एक दूसरे की प्राचीन परम्पराओं और प्रगति के प्रति जागरूकता बढ़ रही है।

और, अन्त में, अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में, संयुक्त राष्ट्र तथा अन्य स्थानों में और सब से बढ़कर विश्व-शाति को बनाये रखने के प्रयासों मे आपके और मेरे देश के नेताओ के बीच सहयोग की भावना बढ़ रही है। हम मानव इतिहास के एक संकटकालीन समय मे रह रहे है। विज्ञान और टेक्नोलाजी ने उन्नति और विनाश दोनों ही की सम्भावनाएं मनुष्य के हाथ मे रख दी हैं। संसार को युद्ध और विनाश से बचाने के लिये आपके जैस महान देशों पर विशेष जिम्मेदारी आ जाती है। यह काम आसान नही है, इसमें अनेक बाधाएं है, किन्तु धैर्य, निश्चय और सतत प्रयत्नों के द्वारा ही युद्ध का भय, जो दीर्घ काल से मनुष्य को त्रस्त किये हुए है, दूर किया जा सकता है। एक बार यह लक्ष्य-सिद्धि प्राप्त हो गई तब सैनिकीकरण पर जो अत्यधिक खर्च होता है और जो वर्तमान में मनुष्य के लिये भार-स्वरूप बना हुआ है, ससार के पिछडे हुए लोगों की आर्थिक शक्ति की बढ़ाने के काम में आ सकता है।

विश्व-शाति और निःशस्त्रीकरण के प्रयत्नों में हमारी शुभ कामनाएं आपके देश के साथ है। कुछ ही महीनों पूर्व हमारे संसद् में बोलते हुए आपके प्रधान मंत्री ने कहा था कि "देव प्रोमौथियस की तरह, एशिया और अफ्रीका के लोग अंगड़ाई ले अपने मजबूत कंधों को सीधा कर रहे हैं, जिस के आधार पर वे अपने लिये नवजीवन का निर्माण करने लगे हैं।" इन महान प्रयत्नों

की सफलता के लिये, जो संसार के काफी बडे भाग को प्रकम्पित किये हुए हैं, एक शर्त है—कि विश्व मे शाति बनी रहे। यह एक ऐसा कार्य है जिस मे हम सबका सहयोग आवश्यक है क्योकि इस मे असफलता का परिणाम विनाशकारी होगा।

पुन: एक बार मै आपके सद्भावपूर्ण उद्गारो के लिये, जो-जो आपने मेरे देश के और मेरे प्रति व्यक्त किये है, आपका आभार मानता हूं। विश्व-शांति, सद्भावना और जनकल्याण के सामान्य उद्देश्यों की प्राप्ति में हमारा आपसी स्नेह और एक दूसरे के प्रति सद्भाव बराबर बढते रहें, यही मेरी आशा और कामना है।

मास्को में "बांडुंग" भोज के अवसर पर

सर्व परम श्रेष्ठ, देवियो और सज्जनो,

बांडुंग राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने आज सांकाल मुझे अपने महमान के रूप में यहां बुला कर जो मेरा आदर किया है मै उसकी कद्र करता हूं। एक प्रकार से बांडुग सम्मेलन एशिया और अफ्रीका के इतिहास में एक युग के अन्त और दूसरे युग के आरम्भ का प्रतीक है। उस समय से इन दो भूखडो मे बहुत सी घटनाएं घटी है। सम्भव है इन घटनाओं में से कुछ ऐसी हो जो हम सब को पसन्द न हो, किन्तु इस बात स इन्कार नही किया जा सकता कि औपनिवेशिक शासन से एशिया और अफ्रीका का पूर्ण स्वाधीनता का क्रम बेरोक टोक बराबर चल रहा है। यदि आज ऐसा ही सम्मेलन फिर बुलाया जाए तो उस मे कम-से-कम 39 देश शामिल होगे जब कि अप्रैल 1955 के सम्मेलन मे 29 देशो ने भाग लिया था। सदियों से एशिया और अफ्रीका के अधिकाश लोगों का भाग्य उनके हाथों मे न रह कर विदेशियों के हाथो में रहा है। बाडुग सम्मेलन ने मानो ससार को यह नोटिस दे दिया कि एशिया और अफ्रीका अपनी-अपनी स्वतन्त्र नीति पर चलने और दूसरे लोगों के फैसले को न मानने का निर्णय करने का सकल्प कर चुके है। इस अर्थ मे एशिया और अफ्रीका के पूर्ण स्वातन्त्र्य को दिशा मे बाडुग सम्मेलन एक युगान्तरकारी घटना है।

पाच वर्ष हुए बाडुग मे जो देश एकत्रित हुए थे उन्होने अपने सामने कुछ निश्चित ध्येय रखे थे। एक बात पर उन सब ने सब से अधिक जोर दिया था, वह थी जातीयता के आधार पर सास्कृतिक दमन की घोर निन्दा। इस दिशा मे बाडुग देशो की आशाये अभी पूरी होनी रहती है। पिछले कुछ महीनो मे अफ्रीका के एक भाग मे जातीयता का विशेष उग्र रूप देखने मे आया है। किन्तु मुझे इसमे तनिक भी संदेह नही कि मानवीय गरिमा और मानव स्वतन्त्रता को सदा के लिये कभी दबाया नही जा सकता और जो लोग जातिवाद की नीति को चलाने का प्रयत्न कर रहे है वे इतिहास की धारा के खिलाफ जा रहे है।

बाडुग सम्मेलन के बाद से अफ्रीका के कई देश स्वतन्त्र हो चुके है, इस अवसर पर इस सम्बन्ध मे मै सन्तोष प्रकट करना चाहूगा। एक सोयी हुई

मास्को में बांडुग भोज के अवसर पर भाषण; 22 जून, 1960

प्रचंड शक्ति अब जाग उठी है और एक-एक करके अफ्रीका के देश अपनी सदियों पुरानी विदेशी शासन की बेडियों को तोड़ते जा रहे हैं। स्वाधीनता के लिये किये जाने वाले संघर्ष मे उन्हे अपने एशियाई भाइयो की सहानुभूति और नैतिक समर्थन प्राप्त रहा है। अफ्रीका या एशिया मे स्वतन्त्रता अब विवाद का विषय नही है। अब तो प्रश्न यह है कि स्वतन्त्रता को व्यापक आर्थिक आधार देकर कैसे सुदृढ बनाया जाये। इस कार्य मे एशिया और अफ्रीका के देशो में परस्पर सहायता तथा सहयोग की बड़ी गुंजाइश है। वास्तव मे बाडुग सम्मेलन का एक मुख्य उद्देश्य इस बात पर विचार करना था कि एशिया और अफ्रीका के लोग किस प्रकार अधिक से अधिक आर्थिक, सास्कृतिक और राजनैतिक सहयोग से एक-दूसरे के निकट आ सकते है। हम संसार के अधिक विकसित और उन्नत देशो द्वारा सहायता का स्वागत करेंगे, परन्तु मुख्यत हमे निजी प्रयत्नो पर भी निर्भर करना है। बहुत से देशों ने खुल कर सहायता दी है। आज के दिन जब मै अपने सोवियत मेजबानो के सामने खडा हू मै उस उदार सहायता की विशेष रूप से सराहना करना चाहूंगा जो एशिया और अफ्रीका के देशों को सोवियत सघ से मिली है। इसके लिये हम सब सोवियत सरकार और इस देश के नेताओ के कृतज्ञ है।

हमारी आशा है कि बाडुग मे पैदा हुई मैत्री और सद्भावना दृढ़तर होती जायेगी और हमारे दिन प्रति दिन की कार्रवाई और आपस के तथा अन्य राष्ट्रो के साथ व्यवहार मे, विशेषकर बाडुग देशों के साथ हम इस तरह से बर्ताव करेंगे जिससे उस भावना को पुष्टि और बल मिले।

सर्व परमश्रेष्ठ, देवियो और सज्जनों, अब मै आप से प्रार्थना करूगा कि एशिया और अफ्रीका के देशो की स्वाधीनता तथा सम्पन्नता के लिये, एशिया और अफ्रीका के देशों मे तथा विश्व के अन्य राष्ट्रों के बीच सहयोग के लिये और विशेष कर एशिया और अफ्रीका तथा सोवियत संघ के बीच सहयोग के लिये, इस शुभ पान मे आप मेरे साथ शामिल होने की कृपा करे।

99

लेनिनग्राड में आगमन

महामहिम चेअरमैन तथा मित्रो,

लेनिनग्राड शहर एक प्राचीन तथा मशहूर शहर ही नही है बल्कि एक ऐसा शहर है जिसका इतिहास बहादुरीपूर्ण है। ऐसे शहर मे आना मै अपने लिये एक सौभाग्य की बात मानता हू।

हमारे और आपके देश के बीच बहुत दिनो से मित्रता और सद्भावना रही है। वह मित्रता दिन प्रति दिन घनिष्ट होती जा रही है। मेरी इस यात्रा से उस मित्रता के और अधिक सुदृढ होने मे यदि कोई सहायता मिली तो मै अपनी इस यात्रा को सफल समझूगा।

भारत और सोवियत रूस के सामने एक ही उद्देश्य है। वह यह है कि अपने देश के लोगो के जीवनस्तर को हम ऊचा करे। हमारे दोनों देशो के लोग इस काम मे लगे हुए हैं।

इसके अलावा दुनिया मे शाति बनाये रखना आज आवश्यक हो गया है। मानव समाज आज उस स्थिति तक पहुच गया है जहा उसके लिये इसके सिवाय दूसरा कोई रास्ता नही कि वह शाति के मार्ग को अपनाये। मुझे खुशी है कि आपका देश दुनिया में शांति बनाये रखने की दिशा मे प्रयत्नशील है। इस काम मे हम आपके पीछे-पीछे चलेगे। आशा है आज जो आप से हमारा परिचय हो रहा है वह परिचय इस काम मे सहायक होगा।

मै आप सब बहनो और भाइयो का बहुत धन्यवाद मानता हूं। आपने जो मेरे प्रति प्रेम दर्शाया और आपने जिस प्रकार से मेरा स्वागत किया उसके लिए और अधिक धन्यवाद करता हू।

लेनिनग्राड में आगमन के अवसर पर भाषण; 23 जून, 1960

लेनिनग्राड में प्राच्य विद्या अनुसंधान संस्थान में

विद्वत् वृन्द, देवियो और सज्जनो,

मुझे यह बडा शुभ अवसर मिला कि मै आपकी अनुसन्धान संस्था को थोडी देर के लिये देख सका। यूरोप के लोगो का भारतीय सस्कृति के साथ और विशेष करके संस्कृत भाषा के साथ 18 वी शताब्दी मे परिचय हुआ और मै समझता हू कि आपके देश के विद्वानों का संस्कृत के साथ परिचय उसी समय हुआ। उस समय से जो सस्कृत के विद्वानों ने संस्कृत का अनुसंधान आरम्भ किया वह बराबर जारी रहा और इधर हाल मे तो इस प्रकार के काम को और भी अधिक प्रोत्साहन और प्रेरणा मिली है। जैसा अभी आपने कहा, हमारी कई सस्कृत भाषा के ग्रन्थ आपकी भाषा मे अनूदित हो चुके है और होते जा रहे है। आपने महाभारत और अर्थ शास्त्र के नाम लिये। अर्थ शास्त्र के सम्बन्ध मे तो शायद विद्वान इस नतीजे पर पहुच चुके है कि वह चौथी, पांचवी शताब्दी ईसा के पूर्व के लिख हुए ग्रन्थ है। महाभारत और रामायण के सम्बन्ध में अभी उतना एकमत नही हुआ है। तो भी बहुत विद्वान लोग समझते है कि 12, 13 सौ वर्ष ईसा के पूर्व के लिखे ग्रन्थ है। जैसा मैंने सुना है आपने इस प्रकार के ग्रन्थो का अनुवाद किया है और उसके बाद मैंने यह भी सुना है कि आपके देश मे संस्कृत के महान नाटको का अभिनय भी हुआ है। जो प्राचीन नाटक है उनमें से आपने मृच कटिक और मनोहर नाटक के नाम लिये। उनके बाद कालीदास के नाटक हुए है जिनका मैंने सुना है यहा अभिनय हुआ है। मगर आपके विद्वानों ने केवल प्राचीन अर्थ शास्त्र और साहित्य के साथ ही परिचय करके अनुसधान करना काफी नहीं समझा। उन्होने यह भी आवश्यक समझा कि उसमे आपकी सरकार की भी पूरी मदद मिले और आधुनिक साहित्य को समझे, उसका अध्ययन करे और उसका अनुवाद भी करें। इस निश्चय का यह फल हुआ है कि यहां अपने विद्यार्थियों को न केवल संस्कृत भाषा मे बल्कि तामिल, बंगला और दूसरी भारतीय भाषाओ में आप शिक्षा दे रहे है और जहां मध्यकालीन तुलसीदास की रामायण का श्री वार्णिकोव ने रूसी भाषा में अनुवाद किया वहां आजकल के हमारे राष्ट्र-कवि रवीन्द्र नाथ और हिन्दी के सब से बडे लेखक प्रेमचन्द की कई पुस्तकों

लेनिनग्राड में प्राच्य विद्या अनुसन्धान संस्थान के निरीक्षण के अवसर पर भाषण, 24 जून, 1960

का आप अनुवाद किया है। इसी प्रकार जहां मध्यकाल की बात आती है उस समय जो हमारी संस्कृति का सिलसिला रहा है बहुत करके उसके सम्बन्ध में भी आप अनुसन्धान कर रहे हैं। दो देशों के बीच मे अगर गहरा और स्थायी सम्बन्ध स्थापित करना होता है तो इससे बढ़कर दूसरा विचार नही हो सकता कि एक-दूसरे की संस्कृति, साहित्य और रहन-सहन का अच्छी तरह अध्ययन करें और समझें। आपने इसी दृढ नीव पर भारत और रूस की मित्रता को स्थापित करने का निश्चय किया है। मैं आशा करता हू कि इसका फल वही होगा जो होना चाहिये, हमारी मित्रता और सौहार्द दृढ़ होता जायगा।

आपने जो महत्वपूर्ण काम किया है उसका थोडा सा नमूना उन पुस्तकों को भेंट करके जो अभी आपने दी है दिया है। मेरा पूरा विश्वास है कि ऐसी पुस्तको के आदान-प्रदान से हमारो आपस की मित्रता और भी बढ़ेगी। मै आपको इसके लिये हृदय से धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे ऐसी कीमती भेट दी। यद्यपि मुझे इस बात का अफसोस है कि मै रूसी भाषा नही जानता हू, मै आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि इन पुस्तकों का उपयोग जो रूसी भाषा जानने वाले लोग है वे या जो नये लोग सीखेंगे वे कर लेंगे। मै आपका अधिक समय नही लेकर हृदय से एक बार और धन्यवाद करता हू और यह आशा प्रकट करना चाहता हूं कि हमारे देशों की मित्रता दिन प्रति दिन बढ़ेगी, फैलेगी। मै आप का विशेष आभारी हू कि आपने इतनी कृपा करके और कष्ट करके मेरा इतना स्वागत किया।

लेनिनग्राड में भोज

सर्व महामहिम और प्यारे मित्रो,

लेनिनग्राड के महान नगर को देखकर मुझे बहुत खुशी हुयी है । इस नगर के सौदर्य और यहा के बहादुर लोगो के बारे मे मैने बहुत कुछ सुन और पढ़ रक्खा था। किन्तु जो कुछ मैने वास्तव मे देखा वह उससे कही बढकर निकला । इतिहास के विद्यार्थी के नाते जिस बात से मै सब से अधिक प्रभावित हुआ हू वह विभिन्न परम्पराओ का पूर्ण समन्वय है, जिस के हमे अपने देश मे दिल्ली नगर मे भी दर्शन होते है। इस समन्वय मे नयी और पुरानी, क्रातिसूचक और साम्राज्यवादी धाराओ का सहज सम्मिश्रण हुआ है । विगत युद्ध मे लेनिनग्राड के लोगो ने अनुपम वीरता और धैर्य को प्रदर्शित कर अपने गौरवपूर्ण अतीत मे एक नवीन अध्याय जोड दिया है। इसीलिये यह ऐतिहासिक नगर वीरो का नगर कहलाने लगा है। यह मेरा परम सौभाग्य है कि मैने यह सब मैत्री और सद्भावना के वातावरण मे देखा है जिस के लिये मै लेनिनग्राड के लोगो और यहा के अधिकारियो के प्रति आभारी हू ।

इस महान नगर के सस्थापक ने जनतन्त्र के स्वप्न देखे थे यद्यपि उनका जन्म ऐसे समय हुआ था जब सामन्तशाही की परम्पराओ का बोलबाला था । इसलिये यह ठीक और उचित ही था कि यहा एक ऐसी क्राति ने जन्म लिया जिस ने रूस को ही नही बल्कि समस्त ससार को हिला दिया और जिस महान नायक के नेतृत्व में यह क्रांति हुई उसकी स्मृति इस नगर के एक-एक पत्थर पर अकित है। यह देख कर मुझे विशेष प्रसन्नता हुई कि यहा के नगरपालक यद्यपि वे इस महान देश के पुर्ननिर्माण के कार्य मे संलग्न है, यहा के अतीत में जो कुछ भव्य और महान है उसको सुरक्षित रखने के लिये भी प्रयत्नशील है। आज सायकाल आपके 'हरमिटेज' नामक सग्रहालय की यात्रा मेरे लिये ऐसा ही प्रेरणादायक अनुभव है जैसा कल बाल्टिक शिपयार्ड का दिग्दर्शन था। यदि मुझे कोई अफसोस है तो यही है कि मै आप लोगो के साथ उतना समय नही बिता सका जितना मै चाहता था ।

आपकी आज्ञा से, मै आज सवेरे ओरियन्टल स्टडीज़ की लेनिनग्राड शाला में मैने जो कुछ देखा उसका भी विशेष उल्लेख करना चाहूगा। यह देखकर

लेनिनग्राड मे उनके सम्मान मे दिये गये भोज के अवसर पर भाषण, 24 जून, 1960

मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि रूस के प्रतिष्ठित विद्वान पूर्वी भाषाओं तथा सस्कृति का अध्ययन जी जान से कर रहे है । मै खास कर उन पुस्तको का, जो विद्यानुरागी श्री ओरवेली ने उस अवसर पर मुझे भेट की, हृदय से आदर करता हूं। मै उन्हे भारत के प्रति लेनिनग्राड के लोगो की प्रगाढ़ मैत्री का प्रतीक समझूगा ।

सर्व महामहिम और प्यारे मित्रो, इस महान नगर के लोगो तथा नेताओं ने जिस मैत्रीपूर्ण भावना से मेरा स्वागत किया मेरे लिये वह हृदय-स्पर्शी है । इस नगर मे बहुतो के लिये भारत एक अज्ञात देश के समान है, किन्तु आपके महत्व और मैत्री ने सभी भेदभावो को दूरकर मुझे यह आभास कराया है कि मै दोस्तो के मध्य हू । ससार का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि आदमी आदमी मे और देश देश मे पारस्परिक सद्भावना, सहानुभूति और मैत्री का सम्बन्ध बना रहे ।

सर्व महामहिम और प्रिय मित्रो, अब मै आपसे निवेदन करूंगा कि आप हमारे आज के मेजबान महामहिम श्री स्मिरगोव के स्वास्थ्य, इस महान नगर लेनिनग्राड के कल्याण और भारत तथा सोवियत सघ की पारस्परिक दोस्ती के हित मे मेरे साथ इस शुभ पान मे शामिल हो ।'

लेनिनग्राड से प्रस्थान

सर्व महामहिम और प्यारे मित्रो,

मुझे खुद यहां से इतना जल्द चले जाने का अफसोस है। मैं केवल दो दिनो तक यहां रहा हूं और इन दो दिनों के अन्दर ही मुझे आपके प्रेम और सौहार्द का पूरा अन्दाजा मिल गया। आपने जिस प्रकार से हमारे और हमारे देश के प्रति अपने सौहार्द का परिचय दिया है उसके लिये मैं आप सब का आभारी हूं।

मैं समझता हू कि मेरे जैसे यात्री के दिल मे जिसको एक-दो दिन किसी शहर में बिताने को मिलते है वही भावना उत्पन्न होती होगी जो हमारे दिल मे होती है, एक ओर तो उन मित्रो को छोड़ने का अफसोस, जहां इतने मित्र एक-दो दिनों के बीच हो गये है उनको छोड़ने का हमको दुख है और दूसरी ओर हमे उस शहर को देखने का शौक और वहां के लोगो की सद्भावना प्राप्त करने की उत्कट इच्छा हो रही है जहां हमे जाना है। मै समझता हूं कि इस प्रकार का विरोधी भाव ही एक सच्चा भाव होता है। मै उम्मीद रखता हूं कि मै जहां-जहां जाऊंगा, विशेष करके जब मे अपने देश मे वापस लौटूगा तो आपकी मैत्री और सद्भावना अपने साथ लेता जाऊंगा। आप से विदा लेते समय एक बार और आपके प्रेम और सौहार्द के लिये धन्यवाद करता हूं और आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हमारे देश के लोगो के दिलों में भी इस नगर के लोगों के प्रति उसी प्रकार का प्रेम और सद्भावना है जैसा यहां के लोगो के हृदय में हमारे प्रति है। धन्यवाद।

लेनिनग्राड से प्रस्थान करते समय भाषण; 25 जून, 1960

कीव में आगमन

यूक्रेनी गणतन्त्र के सर्वोच्च सोवियत के महामहिम अध्यक्ष और मित्रो,

अभी दो घण्टे से थोडा ही ज्यादा हुआ होगा कि आपके इस महान देश के एक दूसरे बड़े शहर मे था। वहां पर मैंने यह कहा था कि सभी यात्रियों को एक साथ ही किसी स्थान से चलने के समय दो भावनाएं उत्पन्न होती है। एक तो यह कि जिस स्थान से वह चलता है और जहां थोड़े ही समय में अनेक मित्र बन गये होते है उस स्थान को छोड़ने का अफसोस और उसके साथ ही जिस नये स्थान को वह जाता है उस स्थान के और वहां के लोगों के प्रति श्रद्धा और उस स्थान मे वहां के लोगो से मिलने की उत्सुकता। यहां पहुंच कर मै वह दूसरा अनुभव कर रहा हूं और आपके प्रेमपर्ण और उत्साहपूर्ण स्वागत को देखकर हमें प्रसन्नता हो रही है। मुझे इस बात की खुशी है कि इस थोडे दिनों की यात्रा मे मुझे 4, 5 मुख्य स्थानो में जाने का अवसर मिलेगा और इसमे अनेक गणतन्त्रो को देखने और वहां की जनता से परिचय प्राप्त करने का मौका मिलेगा। इसमें मेरी अपनी जानकारी तो बढ़ेगी ही, साथ-साथ मुझे इसका पूरा-विश्वास है कि हम दोनो देशो के बीच की मित्रता और दृढ़ होगी।

आपने ठीक ही कहा है कि आपके और हमारे देश के प्रधान मन्त्रियो की यात्राओं का बहुत सुखद परिणाम हुआ है। हम दोनो देश एक शाति के उद्देश्य को सामने रखकर आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रहे है। हमको इस बात की हमेशा याद रहती है कि आपके देश से हमारे देश को आर्थिक उन्नति के लिये प्रयास मे काफी सहायता मिल रही है। इस के लिये हम आप का आभार मानते है। मगर उससे भी अधिक आवश्यक चीज यह है कि सारे संसार मे शांति कायम रखने में हम दोनों एक साथ मिलकर चल रहे है और चलते जायेगे। मुझे बड़ी खुशी होगी और मै अपना सौभाग्य मानूगा यदि मेरी यह यात्रा इसमें सफल हो कि हम दोनो देशो के बीच की मैत्री और भी घनिष्ट हो सके।

जिस प्रकार से आपने और जहा-जहा मै गया हू वहा की जनता ने मेरा स्वागत किया है उसके लिये मै एक बार सब का धन्यवाद करता हू।

कीव हवाई अड्डे पर आगमन के समय भाषण; 25 जून, 1960

"कलखोज" के किसानों के बीच

मित्रो,

आपने इस फार्म का नाम 'मित्रता का फार्म' दिया है। इसलिये मैं समझता हूं कि आप केवल आपस की मित्रता नही बल्कि सारे ससार की मित्रता चाहते हैं। इस समय ससार मे इस चीज की सब से अधिक जरूरत है कि आपस मे मित्रता बढ़े। यहा एक ओर हम विज्ञान की उन्नति से आपकी उन्नति को देख रहे है, दूसरी ओर विज्ञान की उन्नति से हमको अन्धकार का, सर्वनाश का भी भय होता है। इसलिये आपने अपनी सस्था को मित्रता का नाम देकर दोनो चीजो को अपने सामने रखने की सोची है।

अभी मैं आपके नेताओ से बाते कर रहा था और आप जितना पैदा कर सकते है उसके विषय मे मुझे थोडा-बहुत मालूम हुआ। यह देखकर हमे बड़ी खुशी हुयी कि पिछले 6, 7 वर्षो मे आपने बहुत बड़ी उन्नति कर ली है और यदि पहले के समय का हिसाब लगाया जाय तो उसके मुकाबले मे आपकी आजकी पैदावार कही अधिक हो रही है। मैंने सुना कि आप गेहू पैदा करते है, जौ पैदा करते है और चीनी के लिये बीट पैदा करते हैं। इसके अतिरिक्त आप गाय पालते है, सूअर पालते है और मुर्गी पालते है। इस तरह से आपको खाने के लिये अन्न और दूसरी पुष्ट कर जितनी चीजे हो सकती है सब चीजे पूरी तरह से आपको मिल जाती है।

मैंने यह भी सुना कि जो किसान साल मे 200 दिन 8 घण्टे रोज के हिसाब से काम करता है उसको कितनी आमदनी हो सकती है। सुनने मे वह काफी आती है। मै अपने देश से उसका पूरी तरह से मिलान नही कर सकता, इसलिये मै नही कह सकता कि वह हमारी आमदनी से कितनी ज्यादा है। किन्तु केवल आकड़ों से जितना आदमी समझ सकता है उससे अधिक आपके खुश चेहरों को देखकर समझ सकता है कि आप सुखी है। इससे मुझ पर यह असर पड़ा है कि आप मेहनत करने में भी खुश है क्योकि उससे आपकी आमदनी काफी बढ़ गयी है।

काव शहर के नजदीक द्रश्वा कलखोज मे काम करने वाले किसानो के बीच भाषण; 26 जून, 1960

अभी जो यह भवन मैंने देखा मालूम हुआ है कि यह आपके क्लब का भवन है। मै समझता हूं कि इस भवन का आप उपयोग अपने यहा की सस्कृति, नाच, गान और एक-दूसरे से मिलने-जुलने मे करेगे। रास्ते मे मुझे बतलाया गया कि कुछ भवन स्कूल के भी है, वहा पर सभी लोगो को शिक्षा मिल रही है। मनुष्य के जीवन के लिये ये ही चीजे आवश्यक है, खाना चाहिये, पहनने के लिये कपडा चाहिये, पढ़ने के लिये स्कूल चाहिये और आपस मे मिल-जुल कर आमोद प्रमोद के लिये स्थान चाहिये। मैने केवल एक चीज नही देखी। मैने कोई अस्पताल नही देखा पर शायद उसका कारण यह है कि आप बीमार नही पडते। और यदि थोड़ी-बहुत जरूरत पड़ती होगी तो उसके लिये भी आपके पास काफी प्रबन्ध होगा। स्वास्थ्य के लिये शुद्ध खाना, आराम, शरीर का परिश्रम यही आवश्यक है और खुश रहने के लिये आमोद-प्रमोद की आवश्यकता है। यदि ये सब मौजूद हो तो अस्पताल की जरूरत नही।

मुझे यह सुनकर बडी खुशी हुई कि आपकी पैदावार भी पिछले कई वर्षो में बहुत बढ़ गयी है और उसके बढ़ने का एक नवीन कारण यह भी है कि उसमे आप अधिकतर खाद लगाते है और जोतने बोने के काम में वैज्ञानिक रीति से काम करते है और इसी वजह से आप और भी अधिक अपने उत्पादन मे वृद्धि करते जायेगे इसमे मुझे कोई शक नही।

मै एक ऐसे देश से आया हू जहा प्रत्येक किसान की अपनी जमीन हुआ करती है। इसलिये आप समझ सकते है कि जब मैने यह सुना कि यहा भी आधा या पौन हेक्टर जमीन प्रत्येक किसान को मिली है जिसमे वे चाहे जो कुछ पैदा करना चाहें कर सकते है तो मुझे खुशी हुई। मै समझता हूं कि इस तरह का काम भी आप लोगो के लिये एक प्रकार से मन बहलाव का काम होता होगा और उसमें भी यद्यपि आप काफी पैदा कर लेते होगे, मै समझता हू कि उसकी कीमत इस वजह से ज्यादा है कि वह आपको मन बहलाव का साधन देती है।

मै आप सब से मिलकर खुश हुआ और आपने इतने प्रेम के साथ रोटी का उपहार दिया उसके लिये धन्यवाद। और भी जो कुछ आपने कष्ट करके सुनाया और दिखाया सब के लिये मै आपका धन्यवाद करता हूं। रूसी-हिन्दी भाई भाई!

कीव में राजकीय भोज

सर्व महामहिम और प्यारे दोस्तो,

सबसे पहले मैं यूक्रेन गणतन्त्र के नेताओं और क्येब शहर के लोगों के प्रति आभार प्रकट करना चाहूंगा कि उन्होंने मेरा इतना हार्दिक और उत्साह-पूर्ण स्वागत किया। मेरे लिये और मेरे देश के लिये मैत्री और स्नेह के इस सहज प्रदर्शन का मुझ पर गहरा असर पडा है।

कल सवेरे लेनिनग्राड से प्रस्थान के समय मैंने महसूस किया और कहा भी था कि उस ऐतिहासिक नगर को छोडते हुए मुझे दुःख हुआ। मैंने लेनिनग्राड को वीरों का नगर भी बताया था। मै नही समझता कि क्येब के लिये भी उनमे अधिक उपयुक्त कोई और विशेषण हो सकते है। सच तो यह है कि आपका इतिहास और भी पुराना है। जब मै सेंट सोफिया कैथेड्रल के सामने खडा था और जब आज नीपर नदी में नौका-विहार कर रहा था, मुझे ऐसा लगा कि मानो एक हजार वर्षो के इतिहास का घटनाक्रम मेरी आखो से गुजर रहा है।

किन्तु आप लोग अपने अतीत के गौरव पर सन्तोष करके ही नही बैठ गये है। आप अपने लोगो के लिये एक नवीन और अधिक सम्पन्न जीवन का निर्माण कर रहे है। कल शाम आपकी आर्थिक प्रदर्शनी और आज आपके सामूहिक फार्म को देखने से यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया है कि सोवियत संघ के औद्योगिक और खेती सम्बन्धी विकास मे यूक्रेन कितना महत्वपूर्ण भाग ले रहा है।

यह कहते हुए मुझे प्रसन्नता होती है कि यूक्रेन मेरे देश के विकास मे भी भाग ले रहा है। यूक्रेन के अनेक कारखाने भारत के लिये मशीनें और मशीनों के कल पुर्जे बनाने मे लगे है। यूक्रेन मे स्थित जापोरोज्ये नीपरोपेट्रोव्सक, स्तालिनो इत्यादि के कारखानो मे सैकड़ो भारतीय इन्जीनियर ट्रेनिंग ले रहे है। आपके यहां प्रशिक्षण और अनुभव प्राप्त कर ये इन्जीनियर भारत वापस जायेंगे, विशेष कर भिलाई के कारखाने मे जो हिन्द-सोवियत का सुन्दर स्मारक है। उसी तरह सूरत गढ़ मे आपकी सहायता से बडे पैमाने पर खेती का अनुभव किया जा रहा है। वह सोवियत-भारत मैत्री का दूसरा स्मारक है।

कीव में राजकीय भोज के अवसर पर भाषण; 26 जून, 1960

मुझे इसमें संदेह नहीं कि हमारी आगामी पंच-वर्षीय योमना में, जो पहली योजनाओं से विशालतर है, इस तरह के और भी स्मारक बनेंगे जो हमारे दोनों देशों के दर्म्यान दोस्ती की भावना और दृढ़ कर देंगे ।

सोवियत संघ के साथ हमारी मैत्री का आधार केवल भौतिक लाभ ही नहीं है । हमारा यह विश्वास है कि यह मित्रता विश्व-शान्ति के पक्ष को दृढ़ करती है और आगे को भी अधिकाधिक ऐसा करती रहेगी । शान्तिपूर्ण साधनों द्वारा विश्व में शान्ति-स्थापना हमारी पर-राष्ट्र-नीति का सर्वोच्च लक्ष्य है । इसलिये हमारा यह विचार है कि साधारण और पूर्ण नि शस्त्रीकरण के लिये सोवियत सरकार के प्रस्ताव गम्भीरतम चिन्तन के योग्य है।

आपके सुन्दर शहर की इस सुखद यात्रा की याद मैं अपने साथ ले जाऊगा । अन्त मे फिर एक बार आपके स्नेहपूर्ण स्वागत और उन सद्भावनाओं लिये जो आपने मेरे और मेरे देशवासियो के लिये प्रकट किये है, मै आप सब को धन्यबाद देना चाहूगा ।

सर्व महामहिम और प्यारे मित्रो, अब मै आपसे आग्रह करूगा कि यूक्रेन की गणतन्त्र सरकार तथा लोगो के कल्याण के लिये, भारत और सोवियत संघ के लोगो के बीच मित्रता के लिये और विश्व-शान्ति के हित में आप मेरे साथ इस शुभ पान मे शामिल हो ।

कीव से प्रस्थान

महामहिम और मित्रो,

आपने जैसा कहा, मेरी यात्रा यहा की बहुत थोडी थी और इसका अफसोस मुझे भी है क्योंकि इतने कम समय मे मै जितना देखना चाहता था वह नही हो सकता था। चीनी आपके देश मे बहुत होती है और मेरे देश मे भी चीनी बहुत होती है । थोडी चीनी भी अगर खा ली जाय तो थोड़ी-सी भी चीनी की मिठास हो जाती है। अगर अधिक से अधिक खा सके तो उसका मजा अधिक आयगा। मगर जिसको अधिक खाने को नही मिले और थोड़ी चीनी भी मिल जाय तो उसको उतनी मे ही खुशी होती है और संतोष करना पडता है । मुझे उसी तरह से थोडी देर के लिये यहा रहकर अधिक खुशी का अनुभव करना पडता है। मुझे विश्वास है कि मै बहुत दिनो तक आपकी मिठास को नही भूलूगा क्योंकि यह केवल जबान पर रखी हुई वह चीनी की मिठास नही है, यह दिलों मे दिलो तक पहुची हुई मिठास है।

हमारे दोनों देश इस समय चिन्ता मे है कि ससार मे युद्ध उठ जाय। इसमे हम आपके साथ 16 आने है। हमारा सारा इतिहास और विशेष करके हाल का इतिहास जब से हमने स्वतन्त्रता पायी है इस बात की गवाही देता है कि हम शान्तिप्रिय लोग है। इसलिये आपके इस प्रयत्न से हमको खुशी ही नही है बल्कि हम बडी उत्सुकता से इसका फल चाहते है। हमे विश्वास है कि ससार जल्द ही इस चीज को सीख लेगा और इसका फल हो सकेगा। जब तक वह शुभ दिन नही आता तब तक हम मे से जो जहा हो और जिनसे जो बन सकता हो इसके प्रयत्न मे लगे रहना चाहिये और उसके लिये पहला कदम यही है कि एक देश का दूसरा देश के साथ सद्-भाव हो और प्रेम हो। इस बारे मे हम और आप दोनो ने पहला कदम उठा लिया है और अगर इसी तरह से हम चले तो फल अवश्य होगा। भारत के लोगों की सद्भावना का विश्वास दिखाते हुए मै आपसे दुःख के साथ विदा मागता हूं। रूसी-हिन्दी भाई-भाई!

कीव से प्रस्थान करते समय भाषण; 26 जून, 1960

111

सोची के सुन्दर नगर में

सोची के अध्यक्ष महोदय तथा मित्रो,

मुझे यह अवसर मिला है कि मै आपके इस स्वास्थ्यप्रद स्थान में आ सका। आपने बडे प्रेम के साथ मेरा स्वागत किया है और मै जानता हूं कि आपके स्वागत के साथ-साथ यहा की सुखप्रद आबहवा का भी मुझे लाभ मिलेगा। आज सातवां दिन है जब मै पहले-पहले आपके देश मे पहुचा था। तब से अब तक जहां-जहा मुझे जाने का अवसर मिला है वहा की जनता और वहां के नेताओं ने मेरा स्वागत और सम्मान किया है। मै मान लेता हू कि यह प्रेम और सम्मान मेरे लिये नही है, सच पूछिये तो यह हमारे देश के लिये है और उस सद्भावना और मैत्री का सूचक है जो हमारे और आपके दोनों दोशों के बीच कायम है। मै आशा रखता हू कि जो परिचय मै प्राप्त कर रहा हू उससे हमारे और आपके बीच की सद्भावना और बढ़ेगी। मै फिर से एक बार आपका धन्यवाद करना चाहता हूं और विश्वास दिलाना चाहता हू कि मेरी यह यात्रा केवल सुखद ही नही है बल्कि बहुत कुछ सिखलाने वाली यात्रा है। मै यह आशा करूगा कि मेरी इस यात्रा मे हमारे दोनों देशों की मैत्री और भी दृढ़ बनेगी।

सोची में आगमन के अवसर पर भाषण; *27 जून, 1960*

फिर मास्को में

परम श्रेष्ठ श्री ब्रेजनेव, परम श्रेष्ठ श्री ख्रू श्चेव, सर्व परम श्रेष्ठ देवियो और सज्जनो,

सोवियत संघ के अध्यक्ष और परम श्रेष्ठ प्रधान मंत्री तथा उनके प्रतिष्ठित साथियो का आज सायंकाल यहां स्वागत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। अन्य उपस्थित सम्मानित अभ्यागतों का भी मै हृदय से स्वागत करता हू।

सोवियत सघ की मेरी ज्ञान-यात्रा आधी समाप्त हो चुकी है। इन पिछले दिनो मे मैने जो कुछ देखा है उससे मेरे दिल पर गहरा असर पडा है। किन्तु जिस बात ने मेरे दिल को सबसे अधिक छुआ है वह मेरे तथा मेरे दल के साथियो के प्रति इस महान् देश के लोगो तथा नेताओ का स्नेह और मित्र-भाव है जिसका प्रत्यक्ष अनुभव हम यहा कही भी गए है वही हुआ है। भारत के प्रति सोवियत संघ की सहानुभूति तथा सद्‌भावना के इस प्रदर्शन से हम अभिभूत हुए है। मुझे विश्वास है कि हमारे दोनो देशो के बीच दोस्ती का नाता, जो सोवियत प्रधान मत्री और दूसरे सोवियत नेताओं की हाल की भारत यात्रा से और भी मजबूत हुआ है, समय के साथ और भी सुदृढ और पक्का होता जाएगा।

इस महान देश के इतिहास से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। मानवीय प्रयास के सभी क्षेत्रो में सोवियत सघ ने जो असाधारण उन्नति की है, कोई भी आगन्तुक उससे प्रभावित हुए बिना नही रह सकता। जिस देश की 80 प्रतिशत जनता 1917 मे निरक्षर थी, वह देश आधी शताब्दी मे कम समय मे प्रगति और सम्पन्नता के इन शिखरों तक जा पहुचे इसमें संसार के सभी पिछडे हुए देशों के लिये आशा की किरण है। हमारी सामाजिक और राज-नीतिक प्रणालियां कुछ भी हों, हम सब की सब से बडी जरूरत प्रेरणादायक नेतृत्व के अधीन समुचित आयोजन और मानवीय तथा भौतिक साधनो का पूरा-पूरा उपयोग करना है।

किन्तु शान्ति के बिना भौतिक सम्पन्नता किस काम की होगी? मानव-समाज युद्ध और हिंसा के इतिहास के उषा काल से परिचित रहा है। परन्तु न्यूक्लियर विज्ञान की प्रगति ने विध्वंस और मरण के अस्त्रों को इतना अधिक

मास्को में सोवियत प्रेसिडेंट और सोवियत प्रधान मंत्री के सम्मान में दिये गये स्वागत समारोह में भाषण; 29 जून, 1960

पूर्ण और कुशल बना दिया है कि अब विकल्प जीत या हार के बीच नही बल्कि जीवन और सर्वनाश के बीच है। दुनिया भर के लोग स्थिति की गम्भीरता को समझते है। एशिया और अफ्रीका मे हम लोगो के लिये, जो दीर्घकालीन विदेशी शासन के बाद हाल मे ही स्वतन्त्र हुए है, यह एक भयानक परिस्थिति ऐसे समय सामने आई है, जब हम भविष्य की ओर आशा के साथ देखने लगे है। इसलिये, परमश्रेष्ठ श्री क्रुश्चव के नेतृत्व मे ससार मे शान्ति बनाए रखने के जो प्रयत्न सोवियत सरकार कर रही है, उन्हे हम विशेष आकाक्षा के साथ देखते है। मै सच्चे दिल से यह आशा प्रकट करना चाहूगा कि सोवियत सघ और ससार के दूसरे बडे देशो की युद्ध और शान्ति की समस्या का हल ढूढने का प्रयत्न सफल हो, जिससे कि विज्ञान और टैक्नोलोजी मानव के सुख, न कि विनाश, के लिये प्रयुक्त हो।

परमश्रेष्ठ श्री ब्रेजनव तथा परमश्रेष्ठ श्री क्रुश्चव, मै भारत सरकार और भारत की जनता की ओर से आपकी सरकार तथा लोगो के लिये शुभ कामनाये अर्पित करता हू। आपने जो स्वागत हम लोगो का किया उसके लिये मै आभारी हू। उन सब प्रतिष्ठित अभ्यागतो के प्रति भी मै आभार करना चाहता हू जिन्होने आज यहा आकर हमारा मान बढ़ाया है।

सर्व परमश्रेष्ठ, देवियो और सज्जनो, अब मै आपसे निवेदन करूगा कि आप परमश्रेष्ठ श्री ब्रेज़नव और परमश्रेष्ठ श्री क्रुश्चव तथा उनके प्रतिष्ठित साथियो की स्वास्थ्य-कामना के लिये, सोवियत जनता की सम्पन्नता और कल्याण के लिये, भारत और सोवियत सघ के बीच सहयोग और दोस्ती के लिये और ससार के सब लोगों के बीच शान्ति तथा सद्भावना के लिये, मेरे साथ इस शुभ पान म शामिल हो।

सोची से प्रस्थान

आदरणीय मित्रो,

मुझे इस बात की बडी खुशी है कि मै आपके इस सुन्दर और स्वास्थ्य-प्रद स्थान पर आ सका। मै आपके देश में और कई शहरो को देख चुका हू और यहा से फिर अब मास्को जा रहा हू। हर मौके पर और हर स्थान पर हर प्रकार के लोगो ने मेरा बहुत कुछ स्वागत किया और हमारे प्रति और हमारे देश के प्रति सहानुभूति और प्रेम प्रकट किया। उसका एक सुन्दर नक्शा मेरे हृदय पर बन गया है और मै आशा करता हू कि मैं इस यात्रा को और विशेष करके इस शहर को हमेशा याद रखूगा।

आपने मेरे हाथों एक बहुत ही अच्छा और शुभ काम कराया है। हमारे देश मे हम इस बात को मानते है कि पेड लगाना एक बहुत ही अच्छा काम है और यह अच्छा काम मेरे हाथो कराकर आपने बडा यश कमाया है। मेरी आशा है कि जैसे वह दरख्त आगे बढ़ता जायेगा वैसे-वैसे हमारी दोस्ती भी और दृढ़ होती जायेगी। हमारे देश मे ऐसे मौके पर जब लोग दरख्त लगाते है वन-महोत्सव हुआ करता है। यह दरख्त ऐसा होता है कि बहुत देर में सयाना होता है मगर जितनी देर मे वह बढ़ता है उतने अधिक तक वह जिन्दा रहता है और उस दरख्त की छाया बहुत दूर-दूर तक फैल जाती है और उसके नीचे बैठकर बहुत लोग गर्मी में आराम पाते है। हम दोनो देशो की दोस्ती उसी तरह से बहुत दूर तक फैलेगी और बहुत लोगो को उससे छाया मिलेगी। सुख और शान्ति के लिये एक-दूसरे से प्रेम करना आवश्यक है। मै स्वय अपनी ओर से और अपने देश के प्रतिनिधि के रूप में आपको विश्वास दिलाना चाहता हू कि आपकी और हमारी मित्रता दिन-प्रतिदिन बढ़ेगी और दृढ़ होगी। आपका देश शक्तिशाली हो और आपके देश के लोग शक्तिशाली हों यही मेरी शुभ कामना है। फिर एक बार आपको धन्यवाद देकर रूसी-हिन्दी भाई-भाई कहकर आपसे विदा चाहता हूं।

सोची से प्रस्थान करते समय भाषण; 29 जून, 1960

मास्को विश्वविद्यालय में

सर्व महामहिम, विश्वविद्यालय के विद्यार्थीगण तथा प्रिय मित्रों,

मै मास्को विश्वविद्यालय के अधिकारियो का आभारी हू कि उन्होने मुझे यहा आमन्त्रित ही नही किया बल्कि डाक्टरेट की उपाधि देने की भी मुझ पर कृपा की। मै आपको विश्वास दिलाना चाहूगा कि मास्को विश्वविद्यालय द्वारा दिये गये इस सम्मान का मै बहुत आदर करता हू।

मास्को विश्वविद्यायल की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई है और यह सर्वविदित है कि सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक विषयो पर यहां महत्त्वपूर्ण काम होता आ रहा हे, इसलिये आपके यहा आकर और स्वयं आपके कार्य को प्रत्यक्ष रूप से देखकर तथा आपसे साक्षात् परिचय पाकर मुझे बडी ही प्रसन्नता हो रही है।

मै अपनी यात्रा के दौरान मे जहा-जहा गया हूं, सभी स्थानो पर सोवियत सघ की जनता और नेताओ ने मेरे देश और मेरे प्रति प्रेम और मैत्रीपूर्ण आदर-भाव दर्शाया है। लेनिनग्राड में प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान में वहा के विद्वानों से परिचय का सुअवसर मिला और साथ ही भारतीय प्राचीन, अर्वाचीन और आधुनिक साहित्य के पठन-पाठन तथा अनुसधान और अनुवाद जो वहा हो रहे है उनका ज्ञान प्राप्त हुआ। आज इस महान विश्वविद्यालय के विद्वानो, अनुसधाताओ और विद्यार्थियों के साथ-साथ इसके कार्य-कलाप से परिचय ही नही मिला, आपने कृपापूर्वक 'डाक्टर' की उपाधि प्रदान कर मेरा जो अभिनन्दन किया है, मै उसके लिये बडा कृतज्ञ हूं। इस सम्मान को मे आदर-पूर्वक ग्रहण करता हू। इसे मै केवल अपने लिये ही नही, अपने देश के लिये भी सोवियत देशवासियो का प्रेम, सद्भावना और सम्मान सूचक मानता हू। मेरा हृदय इससे गद्गद् है।

हमारे देश मे मानव के लिये सबसे बड़ी और ऊची प्राप्तव्य वास्तुज्ञान को माना गया है और हमारे ग्रन्थों मे ज्ञान की उपलब्धि ही जीवन का सर्वोत्तम आदर्श माना गया है। मै मानता हूं कि विश्वविद्यालयों की उपयोगिता और उपादेयता इसी ज्ञान की प्राप्ति करने और कराने मे ही है। यह ज्ञान मनुष्य के लिये दो प्रकार का है और हो रहा है। एक तो इस संसार में जितनी

मास्को विश्वविद्यालय में भाषण; 30 जून, 1960

बाह्य वस्तुए है उनके सम्बन्ध मे ज्ञान और दूसरा मानव के अन्तर्जगत मे जो कुछ है वह––अर्थात् आत्मज्ञान। दूसरे शब्दो में कहना चाहिये कि ज्ञान के दो रूप हम ने माने है––'भौतिक ज्ञान' और 'आध्यात्मिक ज्ञान'। भौतिक विषयो का ज्ञान आधुनिक युग मे इतना ऊचा और गहरा और विस्तृत हो गया है कि जिसका कुछ ही दिन पूर्व मनुष्य ने शायद स्वप्न भी नही देखा था और उसका सब से बडा कदम तो यह है कि हमे इस पृथ्वी से अन्तरिक्ष तक का बहुत कुछ ज्ञान ही नही प्राप्त हो चुका है बल्कि जैसे एक देश से दूसरे देश में आवागमन बहुत सुविधाजनक हो गया है, भविष्य मे दूसरे ग्रहों अन्तरिक्ष स्थित लोको और पृथ्वी के बीच का सम्बन्ध भी उसी तरह कदाचित् क्रियात्मक रूप मे स्थापित हो जायेगा। यह विज्ञान का ही करिश्मा है कि जो बातें शायद कल्पना मे रही हो वे आज वास्तविकता मे बदल चुकी है और वैज्ञानिक यन्त्रो की सहायता से, जिनका आविष्कार मनुष्य ने ही किया है, अब मनुष्य अपनी सीमित शक्ति वाली इन्द्रियो द्वारा उनका सम्यक अनुभव भी प्राप्त कर सकता है। इसके लिये आपके देश के वैज्ञानिक, तकनीकी तथा विद्वान सर्वप्रसिद्ध हो चुके है।

दूसरे प्रकार का ज्ञान जिस पर हमारे देश के लोग हमेशा से जोर देते आये है मनुष्य के निजी अन्तर्गत से सम्बन्धित है। मै इस विवाद मे नही पडना चाहता कि मनुष्य का अन्तर्जगत बाह्यजगत के प्रभावो से ही निर्मित होता है या नही, मैं केवल इतना ही कहना चाहता हू कि चाहे वह जैसे भी निर्मित होता हो, उसका एक स्थान है और उसके भी नियम है जो मनुष्य को प्रेरित करते है और मनुष्य सभी प्रकार की प्रेरणाओ से चाहे वह बाह्यजगत अथवा अन्तर्जगत से मिली हो, अपने जीवन का निर्वाह करता है और उसे सुखमय बनाता है। आज मेरी तुच्छ समझ मे वह समय आ गया है कि मनुष्य इस बात को समझ ले कि केवल भौतिक विज्ञान और उसके द्वारा प्रस्तुत साधन ही उसको सुखी और सुरक्षित नहीं रख सकते। यह अत्यन्त आवश्यक और अनिवार्य है कि वह अपने ऊपर काबू पावे और इन साधनों को केवल सुख और समृद्धि के लिये ही उपयोग करना सीखे तथा किसी भी विनाशकारी उद्देश्य से इनका उपयोग केवल बुरा और अक्षम्य ही न मान बल्कि अपने अन्तर्जगत में ऐसी शक्ति का निर्माण करे कि वह उन साधनों के दुरुपयोग एक बारगी खत्म कर दे। यदि मै यह कहू तो शायद अनुचित न हो कि आध्यात्मिक और भौतिक शक्तियों के समन्वय मे ही जीवन का कल्याण

निहित है। आध्यात्मिक शक्तियों से प्रेरित भौतिक शक्ति भी सही दिशा में मनुष्य को ले जायेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

आज इस समन्वय को प्राप्त करना मानव के लिये केवल इसलिये आवश्यक नही कि वह गुणवान कहला सके बल्कि इसलिये भी है कि वह जीवित रह सके। इन सद्‌वृत्तियो को अपनाना पहले यदि आवश्यक था तो अब अनि-वार्य है। इस स्वतः सिद्ध सत्य का प्रचार विश्वविद्यालय ही कर सकते है और इस प्रकार विद्वान लोग विश्व शान्ति की स्थापना मे अपना योगदान दे सकते है। आपके देश के नेताओ ने नि:शस्त्रीकरण और शान्ति स्थापना के लिये जो प्रशंसनीय प्रयत्न किये है और जो वे अभी भी कर रहे है, उन प्रयत्नो को विश्वविद्यालय सच्चे ज्ञान के प्रचार द्वारा बहुत बल दे सकते है। मास्को विश्व-विद्यालय जिसको विद्या मे इतना अनुराग है और जो ज्ञान के प्रसार के लिये इतना अधिक कृतसकल्प है, इस दिशा मे सोवियत सघ के नेताओ को और भी सम्बल दे सके, मेरी यह हार्दिक कामना है।

आपको मै एक बार और धन्यवाद देता हू कि आपने मेरा इतना सम्मान किया। मेरी आशा और विश्वास है कि आप और हमारे देशवासियो के बीच जो मैत्री का सम्बन्ध कायम हो गया है वह दिनोदिन दृढ़ होता जाय जिसमे हम दोनो विश्व शान्ति के काम मे सहयोग करे। रूसी हिन्दी भाई-भाई प्रत्यक्ष और स्थायी रूप से चरितार्थ होता रहे।

मास्को में मैत्री सभा

सर्व महामहिम और प्यारे मित्रो,

मै मास्को के नागरिकों श्रमजीवी और बुद्धिजीवी वर्ग-का आभारी हू कि उन्होने मेरी इस गणतन्त्र संघ-यात्रा के मौके पर इस सभा का आयोजन किया। मेरे देश और भारतवासियो के प्रति मित्रता के इस अद्भुत प्रदर्शन का मेरे दिल पर गहरा असर पड़ा है। अगले सप्ताह जब मै भारत लौटूगा तो मै अपने देश-वासियो तक आपके स्नेहपूर्ण उद्गार पहुचाने से न चुकूगा।

उत्तर के भव्य लेनिनग्राड से लेकर दक्षिण के प्रकाशमान मोची तक जहां कही भी मै गया और वहा हमारी दोस्ती के जो अनेक प्रदर्शन मैने देखे, यह सभी उसकी चरम सीमा है। मै जहा कहीं भी गया, मैने लोगो को प्रसन्न, परिश्रमी, शान्तिप्रिय और भारत के विषय मे जिज्ञासु देखा तथा हिन्द-सोवियत मित्रता के लिये उन्हे उत्साहपूर्ण पाया।

आपने इस सम्मेलन को सोवियत-भारत 'मैत्री-सभा' कहकर ठीक ही पुकारा है। फिर भी बीस साल पहले, बीस क्यो 15 ही साल पहले ऐसी सभा की कल्पना तक नही की जा सकती थी। उस समय हमारे दोनो देशों एक-दूसरे के लिये अजनबी थे। भौगोलिक दृष्टि से हिमालय अजेय बाधा बना हुआ था। राज-नीतिक दृष्टि से हम दोनों देशों के बीच कोई सम्बन्ध नही था। सास्कृतिक दृष्टि से भी हमारे बीच बहुत कम सम्पर्क था और आदर्शरूपी धारणाओ की दृष्टि से एक-दूसरे के लिये हम मे गहरी गलतफहमियां थी।

फिर भी इस काल में भी हमारे लोगों का एक-दूसरे के प्रति कुछ आकर्षण था। यद्यपि 1917 की क्रान्ति के विषय में हमारा ज्ञान सीमित था, हम ने अनुभव किया कि यह एक महान घटना थी जो मानवता के पथ को प्रभावित किये बिना नही रहेगी। उसी वर्ष 1917 मे, भारत में एक महापुरुष का उदय हुआ जिसने स्वाधीनता की हलचल को जो उस समय तक कुछ राजनीतिज्ञों तक ही सीमित थी, जनसाधारण के एक तूफानी आन्दोलन में परिवर्तित कर दिया। मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं कि मेरा इशारा हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाधी की तरफ दक्षिण अफ्रीका में अहंकारपूर्ण जातिभेदमूलक प्रभुसत्ता के विरुद्ध अपने कटु और लम्बे संगर्ष में गांधी जी ने पहले ही सत्याग्रह अर्थात आत्म-बल और अहिंसात्मक

मास्को मे मैत्री सभा मे भाषण, 30 जून, 1960

असहयोग के अस्त्रों का निर्माण कर लिया था, जिन अस्त्रों द्वारा अन्त में भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्त की। यह स्मरण बड़ा ही सुखद है कि अपनी विचारधारा और आन्दोलन की योजना बनाते समय गांधीजी पर तत्कालीन रूस-स्थित स्वयातीय आत्मा रौल्सरौया का बहुत प्रभाव पड़ा था जिन्होंने भी उस समय संसार के विभिन्न लोगों में प्रचलित जातिमूलक अन्याय और राजनीतिक प्रभुसत्ता के अन्याय को जोरों से महसूस किया था।

मैंने अभी-अभी कहा कि स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व भारत और रूस में अधिक सम्पर्क न था। फिर भी जो थोड़े-बहुत सम्बन्ध थे, वे बहुत मूल्यवान थे। अक्तूबर क्रान्ति के दसवें वार्षिक समारोह के अवसर पर जवाहरलाल नेहरू उपस्थित थे और भारत लौटने पर उन्होंने रूस के सम्बन्ध में अपने सस्मरणों की एक लेखमाला लिखी थी जिसने यहां की ऐतिहासिक घटनाओ के सम्बन्ध में हमारे लोगों की आंखें खोल दी। रवीद्रनाथ टैगोर ने भी रूस की यात्रा की और जहा उनका बडा ही हार्दिक स्वागत हुआ। मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि 1961 में टैगोर की जन्म शताब्दी सोवियत संघ मे समुचित रूप से मनाई जानेवाली है और हाल ही में टैगोर का "चित्रा" नामक नाटक कुबीशेव में 'नृत्य-नाटिका' के रूप में खेला गया था। मुझे ज्ञात हुआ है कि अन्य भारतीय नाटकों और खेलों के प्रदर्शन की तैयारी मास्को मे हो रही है।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत सरकार के सब से पहले कार्यों में सोवियत संघ के साथ राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित करना था। जो भी हो, आरम्भ के कुछ वर्षो तक हमारे दोनों देशो के आपसी सम्बन्ध कुछ दबे हुए से रहे। किन्तु पिछले 6, 7 वर्षों में हिन्दी-रूसी मित्रता काफी फली-फूली और प्रस्फुटित हुई है। यह एक स्वाभाविक घटना थी जो होकर ही रहनेवाली थी। फिर भी जिन दो घटनाओं ने इस प्रक्रिया को गति प्रदान की, वे थी 1955 के ग्रीष्म में जवाहरलाल नेहरू की रूस-यात्रा तथा कुछ ही महीनों के बाद श्री ख्रुश्चेव की भारत यात्रा। निजी सम्बन्धों के अतिरिक्त जो एक प्रकार दृढ़तापूर्वक स्थापित हो चुके थे, इन यात्राओं का फल यह भी हुआ कि हम एक-दूसरे की नीति को अधिक अच्छी तरह जानने और समझने लगे। इन यात्राओं के कुछ ही बाद बीसवी कांग्रेस ने यह घोषणा की कि विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक प्रणालियों का अनुसरण करने वाले राष्ट्रों के बीच सह-अस्तित्व की भावना सोवियत नीति का एक मौलिक तत्व है। अगर लोगो के दिलों में कुछ गलतफहमी रह गई थी तो वह भी इस ऐतिहासिक घोषणा से दूर हो

गई । चन्द ही दिन हुए कि मई मास की दु:खद घटनाओं के बावजूद श्री ख्रुश्चेव द्वारा इसी नीति का पुष्टिकरण देखकर मुझे विशेष आनन्द हुआ ।

हमारे नेताओं ने विचारपूर्वक जो बुनियाद डाली है उस पर हिन्द-सोवियत सहयोग का भव्य भवन निर्मित हो रहा है । कुछ ही नाम गिना देना इस सहयोग के विस्तृत और लाभप्रद फलो को बता देने के लिये काफी होगा—जैसे भिलाई का इस्पात कारखाना, सूरतगढ़ का राजकीय फार्म, कोम्बे तेल योजना, बरौनी में तेल साफ करने और राची मे कल-पुरजे बनाने के कारखाने । मुझे इसमे सन्देह नही कि तीसरी पंचवर्षीय योजना द्वारा, जो समय तथा विस्तार की दृष्टि से पहली पंच-वर्षीय योजनाओं से कही बडी है, हमारे दोनो देशों को, राष्ट्र-निर्माण के महान कार्य में एक-दूसरे के साथ सहयोग के और अधिक अवसर मिलेंगे ।

अपने राष्ट्र के निर्माण के साथ-साथ हम शान्ति के आधार को भी वृढ बनाते जा रहे हैं । नरम दल और गरम दल वाले सभी सशयवादी लोगो को इस सहयोग ने दिखा दिया है कि विभिन्न परम्पराओ को मानते हुए और भिन्न विचारधाराएं रखते हुए भी सोवियत संघ और भारत जैसे तो महान देश किस प्रकार बेरोक-टोक और खुशी से अपनी जनताओ के कल्याण के हित मे ही नही बल्कि विश्व-शान्ति के हित मे भी एक-दूसरे के साथ सहयोग कर सकते हैं । भारत और सोवियत संघ के बीच यह मैत्री जो हिमालय के समान अचल है, किन्तु फिर भी एक-दूसरे के निकट आने के लिये हिमालय पर विजय पा चुकी है, सदा के लिये शान्तिपूर्ण ही नही अपितु फलदायी सह-अस्तित्व की नीति के लिये प्रकाश-स्तम्भ बनी रहे यही मेरी कामना है । मैं उस भाषण को उस प्रकार दोहरा कर समाप्त करता हू जिसकी प्रतिध्वनि रूस भर मे जहा कही भी मै गया मैंने सुनी—'विश्व शान्ति जिन्दाबाद' ।

सर्वोच्च सोवियत परिषद् द्वारा स्वागत

सर्व महामहिम, सर्वोच्च सोवियत परिषद् के अध्यक्ष तथा सदस्य महोदय मान्यवर अतिथिगण और प्रिय मित्रो,

महामहिम ब्रेजनव ने मेरे लिये और मेरे देश के प्रति जो कृपापूर्ण शब्द कहे हैं उनके लिये मैं उनका अत्यधिक आभारी हूं। मैं उनकी दिल से कद्र करता हू क्योकि मैं जानता हू कि वे हमारे देश के सच्चे मित्रों द्वारा कहे गये हैं। सोवियत सघ मे आये मुझे दस दिन हो चुके हैं और कल मैं अपने देश में वापसी के लिये मास्को से प्रस्थान कर रहा हू। मुझे इस बात का विशेष सतोष है कि सोवियत भूमि से विदा लेने से पहले सोवियत सघ के दो एशियाई सदस्य गणराज्यो को देखने का भी मुझे अवसर मिलेगा।

ये दस दिन बहुत स्मरणीय रहे हैं और मेरे दिल पर इनकी अमिट छाप लगी है। जब से मैंने सोवियत भूमि पर कदम रखा, मैं यहां के लोगो और सोवियत सरकार के आतिथ्य सत्कार और दोस्ती की भावना से अभिभूत हुआ हू। इस यात्रा के दौरान जहां कही भी मैं गया, यहा के उत्साहपूर्वक स्वागत करने वाले लोगो—पुरुषो, स्त्रियों, नौजवानो और बूढ़ो को देखकर मेरे मन मे अपने देश के जोशीले हजूमो की याद हरी होती रही है। मित्रता के इस सामूहिक प्रदर्शन से मैं इतना प्रभावित हुआ हू कि सोवियत संघ के लोगो को पर्याप्त धन्यवाद देना मेरे लिये सम्भव नही। सर्व महामहिम, मैं आपके देश मे एक अजनबी के तौर पर आया था, किन्तु आपने और आपके देश के लोगो ने एक प्रिय मित्र के रूप मे मेरा स्वागत किया। इसलिये अब विदा लेने के समय मुझ पर उदासी छा रही है क्योंकि मित्रो से बिछुडना सदा ही दुखद होता है। मैंने कहा है कि इन दस दिनों में मुझ पर जो सस्कार अंकित हुए हैं वे बड़े गहरे पडे हैं। मैंने पुराने गिरजाघरो, सग्रहालयो और कला-केन्द्रो को देखा है। मैंने एक सामूहिक फार्म और मास्को तथा कीव मे खेती-सम्बन्धी तथा औद्योगिक उपलब्धियो की प्रदर्शनियो को भी देखा है। हर क्षेत्र मे आपने जो महान प्रगति की है उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हू। इतने थोडे समय में आप इतनी अधिक सफलता प्राप्त कर सके हैं यह हम सरीखे अर्धविकसित देशो के लिये एक सबक है। आपके सामूहिक फार्म और महान औद्योगिक योजनाएं सोवियत सघ द्वारा हाल मे की गयी उन्नति

सर्वोच्च सोवियत परिषद् द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में भाषण; 30 जून, 1960

के एक पहलू का दिग्दर्शन कराती है। अपने पुस्तकालयों, सग्रहालयो और चित्र वीथिकाओं मे जिस ममत्व और सतर्कता से आप अपने अतीत की विरासत को सुरक्षित रख रहे हैं, वह उस गौरव का ज्वलन्त प्रमाण है जो आप अपने देश के बीते हुए इतिहास के प्रति महसूस करते है। जैसा कि मैंने लेनिनग्राद मे कहा भी था, आज सोवियत जीवन और सस्कृति मे अतीत और वर्तमान, कला और विज्ञान के सुखद समन्यव के दर्शन होते है।

सर्व महामहिम, सर्वोच्च सोवियत परिषद् के अध्यक्ष तथा सदस्यगण, हाल के वर्षो मे आपका और हमारा देश एक-दूसरे के बहुत निकट आये है। हमारे बहुतेरे मन्त्रियो और सार्वजनिक नेताओं ने सोवियत सघ की यात्रा की है। हमारे युवक आपके कारखानो मे काम सीख रहे है। मेरी सरकार के एक उच्च मन्त्री, श्री मोरार जी देसाई, आज भी मास्को मे मौजूद है। चन्द दिन ही हुए, हमारे खनिज वस्तुओ और तेल के मन्त्री आपकी सरकार के सदस्यो से भारत की भावी विकास समस्याओं का विवेचन करने यहां आये थे। गत पांच वर्षो मे हमे सोवियत सरकार से अच्छी रकम की सहायता मिली है। इसके द्वारा हम कई औद्योगिक और कृषि-सम्बन्धी योजनाओं को बनाने और कार्यान्वित करने में समर्थ हुए है। मैने आपकी सप्त-वर्षीय योजना की तफसील को दिलचस्पी के साथ पढा है। हम अपने देश मे इस समय तीसरी पचवर्षीय योजना की रूपरेखा तैयार करने मे लगे है। आपकी तुलना मे अभी भी आर्थिक विकास की दृष्टि से हम निर्माण के प्रारम्भिक चरण मे है। मै जानता हू कि अपने देश को उन्नत करने के लिये हमे अपने ऊपर ही निर्भर करना है, किन्तु यह कहते हुए मुझे हर्ष होता है कि अपनी पहली और दूसरी योजनाओं को कार्यान्वित करने मे हमे कई मित्र देशों से ठोस सहायता मिली है। क्या मै कह सकता हू कि सोवियत सरकार से हमे जो उदार और बिना शर्त के सहायता मिली है, उसके लिये हम अत्यधिक आभारी है? भिलाई का कारखाना हिन्द-सोवियत मैत्री सद्भावना के प्रतीक के रूप मे खडा है, किन्तु भारत मे और योजनाए भी है जो सोवियत सहायता द्वारा सम्भव हुई है। मै यह आशा प्रकट करना चाहूंगा कि हिन्द-सोवियत मैत्री के ऐसे व्यावहारिक प्रदर्शन भविष्य मे बराबर होते रहेगे। दो दिन हुए सोची के पब्लिक पार्क मे हिन्द-सोवियत मैत्री के वृक्ष का रोपण करने का सुअवसर मुझे मिला था। मैने उस अवसर पर आशा प्रकट की थी कि हमारे देशो की यह मैत्री उतनी सदियों तक बनी रहेगी जितने वर्षों तक वह वृक्ष कायम रहेगा। मै वही आशा आज सायंकाल भी दोहराना चाहता हू।

सर्व महामहिम, मै इस देश मे छोड़े ही समय रहा हूं इसलिये यह अनुचित होगा कि साधारणत. मै कोई ऐसी बात कहू जो मेरे सीमित अनुभव की परिधि से बाहर की हो, किन्तु इस अवसर पर मै एक बात कहे बिना नही रह सकता जो इन दस दिनो मे मेरे दिल पर अकित हुई है। मैने अवकाश मनाते हुए सोची मे कामगारो के हजूम देखे है। मैने कीव मे हजारो युवको और युवतियो को एक समारोह मे भाग लेते देखा है। मेरी यह धारणा हो चली है कि श्री ख्रुश्चेव के बुद्धिमत्तापूर्ण नेतृत्व मे सोवियत सघ के लोग शान्तिपूर्वक रहने और आर्थिक तथा भौतिक प्रगति द्वारा उत्पन्न सम्पन्नता का सुफल भोगने के अतिरिक्त और कुछ नही चाहते। श्री ख्रुश्चेव को सह-अस्तित्व की नीति मे अटल विश्वास है और वैसा ही हम भारतीयों का विश्वास भी है। वे यह नही समझते कि युद्ध अनिवार्य है और हम भी ऐसा नही मानते। सामान्य आदर्शो मे हम दोनों की आस्था हमारे देशो के लिये मित्रता की एक कडी बन गई है और मेरा विश्वास है, आगामी वर्षो मे बराबर दृढ़ होती जायेगी। इसलिये जहा कही मै गया और सभी जगह मैने जनसमूहो को 'हिन्दी-रूसी भाई भाई' का नारा लगाते देखा तो मैने हृदय से उनकी भावना का समादर किया। क्या मै फिर एक बार वही नारा दुहराऊ—'रूसी-हिन्दी भाई-भाई'।

सर्व महामहिम और प्यारे मित्रो, क्या मै अनुरोध कर सकता हू कि सर्वोच्च सोवियत परिषद के सदस्यो को और सोवियत जनता के कल्याण के लिये और हिन्द-रूसी मैत्री तथा विश्व भर मे शान्ति के लिये कामना करने मे आप मेरे साथ इस शुभ-पान मे शामिल हो।

124

टेलिविजन पर

प्यारे दोस्तो,

आज सायकाल आपसे बात कर सकने की मुझे खुशी है। कल सवेरे अपने देश के लिये वापस रवानगी पर मै अफसोस के साथ मास्को से प्रस्थान करूगा। मै यहा आप लोगो के बीच दस दिन से हू। जब मैंने सोवियत भूमि पर कदम रखा उस समय से अब तक जहां कही भी मै गया हू, आपकी कृपा और मैत्री की कामना का मुझ पर बडा असर पड़ा है। इसके लिये मै आपका आभारी हू। मास्को हो या लेनिनग्राद, कीव अथवा सोची, स्त्रियो, पुरुषो, बच्चों, बूढो सभी लोगो ने 'मीर' और 'दुष्बा' की ध्वनि के साथ मेरा स्वागत किया है। मेरे देशवासियो की भी यही भावना और यही विचार है। मै अपने निजी अनुभव के बल पर उन्हे बताऊगा कि आप लोगो ने किस प्रकार अपने देश का निर्माण किया है और अब भी कर रहे है। मुझे विश्वास है कि वे यह जान कर खुश होंगे कि भौतिक सम्पन्नता ने किस प्रकार आपको शान्ति और मैत्री के वरदानो को ससार के दूसरे राष्ट्रो के लोगो के साथ मिल-जुल कर भोगने के लिये और भी उत्सुक बना दिया है।

आपका देश सुन्दर है और प्रकृति ने उसे असीम साधनो से भरपूर किया है। आपकी सम्पत्ति राष्ट्र के कुछ लोगो के लिये ही नही बल्कि सभी के निमित्त है। भारत मे हमने भी अपना लक्ष्य जनसाधारण की सुख-समृद्धि को बनाया है। इसके लिए शान्ति अभीष्ट है। यही कारण है कि भारत सरकार और हमारे देश के लोग उन परिस्थितियो के पैदा किये जाने को इतना महत्त्व देते है। जिनमे लोग अपने भविष्य तथा अपनी सतान और उनके भी बच्चो के भविष्य की चिन्ता किये बिना जीवन बिता सके। जब मै लौटूगा मै अपने देशवासियो को चालीस वर्ष के अल्प समय मे आपने जो उन्नति की है उसकी कहानी सुनाऊगा।

आपने युद्ध मे वीरता दिखाई है। अब आप शान्ति के समर्थन मे वीरता दिखा रहे है। मै आपको भारतवासियों की शुभ कामनाए अर्पित करता हू और उनकी यह आशा आप तक पहुचाता हू कि हमारे दोनो देशो की मैत्री दिनो-दिन बढ़ती और दृढ़तर होती जायेगी।

मै एक बार फिर आपके प्रति आभार प्रकट करता हू।

दस्विदानिया!

मास्को मे टेलिविज़न पर भाषण, 30 जून, 1960

मास्को से प्रस्थान

मैं आपकी सरकार, आपके नेताओं और आपके लोगों को उनके मैत्रीपूर्ण और भव्य स्वागत के लिये, जो आपके महान् देश की यात्रा में जहा-कही भी हम गए उन्होंने हमें दिया, धन्यवाद कहना चाहूंगा। उद्योग, खेती, टेक्नोलोजी और विज्ञान के क्षेत्रो मे आपने जो उन्नति की है, उसके सम्बन्ध मे मैंने बहुत कुछ पढ़ा था। आपके प्रतिष्ठित नेताओं से भी, जिनका भारत मे स्वागत करने का हमे सौभाग्य प्राप्त हुआ है, मैंने बहुत कुछ सुना था। अब आपकी आश्चर्यजनक प्रगति को और उससे भी बढकर भावी सफलताओं को मैं स्वयं देख सका हू।

मास्को और लेनिनग्राद मे कीव और सोची तक जहा कही भी मैं गया हूं मैंने लोगों द्वारा दिए गए स्वागत मे मैत्री भाव देखा है और उनके सौहार्द मे मेरा हृदय स्पर्श हुआ है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि भारतवासियों मे भी आपके प्रति दोस्ती की भावना कम गहरी नही। श्री ख्रुश्चव, श्री वोरोशिलोव और अन्य महान् रूसी नेताओ के भारत आगमन पर हमारे लोगो को भी रूस के प्रति अपनी मैत्री और सद्भावना प्रदर्शित करने का अवसर मिला था।

आज सभी देशो के लोगो के बीच सद्भावना और मैत्री के इस भाव की ज़रूरत है। यह अत्यन्त आवश्यक है कि आधुनिक न्यक्लियर युद्ध के विध्वंस द्वारा मानव समाज की प्रगति-यात्रा रुकने न पावे। इस दृष्टि से सोवियत संघ जैसे महान् राष्ट्रों के कधो पर यह भारी जिम्मेदारी आती है कि विज्ञान मानव समाज की उन्नति करने का प्रयत्न करता रहे न कि उसे नष्ट करे।

आज जब कि मै आप लोगों मे विदा हो रहा हू, मै आपको भारतवासियों की शुभकामनाएं अर्पित करता हू और आपकी उन्नति तथा प्रसन्नता और सबसे अधिक शान्ति का कामना करता हू।

मास्को से प्रस्थान के समय अलविदाई भाषण; 1 जुलाई, 1960

ताजकिस्तान में

आला हज़रत सदरे जम्हूरियते ताज़किस्तान और दोस्तो,

मेरे लिये यह बड़ी खुशी का मोकाम है कि बहुत दिनो के इन्तजार के बाद मै आपके इस खूबसूरत मुल्क में आज पहुच सका हू। आपका यह मुल्क मेरे मुल्क के साथ करीब-करीब सरहद पर है और ताजकिस्तान का हिन्दुस्तान के साथ हर तरह का बहुत ताल्लुक रहा है और वह ताल्लुक बहुत जोरो के साथ अब और ज्यादा ताजा हो रहा है और मुझे इस बात की खुशी है कि मै अपने इस सफर से उस मुहब्बत और ताल्लुक को कुछ और ज्यादा इज़ाफा दे सकूगा। मै जहा-जहा गया हू, लोगो ने मेरी इज्जत अफजाई की है और बहुत मुहब्बत के साथ मेरा खैरमुकदम किया है। म अब इस इलाके मे पहुंचा हूं और मुझे उम्मीद है कि यहा से अब इस देश का खुशगवार ख्याल लेकर अपने साथ जाऊगा। हम दोनो मुल्को के बाशिन्दे यह चाहते ह कि सारी दुनिया में पूरी तरह से सलामती रहे। इसी शान्ति और सलामती म सब की खैरियत है। आज आप सब से मिलकर मै बहुत खुश हुआ और जो थोड़ी देर मै यहा बिता सकूगा उसमे मुझे उम्मीद है कि मै बहुत कुछ देख सकूगा और जान सकूगा। जिस मुहब्बत के साथ आपने मरा खुशामद किया है उसके लिये मे आपका मशकूर हू। वालैकुम सलाम।

स्तालिनाग्राद में आगमन पर भाषण; 1 जुलाई, 1960

स्तालिनाबाद के "कलखोज" में

बहनो और भाइयो,

मुझे आपके इस कलखोज मे आज आकर बहुत खुशी हो रही है। मेरी यह खुशकिस्मती है कि मैंने खुद अपनी आखों से देखा और लोगों से सुना कि आप पैदावार किस कदर कर रहे हैं। हम अपने मुल्क में जो पैदावार होती है उसमें इजाफा करने की कोशिश कर रहे हैं और इसलिये हम यह जानना चाहते थे कि आप किस तरह से इजाफा कर पाये हैं। जिस कदर और जिस तेजी के साथ आपने तरक्की की है और इस मुल्क के अन्दर आपने काश्तकारी की पैदावार मे जो इजाफा किया है उससे मै निहायत खुशगवार और बहुत खुश हुआ। पर मेरे यहां आने का सिर्फ यही एक कारण नही था। मै तो यह भी चाहता था कि इस मुल्क की जिन जगहों में मै जाऊं कम-से-कम वहा के लोगों से खुद मिलू और मिल-जुल कर अपने मुल्क की तरफ से जो उसमें खूबसूरती है उनको बताऊं और उनकी तरफ से लेकर अपने मुल्क मे जाऊं। मै हिन्दुस्तान के लोगों की तरफ से आपको सलाम पहुंचाने के लिये आया हूं। और आपकी तरफ से आपके मुल्क में जो कुछ मैं देखूगा और आपका मुल्क हिन्दुस्तान की तरफ जिस तरह से मुहब्बत की नजर से देख रहा है उसकी खबर वहां जाकर उनको सुनाऊंगा। मै जहा-जहा गया हूं सभी जगहों पर लोगो ने बड़ी खुशी के साथ बड़े मुहब्बत के साथ मेरा इस्तकबाल किया है। मै जानता हूं कि उनके हिन्दुस्तान के साथ बहुत अच्छे ताल्लुकात है और वे रखना चाहते है। आप सब बहनों और भाइयों से मेरी यही दरख्वास्त है कि आप सिर्फ इस कलखोज के लोगों तक ही नहीं बल्कि तमाम इलाके के लोगों तक मेरा सलामालैकुम पहुंचा दें।

स्तालिनाबाद के लेनिन कलखोज मे किसानों के सम्मुख, भाषण, 2 जुलाई, 1960

राजकीय भोज के अवसर पर

सर्व महामहिम और प्यारे दोस्तो,

आपने जो मेरा खैर मुकदम किया उसके लिये मैं तहे दिल से मशकूर हू। इस बात की मैं खास कद्र इसलिये भी करता हू क्योंकि ताजकिस्तान हमारा नजदीकतरीन हमसाया है। मै यहा आना निहायत जरूरी समझता था। ताजकिस्तान के कुछ मोहतरीम रहनुमाओं का हिन्दुस्तान में इस्तकबाल करने का शर्फ हमे हुआ है। मुझे खुशी है कि उनसे मै फिर यहा मिल सका हूं। अभी तक कोई हिन्दुस्तानी रहनुमा ताजकिस्तान नही आ सका था। हमारे वजीरे आजम जवाहरलाल नेहरू को उजबेगिस्तान जाने और कजाकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान को सरसरी तौर पर देखने का मौका मिला था, मगर बदकिस्मती से वह ताजकिस्तान नही आ सके थे। हमारे उपराष्ट्रपति भी कजाकिस्तान तो गये थे पर यहा नही आ सके। मुझे खुशी है कि इस फर्ज की अदायगी की खुशगवार जिम्मेदारी मुझ पर आई है।

इन चन्द घंटो मे ही जो मैने यहा गुजारे है मैने देखा कि ताजकिस्तान और हिन्दुस्तान मे कितनी ज्यादा मुशाबहत है। कल रात मैंने ताजकिस्तान की एक खूबसूरत फिल्म देखी और मै अचम्भे मे पड़ गया कि मै ताजकिस्तान देख रहा हूं या अपने कश्मीर की सैर कर रहा हूं। बर्फ से ढके हुए ऊंचे-ऊंचे पहाड़, गहरे दरिया, खुशनुमा चराहगाह, फल-फूल और मेवे—इन सबको देखकर मुझे अपने मुल्क की याद आ गयी।

जिस बात का मुझ पर असर पडा है वह आपकी जमहूरियत की खूबसूरती ही नही बल्कि आपकी नुमाया तरक्की है जो कुछ सालो मे ही आपने की है। यह तरक्की इसलिये और भी हैरतअंगेज है चूकि इनकलाब से पहले यह सारा इलाका बहुत ही पिछडा हुआ था। मुझे मालूम हुआ है कि ताजकिस्तान मे आप उन दस्तकारियों को फरोग दे रहे है जिनके लिये यह इलाका खास तौर से मौजू है। आपके सामूहिक फार्म को अभी मैंने देखा और उससे मालूम होता है कि जराअत में आपने कितनी तरक्की की है। तमद्दन के एतबार से भी आप मध्य एशिया के दूसरे इलाकों मे पीछे नही है और मगरबी रूस की जहूरियत तक से आपका मुकाबला

स्तालिनाग्राद में रात्रि-भोज के अवसर पर भाषण; 2 जुलाई, 1960

किया जा सकता है । आपकी तरक्की हिन्दुस्तान के लिये सबक आमोज है अगरचे हमारे खयालात और हमारा समाजी नजाम मुखतलिफ है ।

एक और बात जिससे मै खासतौर पर मुतास्सिर हुआ हूं वह आपके मजमूई और मुश्तर्का निजाम में सबकी मुसावात है इसमे मुखतलिफ कौमों के लोग रहते है और पूरे अमन चैन से जिदगी बसर कर रहे है ।

जब मै हिन्दुस्तान लौटूगा मै वहां की हुकूमत और लोगों से अपने हमसाये ताजकिस्तान की तरक्की की दास्तान उन्हें सुनाऊंगा । और यहां के लोगों में जो बाहमी खुशगवार और बिरादराना ताल्लुकात है और तमाम सोवियत संघ के लोगों और हमारे मुल्क के लोगों की तरह यहां के लोग जिस तरह दुनिया मे अमन के हामी है, यह सब भी उन्हें कहूंगा । आपकी मेजबानी और खुलूस जो आपने मुझ अजनबी को दिखाया उसके बारे में भी बताऊंगा । मै जानता हूं कि यह इज्जत जो मुझे बखशी गई है ज़ाती तौर पर मेरे लिये नही है बल्कि उन लोगों के लिये है जिनकी नुमाइंदगी करने का मुझे फख्र है । एक बार फिर आपका शुक्रिया अदा करता हूं ।

अस्सलामालैकुम

130

स्तालीनाबाद से प्रस्थान

आला हजरत सदरे जम्हूरियेत तज़किस्तान और मोहतरिम दोस्तो

आप के इस खूबसूरत मुल्क से मेरे जाने का वक्त हो गया है । मुझे भी इसका बहुत अफसोस है कि मेरा क़याम इतना थोड़ा यहां पर रहा । अगर मेरा क़याम कुछ और ज्यादा हो सकता तो मुझे बहुत ज्यादा खुशी होती । लेकिन इस ख़फीफ क़याम में भी जो मोहब्बत आपने दिखलाई है उसका बहुत गहरा मेरे दिल पर नक्श पड़ा है । हमारे और आपके दोनो मुल्कों के दर्म्यान जो ताल्लकात बहुत ही अच्छे कायम हो गए है वे ज्यादा मजबूत हुए है । मुझे इस बात की खुशी है कि मेरे इस सफर से इस ताल्लुक मे और ज्यादा मजबूती आयगी ।

हम और आप दोनो चाहते है कि सारी दुनियां में सभी जगहो पर सुलहकुम कायम हो और वह हमेशा के लिए कायम रहे और इस काम मे किसी किस्म का खलल न आने पावे । मै अपने मुल्क में आपके यहां स यह खुशखबरी लेकर जाऊंगा और उनको पहुंचाऊंगा कि हम दोनों मुल्को के आपस के ताल्लुकात खुशगवार थे वे और खुशगवार हो गए हैं ।

आपकी और सोवियत संघ की तरक्की की ख्वाहिश करत हुए सलाम आलेकुम कहता हूं ।

स्तालिनाबाद से प्रस्थान करते समय भाषण; 3 जुलाई, 1960

समरकन्द के प्राचीन नगर में।

दोस्तो,

आपके इस शहर मे पहुंच कर और पुरानी इमारतों को देखकर में बहुत खुश हुआ हू ये इमारते करीब करीब चार, पाच सौ बरसो की है और उस वक्त से इस वक्त तक कायम रही है और फिर से नये सिरे से उनकी मरम्मत हो रही है यह बड़ी तारीफ की बात है ।

आपके इस शहर का और खास करके आपके यहां के बादशाह का हमारे मुल्क के साथ गहरा ताल्लुका हुआ था और आपके यहा से ही जाकर बाबर हमारे मुल्क मे शाहंशाह बनकर बैठा और वहा के लोगो ने ऐसा किया कि उनको हिन्दुस्तानी बना लिया । वह खुद और उनकी औलाद कई पुश्तों तक दिल्ली के तख्त से राज्य करते रहे । जो आखरी मुगल बादशाह दिल्ली में थे वह 1857 मे नख्त से उतरे । उनकी ताकत अंग्रेजी कम्पनी न बहुत कम कर दी थी, तो भी वह तख्त पर थे और सारी सल्तनत का कारबार उनके नाम से चलता था । इसलिए उन चीजो की याद करके जब मै आपकी इमारतो को देखता था तो मुझे कई सौ बरसो के सारे इतिहास की याद आ जाती थी ।

ये सब पुरानी बाते हुयी । आज नयी बात यह है कि फिर से नये सिरे से हमारा ताल्लुक कायम हुआ है और वह दिन-ब-दिन और जोर पकडता जा रहा है जैसा आपने कहा, हमारे प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू यहां पहले आये और उसके थोड़े ही दिनों के बाद आपके प्रधान मन्त्री श्री खुश्चेव हमारे मुल्क मे गए और इन दोनो की उन यात्राओ से हमारे दोनों मुल्को के बीच के ताल्लुकात बहुत गहरे हो गए और तब से दिन-ब-दिन ज्यादा तेज और मजबूत होते जा रहे है ।

इसलिए जब मुझे सोवियत की यात्रा का ख्याल हुआ तो मै ने समरकन्द आना खास करके जरूरी समझा । मै यहा से बहुत खुश हूं और आप लोगों से जो मोहब्बत मैं ने पायी है और आपने जो हमारे मुल्क के लिए दिखायी है उसे साथ ले जाकर मै अपने लोगो को दिखलाऊगा ।

मै चाहता हूं कि आप सब भाई बहन मेरे साथ मिलकर सोवियत गणराज्य के लिए, सोवियत और भारतवर्ष की दोस्ती के लिए और तमाम संसार में शान्ति के लिए जाम उठावे ।

दोपहर के भोजन के समय भाषण; समरकन्द, 3 जुलाई, 1960

ताशकन्त में आगमन

मोहतरिम दोस्तो,

आज 15 दिन हुए कि मैं यहां से गुजरता हुआ मास्को गया था। आज मास्को की यात्रा समाप्त करके और सोवियत संघ के कई हिस्सों को देखकर मैं यहां ताशकन्त पहुंचा हू। आपने जिस मेहरबानी के साथ उस दिन मेरा स्वागत किया और उसको आज आपने फिर दोहराया और जिस खुशी और मोहब्बत के साथ आपने आज मेरा इस्तकबाल किया उसके लिए मैं आपका बहुत मशकूर हूं और जब मै यहा का सफर खतम करके अपने देश मे जाऊंगा तो यह खुशखबरी वहा के लोगो को बताऊगा कि आपने किस मोहब्बत और जौश के साथ मेरा इस्तकबाल किया।

बहुत रोज हुए उजबेकिस्तान का हिन्दुस्तान के साथ जो ताल्लुक हुआ था वह चन्द बरसो से ताजा हो गया है और रोज-ब-रोज मजबूत होता जा रहा है। सोवियत और हिन्दुस्तान ने एक मकसद को लेकर काम करने को सोचा है। वह यह है कि सारी दुनिया मे शान्ति और सुलह कायम रहे और इस इस्तकबाल के साथ सारी दुनिया के लोग शान्ति के रास्ते पर चलते रहे।

मैं अभी तो यहां कुछ देर ठहरूगा और आप साहेबान से मुमकिन है कि और भी कही मुलाकात का मौका हो। इस समय एक बार और शुक्रिया अदा करते हुए फिलहाल के लिए आपको सलाम करता हूं।

ताशकन्त मे आगमन के अवसर पर भाषण; 3 जूलाई, 1960

उजबेकिस्तान सोवियत द्वारा स्वागत

सर्वमहामहिम और प्यारे दोस्तो,

उज़बेकिस्तान गणराज्य की सर्वोच्च सोवियत की अध्यक्षा का मैं मशकूर हूं उन जजबात के लिए जो उन्होने जाहिर किए है। आप लोगो ने जो अपनी दोस्ती का पुरजोश मुजाहरा किया उसके लिए और आपकी मेजबानी के लिए भी मैं शुक्रगुजार हूं।

पिछले दो हफ्तों मे मै सोवियत संघ मे बहुत घूमा हूं। जहां कही भी मै गया, मै सभी हल्कों के लोगो के पुरखुलूस सलूक से मुतास्सिर हुआ हूं। मै इस दौरे के बाद कुछ नतीजों पर पहुंचा हू जिन पर मै फुर्सत मिलने पर और गौर करूंगा। जो असर मेरे दिल पर सब से गहरा पड़ा है वह उस शानदार तरक्की का है जो रूस ने 40 साल के थोडे अरसे मैं हासिल की है। मध्य एशिया के गणराज्यो मे यह तरक्की और भी ज्यादा नुमाया मालूम होती है, क्योंकि 40 साल पहले इन इलाको की हालत बहुत ही पिछड़ी हुई थी। कल मैं स्तालिनाबाद से आया जो एक उमदा मौजूदा जमाने का शहर है और जिसके बारे मे मुझे बताया गया कि इन्कलाब से पहले वह एक छोटा सा गाव था और सारे गांव को उस समय मिट्टी के तेल का एक चिराग रोशन करता हुआ था। ताशकन्त और समरकन्द भी इतने बडे हो गए है कि पहचाने नही जाते। यह कहना मुबालगा नही होगा कि मध्य एशिया के बहुत से हिस्से पिछले चालीस सालो में मध्य युगीन हालत मे से निकलकर आधुनिक युग मे आ गए है।

सोवियत मध्य एशिया की यह गैरमामूली तरक्की सब पिछड़े हुए मुल्कों के लिए खास अहमियत रखती है। हमारी सरकार महसूस करती है कि गरीबी, बीमारी और निरक्षरता जैसी बुराइयों को धीमी गति से आहिस्ता-आहिस्ता दूर होने देना और तब तक के लिए इन्तजार करते रहना गैर मुमकिन है। ये बुराइया फौरी इलाज का तकाजा करती है। खुद हमारे मुल्क में हमारी आर्थिक व्यवस्था के विकास में सोवियत सरकार ने हमारी जो मदद की है, उसका मै खुशी के साथ यहां जिक्र करना चाहूंगा। बहुत से जरूरी मामले में जैसे लोहे का कारखाना, तेल निकालने, मशीनी औजार बनाने का करखाना और दवाइयां बनाने का कारखाना वगैरा के सिलसिले में सोवियत माहिरों से हिन्दुस्तान को

सोवियत सघ की उजबेक गगराज्य परिषद् द्वारा आयोजित सामरोह में भाषण; 4 जुलाई, 1960

सलाह और मदद मिली। हिन्दुस्तानी और सोवियत टेक्निश्यन एक दूसरे के साथ पूरी तरह सहयोग करते रहे है। इस सहयोग की गुञ्जाइश हमारी तीसरी योजना मे और भी ज्यादा होगी और हिन्दुस्तान के भविष्य पर इसका फैसलाकुन असर पडेगा। मुझे इसमे शक नही कि इस योजना को अमल मे लाने के लिए सोवियत सरकार अपनी मदद और हमदर्दी देती रहेगी।

कल मुझे एक ऐसा शहर देखने का मौका मिला जिसके नाम मे हमशा मेरे लिए जादू की सी कशिश थी, वह शहर है समरकन्द। सोवियत सघ मे दूसरी जगहो की तरह वहा भी मै ने देखा कि कदीम इमारतो की मरम्मत, पुराने खडहरो की खुदाई और अपनी सास्कृतिक परम्पराओ की हिफाजत पूरे गौर के साथ की जा रही है। अनेक सालो से हिन्दुस्तान और उजबेकिस्तान दर्म्यान मुखतिलफ किस्म के ताल्लुकात रहे है। इस बात के अनेक सबूत मौजूद है कि बुद्ध धर्म के मध्य एशिया मे प्रचार के साथ हिन्दुस्तान के खयालात, उनका रहना सहन और सास्कृति इस इलाके में भी फैली। काश्मीर और गान्धार के रास्ते से हिन्दुस्तान का फिलसफा एशिया के इस हिस्से में आकर साइबेरिया तक फैल गया। तारीख के इस अध्याय पर अभी तक अनुसन्धान हो ही रहे है। मुझे एक बात बडी रुचिकर मालूम हुई जब मै ने यह जाना कि हाल मे ही उजबेकिस्तान में खुदाई में एक पूरा बौद्ध मन्दिर निकला है और उसके अन्दर बुद्ध की एक सुवर्णमूर्ति भी मिली है।

कुछ दिनो के बाद एक दूसरे किस्म का ताल्लुक कायम हुआ जब बाबर फरगना से जो समरकन्द से दूर नही है, भारत गया। उसीके एक वंशज, शाहजहा ने ताज की तामीर की और इस तरह भारत को एक अमर कलाकृति दी। अब उजबेकिस्तान के साथ, बल्कि तमाम सोवियत सघ के साथ हमारे ताल्लुकात का नया दौर शुरू हुआ है। आपके रहनुमा, कलाकार, गायक, नृत्यकार और लेखक हमारे मुल्क में गए और हमारे यहा के लोग आपके मुल्क मे आये। इन सब की वजह से उस नेक फहमी मे इजाफा हुआ जो हमारे दोनों मुल्को के लोगों मे है। इसका इजहार हमारे दोनो मुल्को की अमन के लिए ख्वाहिश मे भी हुआ। सोवियत सघ मे मै जहां कही भी गया, मै ने देखा कि लोगो में शान्ति के लिए उत्कट इच्छा है और जंग के लिए बेहद खौफ। मै ने यह भी देखा कि आपकी सरकार और खास कर श्री ख्रुश्चेव जिनका हमे दो बार हिन्दुस्तान मे स्वागत करने का फ़ख्र हुआ है, सोवियत लोगों की अमन पसन्दी की पूरी नुमाइन्दगी करते है। श्री ख्रुश्चेव अमन के लिये इतनी अनथक कोशिश करते रहे है जितनी हमारे प्रधान मन्त्री जवाहरलाल

नेहरू । हमारी यह उम्मीद और दुआ है कि उनकी कोशिशें और संसार में अमन के लिए जाने वाली सभी लोगों की कोशिशें जल्द-से-जल्द कामयाब हो ।

जब मैं अपनी मोहतरीमा मेजबान, उज़बेकिस्तान के गणराज्य की सर्वोच्च सोवियत की अध्यक्षा, सोवियत संघ के लोगों की और ज्यादा तरक्की और खुशहाली और हमारे दोनों मुल्कों के लोगों की अमर दोस्ती और विश्व शान्ति के हक़ मे जाम पेश करता हू ।

ताशकन्त में पत्र प्रतिनिधि सम्मेलन

मै करीब 15 दिनों से सोवियत संघ मे घूमा हूं और मै ने 5, 6 स्थानों को देखा है। मै जहां कही गया हूँ लोगों ने मेरे प्रति उदारता दिखाई है और मेरे देश के प्रति मैत्री भाव। इससे मेरे दिल पर यह असर पडा है कि इस देश के लोग भारत के साथ मैत्री चाहते हैं। आपके इस देश में बहुत बडे पैमाने पर औद्योगीकरण हुआ है और सभी जगहों पर हर किस्म के काम के लिए मै ने यह देखा है कि लोग मशीनों का उपयोग करते है। खेती के काम मे भी मशीनो का बहुत उपयोग होता है। मुझे एक चीज़ और बडी उत्सुकता से देखने की इच्छा रही है। वह यह है कि यहां इस देश मे विभिन्न भाषाओं के बोलने वाले लोग किस तरह से इस देश का काम चलाते है, विशेष करके शिक्षा के सम्बन्ध मे किस तरह से उन भाषाओ में भी जो पहले विकसित नही थी लोगो ने ऊंचे दर्जे की शिक्षा प्राप्त कर ली है। इस तरह से हमारे देश के लोगो को कई बातों मे आपसे शिक्षा लेनी चाहिए। हम अपने देश में इस समय जल्द-से-जल्द आर्थिक और दूसरे प्रकार की उन्नति भी, विशेष करके शिक्षा के सम्बन्ध मे करना चाहते है और हम इस प्रयत्न मे है। हम लोगो को जो प्रेम और सौहार्द यहा मिला है उसको मै अपने देश मे जाकर लोगों को बताऊंगा।

प्रश्न : आप सोवियत संघ की अपनी यात्रा का मूल्याकन कैसे करते है ?

उत्तर : मै अपनी इस यात्रा को बहुत महत्व देता हूं। मै ने यहां आकर बहुत कुछ देखा और सुना है जिससे हम अपने देश के लिए भी सबक ग्रहण कर सकते है यद्यपि हमारे दोनों देशो की राज्य व्यवस्था और शिक्षा पद्धति इत्यादि मे बहुत अन्तर है। मै समझता हूं कि भारत और सोवियत संघ दोनो अपने प्रकार की नीति और राज्यशैली को चलाते हुए भी एक दूसरे के साथ मित्रता कर सकते है। उस स्थिति मे सह-अस्तित्व की भावना केवल भावना मात्र नही रहकर एक अमली चीज बन जाती है।

प्रश्न : आपके ख्याल मे भारत और सोवियत संघ संस्कृति के सम्बन्ध में किस रास्ते से चले कि दोनों एक दूसरे के अधिक नजदीक आवें ?

उत्तर : मै समझता हूं कि इन दोनो देशों के आपस के सास्कृतिक सम्बन्ध और बढ़ाए जाये और एक दूसरे के साथ अधिक परिचय प्राप्त किया जाए।

ताशकन्त में प्रेस कान्फ्रेन्स; 5 जुलाई, 1960

प्रश्न : आप भारत और सोवियत सघ के पत्रकारो से दो शब्द कहे।

उत्तर : मै सभी देशों के पत्रकारों से यह कहना चाहूंगा कि एक दूसरे के साथ मित्रता बढ़ाने मे वे सहायक हुआ करे और चाहे उनके लेख किसी भी विषय पर हो उनको इसका ध्यान रखना चाहिए जिसमे आपस मे किसी प्रकार का गैरजरूरी मनमुटाव न पैदा हो ।

प्रश्न : मध्य एशिया के गणतन्त्रो मे आपने कौन-सी सब से बडी चीज देखी जिसने आप पर सब से अधिक प्रभाव डाला ।

उत्तर . सोवियत मध्य एशिया के प्रदेशो मे मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुयी कि यद्यपि उनकी भाषा और जाति अलग-अलग है पर सभी सोवियत गणतन्त्र के प्रति एक समान प्रेम रखते है और सभी जगहों मे अपनी-अपनी भाषाओ के द्वारा ऊची से ऊची शिक्षा उनको मिलती है। सार्वदेशिक काम मे वे रूसी का प्रयोग करते है और सभी लोग रूसी भी समझते है ।

प्रश्न . आप सोवियत सघ की जनता से किस प्रकार की कामना करते है कृपाकर कुछ कहे ?

उत्तर : यहा के लोगो मे मै ने यह देखा कि मशीन के जरिए से काम करके उन्होंने अपनी भौतिक सम्पत्ति काफी बढा ली है और उसको दिन-प्रति-दिन और भी बढ़ाते जा रहे है। मै ऐसे एक देश मे आया हूं जहा के लोगों का विचार और मेरा अपना विचार ऐसा है कि केवल भौतिक सम्पत्ति या भौतिक उन्नति से ही मनुष्य का काम पूरा नही होता है । उसके साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति भी जरूरी है और यद्यपि मैं जानता हूं कि यहा के लोग उससे अलग नही है तो भी मै चाहूंगा कि अधिक-से-अधिक उस तरफ भी ध्यान दिया जाए ।

प्रश्न : सोवियत संघ की यात्रा करते समय किस चीज ने आप पर सब से बड़ा प्रभाव डाला ?

उत्तर . तीन चीजों से मै बहुत प्रभावित हुआ हू । पहली चीज है बहुत बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण और सामूहिक खेती । दूसरी चीज है लोगो मे प्राचीन एवं आधुनिक वस्तुओ को जिनका ऐतिहासिक महत्व है सुरक्षित रखने की प्रवृत्ति और तीसरी चीज मै ने यह देखी कि सभी जगहो पर लोगो

के मुह पर केवल मैत्री का भाव ही नही बल्कि नि:शस्त्रीकरण और सार्वभौम शान्ति की इच्छा भी है ।

प्रश्न : उजबेकिस्तान गणतन्त्र मे रहते समय आपका ध्यान यहा की स्त्रियो की ओर गया होगा । आपका विचार उजबेकिस्तान की स्त्रियो के बारे में कैसा है ?

उत्तर : मै ने जहा तक सुना है, उजबेकिस्तान मे पहले स्त्रियो मे शिक्षा का पूरा अभाव था, यो तो पुरुषो मे भी शिक्षा कम थी पर स्त्रियो में कुछ भी नही थी । इसके अलावा स्त्रिया परदा रखती थी । पर क्रान्ति के बाद स्त्रिया पूरी तरह से आजाद हो गयी और वे सभी कामो मे भाग ले रही है । मै ने यह सुना कि सोवियत संघ मे ऐसे बहुत काम है जो हमारे देश मे केवल पुरुष ही किया करते है । स्त्रिया करती है जैसे रेल गाड़ी और मोटर गाडी चलाना इत्यादि । शिक्षा का काम तो स्त्रियों का ही है । उजबेकिस्तान मे भी शिक्षा का काम विशेष करके वे ही करती है । मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुयी कि यहा की राजनीति का संचालन यहा की एक बहन करती है ।

प्रश्न : आज जो प्रेस कान्फ्रेन्स हो रहा है उसे उजबेकिस्तान के कलखोज के किसानो को टेलिविजन पर दिखलाया जाएगा । आप कलखोज के किसानो से दो शब्द कहे ।

उत्तर : उजबेकिस्तान के कलखोज के किसान बहनों और भाइयो मै ने कलखोजों को जहा तहा देखा है और कलखोज मे लगी हुयी फसल भी मैं ने देखी है । मुझ से वहां की पैदावार का जो हिसाब बताया गया वह बहुत ऊंचा है । यद्यपि मै ठीक यह नहीं कह सकता कि हमारे देश के मुकाबले में वह कितनी ऊंची है क्योंकि यहा की और हमारे देश की जो नापने और तौलने की मात्राए है वह अलग-अलग है और मैं अभी पूरी तरह से अपने देश की मात्राओं मे यहा की सख्या को परिणत नही कर पाया हूं । मै उन सब बहनो और भाइयों को अपना प्रेम और शुभ कामना भेजता हू कि वे दिन-प्रति-दिन अधिक उन्नत हो ।

प्रश्न : सोवियत लैंड नामक पत्रिका के भारतीय पाठकों से आप कृपाकर दो शब्द कहे ?

उत्तर : सोवियत लैंड के भारतीय पाठकों से मेरा यही अनुरोध है कि वे इस देश मे जितनी अच्छी चीजें है उनका ध्यानपूर्वक अध्ययन करें और इस दृष्टि को अपने सामने रखे कि उनका एक यह काम भी है कि जो कुछ यहां अच्छा पावे उसे भारत तक पहुंचाने का प्रयत्न करें । विशेष करके यहा के लोगों मे हम ने देखा है कि वे बहुत परिश्रम करते है और हर तरह से वे अनुशासन मानते है । हमारे देश मे इस चीज की जरूरत है कि लोग परिश्रम भी करे और साथ साथ अनुशासन के अन्दर रहकर देश की उन्नति के काम में लगे रहे । मै चाहूंगा कि इस संदेश को आप लोग ले और भारत को पहुंचावें ।

प्रश्न : बनारस, आज के प्रतिनिधि द्वारा, सोवियत संघ के लोगों के प्रेम और आतिथ्य के बारे मे आपको क्या कहना है ?

उत्तर उनके आतिथ्य और मित्रता का अनुभव आपने उसी तरह से किया है जिस तरह से मैं ने किया है । मै चाहूंगा कि अपने देश मे लौटकर इस चीज को लोगो तक पहुचाया जाए ।

अलविदा

कुछ मिनटों में ही मै सोवियत भूमि से प्रस्थान करूगा । मुझे खुशी है कि मै आप के मुल्क में आ सका । इतना ही अफसोस है कि आप के साथ और ज्यादा दिन नही ठहर सका । फिर भी मै अपने साथ कीमती तजरुबा लेकर और सोवियत लोगों की कामयाबियो और जिन आलीशान कारनामो मे वे आजकल मसरूफ है उनके बारे मे और ज्यादा जानकारी लेकर वापस लौट रहा हू । इन दो हफ्तो मे मैं आप लोगों के, मेरे लिए और मेरे मुल्क के लिए किये गए, दोस्ती के मुजाहरो से और मेरा और मेरे साथियों का आपने जो स्वागत किया है उससे बहुत मुतास्सिर हुआ । जहा कही भी हम गये, चाहे वह जगह आपकी राजधानी मास्को हो या लेनिनग्राद, कीव, सोची या स्तालीनाबाद हो, समरकन्द या ताशकन्त हो, आपके देशवासियो ने मेरा खैरमकदम अपने ही आदमी की तरह किया । इस आलीशान इस्तकबाल और हिन्दुस्तान के लिए दोस्ती के मुजाहरे की दास्तान मै अपने साथ हिन्दुस्तान ले जा रहा ह । मुझे यकीन है हमारे लोग इसे सुन कर खुश होगे ।

मैं सोवियत संघ के कई हिस्सों में घूम चुका हू । मगर ताजकिस्तान और उजबेकिस्तान की अपनी यात्रा के बारे मे मै खास तोर से कुछ कहना चाहूगा । मुखतलिफ जातियो के, मुखतलिफ समाजी और तारीखी पसमजर के लोगो को एक राष्ट्र मे ढाल देने की आपकी कोशिशों को मै ने हैरत और एतराफ की निगाह से देखा है । इसके साथ ही इन जातियों के वस्फ, इनकी अपनी संस्कृति और कला को महफूज बनाये रखने के लिए भी आप सब मुमकिन कदम उठा रहे है । एशियाई गणतत्रो में एक से ज्यादा जुबान के माध्यम से तालीम के बारे में जो तफसील हमे मिली, उसे भी मै ने बहुत गौर और दिलचस्पी से देखा है । मुझे यकीन है कि हम भी जो अपने मुल्क मे एक ऐमी ही समस्या का सामना कर रहे है, आपके अमली तजरुबे से फाइदा उठा सकते है ।

आपके मुल्क मे अपने कलील कयाम के दौरान मे मुझे आपकी सातसाला योजना को तफसील में जानने और अभी तक आपने जो कामयाबियां हासिल की है, उनकी जानकारी लेने का मौका मिला । हिन्दुस्तान मे योजना के मुताबिक अपने मुल्क का तामीरी काम करते हुए हमे अभी मुश्किल से दस साल ही हुए है । पिछले दस सालों मे अपनी योजनाओ को अमली शकल देने में हमे कई दोस्त

सोवियत संघ से प्रस्थान के समय भाषण; ताशकन्त, 5 जुलाई 1960

मुल्कों से काफी माली मदद मिली है । हमने इस इमदाद को खुशी से कवल किया : क्योंकि यह बिला शर्त के और किसी सियासी या और तरह की सौदेबाजी के थी । सोवियत संघ से जो करीब 270 करोड रूबल की ठोस मदद मिली, उसके लिए मैं इस मौके पर सोवियत सरकार के तईं शुक्रिये का इजहार करना चाहूगा । मुझे उम्मीद है कि अपनी तीसरी योजना के अर्से में भी हम आपकी मदद और आपके सहयोग पर भरोसा कर सकते है ।

जैसा कि पिछले दो हफ्तो मे आपके मुल्क में मुखतलिफ मकामो पर मै कहता आया हूं, हम लोग अपने मुल्क के साथ आपके सहयोग की बडी कद्र करते है । हमारी सरकार और हिन्दुस्तान के लोगो का यह अकीदा है कि खयालात और समाजी नजाम मे इखतलाफ रहते हुए भी मुखतलिफ मुल्को में आपसी सहयोग मुमकिन है । हमारे और आपके मुल्क के वाहमी ताल्लुकात इस बात का जीता-जागता सबूत है । आपके लीडर, निकेता ख्रुश्चेव ने पार्टी काग्रेस के बीसवे सालाना जलसे में यह एलान किया था कि मौजूदा हालत मे दुनिया मे हथियारबन्दी लाजिम नही और सह-अस्तित्व निहायत जरूरी है । तबसे उन्हो ने कई बार इस बात को दोहराया है । अभी कुछ रोज हुए रूमानियन मजदूरो की काग्रेस मे भी उन्हों ने यही कहा था । हम इन जजबात की तहे दिल से ताईद करते है । कोई भी बाहोश आदमी आज अमन के सिवाय और किसी चीज की ख्वाहिश नही कर सकता । मुझे यकीन है कि तहम्मुल और बुर्दबारी से आपसी शको-शुबाह की दीवारे गिराई जा सकती है जो आज दुनिया के मुल्को को एक दूसरे से अलग किये हुए है । हिन्दुस्तान के लोग हमेशा उन लोगो के साथ होगे जो शान्ति या अमन के हामी है और उसके लिए कोशा है । इसलिए हम तनाव दूर करने और अमन की ताकतो को उभारने की आपके अजीम लीडर ख्रुश्चेव की कोशिशो की ताईद करते है ।

सर्वमहामहिम और अज़ीज़ दोस्तो,

एक बार फिर मै आपका शुक्रिया अदा करता हू । हिन्दुस्तान और रूस की जनताओ की दोस्ती जिन्दाबाद ।

————————सलाम और दस्विदानिया————————

रूसी दौरे के बारे में आकाशवाणी से भेंट

पन्द्रह दिन पहले जब मै ने सोवियत देश की भूमि पर कदम रक्खा था, मेरे मन में उत्साह था, नये-नये लोगों से परिचय पाने की उमंग थी और नई-नई चीजें देखने की उत्सुक्ता थी। ज्यों ही मैं सोवियत देश की राजधानी मास्को मे उतरा वहां की शीतल वायु ने मेरा स्वागत किया और मित्रता का नूतन संदेश दिया। मैंने वहा जो कुछ भी देखा उसका मेरे दिल पर गहरा असर हुआ। वहां की ऊंची-ऊंची इमारतें, विशाल सडकें और इन सब की बुनियाद में सोवियत देश के लोगों का अनूठा उत्साह, यह सभी कुछ मेरे लिये प्रेरणादायक था।

जब मै लेनिनग्राद पहूचा तो वहां की हवा मे भी मानो लेनिन के विचारों की और उस क्रांति की गूज पायी जो आज भी वहां के कण-कण में व्याप्त है। मैंने जब उस स्थान को देखा जहा से लेनिन ने अक्तूबर 1917 की क्रांति का ब्युगुल बजाकर अपने देश को एक नया सन्देश दिया था तो मुझे भी अनायास हमारे देश की 1917 की क्रांति के आरम्भ के दिन याद हो आये। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने 1917 में ही देश के लिये स्वाधीनता आन्दोलन का आरम्भ किया था। इन बातों के साथ ही मुझे स्मरण हो आया कि गांधी जी का तो मूल सिद्धांत सत्य और अहिसा था। यहां भी लोग अपने तरीके से आज निःशस्त्रीकरण और विश्वशांति की मांग और कोशिश कर रहे है।

लेनिनग्राद से जब मैं कीव पहुचा, एक पूरे युग का इतिहास मेरी नजर के सामने खड़ा हो गया। अपने देश के नवनिर्माण मे लगे लोगो और ताजे फूल से खिले बच्चों को देखकर मुझे भी बड़ी स्फूर्ति मिली। यहा की न्यपर नदी में स्नान करते हुए हज़ारो नर नारियो को देखकर मुझे अपने देश के स्नान मेले याद आगये।

आज के लेनिनग्राद और कीव के रूप को देखकर यह कल्पना नही की जा सकती कि एक समय ये स्थान युद्ध स्थली बने हुए थे और बहुत अश मे बरबाद हो चुके थे। यहा के "कलखोस" सहकारी कृषि के नमूने को भी मैने देखा। यह ठीक उसी स्थान पर है जहा युद्ध हुआ था, किन्तु वहां आज हरे भरे खेत है।

लेनिनग्राद और कीव के इस पुनर्निर्माण के बाद मैने सोची का स्वास्थ्यदायक नया पर्वत्तीय शहर देखा। जनसाधारण के लिये यहां विश्राम की जो सुन्दर व्यवस्था है उससे मै प्रभावित हुआ। यहा गंधक के झरनो का बड़ा अच्छा उपयोग किया

ताशकन्त में आकाशवाणी के सवाददाता द्वारा रेकार्ड किये गये सोवियत संघ के बारे में, संस्मरण 5 जुलाई, 1960

गया है और उसके स्नान द्वारा कई रोगों का इलाज कैसे होता है यह भी मैंने देखा ।

इन चारों नगरों को देख लेने पर स्तालिनाबाद, समरकन्द और ताशकन्त की नैसर्गिक गरमी के साथ यहां के लोगों के स्नेह की गरमी भी मैंने खूब देखी । यह कहना न होगा कि यहा जो भी मैंने देखा वह भव्य था ।

स्तालिनाबाद बिल्कुल नया शहर है जो एक छोटे गाव से परिवर्तित होकर बड़ नगर का रूप ले रहा है, जहा बड़े-बडे कारखाने और मकान बन रहे है ।

समरकन्द एक बडा ऐतिहासिक शहर है । यहा की भव्य इमारतें और वेधशाला तैमूरलंग और उसके पोते उलूकबेग, जो बडा भारी ज्योतिष शास्त्र का विद्वान था, उनकी यादगार है । मैंने यह सब भी देखा ।

ताशकन्त उजबेकिस्तान की राजधानी है । और यहां पर प्राचीन को नवीन में बदलते हुए देखा जा सकता है । इन सभी स्थानो पर नये-नये कारखानों के अलावा मार्के की बात यह है कि प्राचीन इमारतो की काफी मरम्मत और सुरक्षा का प्रबन्ध हो रहा है । मध्य एशिया के शहरो मे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सोवियत देश के इन गणराज्यो मे जहां पूर्व मे अरबी लिपि चलती थी अथवा लिपि नही थी, वहा अब सभी जगह रूसी लिपि प्रचलित कर दी गई है और वहा की अलग-अलग भाषाओ द्वारा वैज्ञानिक, तकनीकी तथा अन्य विषयों की शिक्षा स्थानीय भाषाओ मे ही दी जाती है । पाठ्य-पुस्तकें जहां प्रचलित भाषा में उपलब्ध नही हो सकी उन्हें रूसी तथा दूसरी वैदेशिक भाषाओं की पुस्तको से अनूदित कर लिया गया है । यह सब पिछले चन्द वर्षों के अन्दर ही पूरा किया गया है ।

यहा के लोग चाहे वह स्त्री हो या पुरुष बड़े परिश्रमी है । और जहा तक मै देख सका हूं वे स्वस्थ और सम्पन्न नज़र आये । खासकर स्त्रियो को सभी क्षेत्रों में काम करते हुए पाया, कई ऐसे काम जो हमारे देश मे अधिकतर पुरुष ही किया करते है जैसे रेल, मोटर, बस चलाना इत्यादि । बच्चो की शिक्षा का काम तो उनका है ही । इस तरह बहुत सी चीजे इस देश मे जानने मे आयी जिनसे अपनी अलग पद्धति और स्वतंत्र व्यक्तित्व रखते हुये भी हम बहुत कुछ सीख सकते है ।

अपनी यात्रा के दौरान में जहां कही भी गया, मैंने लोगों में नवनिर्माण का उत्साह, पारस्परिक सौहार्द, विश्वशांति के लिये उत्कट इच्छा और भारत के लिये विशेष मैत्रीपूर्ण भावना का दर्शन किया और सभी जगह से शुभकामनाए मिलीं जिन्हें मैंने अपने देशवासियो के लिये लाया हूं ।

144

ग्राभार-प्रकाश

सोवियत लोगों ने मेरे दो हफ्ते के दौरे में जहां कहीं भी मैं गया मेरा जो हार्दिक स्वागत ग्रौर ग्रतिथि सत्कार किया, उसके लिए मैं ग्रापका ग्रौर ग्रापके महान् देश के लोगों का ग्राभारी हूं। मैं सौभाग्यशाली हूं कि ग्रापके देश की मैं यात्रा कर सका ग्रौर जीवन के सभी क्षेत्रों मे ग्रापने जो महान् प्रगति की है, उसे स्वयं देख सका। मेरा विश्वास है कि मेरी यात्रा हमारे दोनों देशों के मौजूदा मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को ग्रौर भी दृढ़ बना देगी मैं सोवियत जनता की सुख-समृद्धि की कामना करता हूं।

हवाई जहाज़ से राष्ट्रपति द्वारा सोवियत संघ की सर्वोच्च परिषद के ग्रध्यक्ष, महामहिम श्री ब्रेज्नेव को भेजा गया विदाई संदेश, 5 जुलाई, 1960

145

सोवियत लोगों को सन्देश

आपके देश में दो स्मरणीय सप्ताह बिता कर, मै अभी अपने देश के लिए ताशकन्त से रवाना हुआ हूं। सोवियत देश मे जहां-कही मैं गया आपने और आपके लोगों ने मेरा जो हार्दिक स्वागत किया उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। आपके लक्ष्यों, आदर्शो और आपकी सफलताओं का चित्र अब मेरे सामने अधिक साफ हो गया है; और मैं आपके प्रयत्नों की सफलता चाहता हूं तथा आपके लोगों की सुख-समृद्धि की कामना करता हू।

हवाई जहाज से राष्ट्रपति द्वारा सोवियत संघ क मंत्रि मंडल के अध्यक्ष, महामहिम श्री ख्रुश्चेव को भेजा गया विदाई संदेश; 5 जुलाई, 1960

भारतीय भाषाओं में उर्दू का ऊंचा स्थान

हज़रात,

मैं आप सब का बहुत मशकूर हूं कि आपने मुझे यह मौका दिया कि मैं आप साहेबान के साथ चन्द लमहें गुजार सकू और यहां की हालात से वाक॰ फियत हासिल कर सकूं। मैंने रिपोर्ट पढ़ ली थी जिससे यहा का हाल मुझे मालूम हो चुका था और यहां पहुंचने पर जौर साहब ने भी बताया। मुझे इस बात का अफसोस है कि मैं ऊपर नहीं जा सका, अगर ऊपर जा सकता तो मैं अपनी आंखों से आपने जो किताबों का बड़ा खजाना जमा कर रखा है उनको देख सकता और जो दूसरी कीमती चीजें इकट्ठी कर रखी है उनसे वाकफियत हासिल कर सकता । मगर मुझे आपने जो कुछ कहा उतने से ही सब करना पड़ता है क्योंकि मै मजबूर था ऊपर जाने से।

हिन्दुस्तान में बहुत जबानें चलती है और सिर्फ जबानो के मामले में ही नहीं बल्कि और कई मामलों में हिन्दुस्तान के मोतफरिक हिस्सो मे मोतफरिक चीजें चलती है। जबानें अलग, वहां की रहन-सहन, चाल-चलन, खाने-पीने, कपड़े पहनने का तर्ज अलग-अलग है। यह सब होते हुए सारा हिन्दुस्तान अपने को एक मानता आया है। पर आज के पहले ऐसा कभी मौका नहीं आया था जब सारा हिन्दुस्तान एक किसी शाहंशाह हो चाहे महाराजा हो उसके मातहत आया हो। अलग-अलग छोटी-छोटी सल्तनतें सारे मुल्क मे थी जिनका आपस में झगड़ा हुआ करता था, नाइत्तिफाकी हुआ करती थी मगर उन सब नाइत्तिफाकी और झगड़ो के बावजूद हिन्दुस्तान हमेशा एक रहा है और आज भी एक है। आज नई चीज़ यह हो गई है कि हम सेयासी तरीके से भी एक हो गये है और आज कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक सिर्फ एक ही सैयासी हुक्म चल रहा है और एक ही गवर्नमेंट सभी जगहो पर काम कर रही है। यह हमारे लिये बडी खुदादाद चीज़ मिली है और अगर हम इस चीज़ को कायम नही रख सके तो हम हमेशा के लिये दुनिया के सामने बदनाम होकर रहेगे और हमारे पीछे आनेवाले लोग हमारी शिकायत करेंगे इसमे कोई शक नही।

तो इस चीज़ को कायम रखने का तरीका यही है कि जो हम आपस में अलग-अलग अब तक रहते आये है उसके बावजूद हम एक रहे है इस चीज़ को हम

ऐवाने उर्दू, हैदराबाद, में भाषण; 29 जलाई, 1960

मजबूत करें। जो जबानें है उन सब को अपनी-अपनी जगह पर जहां तक हो सके तरक्की देनी चाहिए और उनको तरक्की हासिल करने का मौका मिलना चाहिए और यही हमारी रियासत का, हमारी सल्तनत का रवैया भी है, यही हमारी हुकूमत का फैसला भी है कि जितनी जबानें हिन्दुस्तान मे है वे अपने-अपने इलाके में मोरविज रहे और वहां की तालीम, वहां की सल्तनत का सारा शोबा उन्हीं जबानों की मारफत कायम किया जाए। मगर सारे मुल्क के लिए एक जबान होनी चाहिए जिसका नाम हिन्दी को दिया गया है।

मै उन लोगों में से हूं जो समझते है कि हिन्दी और उर्दू दो चीजें नहीं है। मैं हमेशा से मानता आया हू कि इन दोनों को दो समझना गलत है। यह हो सकता है कि दो आदमी हो और अलग-अलग हों या एक ही आदमी हो पर दो रंग का कपड़ा पहनकर मालूम हो कि दो है, एक ही दो सूरत में अलग-अलग नजर आता है। चन्द लफ्ज एक मे से निकाल दें और चन्द लफ्ज दूसरे में से निकाल कर जोड़ दे तो दोनो मिलकर एक हो जाते है क्योंकि जबान की असली पहचान उसके लफ्ज नही बल्कि उसका ग्रामर है और हिन्दी और उर्दू का ग्रामर एक है, उसमें कोई फर्क नही है। अगर फारसी और अरबी के लफ्ज उर्दू से निकाल दिये जाएं और जो संस्कृत के लफज हिन्दी में आये हैं उनको निकाल दिया जाए तो दोनों मिलकर एक हो जाती है। दूसरा तरीका यह है और वह उससे बेहतर है कि जो अरबी और फारसी के लफ्ज उर्दू मे आये है उनको हिन्दी में मिला लिया जाए और हिन्दी में जो संस्कृत के लफ्ज मोरविज है उनको उर्दू में ले लिया जाय तो भी दोनो एक हो जाती है। इन दोनों मे से एक तरीका अख्तियार करना चाहिए। मै समझता हूं कि दूसरा तरीका ज्यादा आसान और फायदेमन्द भी है। फायदे-मन्द इसलिये है कि जैसे-जैसे लफ्ज बढ़ते जायेगे, जबान की ताकत बढ़ती जायेगी और जब जबान मे ताकत आती जायेगी तो अच्छे से अच्छे और बुरे तथा कदिम खयालों को अच्छी तरह से जाहिर कर सकेगी। अगर एक ही माने के लिये दो तीन लफ्ज आ गये हो तो कोई हर्ज नही क्योंकि वक्त पाकर इन लफ्जों के माने मे थोड़ा फर्क आ जाता है जो अंग्रेजी में 'सेन्स आफ मीनिग' कहा जाता है। इस तरीक से आज भी हिन्दी में में भी कुछ ऐसे लफ्ज हैं, उर्दू में भी ऐसे लफ्ज है जिनका एक वक्त एक ही माने था लेकिन आहिस्ता-आहस्ता थोड़ा फर्क पाकर दोनो के दो माने हो गये है। इस तरह से हिन्दी और उर्दू के लफ्ज एक दूसर में मकबूल होना चाहिए।

मगर यह खयाल रखना होगा कि हिन्दीवाले हिन्दी को इतनी सख्त नहीं बनावें जिसमें वह उर्दूवालो के लिये और ज्यादा मुश्किल हो जाए और उर्दू-

वाले अपने को और सख्त न बनावें जिसमें हिन्दीवालों के लिए और ज्यादा मुश्किल हो जाए। जो दोनों जबानों में मोरविज लफ्ज है चाहे वे उर्दू में फारसी के लफ्ज हों चाहे हिन्दी में संस्कृत के लफ्ज हों दोनों को एक कर दिया जाए और कायम रखा जाए। आगे सायन्स के लफ्ज की जरूरत होगी। मामूली काम के लिये जितने लफ्ज दोनों जबानों मे है वे काफी है। सायन्स के लफ्ज की कमी है। उनको चाहे आप अरबी फारसी से ले, चाहे सस्कृत से ले, चाहे अंग्रेजी से लें क्योंकि वह एक नई चीज है। मगर जो मामूली कारबार के लफ्ज है जिनसे सब को ताल्लुक होता है, जो रोज-व-रोज के काम में, हर किस्म के काम के लिये मोरविज लफ्ज है काम मे आते है उनको मिला दिया जाए तो वे काफी से ज्यादा हो जाएं और उनको और भी ज्यादा ताकत मिल जाए और अच्छी तरह से काम चल सके। इसलिए मै चाहता हूं कि उर्दू की भी तरक्की की जाए और खूब तरक्की की जाए और यह सुनकर मुझे खुशी हुई कि आपने इस काम के लिये यहां यह अदारा कायम किया है और इसके जरिये से उर्दू की खिदमत कर रहे है। यह ख़िदमत सिर्फ उर्दू की ही खिदमत नही है, यह हिन्दुस्तान की सभी जबानो की ख़िदमत है क्योंकि हिन्दुस्तान की किसी जबान की तरक्की होती है तो उससे दूसरी सभी जबानों की तरक्की होगी, सभी जबानों को फायदा पहुंचेगा।

इसलिए जहा-कहीं मै जाता हूं, चाहे हिन्दी के इलाके मे जाऊं चाहे किसी दूसरी जबान के इलाके मे जाऊं, मै इस बात पर जोर देता हूं कि न तो इसमें जोर जबर्दश्ती की जरूरत है और न किसी चीज को बिगाड़ने की जरूरत है और न इसमे फराकदिली होनी चाहिए कि उर्दू के लफ्जों को न निकालें बल्कि उनको अपने में मिलाने की कोशिश करके जो मसला जबान का हमेशा सामने आता है उसको जल्द हम दूर कर सकेंगे। हिन्दी को एक खास जगह मिल गई है, उसे हिन्दुस्तान की जबान का नाम आज मिला है। इसलिए उस पर एक और ज्यादा फर्ज हो जाता है कि जहा तक हो सके वह सब को अपनी तरफ मिलावे, उनको अलग करने का न तो कोई वजह है और वह फायदे की चीज है। उसको अपनी तरफ सब को खीचने की कोशिश करनी चाहिए। मै उम्मीद करता हू कि हमारा यह मसला हल होगा।

मै आप सब हज़रात से यह अर्ज करना चाहूंगा कि आप इस काम को जिस ख़ूबी के साथ चलाते आए है उसी तरह से चलाते जाएं। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि रेड्डी साहब ने ऐवाने उर्दू को जमीन दी है। जैसा आपने कहा, उनके लिये यह कोई नई चीज नही है। सन्त विनोबा भावे के काम का शुरूआत उनके भाई

के जमीन देने स ही हुआ था। यह बड़ी खुशी की बात है कि आपने इस नेक काम में भी मदद की है। मैं आप सब की तरफ से, अगर इजाजत हो, तो उनको शुक्रिया अदा करना चाहता हूं और मुझे उम्मीद है कि आप सब उस शुक्रिया में शरीक होंगे।

व्यायाम का महत्त्व

दोस्तो और बच्चो,

मुझे इस व्यायामशाला में आज आ कर बड़ी खुशी हो रही है। जब मुझ से यहां आने के लिए कहा गया था, मैंने उसको बहुत खुशी से इसलिये मंजूर कर लिया था कि हम ऐसे लोगो को देख सकेंगे जो अपने शरीर को मजबूत बनाने में यहा लगे हुए है। यहा मुझे यह देखकर बड़ी खुशी हुई कि हर तरह की कसरत का इन्तजाम आपने यहां किया है और सब लोग जो यहा आते है वे वक्त से और मामूल तौर पर हमेशा मुकर्रर तरीके से काम करते है और सीखते है। उनकी कसरत का थोड़ा नमूना देखने को मिला और मैं देख करके खुश हुआ कि उनका शरीर सुन्दर और मजबूत बन रहा है। मुल्क को इस चीज़ की जरूरत है कि हमारे लोग शरीर से मजबूत हों, दिमाग से तेज हों और दिल से शखी हों। जब ये चीज़ें हमारे मुल्क के लोगों में आ जायेंगी तो यह मुल्क बहुत आगे बढ़ सकेगा, बहुत ऊंचा उठेगा। आपने इस चीज़ का भार अपने ऊपर लिया है।

इसके साथ-साथ मैं यह भी जानता हूं कि जो लोग इस तरह के काम में लगते है उनका खयाल भी कुछ अच्छा ही होता है क्योकि बुरे खयाल के लिए उनके पास वक्त नही होता या उनका दिमाग उस तरफ जाता नही। इसी वजह से इस तरह के व्यायाम का महत्त्व हमेशा से हमारे मुल्क में दिया गया है और सभी मुल्कों मे दिया जाता है। कभी-कभी व्यायाम की शकल बहुत प्रकार की हो जाती है और उससे और भी दूसरे किस्म का फायदा है। मगर जो यहां काम सीख रहे ह उससे मुझे पूरा विश्वास है कि उन लोगों का शरीर बहुत मजबूत बनेगा और साथ ही साथ उनका चरित्र भी बनता जायेगा। इसी की जरूरत हमेशा रहती है। सिर्फ शरीर से ही काम नही चलता और अगर शरीर नहीं हो तो दूसरा कुछ हो भी नहीं सकता। इसीलिए हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि सब से पहला फर्ज आदमी का यह है कि वह अपने शरीर को ठीक रखे, तभी वह दूसरा काम कर सकता है।

तो शरीर ठीक रखने का एक तरीका यह है कि व्यायाम किया जाए और इस तरीके से किया जाए कि हर रग और रेशे पर जोर पड़े और शरीर मजबूत हो। मैंने छोटी बच्ची का व्यायाम देखा। वह बहुत ही दिलचस्प रहा और

हनुमान व्यायामशाला, हैदराबाद, में भाषण; 30 जुलाई, 1960

उससे यह भी मालूम हो गया कि अगर बचपन से तालीम दी जाए तो बच्चे हों या बच्चियां हों सभी ऐसी तालीम पा सकते हैं और अपने शरीर को मजबूत और लचीला बना सकते हैं। मजबूती के साथ-साथ लचीलापन भी जरूरी है, तभी आदमी सब काम कर सकता है।

मैं खुश हुआ कि आपने यहां आने का मुझे मौका दिया और जो कुछ मैंने यहां देखा उससे भी खुश हुआ। आप सब को बहुत-बहुत धन्यवाद।

बच्चों की संस्था में भाषण

श्रीमती ललिता बहन सच्चर, देवियो और सज्जनो,

मुझे जब यह कहा गया कि मैं बाल निवास के छोटे बच्चों की इस संस्था को मैं देखू तो मुझे यह खयाल आया कि हमेशा देश के बच्चे ही उसके भावी कर्णधार हुआ करते है। यद्यपि ये विचारे बच्चे ऐसे है जो किसी न किसी कारणवश माँ-बाप के लाड प्यार से वंचित हो गये है या जिनको किसी कारणवश समाज एक प्रकार से बहिष्कृत समझता है। उनकी देखभाल करना समाज के लिये आवश्यक है क्योंकि कोई नहीं कह सकता कि कहां पर किस बच्चे में ऐसी शक्ति आ जाये जो देश का बड़ा उपकार कर सकता है। हो सकता है कि इन बच्चों में से, जैसा और देशों में भी इस तरह के उदाहरण देखने में आये है, प्रभावशाली और मेधावी बच्चे निकलें और देश का बड़ा उपकार कर सके। इसलिये यह देश का कर्तव्य है कि वह सभी बच्चों को इस प्रकार से पोष-पाल कर तैयार करे जिसमें वे अपना जीवन निभा सकें और दूसरों की तथा देश की सेवा कर सकें।

यहां पर जो इन दो संस्थाओ को चलाने का भार आपने अपने ऊपर लिया है यह बड़ा शुभ काम है और इसमें हमको यह नही समझना चाहिये कि इस प्रकार की संस्था चलाकर किसी पर उपकार या मेहरबानी कर रहे है बल्कि यह समझना चाहिये कि हम देश की सेवा कर रहे है अर्थात् जो हमारा कर्तव्य है उसको जो हम में थोड़ी शक्ति है उसके मुताबिक निभाने की कोशिश कर रहे है। अगर मनुष्य अपने कर्त्तव्य को दूसरे प्रति ठीक तरह से समझ ले और उसको निभाने का प्रयत्न करे तो वही सब से अच्छा काम कर सकता है और अगर इस भावना से काम, अच्छा से अच्छा काम क्यों नही हो, किया जाए कि हम दूसरे पर उपकार कर रहे हैं, मेहरबानी दिखा रहे हैं, दूसरे की भलाई कर रहे है तो काम करनेवाले में जो उसकी अपनी भावना रहती है उसको भी ठेस पहुंच सकता है और वह अच्छी तरह से काम का अन्जाम नहीं दे सकता। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आप जो संस्था यहां चला रहे है इसमें उसी भावना से काम किया जायेगा। ईश्वर चाहेगा तो इन बच्चों में से ऐसे एक दो निकलेंगे जो अपना और देश का भला कर सकेंगे।

मैं बच्चों से क्या कहूं! ये अगर मेरी बात समझ सकते हों तो मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि जो कुछ वे पढ़ें, सीखें उसको अपने लिये ही नहीं बल्कि वे

राधाकृष्ण होम, हैदराबाद, में भाषण; 31 जुलाई, 1960

समझें कि देश के लिए एक थाती रखा जायेगा जो वक्त पाकर किसी न किसी तरह वे अदा करेंगे, अदा करना मुनासिब होगा ऐसा मानना भी चाहिए।

मैं उम्मीद करता हूं कि जिस तरह से इन सस्थाओं को सब की सहायता मिली है गवर्नमेंट की तरफ से भी सहायता मिले या धनी-मानी लोगों की सहायता का जो स्रोत है वह भी जारी रहेगा जिसमें आपको कभी इस बात की जरूरत नहीं महसूस करनी पड़े कि पैसे की कमी की वजह से काम ढीला पड़ता जा रहा है बल्कि ऐसे कामों में और भी अधिक सहायता करनी चाहिए और गवर्नमेंट को ऐसे कामों में मदद करनी चाहिए। यह तो जरूर है कि पहले जो लोग सहायता किया करते थे उनकी संख्या कम होती जा रही है तो कोई दूसरा स्रोत निकलना चाहिये क्योंकि सब काम गवर्नमेट की तरफ से किया नहीं जा सकता है। बहुत से ऐसे काम है जो गैर-सरकारी तरीके से किये जा सकते हैं। कई इस प्रकार के इन्स्टीट्यूशन है उनका चलना गैर-सरकारी तरीके से सबसे अच्छा हो सकता है।

मैं उम्मीद करता हूं कि जिस तरह से आपको आज तक सब की सहायता मिली है, सब की सहानुभूति मिली है वह जारी रहेगी। जिन भाइयों और बहनों ने इसमें मदद की है और जो लोग सेवा कर रहे है उनको मै धन्यवाद देना चाहता हूं और उनको विश्वास दिलाना चाहता हू कि उनकी सेवा और दान सार्थक है, उससे बहुत बड़ा लाभ होनेवाला है। मुझे आपने यह मौका दिया उसके लिये मै आपको धन्यवाद देता हू।

154

सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं से विचार-विनिमय

मित्रो,

मुझे आप लोगों से फिर एक बार मिलने का सुअवसर मिला यह बड़ा हर्ष का विषय है। अभी जो कुछ काम का विवरण श्री प्रभाकर जी ने दिया उसको सुनकर मुझे बहुत संतोष हुआ। मैं इस बात को मानता हूं कि सर्वोदय का काम विशेषकरके सर्वोदय मंडल या सर्वोदय दल का ही है। जितनी मुस्तैदी या तत्परता से सर्वोदय मंडल के लोग इस काम को करेंगे उतना ही उसका प्रचार होगा और दूसरे लोग उसको मानेंगे। यह एक मानी हुई बात है कि आजकल राजनीति के कारण बहुत ऐसे कार्यकर्त्ता जो इस सब काम में लग सकते थे वे केवल राजनीति के काम मे ही लगे हुए है। जो उधर लग गये है उनको छोड़ दिया जाय। उनके लिये जो उन्होंने अपना कार्यक्रम निश्चित कर लिया है उस कार्यक्रम के अनुसार वे अपना काम करते जाएं। उसमें हमारे सर्वोदय मंडल के लोगों के लिये कोई विशेष हिस्सा लेने का या उसमें किसी एक दल के साथ काम करने का कोई विशेष कारण नही है, आवश्यकता भी नही है। महात्मा गान्धी का खयाल यही था कि इस प्रकार के लोगों की जन-सेवा के लिये काम करनेवालो की पूछ जो लोग केवल राजनीति में काम करेंगे वे जरूर करेंगे मगर उसकी चाहना हम लोगों के दिलों में नहीं होनी चाहिए। पर सब उनकी कार्यशक्ति पर निर्भर है। दूसरे लोग जो पूरी तरह से मदद नहीं करेंगे वे उनसे पूछेंगे। जब हम राजनीति के दलदल में फंस जाते है, उसमे जो दलबन्दियां हैं उनमें लग जाते है तो हमारा अपना काम तो रुकता ही है, उसके काम मे हम विशेष सहायक नही हो सकते। इसलिये आपने अच्छा सोचा ह कि आप अपना काम करते जाएं और जैसे-जैसे आपकी शक्ति बढ़ती जायेगी, आपकी बात सुनी जायेगी और आपके कहने के मुताबिक काम होगा इसका थोड़ा अनुभव आपको मद्यनिषेध के काम में भी मिला है।

मुझे यह सुनकर बड़ी खुशी हुई कि इतने बड़े पैमाने पर यहा सर्वोदय पात्र का काम चल रहा है। विनोबा जी को सब बात की खबर होगी। उन्होंने कहा है कि सबसे अच्छा काम आन्ध्र में रहा है। मै भी समझता हूं कि यह हुआ होगा। शुरू में ही मैंने सोचा था कि यह चल जायेगा तो इससे बडी शक्ति हो सकती

राष्ट्रपति निलयम, सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं की बैठक में भाषण; हैदराबाद, 1 अगस्त, 1960

है और जैसा मैंने उस वक्त कहा था, जब 1920, 21 साल में असहयोग आन्दोलन शुरू हुआ तो हमने इस काम को बिहार में आरम्भ किया था और साल डेढ़ साल तक कांग्रेस का सारा काम लोगों से मुट्ठी भर अन्न लेकर हमने चलाया था। हम लोग इसे बिहार में मुठिया कहते थे। घर-घर में पात्र रख दिया जाता था और रसोई बनाने के समय घर की स्त्री एक मुट्ठी अन्न उसमें रख देती थी और उसीसे इतने कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं के खाने का खर्च निकला। उस समय कार्यकर्त्ता बहुत थे। साल डेढ़ साल तक उसी से काम चला, फिर बाद में वह काम ढीला पड गया। हमको डर था कि सर्वोदय पात्र का काम ठीक चला तो चला नही तो उसमे ढिलाई पडने का डर है। मैंने अपने घर मे सर्वोदय पात्र रखवाया और उसमें अन्न रखा गया पर कोई उसे लेनेवाला नहीं आया और जब कोई लेनेवाला नही आता है तो उसमें दिलचस्पी नही रह जाती है। इसी तरह से बहुत जगहों मे मै समझता हूं कि हुआ है।

आपने ठीक तरह से काम चलाया है और सिर्फ 60 कार्यकर्त्ताओं के जरिये से आपने सब काम निभा लिया है और दूसरा काम करने के लिये भी उनको समय मिल जाता है। मैं समझता हूं कि यह काम और भी आगे बढ़े। काम आगे बढ़ा तो वह आपके संगठन की निशानी होगा और आप समझ सकते हैं कि जनता को आपका काम पसन्द है। अगर काम में ढिलाई हुई तो आप समझ सकते हैं कि जनता नही तैयार है या स्वय काम करनेवालों की कमी हो तो यह समझा जायेगा कि काम करनेवालों की कमी है। एक साथ दोनों का इम्तिहान साथ-साथ होता है। यह खुशी की बात है कि आपके यहां यह काम ठीक चल रहा है ।

मद्यनिषेध का काम आवश्यक है। हैदराबाद जैसे बड़े शहर में आपको कठिनाई होगी। यहा सब प्रकार के लोग रहते हैं। बहुत लोग ऐसे है जो इसे फिजूल मानते है। किसी को पीने की आदत पड़ गई हो और वह छूटती नही हो यह दूसरी बात है। मगर कुछ लोग ऐसे भी है जो यह भी मानते है कि पीना बुरा नहीं है और उसको छोडने से कोई फायदा होनेवाला नही है। उन लोगों को समझाकर इस भावना मे ले आना कि शराब पीना उनके अपने लिये, समाज के लिये और दूसरों के लिये बुरा है मुश्किल काम है। यहां आप यह काम कीजियेगा तो यह काम मुश्किल है ऐसा मानकर आपको काम करना होगा। इसमें देर लग सकती है और देखने में सफलता बहुत कम नजर आयेगी। तो समझ-बूझकर इस काम को हाथ में लेना चाहिये और समझदार आदमियों को इस काम को

लेना चाहिए क्योंकि इसमें घबड़ाने की बात नहीं है और जबर्दस्ती तो करना नही है। अगर गवर्नमेंट पर जोर डाल कर आप प्रोहिबिशन लॉ भी जारी करा दें तो भी चोरी चलती रहेगी और लोग लुक-छिप कर पीते रहेंगे। तो पहले लोकमत तैयार करना है। अगर उसमें पूरी तरह से कामयाबी हो जाए और आप समझें कि लोग समझने लग गये तभी गवर्नमेंट से कानून पास कराने का मशवरा देना चाहिये क्योंकि मैं जानता हूं कि जहां प्रोहिबिशन कानून के जरिये से करने का प्रयत्न किया गया है वहां ऐसा ही हुआ है। उद्देश्य यह होना चाहिए कि बिना सरकारी मदद के, बिना कानून की मदद के शराब बन्द हो जाए। आपको इसका भी ध्यान रखना होगा कि यहां बडे लोग भी होगे जो शराब पीने के आदी होगे। उनको छोडाना सबसे मुश्किल काम है। ये चन्द बडे आदमी न भी मानें तो कोई हर्ज नही है। मगर जनता में जनमत पैदा करना होगा। बडे लोग जो शराब के आदी है उनके पास पैसे रहते है और वे खर्च कर सकते है। पर ग़रीब लोग वैसा करें तो उनके घरों में सुख शान्ति नही रहती। मेरा अपना अनुभव हुआ है। 1937 साल मे बिहार के एक जिले में प्रोहिबिशन चला था। वह जिला इसलिये चुना गया था कि वहां सबसे ज्यादा शराब चलता था, जहां कोइले की खाने है और वहा जो मजदूर काम करते थे वे समझते है कि शराब पीने से वे ज्यादा काम कर सकते है या शराब पीकर बेहोश होकर परिश्रम को भूल सकते है। वहां मजदूरी बढ़ाने से भी कोई विशेष लाभ नही है। मजदूरी बढाने का मतलब यही था कि जहा हफ्ते मे वे 7 दिन काम करते थे वहा 6 दिन ही करेंगे क्योंकि जितनी आमदनी 7 दिन मे उनकी होती थी मजदूरी बढ़ने से 6 दिन में ही होगी, फिर वे सातवे दिन क्यों काम करने लगे। छुट्टी होती थी वह शराब पीने के लिये होती थी, उस दिन वे शराब ही पीते रहते थे। उसी जिले को उन्होंने चुना था। मैंने देखा कि वहा ठीक तरह से काम चल रहा है। 4, 6 महीने के बाद मै खुद वहां गया। जहां-जहां मेले होते थे, बाजार लगते थे वहा जाकर मैंने देखा क्योंकि वहां ही वे शराब खरीदते थे। उनसे मै पूछा करता था कि तुम शराब क्यों पीते हो, तुम्हारे पास पैसे नही है, खाने के लिये अन्न नही है, पहनने के लिये कपड़ा नही है। तो वे कहते कि शराबखाना बन्द कर दीजिये तो हम नही पीयेंगे, शराबखाना बन्द नही होगा तो हम पीते रहेंगे। जब शराबखाना बन्द हो गया तो उनका पीना भी कम हो गया। उसके बाद उनकी स्त्रियों की तरफ से सबसे ज्यादा मांग आयी कि जहां शराबबन्दी नहीं है वहां भी जारी कर दिया जाए। उनका कहना था कि अब हम शान्ति से घरों में सो सकती है और बच्चों को खिला सकती हैं और देखा गया कि एक साल के अन्दर में वे छोटे-छोटे गहने भी पहनने

लग गयीं। यहां भी अगर आप गरीबों में काम जारी कीजियेगा तो ज्यादा लाभ-दायक होगा और आपको सफलता भी मिलेगी। इसमे आपने काम किया तो आप कह सकते हैं कि इस इलाके में आपने काम किया है और उस इलाके मे शराब की दुकानें बन्द कर दी जाएं। पहले जन-मत तैयार कर लेना होगा और ऐसा कर लेने से रुकावट थोड़ी हो सकती है और मद्यनिषेध का कार्यक्रम कारगर हो सकता है। लोगों को समझाना-बुझाना और स्त्रियों को बताना आवश्यक है क्योंकि खासकरके मद्य-पान से स्त्रियो को तकलीफ होती है।

भूदान क सम्बन्ध में आप काम कर ही रहे है। इस सम्बन्ध में मै यह चाहता हू कि जहा भूदान की जमीन दूसरों को दी जाती है उसके बाद क्या होता है उसका पूरा हिसाब रखना चाहिए। जैसे कि आपने जमीन दे दी, उसके बाद पता नही कि जमीन उसके पास रही या नही, उसने बेच तो नही डाली, जमीन जिसको दी गई वह कैसा आदमी है। भूदान से यह होता है कि जमीन छोटे-छोटे टूकड़ो मे बंट जाती है और जिसको मिली वह ठीक से उसमे काम नही कर सकता है। आधा एकड जमीन किसी को दे दी जाए तो वह उसका प्रबन्ध नही कर सकता है और न उससे उसका काम चल सकता है। हमारे यहां की नीति अनिश्चित सी है। एक तरफ हम यह भी कर रहे है कि जमीदारी दूर हो, दूसरी तरफ छोटी-छोटी जमीन लोगों को दी जा रही है। यह भी सोचना है कि इतनी जमीन से उसको क्या हो सकता है। यह हो सकता है कि उसके दिल में यह भावना आ जाए कि वह भी जमीन का मालिक है। मगर उससे काम नही चलता। उससे क्या लाभ उसको है और देश को क्या लाभ होता है यह भी देखने की बात है। इन सब चीजो को सोचकर कही एक जगह 100, 50 आदमी हो उनको जमीन दी जाए और देखा जाए कि उनको क्या-क्या मदद दी गई और उस जमीन का कैसा उपयोग हुआ। मै यह कहना चाहता हू कि थोड़ी जमीन होगी तो वे ज्यादा परिश्रम करेगे। जिनके पास जमीन नही है, जिन्होने खेती का काम ही नही किया है उनको जमीन देने से क्या लाभ है यह भी देखना है। इन सब बातों पर विचार करके काम लेना है। जो जमीन दी गई वह आबाद हो। उसको आबाद करने में खर्च है, उसके लिये खास धन भी चाहिए। जब तक यह सब नही होता है तब तक एक दो एकड़ जमीन किसी को दी भी जाए तो उससे कुछ काम नही होनेवाला है। इसलिये मै समझता हूं कि आप लोग जो काम करनेवाले है अपने अनुभव को मिलाकर देखें कि किस तरह से काम चलता है। उसका जो नतीजा निकलेगा

उसके आधार पर काम करना ज्यादा अच्छा होगा। और सब काम तो आप कर ही रहे हैं।

मुझे खुशी हुई कि इस तरह से आप काम कर रहे हैं। जब सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं से मेरी मुलाकात होती है तो यह भी मालूम होता है कि अभी लोगों में जान बाकी है। कई जगहों में तो निराशा होती है। निराशा की कोई बात नहीं है तो भी होती है। उन आदर्शों को जिनको हमें गान्धी जी ने बताया उनको कहां तक हम चला रहे हैं यह भी सोचना-विचारना पड़ता है। सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं का काम है कि पीछे नहीं देखें, आगे बढ़ते जायें और समझें कि यह देश के लिये आवश्यक है। मैं समझता हूं कि आप लोग जो यहां काम करते है काम का नमूना सारे देश के लिये पेश करेंगे। आन्ध्र प्रदेश में पहले भी कांग्रेस के काम में नमूना था और इस काम में भी आन्ध्र एक नमूना होकर रहेगा ऐसी मेरी आशा है। मैं देखता हूं कि आप इसी रास्ते पर चल भी रहे है।

आंध्र हिन्दी प्रचार सभा में दीक्षान्त भाषण

मैं आपका आभारी हूं कि आपने हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर मुझे निमंत्रित किया और विद्यार्थियों तथा हिन्दी के हितैषियों से दो शब्द कहने का मुझे अवसर दिया। हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा से सम्पर्क का मेरे लिये यह पहला अवसर नही है। मैं जानता हूं कि गत 25 वर्षों से यह सभा हिन्दी के प्रचार तथा प्रसार के लिये कितनी प्रयत्नशील रही है और इस कार्य में सभा को कितनी सफलता मिली है।

आज से बहुत वर्ष पहले जब हमारे सविधान ने हिन्दी को राज-भाषा का पद नही दिया था, उस समय भी हैदराबाद हिन्दी प्रचार के लिये उर्वर क्षेत्र माना जाता था, और उसी समय से स्थानीय हिन्दी प्रचार सभा सफलतापूर्वक प्रचार कार्य करती रही है। वास्तव में हैदराबाद और यहां के आसपास का क्षेत्र जो इतिहास में दक्खिन के नाम से प्रसिद्ध है, सदियों से भाषा निर्माण की दृष्टि से एक प्रयोगशाला के समान रहा है। पांच सौ वर्ष हुए जब मुसलमान बादशाहों के राज्य इस क्षेत्र मे स्थापित हुए और उनके साथ ही फारसी तथा उत्तर भारत मे बोली जानेवाली भाषाएं यहां आई थीं। दक्षिणी भाषाओं और उत्तर की भाषाओं के सगम से यहा जिस भाषा का उद्भव हुआ उसके कारण हिन्दू और मुसलमानो की मिली-जुली भाषा के विकास में बहुत सहायता मिली। चार-पाच दिन हुए ऐवाने उर्दू मे बोलते समय मैंने कहा था कि मै हिन्दी और उर्दू को मौलिक रूप से एक भाषा मानता हूं। इस भाषा के विकास मे, चाहे हम इसे किसी नाम से पुकारे, दक्खिनी भाषा के लेखको और संरक्षकों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि इस दिशा में आजकल जो शोधकार्य हो रहा है और पांडुलिपियों के प्रकाशन का कार्यक्रम हाथ मे लिया गया है, इस कार्य में हिन्दी, उर्दू और तेलुगु, इन तीन भाषाओं के लेखक और समर्थक पारस्परिक सहयोग की भावना से मिलजुल कर काम कर रहे है। इस काम मे जहा हिन्दी के इतिहास और उसके विकास-क्रम पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ने की आशा है वहा हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी को अधिक व्यापकता भी मिलेगी। इसलिये, यदि मै यह कहूं कि समस्त हिन्दी-भाषी जगत हैदराबाद और दक्खिन के लोगों का ऋणी है तो यह बात अन्युक्तिपूर्ण न होगी। मै यह भी समझता हूं कि हिन्दी प्रचार की दिशा मे आप लोगों के प्रयत्न उस सैकड़ों वर्षो पुरानी परम्परा का एक अंग ही हैं। अन्तर यदि है तो केवल इतना कि उस समय

हिन्दी प्रचार सभा के दीक्षान्त समारोह में भाषण; हैदराबाद, 3 अगस्त, 1960

की परिस्थितियों के अनुसार भाषा के प्रचार तथा निर्माण का निर्देशन यदि बादशाहों या राजदरबारों द्वारा होता था आज यह काम भारतीय जनता का है और उसी के प्रतिनिधियों द्वारा सम्पन्न हो रहा है।

हिन्दी के सम्बन्ध मे बोलते हुए और हिन्दी भाषा के प्रसार की वांछनीयता की चर्चा करते हुए मै अपने कुछ हिन्दी-भाषी देशवासियो की शंकाओं का समाधान भी करना चाहूंगा। मानव के जीवन मे मात्रभाषा का क्या सथान है मै इसे खूब समझता हूं। जब कभी किसी व्यक्ति अथवा क्षेत्र विशेष से कोई भाषा पढ़ने की बात उठाई जाये तो सबसे पहले यह देखना होगा कि उस क्षेत्र की मात्रभाषा पर किसी प्रकार का आघात तो नही हो रहा है और उसका स्थान सुरक्षित रखने के लिए पर्याप्त उपाय किये गये है अथवा नही। मै नही समझता कि इस दृष्टि से किसी भी अहिन्दी-भाषी क्षेत्र को कल्पना मे भी कोई आशंका हो सकती है। क्षेत्रीय भाषाओ का स्थान हमारे सविधान में पूर्ण सुरक्षित कर दिया गया है और राज्यो की सरकारों को आदेश तथा साधन दिये गये है कि वे अपनी-अपनी भाषाओ को अधिक से अधिक उन्नत करे और राज्यों के प्रशासन तथा सार्वजनिक कार्यो मे उन भाषाओ का अधिक से अधिक प्रोयोग करे।

दूसरे, अब उस भाषा के पठन-पाठन का प्रश्न उठता है जिसे राष्ट्र के हित मे राष्ट्र के प्रतिनिधियों ने किन्ही विशेप अखिल भारतीय कामो के लिये अपनाने का फैसला किया है। मै जानता हू कि देश मे कुछ क्षेत्र ऐसे है जिनकी वह भाषा, अर्थात हिन्दी, मात्रभाषा नही। इसलिये, हिन्दी सीखने में वहा के लोगों को कुछ कठिनाई हो सकती है। समस्त देश मे संविधान मे निर्दिष्ट कार्यो के लिये हिन्दी के उपयोग का जो कार्यक्रम बनाया गया है, उसमे इस कठिनाई का विशेष ध्यान रखा गया है। मेरा यह पूर्ण विश्वास है कि भाषा नीति पर भविष्य मे भी जब-जब विचार होगा अहिन्दी-भाषी देशवासियो की इस कठिनाई की कभी अवहेलना नही की जायेगी। कम से कम मै इतना ज़रूर कह सकता हू, जैसा कि हमारे प्रधान मंत्री भी लोक सभा और सार्वजनिक सभाओं में कई बार कह चुके है, कि हिन्दी कभी किसी पर लादी नही जायेगी। इस सम्बन्ध मे भाषा आयोग की सिफारिशो और तत्सम्बन्धी संसदीय कमिटी की राय पर आधारित सरकार की नीति बार-बार स्पष्ट कर दी गई है और अभी दो ही दिन हुए हमारे गृह मंत्री ने उसको एक बार और दोहरा दिया है।

मै यह नम्र निवेदन करना चाहूंगा कि अहिन्दी क्षेत्रों के हमारे भाई इस बात पर गम्भीरता से विचार करें और यह सोचे कि स्वतन्त्र भारत के नागरिक

ग्रौर एक स्वाभिमानी दशभक्त की हैसियत से उनका क्या कर्त्तव्य है । राष्ट्र की एकता ग्रौर भावी ग्रखंडता के हित मे उठाया गया कोई भी कदम केवल इसलिये ग्रनुचित नहीं बन जाता कि देश के कुछ लोगों को उसे कार्यान्वित करना ग्रधिक सहल है। हमे इस प्रश्न पर ग्रखिल भारतीय दृष्टिकोण से विचार करना चाहिये। हां, जहा-कही भी कोई ऐसी कठिनाई हो, जिसके कारण किसी के प्रति ग्रन्याय होने की ग्राशंका हो ग्रथवा किसी प्रकार का भेद-भाव होने का डर हो, उसका समाधान हो सकता है ग्रौर होना चाहिए। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि ग्रापसी सद्भावना ग्रौर राष्ट्र का हितचिन्तन तथा इस महान् देश के भविष्य मे हमारी ग्रास्था हमे भाषा सम्बन्धी ग्रौर इसी प्रकार की दूसरी कठि-नाइयों से पार करा सकती है।

स्वयं हिन्दी भाषा के सम्बन्ध मे यदि मै कुछ कहू तो इस ग्रवसर पर वह ग्रसंगत न होगा। हिन्दी का कैसे विकास हुग्रा ग्रौर किस प्रकार देश भर मे भ्रमण करनेवाले साधु-सन्तो ग्रौर भिक्षुग्रों की बोली की यह उत्तराधिकारिणी बनी, यह भाषा विज्ञान के पंडित ही बता सकते है। मै केवल इतना कहना चाहूंगा कि ज्यों-ज्यों मैं हिन्दी भाषा के इतिहास पर दृष्टि डालता हूं मेरा यह विश्वास दृढ़ होता जाता है कि चौदहवी ग्रौर पन्द्रहवी सदी में जब हिन्दी व्यवस्थित रूप धारण करने लगी तो उसकी नीव रखनेवालो में सबसे ग्रागे दक्षिण भारत के सन्त ग्रौर भक्ति रस मे पगे महानुभाव थे। कौन नही जानता कि हिन्दी के उद्भव मे राम भक्ति ग्रौर कृष्ण भक्ति शाखाग्रों में सन्तो का ही सबसे ग्रधिक हाथ रहा है। इन दोनो भक्ति शाखाग्रो की लहर उत्तर भारत मे दक्षिण से ग्राई थी। श्री रामानुजाचार्य ग्रौर उन्ही की विष्य परम्परा में रामानन्द ने राम भक्ति शाखा की पताका काशी मे फहराई। उन्ही की प्रेरणा से भक्ति सम्बन्धी प्रचार तथा लिखित साहित्य संस्कृत के ग्रतिरिक्त स्थानीय चलित भाषाग्रों मे होने लगा ग्रौर इस प्रकार कालान्तर मे ग्रवधी, जो ग्रभी तक केवल बोलचाल की भाषा थी, एक साहित्यक भाषा के रूप मे पुष्ट होकर हमारे सामने ग्राई। उधर वल्लभाचार्य ग्रौर उनके ग्रनुयायियो ने मथुरा में जो भक्ति रस की धारा बहाई उसके कारण, ब्रज भाषा पुष्ट हुई, जिसका प्रभाव हिन्दी के ही नही बल्कि बंगला तक के विकास पर पडा। कहना न होगा कि श्री वल्लभाचार्य भी दक्षिण से ही ग्राये थे। इस प्रकार हम देखते है कि हिन्दी भाषा की उत्पत्ति से सम्बन्धित प्रथम ग्रान्दोलन के नेता दक्षिण के लोग थे, भले ही उस समय उनका प्रमुख उद्देश्य भक्ति के ग्रान्दोलन को पुष्ट करना रहा हो।

मुझे बहुत खुशी है कि हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा के तत्वावधान मे हर वर्ष हजारों विद्यार्थी हिन्दी पढ़कर निकलते है और परीक्षाएं पास करते है। आज इस दोक्षान्त समारोह में जिन विद्यार्थियों को परीक्षा म सफलता के प्रमाणपत्र मिले हैं मै उन्हें बधाई तथा आशीर्वाद देता हूं और यह कामना करता हूं कि उनका हिन्दी ज्ञान देश के, समाज के तथा उनके अपने हित मे उनका सहायक हो ।

"आंध्रकेसरी" टी० प्रकाशम् के चित्र का अनावरण

राज्यपाल महोदय, मुख्य मन्त्रीजी, श्री कालेश्वर राव जी, श्री हनमन्त राव जी, देवियो और सज्जनो,

मुझे आज यह स्मरण नहीं है कि मेरी पहले-पहले मुलाकात श्री टी० प्रकाशम् से कब हुई मगर इतना निश्चित है कि यह उस वक्त हुई जब असहयोग आन्दोलन का आरम्भ किया गया और जब सारा देश गान्धी जी के साथ उठकर देश के स्वराज्य की प्राप्ति के लिए एक साथ खड़ा हुआ। उस समय जो मेरा और श्री टी० प्रकाशम् का परिचय हुआ वह आहिस्ता-आहिस्ता और ज्यादा बढ़ता गया। उस समय श्री प्रकाशम् बड़ी वकालत कर रहे थे और मैंने जहां तक सुना था, उनकी वकालत इतनी चली हुई थी कि शायद उस समय अगर वह उस काम को छोड़कर और देश के नाम पर सब कुछ अपना त्याग कर स्वराज्य के काम में नही लग गये होते तो वह हाई कोर्ट के जज हुए होते। उन दिनों में वकील के लिये यह एक बडी चीज हुआ करती थी कि वह हाई कोर्ट का जज हो गया और श्री प्रकाशम् के दोस्त बहुत अफसोस करते रहे होंगे कि उन्होंने अपनी चलती वकालत को छोडकर और हाई कोर्ट का जज बनने की जो औरों की ख्वाहिश हुआ करती थी उसको बिल्कुल एकबारगी त्यागकर उन्होंने असहयोग आन्दोलन मे शरीक होना ही अपना कर्तव्य समझा और उस समय से आखिर तक, चाहे कांग्रेस आन्दोलन में कुछ भी ऊंचाव-निचाव हुआ हो, कुछ भी उसमे उथल-पुथल जब-तब वक्त पाकर होता रहा मगर वह बिल्कुल मुस्तैदी से और बहुत ही उत्साह के साथ अपने सामने जो स्वराज्य था उसके काम मे लगे रहे। चाहे उनको कांग्रेस का काम करना पड़ा, चाहे उनको वजीर बनकर मिनिस्टर बनकर गवर्नमेंट का काम करना पडा, सभी जगहों पर वह केवल मुल्क की खिदमत को, देश की सेवा को ही ध्यान में रखकर अपना काम करते रहे। इसलिये मुझे इस बात की खुशी हुई कि उनकी याद में आप लोगों ने तय किया कि उनकी एक तस्वीर रखी जाए।

जब मै यह देखता हूं कि हमारे मुल्क में हम अक्सर इतिहास की तरफ ध्यान कम देते हैं, शायद पढ़ते है, इतिहास बनाते भी है मगर इतिहास को कायम रखने का काम बहुत कम करते है और यह आज की बात नहीं, अपने दिनों से

स्वर्गीय श्री टी० प्रकाशम् के एक चित्र का अनावरण करते समय भाषण; हैदराबाद, 3 अगस्त, 1960

हमारे पूर्वजों ने हमे यही सिखाया था कि जो अच्छा काम हो उसको याद रखो, उसको किसने किया यह याद रखने की जरूरत नही, उस सिलसिले को हम जारी रखे हुए है। गरचे आज दुनिया में वह बात चलती नही, दूसरे मुल्कों में पुराने इतिहास को सब याद रखते है, नये इतिहास को भी याद रखा जाता है। हमने अपने मुल्क में इस मामले मे पुरानी बात को अच्छी तरह से याद रखा है हालाकि बहुत-सी और बातो को, बहुत-सी पुरानी चीजो को हमने भूला दिया है। यह खुशी की बात है कि आपने यह सोचा कि उनका एक चित्र यहां रखा जाए जिसमे यहां के लोगो को उस चित्र को देखकर प्रेरणा मिलती रहे और हमेशा देश की खिदमत को वे सबसे ऊपर रखते रहे।

अभी हिन्दुस्तान मे जो स्वराज्य के लिए आन्दोलन हुआ था उसका इतिहास लिखना है। कोशिश तो हुई है और सूबे-सूबे मे अपने-अपने हिस्सेवाले इतिहास को लोगो ने किसी न किसी हद तक बना लिया है मगर जो एक बिल्कुल नई किस्म की लडाई थी, जिसमे हथियार से काम नही लिया गया था, इस किस्म की लड़ाई हमने एक जबर्दस्त ताकत के साथ लडी और सिर्फ लड़ी नही बल्कि हम कामयाब भी हुए उसका पूरा-पूरा इतिहास अभी तक लिखा नही गया है और अब तो उसके जाननेवाले भी एक-एक करके चले गये, जा रहे है और जो पहले की लिखी हुई चीजे है वह भी बहुत हद तक खोती जा रही है, बर्बाद होती जा रही है। ऐसी हालत में अगर किसी एक देशभक्त की याद रखने का कोई इन्तजाम सोचा जाए तो बड़ी खुशी की बात है और इसके लिये श्री प्रकाशम् से बढ़कर दूसरा मिल नही सकता जिसकी हमेशा याद रखी जाए, जिसके बारे मे हमार देश के बच्चो को बताया जाए कि किस तरह से मुल्क की सेवा में उन्होने काम किया और हमेशा त्याग किया।

इसलिये जब मुझ से यह कहा गया कि मै यहां आऊं और इस चित्र का आपके सामने अनावरण करू तो मैंने अपने लिये उसे खुशी का मोकाम ही नही समझा बल्कि अपना फर्ज समझा और खुशी से मैंने मंजूर किया। मै आशा करता हू कि श्री प्रकाशम् के जीवन से लोग बहुत कुछ सीखेंगे। किस तरह से एक आदमी अमीर होकर, और भी अमीर होने की क्षमता रखता हो उसको छोड़कर ग़रीबी के जीवन में रह कर देश की सेवा कर सकता है और उनकी याद से हमें इसका एक उदाहरण मिले तो हमें उनको हमेशा याद रखना चाहिये। और मै क्या कहूं। श्री प्रकाशम् के प्रति और भी आदर का भाव मेरे हृदय में जागृत हो गया जो आदर का भाव हमेशा उनके प्रति मेरे दिल में रहा करता था।

उर्दू और तेलुगु अकादमी के प्रकाशनों का स्वागत

श्री कालेश्वर राव जी, श्री हनुमन्त राव जी, हबीबुर रहमान साहब,

मुझ आज खुशी है कि आपने मुझे आज इस मौके पर हाजिर होकर इस काम में शरकत करने का सुअवसर दिया। मै ऐसे काम को बहुत ज़रूरी समझता हूं। आपने जिस तरह से तेलुगु और उर्दू मे आज के विषयो पर पुस्तके लिखवाने का प्रबन्ध किया है यह बहुत ज़रूरी और सराहनीय है। जब कभी हमारे मुल्क में यह सवाल पेश होता है कि हमारे बच्चो को तालीम अपनी जबान मे दी जाए और जब कभी यह सवाल किसी यूनिर्वासिटी या गवर्नमेंट के सामने आता है तो चाहे हिन्दी हो, चाहे उर्दू हो, चाहे तेलुगु हो चाहे किसी भी भाषा में तालीम देने की बात हो, हमेशा यह दिक्कत पेश की जाती है कि हमारे पास किताबें नहीं है, हमारे पास ऐसो किताबे मौजूद नही है जो स्कूलो और कालेजों मे पढ़ायी जा सकें। तो जहा-जहा ऐसी संस्थाएं है यदि उनके जरिये से यह काम हो सके तो मै समझता हूं कि बडा काम हो सकेगा। जब पुस्तके सब विषयो पर हमको मिल जायेंगी और स्कूलों और कालेजों मे ऊंचे से ऊंचे दर्जे की पढ़ाई के लिये किताबें मौजूद होगी तो किसी को यह कहने का मौका ही नही रह जायेगा कि अभी वक्त नहीं आया है कि हम अपने बच्चो को अपनी जबान में तालीम दे। बात तो सच पूछिये तो यह है कि हमारे लोगो के लिये किसी विदेशी जबान पर भरोसा करना हमारी कमजोरी है और अगर हम यह खयाल करें कि हिन्दुस्तान में अंग्रेजी अंग्रेजों के बाद आयी और अंग्रेज़ चले गये तो भी हम अपना काम चला रहे है तो अग्रेजी चली जायेगी तो हम अपना काम नही चला सकेगे यह अंदेशा करने का काम नही है। पर हम कुछ ऐसे आलसी हो गये है और खासकरके जो हमारे दर्जे के लोग है जिनकी अपनी तालीम अंग्रेजी के द्वारा हुई वे कुछ ऐसे आलसी हो गये है कि समझते है कि जिस काम को वे नहीं कर सकते उसको उनके बच्चे भी नही कर सकते या नही करना चाहिये। इसीलिए हम समझते है कि हमारे बच्चो को अंग्रेजी के जरिये तालीम दी जाए हालाकि कोई वजह नहीं कि अंग्रेजी किस तरह से और कैसे बहुत जमाने तक देश का काम कर सकेगी। यह देखने की बात है।

हम आप से यह कहना चाहते है कि मै अभी हाल में रूस गया था। वहां मैंने एक चीज़ देखी जिसका मेरे दिल पर असर हुआ क्योंकि हमारे सामने भी

विज्ञान एवं इतिहास के उर्दू तथा तेलुगु अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का आविष्करण करते समय राष्ट्रपति निलयम में भाषण; हैदराबाद, 3 अगस्त, 1960

वही सवाल है, वहां 15 रिपब्लिक है। यह आप नहीं समझें कि वहां सभी जगहो पर रूसी भाषा होगी। वहां हर रिपब्लिक की अलग-अलग जबान है। कही-कही एक रिपब्लिक में कई जबाने प्रचलित है। खासकरके उन रिपब्लिक मे जो एशिया मे है जहा रूसी जबान बिल्कुल नही है मै वहा इस बात पर खासकरके गौर करता रहा और देखता रहा कि वहा तालीम कैसे दी जाती है। तो मालूम हुआ कि उन एशियायी रिपब्लिक मे शुरू से आखिर तक सब तालीम अपनी जबान में दी जाती है। वहा ताजिकिस्तान का जो रिपब्लिक है जो हमारे हिन्दुस्तान की सरहद से बिल्कुल लगा हुआ है। ताजिकिस्तान की सरहद और हिन्दुस्तान में कश्मीर की सरहद के बीच चन्द मील का फासला है नहीं तो दोनों एक साथ मिले हुए है। ताजिकिस्तान एक छोटा रिपब्लिक है, उसकी 20, 21 लाख की आबादी है। वहा की जबान ताजिख है। पहले उनका अल्फाबेट अरबी था। पर जब उन्होने देखा कि अरबी अल्फाबेट से ठीक काम नही चलता तो उन्होने अल्फाबेट बदल दिया। शुरू में उन्होने रोमन अल्फाबेट जारी किया। फिर उन्होंने देखा तो रूसी अल्फाबेट जारी किया मगर उनकी सारी चीजें ताजिखी जबान में है और 20, 25 वर्षों के अन्दर उन्होंने इतनी तरक्की कर ली है कि सारी तालीम शुरू से आखिर तक···सिर्फ हिस्टरी और लिटरेचर ही नही बल्कि सायन्स और टैक्नोलौजी, इन्जीनियरिग वगैरह-वगैरह सब चीजो की तालीम उसी ताजिखी जबान मे दी जाती है। वहा से बहुत थोडी ही दूरी पर उजबे-किस्तान है। वहा की जबान भी दूसरी है। उसका भी अरबी से कोई खास ताल्लुक नही है। उनकी जबान ज्यादा तुर्की मे मिलती है और ताजिख फारसी से मिलती है। उजबेकिस्तान कुछ बडी जगह है। वहा 80 लाख की आबादी है। वहां शुरू से आखिर तक तालीम का सिलसिला वहा की जबान मे ही है। मुझे यह देखकर ताज्जुब हुआ। सभी जगहों पर रिसर्च इन्स्टीट्यूट अपनी जबान में काम कर रहे है। वे रिसर्च के लिये एकेडिमिशियन बनाते है, उनको तालीम देकर, उनको इज्जत देकर। वहा भी मालूम हुआ कि ट्रान्स्लेशन के जरिये उन्होने सब कुछ किया है। ट्रान्स्लेशन का काम उन्होंने बहुत बड़े पैमाने पर किया है। सिर्फ रूसी से ही नही, दूसरी जबानो से भी, जहां कही अच्छी किताबें मिली उनका ट्रान्स्लेशन कर लिया है और तालीम देना शुरू कर दिया है। अभी भी यह सिलसिला उसी तरह से जारी है। अभी भी अच्छी किताबें चाहे रूसी में हो, जर्मन में हों, अंग्रजी में हों, जहां-कहीं भी किताबें मिलती हैं उनका तुरन्त अनुवाद करके वे अपने यहां जारी कर देते है। इस तरह से उनकी तालीम होती है। हम यह नही कह सकते कि वह सायन्स या टैक्नोलौजी में दुनियां

मे किसी से पीछे है। यह कहना आज मुबालगा नही होगा कि इन चीजों में दुनियां में वे सबसे आगे बढ़ गये है। ट्रान्स्लेशन के जरिये से उन्होंने इतना काम किया है। मै समझता हूं कि हमारे देश के लोग इस चीज को अख्तियार करें तो 3,4 वर्षों के अन्दर किताबो की कमी नही रह जायेगी। इसका एक नमूना हमने आज देखा। चन्द महीने पहले आपने उर्दू को इस ऐकेडमी में मिलाया, उसके पहले वह तेलुगु का काम कर रहा था। जबसे उर्दू उसमें शामिल हुई, कितनी किताबें आपने तैयार कर ली है और कितनी किताबें आपने हाथ मे ली है जो चन्द महीनो में तैयार हो जायेंगी। यह काम आवश्यक है, ज़रूरी है। इस पर यदि ध्यान दिया जाए और सब लोग लग जायें तो मैं समझता हूं कि यह सवाल ही नही रह जायेगा कि हम किस जबान में अपने बच्चों को शिक्षा देंगे।

यह ज़रूरी है मगर यह कहा जाए कि इस तरह की किताबो का तर्जुमा करनेवाले अपने भरोसे पर करें और वे अपने खाने-पीने के लिये किताबों की बिक्री पर भरोसा करें कि किताबे बिकेंगी तो उनको खाने को मिलेगा नही तो काम नही चलेगा। तर्जुमा का काम बड़े पैमाने पर हमारे देश के लोगों को लेना चाहिए और चाहे सरकारी महकमा हो, चाहे गैर-सरकारी सस्थाएं हों उनको लेकर जो लोग काबिल है उन पर इतना ही भार डालना चाहिये कि वे तर्जुमा का काम पूरा कर दें और उनकी छपाई तथा बिक्री के लिय उनको तरदुद नही करना पड़े। उनकी छपाई और बिक्री का इन्तजाम चाहे हमारी संस्थाओ के हाथ में रहे, चाहे गवर्नमेंट के हाथ में रहे, दोनों एक ही चीज है। मगर लिखनेवालों पर यह भार डाला जाय तो अच्छा नही है।

बहुत ऐसे लोग है जो किताबें लिखते है पर उनको कुछ नही मिलता है। तरह-तरह की शिकायत सुनी जाती है कि पब्लिशर पैसे खा जाते है और लिखनेवालों को कुछ नही मिलता, सिर्फ छापाखाने को फायदा होता है। इन सब दिक्कतों से बचने का एक तरीका यही है कि गवर्नमेंट की तरफ से चाहे इन संस्थाओं की तरफ से यह काम हो, जो छपाने का काम है वह इनका काम हो, लिखने का काम विद्वानों पर छोड़ दिया जाए, उन पर यह छोड़ा जाए कि वे काम तैयार कर दें और उनके द्वारा जो किताबें तैयार हों उनको छपवाने का काम हमारा रहे।

आज हमारे मुल्क से बहुत लोग विदेश जाते है और बहुत कुछ देख करके आते हैं। मै चाहूंगा कि खासकरके वे इस चीज़ को निगाह से दखें जो चीज आवश्यक-

है और जिनसे हमको फायदा पहुंच सकता है और जिसको हम अपने मुल्क में कबूल कर सकते है। एसी कोई खास चीज़ ऐसे मौके पर उनको देखने को मिले तो उसको वे अपने देश में लावें और किस तरह से उसको जारी करना है उस मौके पर सब चीजो को वे देखें तो मै समझता हूं कि वे लौटकर आयेंगे तो उनसे बहुत फायदा मुल्क को पहुंच सकता है। रूस में मै इस चीज़ को देख कर हैरान हुआ था। इस चीज़ पर हमारे लोगो में से किसी का ध्यान नही गया था हालांकि हमारे देश के बहुत लोग वहां गये हैं और देखकर आये हैं।

उन्होंने नेशनलिटी का सवाल भी हल कर लिया है। मैं वहां यह देखकर हैरान हो गया कि इतनी कौमे किस तरह से एक-साथ रहती है। हमारे यहा जबान का सवाल भयंकर होता जा रहा है जो निहायत दर्दनाक है। पर किसी न किसी तरह से उन्होंने इसको हल कर लिया है। मुझे विश्वास नही है कि इसको उन्होंने जोर जबर्दस्ती से हल कर लिया है। अगर कर भी लिया हो तो उसको वह बहुत दिनों तक कायम नही रख सकते। हमें मिलकर इस तरह से इसको हल करने की कोशिश करनी है जो सब को मंजूर हो। हमारे मुल्क मे यह सवाल हमारे सामने है। यहा बहुत जबानें है, बहुत किस्म के लोग है। जिस चीज़ से हमने अपने देश के लोगों को बाधे हुए थे वह कमजोर पड़ती जा रही है। इस मुल्क में एक सेआसत नही था पर सारा मुल्क एक समझा जाता था। यहां कितने राजा हुए, नवाब हुए। वे एक दूसरे से लड़ते थे मगर सारा मुल्क एक समझा जाता था। जिस तरह से जियोग्राफी के जरिये से यह मुल्क एक रहा इस चीज की हमारे में कमी आगयी है। मुल्क को सेआसती जरिये से एक रखा जाए इसमे आज दिक्कत पड रही है। हमारी सेआसत में बहुत चीजें है, उनको और मजबूत होना चाहिये। उसका एक तरीका वही है जो आपने अख्तियार किया है। इसलिये मै आप सब का शुक्रिया अदा करता हू और धन्यवाद देता हू।

आपने गान्धी साहित्य का तेलुगु में अनुवाद किया यह अच्छा काम किया। इससे उनके ग्रन्थों का प्रचार होगा। मै समझता हूं कि इस प्रान्त में जहा के लोगों पर गान्धी जी हमेशा विश्वास किया करते थे और जिनके साथ गान्धी जी का प्रेम था उनके साहित्य का जितना प्रचार हो उतना ही अच्छा होगा। मै आपको मुबारकबाद देता हूं और उम्मीद करता हूं कि आप इस काम को और भी बढाते जायेंगे।

सुब्रमण्य भारती दिवस पर भाषण

मुझे खुशी है कि भारती समारोह के अवसर पर, जिसका उद्घाटन कल हमारे प्रधान मंत्री कर रहे है, मुझे तमिल के इस महान् कवि और देशभक्त के सम्बन्ध में कुछ कहने का अवसर मिला है। युवावस्था में ही भारती की प्रतिभा और राष्ट्रीय भावना से वह काव्यस्रोत बहा जो सर्वोत्तम भारतीय कविता का अंग है। मैंने जो कुछ भारती के बारे में सुना है उससे मै इतना प्रभावित हुआ हूं कि मुझे इस बात पर खेद होता है कि तमिल भाषा न जानने के कारण मै भारती की मूल कविता का आनन्द नही ले सकता। हमें भारती के सन्देश को देश के सभी भागो तक पहुंचाने और उससे समस्त भारतीय जनता को परिचित कराने का प्रयत्न करना चाहिये। नैशनल कलचरल आरगे-नाइजेशन और ऐसी ही अन्य संस्थाओ के इस दिशा मे प्रयास का मै स्वागत करता हूं जो इस सन्देश का उत्तर भारत में अतमिल-भाषी लोगों में प्रसार कर रही हैं। सुब्रमण्य भारती के प्रति स्नेह की श्रद्धांजलि अर्पित करने का अधिकार तमिल भाषियों को ही नही, यह श्रेय हम सभी भारतवासियो का है। मै आशा करता हूं कि यह समारोह जो कल से आरम्भ होने जा रहा है उत्तर में भारती के वेदान्त और देश-भक्ति के सन्देश का प्रचार करने में सफल होगा। यह भारती की कृतियो के सुन्दर अनुवाद द्वारा हो सकता है। इससे तमिल साहित्य द्वारा भारतीय वाङ्मय की भी अभिवृद्धि होगी। मेरा यह विश्वास है कि किसी भी प्रकार के भाषा-सम्बन्धी भेद-भाव के बिना भारती को राष्ट्रीय कवि के रूप में भारत की समस्त जनता द्वारा मान्यता मिलेगी।

हैदराबाद, 5 अगस्त, 1960

विनोबा के जन्म दिवस पर

भाइयो और बहनो,

आज हम लोग इस मौके पर इसलिये इकट्ठे हुए है कि पूज्य सन्त विनोबा को श्रद्धाजलि अर्पित करे। आज उनके 66 वर्ष पूरे होते है और अब से 67वां वर्ष शायद शुरू होगा। इस अरसे में उन्होने जो कुछ किया वह हिन्दुस्तान के लोगो को अच्छी तरह से मालूम है और मै समझता हूं कि विदेशो में भी उसकी खबर कुछ-न-कुछ जरूर पहुची है। महात्मा गान्धी और उनका साथ अभी कहा गया, गान्धी की के भारत मे अफ्रीका से लौट आने पर हुआ और एक प्रकार से गान्धी जी ने जितनी अपनी ओर से कार्यवाई की और जो कुछ भी उन्होने परीक्षा के तौर पर किय उसमें एक बड़ा स्थान विनोबा का रहा। महात्मा गान्धी सारी जिन्दगी भर मे कुछ-न-कुछ अपने प्रकार से नया करते ही रहे। मगर वह कुछ ऐसा नही थे कि लोगो से कुछ कह दे ओर खुद उसको नही करें बल्कि वह जो कुछ दूसरो को बताते थे उसको स्वय करते थे और जो उनके नजदीक के लोग हुआ करते थे उनसे कराया करते थे। सन्त विनोबा उन्ही लोगो मे से थे जिन्होने उनके सभी एक्सपेरीमेंटो मे भाग लिया और उनके ऐक्सपेरीमेन्टो मे पूरा भाग लिया।

छोटी-सी चीज़ एक प्रकार से है मगर वह एक बडी चीज़ भी है····हम लोगो के खाने-पीने का तौर-तरीका, रहन-सहन। गान्धी जी ने शुरू से ही भोजन के सम्बन्ध मे एक्सपेरीमेन्ट किया और उनके एक्सपेरिमेट का एक जीता-जागता नमूना विनोबा जी भी है जिन्होने गान्धी जी के सभी एक्सपेरीमेटों को आगे बढ़ाया और पूरा किया। गान्धी जी ने चर्खे का चलाना लोगो मे प्रचलित करने का काम शुरू किया। इस काम मे विनोबा जी ने सिर्फ यही नही कि चर्खा चलाया मगर जो कुछ उसके सम्बन्ध मे अनुसधान का काम हुआ, उन्होने अपने ऊपर बोझ उठा कर उसको भी पूरा किया। और इसी तरह से आज वह जो कुछ कहते है और करते है, वह कुछ दूसरो की लिखी हुई बात पर, दूसरे की बतायी हुई बात के बल पर नहीं कहते बल्कि इसलिये कहते है कि उन्होंने खुद अनुभव किया है, उदाहरण से जो कुछ उनको फल मिला है उसी को वह बताते है। कबीर दास ने कहीं लिखा है कि हम कागज पर लिखी हुई

सन्त विनोबा भावे के जन्म दिन पर सर्वोदय सघ द्वारा किये गये समारोह में कारपोरेशन हाल में भाषण, दिल्ली, 11 सितम्बर, 1960

बात नहीं कहते, पर हम आंखों से देखी हुई बात कहते है अर्थात् अगर ईश्वर की बात हम कहते है तो इसलिये नही कि चूकि दूसरो ने लिखी है और दूसरों की बात मानकर हम कहते है बल्कि हमने अपने जीवन से, अपनी तपस्या से ईश्वर को देखा है, समझा है, सुना है उसी चीज को हम बताते है।

हमारे देश के सौभाग्य से आज से नही बहुत जमाने से हमारे यहां ऐसे सन्त होते गये है जिन्होने सारे देश को एक कोने से दूसरे कोने तक पांव पैदल चलकर लाघा है और जहा-जहा वे गये है अपनी शिक्षा और अपने उदाहरण से लोगो को प्रोत्साहित किया है, लोगों मे जागृति पैदा की है। उसी परम्परा के अनुसार जिस वक्त बुद्ध भगवान ने अपना काम शुरू किया, महावीर भगवान ने अपना काम शुरू किया उन्होंने भी चलकर, फिरकर एक कोने से दूसरे कोने तक जाकर काम किया और वे जैसे-जैसे गये, रास्ते मे वे लोगो से मिले, गावो मे लोगों से मिले और उनको जागृत करते गये और शंकराचार्य के बारे मे आप जानते ही है कि यह मशहूर है कि उन्होंने हिन्दुस्तान के चार कोने पर जो आज हमारी सरहद हैं मठ कायम किये और एक प्रकार से भारतवर्ष की चौहद्दी कर दी। उत्तर में जाकर बद्रीनाथ मे, दक्खिन मे श्रंगेरी में, पश्चिम मे समुद्र के किनारे द्वारिका मे और पूर्व मे समुद्र के किनारे जगन्नाथपुरी मे उस जमाने में और इतनी कम अवस्था मे शकराचार्य ने सारे देश का भ्रमण करके उन स्थानो को चुनकर अपना अड्डा जमाया और मठ कायम किये और झंडा गाड़ा।

उन दिनों मे सवारी अगर शायद कोई थी तो घोड़ागाडी रही होगी, बैलगाड़ी रही होगी और जहां रेगिस्तान है वहा ऊंटगाड़ी रही होगी मगर इस तरह की कोई सवारी नही थी, जैसे आज के जमाने मे रेल-गाडी, मोटर-गाड़ी इतनी फैली हुई है। सभी जगहो मे वे पैदल ही चलते थे। उसी परम्परा के अनुसार सन्त विनोबा ने भी कोई सवारी नही ली। पैदल चलने का ही उन्होने अपना कार्यक्रम बनाया और पैदल ही चलकर वह देश के कोने-कोने में पहुचे है, गये है। तो वह परम्परा जो हमारे देश में चली आती थी उसके अनुसार ही वह काम रहे है।

गान्धी जी के काम में और उनके काम में एक फर्क है। गान्धी जी ने जहां एक तरफ अध्यात्म का प्रचार किया, जागृत किया उसके साथ-साथ राजनीतिक काम में भी वे लगे रहे और बड़े पैमाने पर उन्होंने स्वराज्य का काम किया और लोगों से कराया। विनोबा जी ने अपने को राजनीतिक काम

से एक तरह से अलग रखा। अलग का अर्थ यह नहीं है कि उन्होंने इस चीज को देखा नही, समझा नही बल्कि उससे आगे बढ़ करके नेता का रूप नही धारण किया और जो-जो गान्धी जी की आज्ञा होती गयी, जो-जो उनका कार्यक्रम होता गया उसी काम को पूरा करना उन्होंने अपना सबसे बड़ा काम समझा। और इस वजह से उनको इतना समय मिला कि सब विषयो पर चिन्तन कर सकें और चिन्तन करके गान्धी जी के देहावसान के बाद जो उन्होंने काम शुरू किया वह अपने तरीके से निराला है और लोग उसका असर पूरी तरह से आज महसूस करें या नही करें, आइन्दा चलकर समझेगे और तब उनकी महानता को, महत्त्व को मेरी तरह से पहचान सकेंगे।

आज दुनिया में एक हवा बह रही है, जोरों से बह रही है और हिन्दुस्तान भी उसमे बचा नही है। वह हवा यही है कि हम किस तरह से सम्पत्तिवान हो जायें, किस तर से धनी हो जायें, किस तरह से हम बाहरी चीज़ों को हासिल करके अपने को बड़ा बनावे, ऊचा बनावे और कम-से-कम अपने शरीर को सुख पहुचा सके और जो लोग समझते है कि दुखी है उससे अपने को बचा सकें। आज यही हवा है और इसलिये सभी जगहो मे इस बात की कोशिश है, सभी लोगों की कोशिश है कि लोगो की सम्पत्ति बढ़े, जीवन-स्तर ऊचा किया जाये, जीवन-स्तर का अर्थ है कि लोगो को खाने को अधिक मिले और आराम के जो सामान आज समझे जाते है वे प्रचुर मात्रा में उनको मिले। यह हवा एक तरफ है और यह जबर्दस्त हवा है। यहां पर एक बहुत बड़ी जमायत है जो समझती है कि भौतिक सम्पत्ति के सिवाय और कुछ नही और सिर्फ यहा ही नही सारी दुनिया मे सभी लोग इस चीज को मान रहे है कि इस ससार में भौतिक सम्पत्ति के अलावा दूसरी कोई सम्पत्ति ही नही। ऐसी एक फैली हुई आबहवा मे जो एक जबर्दस्त आबहवा है उसमे उठकर यह कहना कि अध्यात्म भौतिक सम्पत्ति से ज्यादा कीमती है और उस पर हजारों, लाखों आदमी को आमादा कर देना कि भौतिक सम्पत्ति में जमीन जो सबसे बड़ी सम्पत्ति है उसको छोडने के लिये वे तैयार हो जायें कोई छोटी बात नहीं है। हम भारत के लोग खासकर जानते है और दूसरे देशों के लोग भी जानते होंगे कि सबसे मूल्यवान, कीमती सम्पत्ति जमीन समझी जाती है और सभी लोग जिनके पास जमीन है समझते है कि वह सभी प्रकार की सम्पत्ति के लिये साधन है। विनोबा जी ने लोगो से यही कहा कि जो सबसे कीमती चीज तुम्हारे पास है उसको छोड दो और

हमको 'दे दो और एक दो नहीं, न मालूम कितने लाख आदमियों से उन्होंने भूदान ली। उसके बदले मे उन्होने कोई वादा नही किया। दूसरे साधु लोग लोगों से मांगते है तो कहते है कि इस जन्म में दोगे तो दूसरे जन्म मे तुमको इसका फल मिलेगा। विनोबा जी ने कोई वायदा नही किया। उन्होने सिर्फ यही कहा कि यह तुम्हारा कर्तव्य है, इसे तुमको करना चाहिये और जैसे औरो को देते हो हमको भी दो और लाखो लोगो से उन्होने जमीन दान मे ली।

सम्पत्ति के मैदान मे जब सभी दौड़ लगा रहे हों इस प्रकार से लोगों से भूदान कराना एक चमत्कार हैं, चमत्कार से कम नहीं है और इतने बड़े पैमाने पर, इतने बड़े दायरे में इतने लोगों ने उसमें शिरकत की इस पर ध्यान दिया जाय तो मालूम होता है कि यह एक बड़ा काम हुआ है और मैंने आपसे कहा कि इसकी खबर विदेशो तक पहुच गई है और बहुतेरे लोग इस बात की खोज मे है, जानना चाहते है कि वह कौन-सी शक्ति है, वह कौन-सा जादू है जिसकी वजह से इतने लोगो ने इतनी जमीन इस तरह से मुफ्त दान दी। हम जानते है कि हमारे यहा पर दो घुर चार घुर जमीन के लिये भाई-भाई में लडाई हो जाती है, खून की नौबत पहुच जाती है और भाई एक दूसरे का खून पीने के लिये तैयार हो जाते है वहां इतने लाख बीघे जमीन मुफ्त दान मे मिल जाए मै समझटता हू कि इस प्रकार का कोई उदाहरण हमारे सारे इतिहास मे नही मिलेगा, शायद और किसी देश के इतिहास मे भी नही मिलेगा। ऐसे लोग मिलेगे जिन्होने अपना सर्वस्व दान कर दिया हो। पर इतने लोगों ने जो थोड़ी-बहुत भूदान की यह एक चमत्कार नही तो दूसरा और क्या ?

मगर विनोबा जी ने भूदान तक ही अपने कार्यक्रम को सीमित नही रखा। भूदान के बाद ग्रामदान शुरू किया, फिर सम्पत्तिदान और उसके बाद जीवन दान उन्होने लोगो से मागा और बहुतेरे लोग उसमे शरीक हुए। यह तो उनकी तपस्या का चमत्कार है, उनके जीवन का चमत्कार है। हम यह कहना चाहेंगे कि उनकी जिन्दगी चमत्कारमय है। हां जिसमे आध्यात्मिक बल हो, तप बल हो, तपस्या का बल हो वही चमत्कार कर सकता है।

इतना ही नहीं, विनोबा जी ने एक और दूसरा काम शुरू किया और उसे भी मै एक प्रकार से चमत्कार ही मानता हूं। ऐसे लोग जो डकैती में फंसे हुए थे और जिन्होंने एक प्रकार उसे अपना रोजगार ही बना लिया था

और जो बात की बात में मरने के लिये और मरने से भी ज्यादा मारने के लिये हमेशा तैयार रहा करते थे, जिनके नाम पर इनाम घोषित किये गये थे कि जो उनको पकड़वा देगा उनको इनाम मिलेगा ऐसे लोगों में संदेशा भेज कर उनके हृदय में वह भावना जागृत की जिस भावना के बल पर वे उनके पास जाकर हाजिर हो गये। जिनको पहले पकड़ना एक प्रकार से मुश्किल तो था ही असम्भव-सा मालूम होता था वे भी उनके पास गये और जाकर आत्मसमर्पण किया। वहां भी उन्होंने कोई वादा नहीं किया, यह नहीं कहा कि तुम हाजिर हो जाओ तो तुम को छुड़वा दूगा । उनका तो केवल एक ही काम था। वह यह कि उनको समझा दें, बता दे कि जिस रास्ते पर वे चल रहे है वह गलत है और जिस पर चलकर न तो वे स्वयं सुखी रहेंगे और न दूसरो को सुख से रहने देंगे । इसको छोड़ना चाहिये, यही तुम्हारा धर्म है, कर्तव्य है । इसी भावना को लेकर, किसी प्रलोभन में नहीं पड़कर, किसी वादा को नही मानकर बल्कि सच्चे दिल से अपनी गलती महसूस करके वे जाकर हाजिर हो गये। मै जानता हूं कि वह काम थोड़े दिनों में नहीं पूरा होनेवाला है। वह काम कुछ दिनों से किया जा राह था। तभी वे तैयार हुये। अब वह उस इलाके से बाहर चले गये है। इस काम को जारी रखना औरो का काम है। उनसे जो प्रेरणा मिल सकती है मिलती रहेगी। जो लेना चाहें लेकर इस काम को पूरा करे। मै इसको भी एक प्रकार से चमत्कार ही मानता हू ।

अब मैंने कहा कि उनकी महानता को, महत्ता को लोग पूरी तरह से नही समझते है । इन दोनों चीजों में मै जहां तक जानता हूं लोग एक-मत नही है कि उनका इतना ठीक काम हुआ है। कुछ लोग अभी भी अगर-मगर करने के लिये तैयार है, करते रहते है। कहीं-कही पर यह आवाज उठायी भी गयी है। पर मै मानता हूं कि जो काम कोई भी सन्त अपनी तपस्या के बल पर शुरू करते है वह एक न एक दिन पूरा हो कर ही रहता है। जिस दिन महात्मा गान्धी ने स्वराज्य का काम शुरू किया था उस दिन कोई नहीं कह सकता था कि स्वराज्य मिल जायेगा । हम लोगों में से बहुतेरे तो इस प्रलोभन में आ गये थे कि स्वराज्य हो जायेगा, कुछ लोग एक वर्ष के लिये आये थे। एक वर्ष नही 27 वर्ष लग गये मगर आखिर में स्वराज्य आया। महात्मा जी सोचते थे कि स्वराज्य आयेगा जरूर मगर समय लग सकता है और समय लगना इस बात पर निर्भर रहेगा कि कितने ज्यादा लोग उस कार्यक्रम को पूरा करते है।

उसी तरह् मे विनोबा जी का जो काम हो रहा है वह् सारे जीवन को बदलने का काम हो रहा है और इसमें प्रत्येक व्यक्ति को यह सोचना होगा कि वह अपना क्या योगदान उसमें दे सकता है, अपनी ओर से क्या दे सकता है अर्थात् अपने जीवन को वह किस हद तक सुधार सकता है जिसमें वह इस योग्य हो सके कि विनोबा जी की सेना में शरीक हो सके, अपना नाम लिखा सके। मै तो यह आशा रखता हू और मानता हूं कि समय आयेगा जब इन सब चीजों का महत्त्व अच्छी तरह से पहचानेंगे और समझेंगे और जो लोग इसे चमत्कार समझकर छोड़ देना चाहते हैं कि यह उनका काम नही है, यह सन्तो का काम है वे भी इस बात को मानेंगे और समझेंगे कि सब का इसमें कुछ-न-कुछ कर्तव्य है, सब को दान देकर सब को मदद करनी है। दूसरी तरफ यह भी है कि जो लोग इन सब मे विश्वास नही रखते हैं और नही समझते हैं उनकी भी आंख खुलेगी। आज भारतवर्ष के सामने यह बडा सवाल है कि क्या भौतिक सम्पत्ति ही केवल हमारा ध्येय है या उसके साथ-साथ आध्यात्मिक सम्पत्ति भी कुछ पैदा करनी चाहिये या नही। हमारी सारी सस्कृति, हमारे सारे जीवन की जो परम्परा हमारे देश मे लोग रखते आये हैं और जो बडी-बड़ी विपत्तियो का सामना करने पर भी हमारे पूर्वजो ने सुरक्षित रखी है उस आध्यात्मिक बल को हमको आज सुरक्षित रखना है और उस आध्यात्मिकता को फिर से जीवित करना है, जबर्दस्ती बनाना है। सन्त विनोबा का यही बड़ा महत्त्व है कि वह इन दोनो को ही जागृत कर रहे है और जहा हम एक तरफ हर प्रकार से भौतिक उन्नति के प्रयत्न मे लगे हैं, इसमे कोई हर्ज नही है, लगना चाहिये मगर उसको ही केवल अपना ध्येय नही मानकर उसको एक गौण स्थान हम देंगे तभी हम पूरी तरह से अपने काम मे कामयाब हो सकते हैं।

महात्मा गान्धी से एक आदमी ने एक मरतबे पूछा कि आप कहते है कि ब्रह्मचर्य का पालन सब को करना चाहिये, अगर सभी लोग ब्रह्मचारी हो जाये तो कोई सन्तान नही होगी और कोई मनुष्य संसार मे रह ही नही जायेगा। गान्धी जी ने इसका सुन्दर उत्तर दिया। उन्होंने उत्तर दिया कि तुम यह समझते हो कि लोग इसको मानकर चलेगे [तो कोई नही रह जायेगा यह गलत है। ऐसा होगा नही। यह हमारा आदर्श है, ऐसा नहीं होगा कि सब आदमी ब्रह्मचारी हो जाये और मनुष्य रह ही न जाये। ऐसा समय कभी नहीं आयेगा। अगर ऐसा समय आये भी तो उससे चिन्ता करने की कोई बात नही है। अगर मनुष्य नहीं रहे तो सब लोग मनुष्य से बढ़कर देवता हो

जायेंगे। तो यह उम्मीद करना और कहना कि सम्पत्ति की ओर ध्यान नही दिया जाए तो उससे सब लोग सम्पत्ति छोड देंगे ऐसी बात होनेवाली नही है। इतना ही हो सकता है कि जैसे हमारे यहा पूर्वजों ने सब के लिये एक सीमा बाध दी है उसके अन्दर लोग रहें। उस सीमा के अन्दर ही रहना ठीक है और वह सीमा यही है कि जितने भौतिक पदार्थ है उनको अध्यात्म के नीचे रखा जाए। अध्यात्म को ऊपर का स्थान और भौतिक सम्पत्ति को उसके बाद का स्थान देना चाहिये। छोड़ना नही है, उसको नियन्त्रित करके रखना है। यही चीज है। हम तो यह आशा रखते हैं कि अब जब हम स्वतन्त्र हो गये हैं, स्वराज्य मिल गया है, जब सभी प्रकार की सुविधाएं हमारे हाथ में है, जब हम जो कुछ करना चाहे कर सकते हैं, उस अध्यात्म को पुनर्जीवित करें, जागृत करें और बलवान बनें और किसी तरह से कमजोर न रहे। अगर ऐसा हम कर सकेंगे तभी शकराचार्य जो सिखा गये हैं। जो कुछ उन्होंने कहा है, लिखा है, अपनी अनुभूति के बल पर लिखा है। उनसे हमे सीखना है। यह ऐसी कोई अनहोनी चीज नही है। इसको हममे से थोड़ा बहुत सभी कर सकते हैं और अगर सभी थोडा बहुत करने लगेगे तो थोड़ा बहुत पूरा हो जाएगा। इस चीज की जरूरत है कि जहा हम एक तरफ सब मिलकर काम करें जिसमे हम किसी तरह से ऊपर बढ़े, हमारा जीवन-स्तर ऊचा हो, दूसरी तरफ हमको विनोबा इस तरह से आकर्षित करे कि जो ऊपर रखने की चीज़ है उसे ऊपर रखें और जो नीचे रखने की चीज है उसको नीचे रखें। अगर हमने भौतिक सम्पत्ति को ही ऊंचा स्थान दिया तो वह एक दिन शिर पर चढ़ेगा और अगर शिर पर चढ़ गया तो वह एक ऐसा भूत होगा जिसको कोई हटा नही सकता। सभी धर्मो का ध्येय यही कि आध्यात्मिक होना ही ठीक है। भौतिक पदार्थ उसके मुकाबले मे नीचे हैं।

अब तो जो यह भौतिक विज्ञान एक चरम सीमा तक पहुचा है इस ओर सब लोगों का ध्यान जाने लगा है। हां, यहा तक तो पहुंच गये, इसके बाद क्या, चन्द्रलोक मे पहुच गये उसके बाद होगा क्या? उसके बाद और क्या करना चाहिये यह सोचने का समय आ गया है। सन्त विनोबा अपने जीवन से हमको उसी दिशा मे रास्ता दिखा रहे हैं कि उसके बाद क्या हो सकता है। उसके बाद यही हो सकता है कि लोग अपने हृदय के अन्दर सेवा-भाव पैदा करें। भौतिक उन्नति भी होती रहे मगर हृदय के अन्दर सेवा की भावना पैदा हो। सेवा का भाव तभी पैदा होगा जब लोग अध्यात्म जागृत करेंगे और

उसके लिये सन्तोष जरूरी है। सन्तोष हृदय के अन्दर आयेगा तो आदमी हमेशा सुखी रहेगा। इसमें कोई दिक्कत नही है। सन्त विनोबा यही कहते है। एक उदाहरण हमने देख लिया है। वह 10, 12 मील प्रतिदिन चलते है और इतना कम खाते है जितना कम खाकर हममे से बहुत जिन्दा रह ही नही सकते। वह शारीरिक काम भी करते है, दिमागी काम भी करते है। सब लोग ऐसा नही कर सकते यह उनकी तपस्या का एक प्रभाव समझें या एक चमत्कार ही समझें। उनका जीवन चमत्कारपूर्ण जीवन है और उससे हमको लाभ उठाना चाहिये, सीखना चाहिये।

बदरीनाथ धाम में

श्री शास्त्री जी, इस परमपुनीत स्थान के निवासी बहनो और भाइयो,

मै बहुत दिनों से सोच रहा था कि इस पवित्र धाम के दर्शन करूं और बार-बार इच्छा रहते हुये भी और प्रयत्न करते हुए भी आज के पहले मै यहा नही आ सका था। यह मेरे लिये बड़े सौभाग्य की बात है कि मै अन्त में यहां पहुंच सका और यद्यपि मै जितना घूमना-फिरना चाहता था उतना घूमने-फिरने मे असमर्थ हूं तो भी जो कुछ मैंने देखा है, जिस पद्धति से यहां मैंने पूजा अर्चना की और जिस प्रकार से यहां के रहने वाले सब भाइयों और बहनो का प्रेम मुझे प्राप्त हुआ यह सब मेरे लिये एक स्मरणीय चीज बराबर बनी रहेगी।

आपसे मै यह क्या बताऊं कि आप एक अत्यन्त पवित्र स्थान के रहने वाले है। इस सम्बन्ध में मै जितना बता सकता हूं या कह सकता हूं उससे कही अधिक आप खुद जानते और समझते है। मै केवल यही बताना चाहता हूं कि यह भूभाग भी उस बडे देश का एक अंशमात्र है जिसको भारत कहते है और इस भारत की सीमा अनन्त काल से हमारे ऋषियों ने, तपस्वियो ने और स्वयं भगवान ने इस प्रकार से बांध रखी है कि उत्तर में हिमालय, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में समुद्र और इस चौहद्दी के भीतर आपका सब से ऊपर शिखरवाला हिस्सा है। इसलिये इसमें कोई आश्चर्य की बात नही है कि हम इस स्थान को तीर्थस्थान मानते है। बल्कि यही एक कारण हुआ है कि बड़े-बडे तपस्वियों को, आचार्यो को, ऋषियो को इस भूभाग ने अपनी तरफ आकर्षित किया है और यहा ही आकर वेदव्यास की लेखनी जागृत हुई और उन्होंने अमूल्य ग्रन्थ रत्न हमको ही नही सारे मानव मात्र को रचकर दिये। तो यह एक ऐसा पवित्र स्थान हमारे इतिहास में और देश में है जिसका मुकाबला करनेवाला शायद ही कोई दूसरा स्थान इस देश के अन्दर हो। इसीलिये जो महातीर्थ माने गये हैं उनमें से एक स्थान आपकी इस पवित्र नगरी को भी हमेशा दिया गया है।

आज दुनिया बदल गयी है, स्थिति बदल गयी है, लोगों का रहन-सहन बदल गया है और विज्ञान के कारण आज एक नया युग पैदा हो गया है जिसमें सब चीजें अपने प्रकार की नयी हैं और हम इस देश के रहनेवाले उसकी लपेट से आये बिना रह नहीं सकते और आज हम लोग इस प्रयत्न में हैं कि हम अपने देश को किस तरह से उसी तरह से उन्नत बना सकें, किस तरह से और देशों के मुकाबले ले

बदरीनाथ में वहां के निवासियों की सभा में भाषण; 6 अक्तूबर, 1960

आकर के उसे बैठा सके कि हम सब के सामने शिर उठाकर कह सके कि हम भी एक हैं और हम अनन्त काल से एक रहे हैं और आगे भी ईश्वर की दया होगी तो हम ऐसा ही बने रहेंगे और ऐसा बने रहने के लिये हमे दोनों चीजों की आवश्यकता है। आज के युग मे विज्ञान से जितने नये प्रकार के आधुनिक यन्त्र उत्पन्न हुए हैं उनसे भी हमको अच्छे प्रकार से केवल परिचित ही नही बल्कि सुसज्जित भी रहना है। अगर साथ ही साथ इससे भी कीमती और जहा तक मै समझ सकता हूं इससे भी अधिक स्थायित्व रखनेवाला हमारा जो धर्म है, हमारी संस्कृति है उसे हमको केवल कायम ही नही रखना है बल्कि उसमें कुछ अगर और उन्नति हो सके तो उन्नति भी हमको करनी है।

आप यह नही समझे कि तपस्या केवल हमारे ही देश के लोग कर सकते थे या करते है। आज के विज्ञान के युग में जो विज्ञान मे लगे हुए धुरंधर पंडित विद्वान दिन रात एक करके तथा किसी बात की परवाह नही करके अपनी सारी शक्ति, चिन्त उस चीज को जानने में लगा रहे है वे भी कम तपस्वी नही है। उनकी तपस्या एक प्रकार की है, उसका ध्येय जो हो पर वह भी एक तपस्या ही है। बहुत लोग जो दूसरे प्रकार की तपस्या के दावेदार है जिनको वह एक बपौती सी मिली हुई है उसको सुरक्षित रखना है और उसको सरक्षित रखकर इस तपस्या में जो कुछ हम ले सकते हैं हमको लेना है। हम जब देखते हैं कि आज पश्चिमी देशो के लोग इस हद तक आज तपस्वी बनने के लिये तैयार हैं कि इस शरीर से ही वे चन्द्रलोक तक पहुंच जाये तो हमको ख्याल होता है कि हमारे देश के ऋषियो ने किस तरह से गुफाओ मे बैठकर जहा किसी दूसरे प्रकार का साधन नही है केवल अपने तपबल से एकही लोक नहीं, सभी लोको का एक प्रकार से पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया था और वह ज्ञान अभी तक इस संसार में रखा हुआ है यद्यपि उसको जाननेवालों की संख्या दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है।

हम यह चाहते है कि आप जिस पवित्र स्थान मे है जो हमारी एक बपौती है उसे सुरक्षित रखें और इस नये युग में कुछ आपत्ति आ गयी तो उससे रक्षा करने की शक्ति हासिल कर लें। इसकी जरूरत आपके जैसे स्थान को और भी इसलिये अधिक है कि आप विदेश के साथ मिले-जुले हिस्से में रहते है। भारत का यह एक ऐसा स्थान है जहां से आज की राजकीय परिस्थिति के अनुसार थोड़ी ही दूरी पर एक दूसरा देश आ जाता है और जब तक मनुष्य की वह प्रवृत्ति नहीं बदलती जिसके अनुसार यह दूसरे की सम्पत्ति लेना अपना परम कर्त्तव्य मानता है, अपना पुरुषार्थ मानता है, तब तक हम को इस बात का हमेशा डर रहनेवाला है

कि कहीं दूसरे लोग हमारे देश पर लालच नही लगायें और अपनी लालच की आंख लगाकर इस ओर देखने का प्रयत्न नहीं करें। अगर कहीं किसी ने प्रयत्न किया तो सब से पहले उसका असर यहां के भाइयों पर पड़ता है, सब से पहले सरहद के लोगों पर पड़ता है और इसलिये यह आपका कर्त्तव्य है कि आप इसको भली-भांति समझ रखें। इसका अर्थ यह नही है कि हमारे देश के जो लोग यहां से दूरस्त रहते हैं उनका इस कर्त्तव्य में कुछ भाग नही। कर्त्तव्य तो सब के लिये बराबर है, समान है और सब को उसको पूरा करना है। पर उसको पूरा करने का तरीका अलग-अलग हो सकता है। जो आदमी यहा बैठकर कुछ कर सकता है वह दूर पर बठकर दूसरा आदमी नहीं कर सकता। इतना तो सब को याद रहना है कि दूरस्त के लोग जब तक आयें तब तक आप अपने स्थान पर डटे रहें और हर तरह से अपने को निर्भर बनाकर रखें क्योंकि आपके पीछे एक बहुत बड़ा राष्ट्र है और आपकी मदद के लिये बहुत बड़ा राष्ट्र तैयार है।

मै यहां केवल राजनीतिक बातें कहने के लिये नहीं आया हूं। मै तो खास करके इसलिये आया हूं कि मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं कि भारतवर्ष के प्रत्येक हिस्से से मेरा परिचय, ज्ञान होना चाहिये और यह काम नही हुआ था, उसी को पूरा करने के लिये आया था। आकर मैंने समझा कि आपको एक तरह से इस बात की चेतावनी दे दू और दूसरे भारत सरकार और देश के जो दूसरे लोग है उनको भी याद दिला दू कि इस देश की देखरेख, इस देश की हिफाजत, सुरक्षा सब का भार उन पर पूरी तरह से है और इसमें चूकि यह देश कई बातों में पिछडा हुआ है यह भार बहुत अधिक गरूह है और इसको पूरा करने के लिय हमको अधिक प्रयत्न करना होगा और करना चाहिये। मै जानता हूं कि भारत सरकार और उत्तर प्रदेश की सरकार इन बातों से अनभिज्ञ नही है। वे सब पूरी तरह से जागरूक है और मै आशा करता हूं कि जो अनेक प्रकार की योजनाएं आज चालू हैं उनका सुखद फल आप सब बहनों भाइयों को शीघ्र ही प्राप्त होने लगेगा।

आपने बडे प्रेम के साथ मरा स्वागत किया और तीन दिनों से जो कुछ मैंने सुना, जो मेरा अपना अनुभव है सब के लिये मै आपका हृदय से कृतज्ञ हूं।

सीमान्त पर माना ग्राम के निवासियों से

इस अंचल के निवासी भाइयो और बहनो,

मैं आज पहले-पहले आपके इस सुन्दर इलाके में आया हूं। मेरे आने का सब से बड़ा उद्देश्य तो यह था कि मैं श्री बदरी विशाल के दर्शन कर सकूं मगर साथ-साथ कुछ यह भी उद्देश्य था कि इस अंचल में रहने वाले अपने देश के भाइयों और बहनों से भी पूरी तरह से परिचय कर लूं। मेरी इच्छा थी और अभी भी है कि कम-से-कम माना ग्राम तक जरूर जाऊं। अगर ईश्वर की दया हुई और आसमान साफ रहा तो अभी भी मैं उधर जाऊंगा। मगर आप सब ने इतना कष्ट उठाकर सर्दी और बारिश में अपने गांव से यहां तक पहुचे हैं इसके लिये मैं किन शब्दों में धन्यवाद करू क्योंकि असली काम तो मेरा था कि आप तक पहुंचता और आपके घरो तथा रहन सहन का थोडा-बहुत साक्षात् कर सकता तो उससे मैं स्वयं बहुत लाभ उठाता। मगर वह नहीं हो सका और आप सब कष्ट उठाकर यहा आये तो यह भी मेरे लिये कम फायदे की बात नही है।

अभी जो आपने मानपत्र दिया उसमें आपने बहुत सुझाव दिये। मैं आपसे इतना ही कहना चाहता हूं कि भारत सरकार और उत्तर प्रदेश की सरकार दोनों इस बात पर तुली हुई हैं जिसमें आप लोगो की अवस्था में उन्नति हो सके और इसीलिये अभी नये-नये जिले भी इस इलाके में कायम किये गये है ताकि सरकारी कर्मचारी नजदीक से आप लोगों के पास रहकर आपके यहां जो कुछ इन्तजाम जरूरी है उसको करने में सहायता दे सकें। अभी ये जिले हाल में ही कायम हुये हैं। अभी पूरी तरह से वे शायद काम भी नहीं कर रहे हैं। मगर मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि जब यह सिलसिला ठीक जम जायेगा तो आप लोगों की भी ठीक उसी तरीके से देखभाल होती रहेगी जिस तरह से देश के अन्य भागों में होती रहती है।

यह दुःख की बात है और एक तरह से अनिवार्य हो गया है कि आपका जो कुछ सम्बन्ध और कारबार तिब्बत के साथ था उसमें कठिनाई पड गयी है और कुछ व्यापार रह नही गया है। आपने यह भी बताया कि मोटर का रास्ता खुल जाने से भी जो भी आप लोगों का रोजगार था वह भी कम हो गया है। आजकल की दुनिया में जो प्रगति और विज्ञान की दुनिया है इस तरह की अवस्था आना कोई असम्भव नहीं है बल्कि समझना चाहिए कि एक प्रकार से आवश्यक है। मगर

माना ग्राम के निवासियों की सभा में भाषण; बदरीनाथ, 6 अक्तूबर, 1960

इसके साथ-साथ यह सरकार को और भारत के अन्य निवासियों को चुनौती है कि आपकी दशा सुधरे और जो कुछ नुकसान आपके इस कारबार के बन्द हो जाने से हुआ है उसकी पूर्ति दूसरे तरीके से किया जाय ।

मैं समझता हूं कि यहा ग्रामोद्योग विभाग की तरफ से और सरकार की तरफ से जो गावो मे काम करने की नयी पद्धति जारी हुई है उन सब के द्वारा लोग आपके गाव तक पहुंचेंगे और आपकी सुविधा और तरक्की के लिये जो कुछ आज की अवस्था मे और सरकार की सुविधा के अनुसार किया जा सकता है किया जायेगा । मुझे आपसे यह कहने मे सकोच नही है कि आप याद रखे कि इस इलाके पर काफी ध्यान है । आपने इशारा किया है कि आप सीमान्त के इलाके मे है और यहा रास्ता जल्द से जल्द बन जाय जिसमे बाहर से खतरा आवे तो उसका मुकाबला किया जाय । इस पर ध्यान सरकार का है और वह रास्ता भी जल्द ही तैयार हो जायेगा और यद्यपि यह रास्ता जो जोशीमठ तक पहुचता है शायद उस नीति के अनुसार नही बनाया गया है जो सीमावर्ती इलाके मे हिफाजत के लिये बरती जायगी । मगर एक तरफ उस रास्ते से आपका रोजगार कम हुआ है और दूसरी ओर यह भी हुआ है कि यहा की सीमा की रक्षा कुछ अधिक सुविधाजनक हो गयी है और इस रास्ते का उपयोग इस काम के लिये जब जरूरत होगी तो किया जायेगा ।

मैं आप सब भाई बहनो से यही कहना चाहूंगा कि आज तक आप अपने को बदरी विशाल के भक्त मानते आये है और श्री बदरी विशाल के ही नही बल्कि सारे भारतवर्ष के आप जैसे भक्त रहे है, हमेशा बने रहें । आपके दुःख-सुख को देखने का भार अब किसी छोटी रियासत के जिम्मे नही जैसा पहले हुआ करता था बल्कि उसका भार भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार पर आ गया है और इस में उनको सुविधा भी अधिक है, साधन भी अधिक है । मै विश्वास रखता हूं कि वे इस विषय मे नही चूकेंगे और आपका जो कुछ अब तक नुकसान हुआ है उसको पूरा करेंगे । मगर इतना ही काफी नही है कि वह पूरा हो जाय । जिस वक्त आपका वह रोजगार चलता था उस वक्त भी आप में गरीबी थी, आप में विद्या का अभाव था । हां, जैसा शास्त्री जी ने कहा, आप में चरित्र बल था । मै आशा करता हूं कि इस चीज को आप अच्छी तरह से सुरक्षित रखेंगे । वह आपकी अपनी खास चीज है जिसे देश के दूसरे हिस्सों में आपको देना है । मगर आपकी जो दूसरी जरूरतें हैं उनको पूरा करने का भार गवर्नमेंट के ऊपर है और मै आशा करता हूं कि उसको पूरा करने का हर तरह से प्रयत्न किया जायेगा ।

भारतवर्ष में आदिमजाति संस्था इसीलिये कायम की गई है कि जहां-जहां इस प्रकार के लोग है जो आदिमजाति के साथ मिलते-जुलते हैं उनको अधिक सुविधा दी जाय। आपके मानपत्र में यह भी मांग है कि आपके नाम उन जातियों में दर्ज कर लिये जायें जिनको उन सुविधाओं को प्राप्त करने का अधिकारी समझा जाता है। मैं इस सम्बन्ध में इतना ही कहना चाहता हूं कि गवर्नमेंट हमेशा इस बात पर विचार करती रहती है और मैं आपकी दर्खास्त को गवर्नमेंट के पास पहुंचा दूंगा जिसमें वे इस पर विचार करे और जो उचित समझे करे।

और मैं दूसरा क्या कहूं। आपने अपनी गरीबी में भी एक भेंट दी। इसलिये यह भेंट बड़ी कीमती है। जैसा मैंने सुना है, बहनों ने अपने हाथों से परिश्रम करके इस चीज को तैयार किया है। यह उनके प्रेम का नमूना है और मैं इसको केवल अपने ही लिये भेंट नही बल्कि भारतवर्ष के लिये और भारत सरकार क लिये इनकी तरफ से एक प्रकार से उपहार मानता हूं और मैं उसी दृष्टि से इसे स्वीकार करता हूं और उन सब बाहनों को जिन्होंने परिश्रम करके इसको तैयार किया है बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

मुझे खुशी है कि मैं आप तक पहुंच सका और यद्यपि थोड़े समय के लिये ही पर आपसे बातचीत भी हो सकी। मैं आशा करता हूं कि इसके अलावा और जो तरीके आपके सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने के लिये उपलब्ध हैं उनके जरिये से आपके सम्बन्ध में जानकारी हासिल करता रहूंगा। और जो कुछ हम से हो सकेगा, आपकी सहायता के लिये हमेशा तैयार रहूंगा।

जोशीमठ में भाषण

चमोली जिले के निवासी बहनो और भाइयो,

आपने जिस प्रेम के साथ मेरा स्वागत किया है और जब से मैं इस प्रान्त में फिर रहा हूं आपकी तरफ से जो प्रेम और श्रद्धा मुझे मिली है उसके लिये मैं आप सब का हृदय से आभारी हूं।

अभी जैसा आपको मेरे मित्र श्री गंगाशरण सिह ने बताया, कम-से-कम 10, 11 वर्ष से मेरी यह प्रबल इच्छा थी कि मै यहां चन्द दिनों के लिये आकर इस स्थान को देख जाऊं, यहां के लोगों से परिचय कर लू और सर्वोपरि श्री बदरीनाथ के दर्शन कर लूं। पर किसी न किसी कारणवश मै स्वयं उस इच्छा को आज के पहले पूरा नहीं कर सका और आज के दो वर्ष पहले जब मेरे दिल में यह इच्छा हुई और उसको मै पूरा नही कर सका तो इस डर से कि शायद मुझे कभी भी ऐसा मौका नहीं मिले कि मैं यहां आ सकूं और मेरी इन्तजारी में मेरी धर्मपत्नी को भी श्री बदरीनाथ के दर्शन से वंचित रहना पड़े, मैने निश्चय किया कि मेरे पुत्र और भतीजा उनको लेकर यहां आ जायें और दर्शन कर लें। उसका फल यह हुआ कि मेरे घर में प्राय: सभी लोग सिवाय मेरे दो वर्ष पहले यहां आ गये और यहां की यात्रा से जो कुछ भी फल उनको प्राप्त हो सकता था उन्होंने प्राप्त किया और आज मुझे इस बात की अत्यन्त प्रसन्नता है और मै श्री बदरीनाथ को इसके लिये किस तरह से सेवा अर्पित करूं, किस प्रकार से अपनी श्रद्धा और भक्ति अर्पित करूं कि उन्होंने मुझे यह सौभाग्य दिया कि मै भी इस समय यहां आ गया।

तीर्थयात्रा मेरा सर्वोपरि यहां आने का कारण थी पर साथ ही साथ मै यह भी चाहता था कि इस सारे इलाके के भाइयों और बहनों से परिचय कर लू और यहां का प्राकृतिक दृश्य ही नहीं बल्कि यहां के रहनेवालों की स्थिति भी अपनी आंखों से देख लू और यह मुझे देखने को मिला और अच्छी तरह से मिला क्योंकि जो पिछले 5, 6 दिन मैंने बिताये है उनमें मैंने सब दृश्य देखे हैं ... कड़ी धूप, कड़कड़ाती सर्दी, बर्फ का गिरना सब मैंने देख लिया और आज इतनी संख्या में आप सब भाइयों और बहनों के दर्शन भी मिल गये, कुछ मुझे देखने को बाकी नहीं रह गया, कुछ जानने को शायद बाकी रह गया हो कि सचमुच क्या स्थिति है।

जोशीमठ में सार्वजनिक सभा में भाषण; 8 अक्तूबर, 1960

आपने हमें कुछ बताया तथा और जरिये से भी मझे पता लगा और मे इस बात के प्रयत्न में हूं कुछ ऐसा रास्ता इन भागों के सम्बन्ध में हो जाय कि जो गरीबी की स्थिति है वह हालत बदले और यहां भी लोग सुखी और सम्पन्न हों। आपको यह मालूम ही है कि सारे भारतवर्ष की हालत भी कोई बहुत अच्छी नही है। हम बहुत दिनों से पराधीन रहते आये और उस पराधीनता का एक फल यह भी रहा कि हम आर्थिक दृष्टि से भी बहुत पिछड़े रहे और इसीलिये जब महात्मा गांधी ने स्वराज्य का आन्दोलन शुरू किया तो उन्होंने जहां एक तरफ ब्रिटिश गवर्नमेंट से मुकाबला करने के लिये लोगों में चेतना जगाई, दूसरी ओर लोगों की गरीबी को सामने रखकर जो सब से आसान और कम खर्च का साधन हो सकता था उस साधन को भी अपनाया और लोगों को बताया। बात यह है कि हमारा देश बड़ा है, लोग बहुत हे, जमीन है मगर आज की स्थिति ऐसी होती जा रही है कि यहा की जनता के लिये और वह जनता दिन-प्रति-दिन संख्या में बढ़ती जा रही है हमारी जमीन काफी नहीं होती और हम बहुत दिनों से विदेशों से अन्न मंगाते रहते हे अपने खाद्य को पूरा करने के लिये। सभी देशों की बात ऐसी हो है क्योंकि बहुतेरे देश अपने लिये पूरा अन्न पैदा नही कर सकते मगर उनके पास दूसरे साधन होते हे जिनके द्वारा वे विदेशों से अन्न मंगा सकते हे। हमारे पास तो साधन भी बहुत कम है और इसलिये हमारे यहा अन्न की कमी हो जाया करती है।

मैं यह जानता हू कि आपकी दिक्कते और लोगों की दिक्कतों के मुकाबले में ज्यादा हे मगर आप यह समझ कि सारे देश की स्थिति में थोड़ा ही बहुत अन्तर रखें है। सभी स्थानों में गरीबी है, सभी स्थानों में विद्या का अभाव है और सभी स्थानों में अभी बीमारी है और पिछले 10, 12 वर्षों में जो प्रयत्न हमने आरम्भ किया है वह इस तरह से किया है कि जहां-जहां काम पीछे रह गया है उसको आगे बढ़ाकर जल्द से जल्द इस देश को अधिक सम्पन्न बनावें, लोगो को अधिक सुखी बनावें, लोगों को बीमारी से अधिक बचावें। इस दिशा में आपके इस प्रान्त को भी हमने अपने ध्यान में रखा है और हम यही प्रयत्न करते हे जिसमें यह व्यवस्था ठीक से चल सके और सभी जगहों पर गवर्नमेंट की नीति है, जो गवर्नमेंट का ध्येय है उसी नीति के अनुसार काम किया गया है और उसी नीति के अनुसार आपका चमोली का जिला भी कायम हुआ है। उसका अर्थ यही है कि अब गवर्नमेंट की जो कुछ कार्रवाई होगी उसकी खबर आपको जल्द से जल्द मिल सकेगी। और आपकी जो बात होगी गवर्नमेंट को पहुंच सकेगी। गवर्नमेंट जो कुछ योजना सारे देश के लिये बनायेगी वह

योजना आपके लिये भी लागू की जा सकेगी और मै जब रास्ते मे चलता था तो मैंने देखा कि जहां-तहां तख्ते लगे हुए है जिन पर योजनाओं के नाम लिखे हुए हैं। कहीं एक प्रकार की योजना, कहीं दूसरे प्रकार की योजना है। इससे मालूम हुआ कि इन योजनाओं की तरफ ध्यान गया है और उनका आरम्भ हुआ है।

इतने बड़े काम का फल तुरन्त देखने में नही आयेगा। जो आप मे से फल के बगीचे का काम करते होंगे वे जानते है कि वृक्ष बोने पर फल आने मे कई साल लगते है। इन योजनाओं के बीज वपन का काम शुरू हुआ है और सारे देश भर में योजनाओ का बीज बोया जाता है। अभी कुछ दिनों मे समय आयेगा जब उनका फल कुछ न कुछ देखने को मिलेगा। फल भी कई प्रकार के होते है। कुछ जल्द निकल आते है, कुछ मे ज्यादा समय लगता है। उसी तरह से योजनाओं में बहुतेरों के फल मिलने लगेगे, कुछ दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे है और बहुतेरी ऐसी है जिनमे अभी देर लगेगी। इसलिये जब मै सब कुछ देखता हूं और सोचता हूं तो विश्वास होता है कि जैसे-जैसे इस रास्ते पर हम चलते जायेगे तो आगे चलकर हम सम्पन्न हो सकेंगे और जहा-जहा जैसी जरूरत होगी वहा उस प्रकार का काम करना होगा।

देश में विभिन्नता बहुत है। आपका एक छोटा अंचल है जहां की पहाड़ी जमीन है, नदियों, पत्थर, और बालू के कारण जहां जमीन खेती करने लायक कम है। अभी कहा गया है कि यहां के भूगर्भ के अन्दर मालूम नही क्या-क्या धन छिपा है। यद्यपि यह स्थान कुबेर का स्थान कहा जाता है पर अभी मालूम नही कि कुबेर का कितना और किस प्रकार का धन यहां गड़ा है? पता नही वह यों ही पड़ा रहेगा और हम लोगों को मिलेगा या नही मिलेगा। यह भी अनुसंधान का विषय है और इस वक्त हर प्रकार की जितनी भी योजनायें बनाई गयी है सब की ओर ध्यान दिया जा रहा है।

अभी शास्त्री जी ने एक विषय का जिक्र किया। वह यह कि आप लोगों के पास ऐसा कानून लागू हो जिसमें एक आदमी किसी दूसरे का शोषण नहीं करे और इसलिये जो कुछ भी किया जाय लोगों पर भरोसा करके ही किया जाय। अगर जनता अपने को नहीं सुधारे और जनता के हृदय में इस बात की चेतना नही उठे कि उनका यह कर्त्तव्य है कि वह अपने साथियों को, साथ के रहनेवालों को भी अपने साथ ले चलने का प्रयत्न करें तो केवल सरकारी कायदे, कानून और महकमे से यह काम पूरा नहीं हो सकता यह तो सब को मिल-जुलकर करना है। हां, यह आवश्यक है कि सरकारी जितनी संस्थाएं हैं, सरकारी जितने महकमे हैं, जितने

जनसेवक है सब का यह कर्तव्य होना चाहिये कि लोगों को हर तरह से आकर्षित करें, लोगों को बतायें कि किस तरह से लोगों की उन्नति हो सकती है। गवर्नमेंट का यह धर्म है कि जो कुछ दिक्कतें उनके सामने हों उनको दूर करे और इस तरह से जिसमें उसे बाहर से मदद की जरूरत हो तो वह भी मिल सके। इन योजनाओं का यही उद्देश्य भी है। मै तो यह आशा रखता हूं कि थोड़े ही दिनों के बाद आज जो कमी मालूम हो रही है, जो दिक्कते पेश आ रही है वह आहिस्ता-आहिस्ता कम होती जायेंगी।

एक चीज जो इस चीज की तरफ ध्यान और आकर्षित कर रही है वह यह है कि यह अंचल सीमा पर है और लोग जो सीमा पर रहते है उनको यह नही समझना चाहिये कि हिमालय अलंघनीय है और उसको पार करके कोई भी नही आ सकता है और आज तक कोई आया नही था। अब आज के युग में हिमालय अलंघनीय नही रहा और जब मै आ रहा था तो मैने देखा कि एक हवाई जहाज यहां के पहाडों की ऊंचाई से भी ऊपर उडता जा रहा था। व किसी गैर-मुल्क का जहाज नही था, अपना ही जहाज था। जब अपना जहाज हिमालय के उस पार जा सकता है तो दुश्मन का जहाज भी उसी तरह से इस पार आ सकता है। तो हिमालय जो अलघनीय सरहद हिन्दुस्तान और तिब्बत के बीच बना हुआ था वह वैसा अब नही रहा। जहां जरूरत है सडके बनायी जा रही है। आपको मालूम है कि यहा भी सडक बनाई जा रही है। दूसरे रेल के स्टेशन का जिक्र आपने किया है।

सब से जरूरी चीज देश की हिफाजत, हमारी सभ्यता की हिफाजत और भारत को सुरक्षित रखने के लिये जो होनी चाहिये वह हृदय का बल होना चाहिये। वह हृदय का बल आप सब मे है और मै जानता हूं कि वह हृदय का बल किसी के देने से नही बल्कि सदियो से सस्कृति और चेतना जो यहां रही है, हजारों हजार वर्षों से हमारे तपस्वियो ने अपनी तपस्या से केवल यहां के रहनेवालों के लिये ही नही बल्कि सारे देश या कहें सारे संसार के लिये बहुत कुछ अर्जित किया है वह सब आपके हृदय के अन्दर होना चाहिये और वह मै समझता हूं कि अभी भी हैं और उससे भरोसा होता है कि अगर हमारा विश्वास, हमारी श्रद्धा और अपनी प्राचीन सस्कृति का जो दान है वह हम में बना रहे तो हमको किसी प्रकार का भय नहीं है।

आप याद रखें कि हिमालय में बदरिकाश्रम और हिन्दुस्तान के दक्षिणी कोने पर कन्या कुमारी के पास ही रामेश्वर भारत के दो छोर हैं। उत्तर मे हिमालय का

·बदरिकाश्रम, दक्षिण मे कन्या कुमारी और रामेश्वर, पश्चिम मे द्वारका और पूव में जगन्नाथ हमारे भारतवर्ष के चार कोने में हमारी सुरक्षा के लिये अनन्त काल से खड़े है। तो हमको यह याद रखना है कि यह भारतवर्ष जो हजारों वर्षों से अनेक प्रकार की मुसीबतों का मुकाबला करता आया है, जो भारतवर्ष अपने को अनेक प्रकार के आक्रमणों से सुरक्षित रख सका है और जिस प्रकार से भारतवर्ष आज भी इस तरह से शिर उठाकर संसार के सामने खड़ा है जैसे और कोई भी देश, उसको सुरक्षित रखना, उसकी सम्पन्नता को बढ़ाना और उसमे रहनेवालों के बीच सद्-भावना को जागृत और सुदृढ़ करना हममे से प्रत्येक का धर्म है। मै आशा करता हूं कि आप इसमें किसी से पीछे नही रहेंगे, और आपकी जो आवश्यकता है, जो समस्याएं है उनको पूरा करने मे चाहे प्रान्तीय सरकार हो, चाहे केन्द्रीय सरकार हो कोई भी पीछे नही रहेगी।

आपने बहुत ही प्रेमपूर्वक मेरा सम्मान किया है उसके लिये हृदय से धन्यवाद देता हूं।

हिन्दी विश्वकोश के प्रकाशन के अवसर पर

श्रद्धेय श्री पन्त जी, डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा जी, डाक्टर राजबली पांडेय, देवियो और सज्जनो,

मैं इसे अपना एक बहुत बडा सम्मान समझता हूं कि आपने यह निश्चय किया कि इस विश्वकोश का पहला भाग आप मुझे पहले समर्पण करें। हिन्दी संसार में बहुत प्रकार के प्रयत्न हो रहे है जिनके द्वारा हिन्दी साहित्य और हिन्दी भाषा की उन्नति और समृद्धि का प्रयत्न किया जा रहा है। उनमें से विश्वकोश का निर्माण एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रयास है। जैसा अभी डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा जी ने कहा, एक हिन्दीकोश बनाने का प्रयत्न पहले भी बंगला विश्वकोश के निर्माताओं ने किया था। वह पूरा भी हो चुका था। पर आज की दुनिया बडी तेजी के साथ आगे बढ़ती जा रही है और दिन-प्रतिदिन नये विषय, नये ज्ञान लोगों को मिलते जा रहे है और इस लिये कोई भी विश्वकोश क्यों न हो ऐसा नही रह सकता कि उसको पूर्ण समझा जाय और उसमे बहुत वृद्धि की आवश्यकता दिन-प्रतिदिन पड़ती जाती है और होती है। इसलिये यह प्रयास बहुत ही उपयोगी और समयानुकूल है क्योंकि आज सायन्स की जिस तेजी के साथ तरक्की हो रही है और उसके साथ-साथ तकनीकी विषय इतनी तेजी से आगे बढ़ते जा रहे है कि उनको एक प्रकार का एक नया विषय ही मान लेना पड़ेगा और कोई भी पहले का लिखा विश्वकोश क्यों नहीं हो उसमें उनका समावेश होगा ही नही, नये सिरे से समावेश करना होगा। मैं समझता हूं कि इस विश्वकोश का एक ऐसे ही उच्च विचार से निर्माण आरम्भ किया गया है और इसमे इस प्रकार के प्राचीन और नये सभी विषयो का समावेश पूरी तरह रहेगा।

भारत में बने हुए विश्वकोश को सबसे पहले भारतीय विश्वकोश होना ही चाहिये और इसलिये हमारी भारतीय विद्या, भारतीय भूमि और भारतीय जनता सम्बन्धी जो कुछ भी जानकारी आज उपलब्ध है उसका समावेश उसमें होना आवश्यक ही है और उसमें हमें विदेशों और संसार के दूसरे मुल्कों, दूसरे स्थानों सम्बन्धी जो कुछ ज्ञान हमें मिल सके उसको इसमें लाना है। मैं समझता हूं कि इसी दृष्टिकोण से यह विश्वकोश तैयार किया जा रहा है।

राष्ट्रपति भवन में नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा हिन्दी विश्वकोश के प्रथम भाग के समर्पित किये जाने के अवसर पर भाषण; 16 अक्तूबर, 1960

जैसा कहा गया, यह इतना बड़ा काम है कि एक विद्वान के किये यह काम पूरा नही हो सकता था और इसका विस्तार इतना हो गया है कि कोई एक छोटी संस्था भी इसे पूरा नहीं कर सकती थी। इसलिये इसको गवर्नमेंट ने भी अपने हाथ में नहीं रखकर, शिक्षा मंत्रालय ने भी अपने हाथ मे नही रखकर ऐसी संस्था के हाथ में दिया जिसने अपनी पूर्व सेवाओं द्वारा इसके लिये अपने को पूरी तरह से अधिकारी प्रमाणित कर लिया था और मै समझता हूं कि नागरी प्रचारिणी सभा की अनेकों सेवाओं में यह एक और भी बड़ी सेवा हिन्दी के प्रति हुई। शिक्षा मन्त्रालय ने प्रोत्साहन देकर अच्छा ही किया। यह उसका धर्म ही था, मै समझता हूं कि उसने और अच्छा किया कि अपने ऊपर इस प्रकार के ग्रन्थ का निर्माण नहीं रखकर, विद्वानो पर इसका भार डाल दिया और अब यह विद्वानों का काम है कि अपनी विद्या लगाकर, अपना परिश्रम लगाकर इसको पूरा कर दे, आर्थिक सहायता की जो जरूरत है वह गवर्नमेंट पूरा कर रही है और विद्वान इसे पूरा कर दे तो उनकी सम्मिलित विद्या और परिश्रम सुफल होंगे। इसीलिये इस प्रयास को मै बहुत कीमती प्रयास समझता हूं और जब मुझ से कहा गया कि इस अवसर पर मै यहां हाजिर हो जाऊं तो मैंने उसे खुशी से मजूर किया। यो तो आरम्भ से ही इस ओर मेरी थोड़ी-बहुत दिलचस्पी रही है और जो प्रगति इसकी हुई है उसकी खबर दूर-दूर से लेता रहा हूं। अब तो ग्रन्थ भी देखने को मिल जायेगा।

दूसरी भाषाओ मे भी इस प्रकार के प्रयास चल रहे है और मैंने तामिल और तेलुगु में जो विश्वकोश प्रकाशित हुए है उनको पढ़ तो नही सका हू पर उनको मैंने देखा जरूर है। इस तरह से भारतवर्ष की सभी भाषाओ में इस प्रकार का प्रयत्न हो रहा है और जब हम स्वतन्त्र हो गये है तो हमको किसी भी चीज के लिये जनसाधारण को किसी विदेशी भाषा पर भरोसा नही करना पड़े इसका प्रयत्न करना चाहिये। यो तो विद्वानों के लिये कोई सीमा नही हो सकती है और वे विदेशी भाषा से तथा देशी भाषा और उसके साहित्य से वे अपने ज्ञान को बढावे। मगर जनसाधारण के लिये अपनी देशी भाषाओ में, हिन्दी मे विशेष करके क्योंकि बहुत अधिक लोग इसको जानते और बोलते हैं, सभी ज्ञान की बातें ला देनी चाहिये और जल्द से जल्द ला देना चाहिये। यह प्रयास सारे देश में शुरू हो गया है मगर अभी भी हमको अंग्रेजी पर, बहुत कुछ भरोसा करना पड़ता है और मामूली बातों के लिये भी भरोसा करना पड़ता है। विश्वकोश जैसा ग्रन्थ सामने आ जायेगा तो साधारण हिन्दी जाननेवाले लोगों को बहुत बातों का ज्ञान उसमें मिल जायेगा और अंग्रेजी पर भरोसा नहीं करना पडेगा।

मैं आशा करता हूं कि आपका यह प्रयास हर तरह से सफल हो, विद्वानों की नजर में सफल हो और विद्वानों में से अधिक जनसाधारण की नजर में सफल हो क्योंकि जनसाधारण को ही उससे लाभ उठाना है, विद्वानों को अपना योगदान देना है मगर साधारण लोगों को सबसे लाभ उठाना है। मैं आशा करता हूं कि इस पुस्तक की उपयोगिता प्रमाणित होगी और इसका प्रचार होगा।

आजकल के जमाने मे दाम भी एक ऐसी चीज होती है जिसका असर पुस्तकों के प्रचार पर बहुत होता है। मैं आशा करता हूं कि दूसरे विश्वकोशो के मुकाबले में इसका दाम रखा जाय इसका ध्यान आप रखेंगे जिसमे जिस प्रकार के लोगों में इसका प्रचार होना है उनकी वित्त के अन्दर वह आ जाय। पुस्तक महंगी पड़ेगी तो प्रचार नहीं हो सकेगा। इस तरह से गवर्नमेंट को लाभ का ख्याल नहीं करना चाहिये। लाभ के बदले कुछ नुकसान भी उठाना पड़े गलत नही होगा बल्कि एक तरह से वह देश के हित मे होगा। मैं तो यही चाहूंगा कि इसकी कीमत ऐसी रखी जाय कि यह जनसाधारण की वित्त के अन्दर आवे।

यह बडी खुशी की बात है कि सम्पादक मंडल का संचालन श्रद्धेय पंत जी ने किया। उनके साथ इसका सम्बन्ध हो जाना स्वयं इस बात का प्रमाण है कि यह काम खुशी-खुशी और अच्छी तरह से सम्पन्न होगा।

192

गोपाष्टमी की परम्परा

मुझे खुशी है कि गोपाष्टमी दिवस और हमारे कृषि प्रधान देश की आर्थिक व्यवस्था में गऊ के महत्व के सम्बन्ध में एक बार फिर मुझे कुछ शब्द कहने का अवसर मिला है। गोपाष्टमी का त्योहार हमें इस बात की याद दिलाता है कि अपने दैनिक जीवन में गऊ और बैल आदि की उपयोगिता के बारे में हमारे पूर्वजों का दृष्टिकोण कितना यथार्थ था, खेती, परिवहन और दूध, दही, घी आदि के रूप में पौष्टिक खाद्य के साधन होने के कारण, गोवंश को भौतिक सम्पत्ति का रूप समझा जाने लगा था। हमारी परम्परा, प्रचलित कहावतें और साहित्य में गोधन का उल्लेख स्थान-स्थान पर आता है। हमारी परम्परा का ही यह आग्रह भी है कि इस उपकार के बदले गऊ के लिये हम भी कुछ करे और इसीलिये प्रत्येक गृहस्थ का यह कर्त्तव्य रहा है कि वह गऊ की देखरेख करे। इसी को एक त्योहार का रूप दे दिया गया। आज भी अनेक परिवर्तनों और आविष्कारों के बावजूद हमारी खेती का सबसे अधिक बोझा पशुओं पर ही है और कम-से-कम देहात में वे आज भी भौतिक सम्पन्नता के प्रतीक समझे जाते है।

गोपाष्टमी की परम्परा को फिर से चालू करने और पशुधन की उन्नति तथा देखरेख के लिये अयोजित ढंग से पूर्ण प्रयत्न करने के पक्ष में सबसे बड़ी दलील हमारी यह प्राचीन परम्परा है और इसके साथ ही यह तथ्य भी संसार में सब से अधिक पशु हमारे देश मे है, जो लगभग 16 करोड़ है। कुछ समय से दुर्भाग्यवश गोपाष्टमी का वास्तविक महत्व लोग भूल गये और उसके आर्थिक तथा व्यावहारिक पहलू की अवहेलना कर उसे एक धार्मिक प्रथा के रूप में ही मानने लगें। वास्तव मे पशुधन का सुधार और उन्नति हमारी महत्वपूर्ण योजनाओ का आवश्यक अंग होना चाहिये, क्योंकि आज हम राष्ट्र की सम्पन्नता के लिये आयोजन कर रहे है और हमारा राष्ट्र ऐसा राष्ट्र है जिसकी तीन चौथाई आबादी आज भी देहातों में रहती है और इसलिये जिस की सम्पन्नता का आधार खेती की उन्नति ही हो सकती है।

यद्यपि हमें इस बात की खुशी है कि हमारे देश में इतने अधिक गाय-बैल और दूसरे उपयोगी पशु है, किन्तु जिस प्रकार हम उनसे बर्ताव करते है और उनकी देखभाल करते हैं उस पर हम गर्व नहीं कर सकते। हमारी गौवें बहुत ही कम दूध देती हैं और पशुओं से जो दूसरे लाभ उठाये जाने चाहिये, हमारी अज्ञानता और

गोपाष्टमी दिवस के अवसर पर भाषण; 20 अक्टूबर, 1960

लापरवाही से वे या तो बहुत कम हो जाते हैं या बिल्कुल ही नष्ट हो जाते है। इस बात पर हमें एक सुविचारित विकास कार्यक्रम पर चल कर गम्भीर चिन्तन करना चाहिये। हमारा सर्वप्रथम कर्तव्य वैज्ञानिक ढंग से पशुओं की नस्ल में सुधार करना है जिससे कि हमें उनसे अधिक दूध मिल सके और अच्छे तथा बलिष्ठ पशु मिल सकें जो खेती और धुलाई की जरूतों को पूरा कर सकें। उसके बाद वैयक्तिक और सामूहिक रूप से पशुओं की देखरेख का प्रश्न आता है। हमें अच्छे चारे और पशुओं के लिये पौष्टिक खाद्य पर भी पूरा ध्यान देना होगा। तभी हमें अपने पशुधन से, जो हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति है, अधिक लाभ उठाने की आशा कर सकते हैं।

मुझे बहुत खुशी है कि अखिल भारतीय गोसंवर्धन समिति, जिसकी स्थापना विशेषकर इसी उद्देश्य को लेकर की गई थी, इस दिशा में अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक है। राष्ट्र के पशुधन के विकास तथा देखरेख के महत्वपूर्ण कार्य में समिति जनता का सहयोग प्राप्त करने के लिये बराबर प्रयत्न करती रही है। हमारा कृषि मंत्रालय भी इस विकास कार्यक्रम का समर्थन करता रहा है। पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत पशु सुधार की कई योजनाओ को हाथ में लिया गया है। मै आशा करता हूं कि इन प्रयासो तथा सभी उपलब्ध साधनों का उपयोग सुव्यवस्थित ढंग से होगा जिससे कि नस्लसुधार, चारे मे सुधार और रोग नियन्त्रण की हमारी योजनायें सफलतापूर्वक कार्यान्वित हो सके। आज गोपाष्टमी के दिन हमें इस बात पर विचार करना चाहिये और अपने पशुधन में सुधार करने का संकल्प करना चाहिये, क्योंकि कुशल पशु पालन ही सफल खेती का आधार हो सकता है। मै आशा करता हूं कि गोपाष्टमी दिवस सम्बन्धी समारोह से हमारे लोगों में इस दिशा में चेतना का सचार होगा और गोधन के सुधार तथा विकास के कार्यक्रमो को कार्यान्वित करने का मार्ग प्रशस्त होगा।

पुरुषोत्तमदास टंडन अभिनन्दन ग्रंथ भेंट करते समय भाषण

हम सब दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आभारी है जिन्होंने श्रद्धेय पुरुषोत्तमदास टंडन को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का यह आयोजन किया और हम सब को यहां निमन्त्रित कर यह अवसर दिया कि इस पुण्य यज्ञ मे हम भी आहुति डाल सकें। मुझे यह भ्रम नहीं कि इस सुलिखित और आकर्षक ग्रन्थ की रचना द्वारा और इसे टंडन जी को भेंट करके उनके मान को बढ़ाना अथवा उनके व्यक्तित्व को अभिवर्द्धित करना सम्भव है। यह आयोजन उनके मान में अवश्य हुआ है किन्तु इसका अधिकतर कारण हम लोगो का अपना सन्तोष ही कहा जायगा।

इस अवसर पर टडन जी के साथ अपने पुराने सम्बन्ध की स्मृतियां सहज ही उभर आती है। हमारा पारस्परिक सम्बन्ध पचास वर्ष पुराना है। टंडन जी से मेरा सब से पहला परिचय काशी में पूज्य मालवीय जी के सभापतित्व में आयोजित प्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन में हुआ। हिन्दी की तरफ मेरा झुकाव उन दिनों हुआ ही था और मैंने हिन्दी में कुछ लिखना शुरू ही किया था। टंडन जी उस समय ही हिन्दी में अपना स्थान प्राप्त कर चुके थे और वे साहित्य सम्मेलन के मंत्री नियुक्त हुए और कई वर्षों तक रहे। उन दिनों वे प्रयाग में वकालत करते थे और यद्यपि अभी वे युवक थे, उन की वकालत चल निकली थी। कई वर्षों तक उनका और मेरा सम्बन्ध सम्मेलन के कारण ही रहा और उसके वार्षिक अधिवेशनों में उन से सदा भेंट होती रही। जहां तक मुझे स्मरण है कलकत्ता में 1911 मे होने वाले सम्मेलन की स्वागतकारिणी समिति का मै मंत्री था और उस अवसर पर टंडन जी के अधिक निकट आने का मुझे अवसर मिला।

हिन्दी के लिये टंडन जी ने जो कुछ किया प्राय: सर्वविदित है। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन ही नही, कोई भी और दूसरी हिन्दी सेवा संस्था कदाचित ऐसी नहीं होगी जिससे उनका सम्बन्ध न रहा हो अथवा जिसने उनके सत्परामर्श और पथ-प्रदर्शन से लाभ न उठाया हो। हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा में उनकी तत्परता उनकी लगन का एक विलक्षण उदाहरण है।

टंडन जी का सार्वजनिक जीवन केवल हिन्दी सेवा तक ही सीमित नहीं रहा। वे अपने को राष्ट्रीय आन्दोलन से अलग रख सकें, यह सम्भव नहीं था।

श्री पु ोत्तमदास टंडन अभिनन्दन ग्रन्थ भेट करते समय भाषण; 23 अक्तूबर, 1960

जब गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया, तब चलती हुई वकालत छोड़कर टंडन जी आन्दोलन में कूद पड़े और उसके नेताओं में उनका स्थान निर्दिष्ट हो गया। कांग्रेस के कार्यक्रम के अनुसार टंडन जी प्रयाग नगरपालिका के अध्यक्ष बने और कई वर्ष तक उन्होंने उस पद को सुशोभित किया। उस अवधि में प्रयाग नगर की कई प्रकार से उन्नति हुई। टंडन जी कांग्रेस के उन नेताओ में है जो गांधी जी के असहयोग कार्यक्रम के कट्टर समर्थक थे और उस कार्यक्रम मे किसी प्रकार के हेरफेर के (जैसे विधान सभाओं में प्रवेश) वे घोर विरोधी थे। किन्तु कालान्तर में जब कांग्रेस की नीति में परिवर्तन हुआ और विधान सभा में जाने का कार्यक्रम स्वीकृत हुआ तो वे उत्तर प्रदेश विधान सभा के सभापति चुने गये। कई वर्ष तक उन्होंने इस दायित्व को बड़ी खूबी से निभाया और उनके कार्य से उनकी कानून की विद्वत्ता, वैधानिक नियमों से पूर्ण परिचय और विभिन्न विचार वाले दलों के प्रति उनका समभाव बराबर प्रदर्शित होता रहा।

पीछे चलकर वे काग्रेस के अध्यक्ष बने। संविधान सभा में जब तक वे बोले और जब भी उन्होने जो कुछ सुझाव दिए, अपने पुष्ट विचारों और दृढ़ निश्चयों से प्रभावित होकर ही वे बोले। संविधान सभा में उन्होंने हिन्दी का बड़ी दृढ़ता से समर्थन किया—और यद्यपि कुछ लोग, विशेषकर अहिन्दी भाषी, इस दृढ़ता से अप्रसन्न भी हुए, पर उनके प्रति उनकी श्रद्धा और प्रेम में कमी नही हुई।

इधर संसद् में वे बहुत नहीं बोलते थे पर जब कभी बोलते गूढ़ विषय पर ही बोलते और अपने पक्ष का बड़ा स्पष्ट विश्लेषण और समर्थन करते। उनके शब्द सदा तर्क-संगत होते। अपने स्वास्थ्य के कारण उन्होने संसद् से अवकाश ग्रहण कर लिया है और अब कभी कभी उनका स्वास्थ्य चिन्ता-जनक हो जाता है। मै इस अवसर पर उनके अभिनन्दन के साथ साथ उनकी दीर्घायु की कामना करता हूं।

टंडन जी का जीवन सार्वजनिक काम काज में बीता है और उन्होंने नाना प्रकार की परिस्थितियां और अनेक उतार-चढ़ाव देखे है, किन्तु इस परिवर्तन-शीलता के मध्य उनकी राष्ट्र सेवा और हिन्दी-सेवा का व्रत अडिग रहा है। वे स्वयं उच्च-कोटि के वकील रहे हैं और आपसी विचार-विनिमय तथा तर्क के प्रयोग द्वारा दूसरों को अपनी बात समझाने और अन्य लोगों की बात स्वयं समझने के लिये वे सदा तैयार रहते हैं। कोई भी व्यक्ति जो उनके सम्पर्क में आया है और जिसे उन्हें निकट से देखने का अवसर मिला है, टंडन जी के

व्यक्तित्व में इस लोच से इन्कार नहीं कर सकता । फिर भी अपने आदर्शों के अनुकरण और निजी सिद्धान्तों के पालन में वे चट्टान से भी अधिक दृढ़ और स्थिर है। उनके आदर्शो का निर्माण पुनीत कल्पना से हुआ है और उनके सिद्धांतों की नींव परम्परागत नैतिकता और आत्मबल पर रखी गई है । यही कारण है कि लचीला और कोमल होते हुए भी, उनके व्यक्तित्व में हमें असाधारण दृढ़ता और स्थिरता के दर्शन होते है ।

मेरा अभिप्राय टडन जी के व्यक्तित्व का विश्लेषण करना नही । मै आप सब का ध्यान उनके जीवन की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं । उनका चरित्र और उनकी दिनचर्या इस बात की कल्पना करने में काफी सहायक हो सकती है कि प्राचीनकाल मे हमारे मनीषी और ऋषि-मुनी किस प्रकार रहते होगे । यद्यपि आधुनिककालीन जीवन की परिस्थितियों और इसके कुछ उपकरणों से एकदम विलग होना तो किसी के लिये सम्भव नही, किन्तु यह सत्य है कि आधुनिक वातावरण और तज्न्य सीमाओ में रहते हुये भी टंडन जी का जीवन प्राचीन ऋषि-मुनियों के समान ही बीता है । आदर्श की कल्पना और उसकी पूर्ति की धुन ही उनके जीवन में सबसे बड़ी चालक शक्ति रही है । आरम्भ से ही संत विचारधारा से प्रभावित हो और संत मत के नियमो तथा अनुशासन का पालन कर उन्होंने व्यक्ति और समाज के जीवन मे आदर्श के स्थान तथा उसके महत्व को हृदयगम कर लिया था । इस आदर्श के लिये हर प्रकार का बलिदान अथवा त्याग करना उनके लिये सम्भव ही नही अनिवार्य रहा है, यहां तक कि उनके लिये तथाकथित सफलता तक को न्यौछावर करने मे भी उन्हे किसी प्रकार का संकोच कभी नहीं हुआ ।

टंडन जी का जीवन त्याग और तपश्चर्या के साथ साथ साधना का जीवन भी रहा है । उनकी साधना से राष्ट्र और जनता लाभान्वित हुई है । उसी साधना के फलस्वरूप हिन्दी का कोमल पौधा बढ़कर एक घना छायादार वृक्ष बन गया है । उस साधना मे राष्ट्रीयता, नैतिकता और साहित्यिकता के तत्व विद्यमान हैं । मै समझता हूं कि टंडन जी के जीवन का अध्ययन करना और इस साधना से प्रेरणा लेना हम सब का कर्तव्य है और अधिकार भी ।

टंडन जी के व्यक्तित्व की एक और विलक्षण बात के सम्बन्ध में मै कुछ कहना चाहूंगा । एक साहित्यिक की भावुकता और एक सार्वजनिक कार्यकर्ता तथा लोकनायक की दृढ़ता के साथ साथ उनके जीवन का एक व्यावहारिक तथा

समन्वयात्मक पक्ष भी है । उनका त्याग ऐहिक जीवन के प्रति उदासीनता की भावना उत्पन्न नहीं करता । उनकी आध्यात्मिकता का आधार व्यक्ति का ही नहीं बल्कि समाज का भी कल्याण है । इसीलिये वे सत्संग की महिमा के कायल है । मै समझता हूं कि उनके जीवन से सभी लोग कुछ न कुछ सीख सकते है और प्रेरणा ले सकते है । मुझे यह कहने में कोई संकोच नही कि अपने सार्वदैनिक जीवन में टंडन जी को जहां अपने साथियो और अन्य लोगो से मैत्री, सद्भावना और श्रद्धा मिली, वहां यदा-कदा उन्हे कुछ विरोध का भी सामना करना पड़ा । किन्तु जहां तक मै जानता हूं टंडन जी का कोई भी विरोधी ऐसा नहीं होगा जिसने उनके व्यक्तिगत गुणों के कारण उन्हे मित्रों के ही समान आदर न दिया हो। सभी प्रकार के राजनैतिक वादविवाद और सार्वजनिक उलझनों के बीच टंडन जी का व्यक्तित्व, उनकी राष्ट्रीय भावना, उनका साहित्य-प्रेम और उनका नैतिक तथा आध्यात्मिक दृष्टिकोण, ये सब अक्षुण्ण और निर्मल बने रहे है । सच तो यह है कि टंडन जी के जीवन की भूमिका से ही नही निष्कर्ष से भी त्याग और साधना का ही दर्शन होता है । इस दृष्टि से उनका जीवन निर्लिप्त और समरस रहा है ।

कुछ समय पहले ही जब मै इलाहाबाद आया था, मै टंडन जी से भी मिला था और मुझे उनके दर्शन पाकर, उनसे भेंट करके बड़ी खुशी हुई थी । ऐसा अनुभव हुआ था कि बड़े भाई की तरह उनका स्नेह समरस होकर हमें मिल रहा है । आज इस समारोह के निमित्त मुझे उनसे मिलने का यह सुयोग फिर मिला, इससे मेरी खुशी और बढ़ गई । अपने स्वास्थ्य के कारण अब टंडन जी दिल्ली नही जा पाते, तो उनका स्नेह हमे यहां खीच लाता है ।

यद्यपि इस समारोह के संदर्भ में विशेष करके टंडन जी की हिन्दी के प्रति सेवाओं का ही उल्लेख किया गया है, किन्तु इस अभिनन्दन ग्रन्थ में उनकी जीवनी देशसेवा और उनकी चहुमुखी वृत्तियों का दिग्दर्शन भी कराया गया है । यह कहना अत्युक्ति नही कि उन्होने जो भी काम अपने हाथ मे लिया, चाहे वह कांग्रेस का हो, असहयोग का हो, नगरपालिका का हो, विधानसभा के सभापतित्व का हो, संसद का हो अथवा लोक सेवक मंडल का हो, सभी कार्यों उनकी सत्यनिष्ठा, स्वार्थत्याग, सेवावृत्ति, दृढ़ निश्चय तथा दूरदर्शिता के साथ-साथ दूसरों के प्रति उनका भाव यथोचित प्रेम और आदर का ही रहा है । विचारों का मतभेद रहते हुए भी उनके जीवन म दूसरों के प्रति इस भाव और आदर में कभी न्यूनता नही हुई । आज हमारे सौभाग्य से वह छाया जो हमें बराबर मिलती

रही है, उपलब्ध है और हमारी ईश्वर से विनीत प्रार्थना है कि यह छाया बहुत बहुत दिनों तक देश को और उनके सहकर्मियों को मिलती रहे ।

टंडन जी के साथ मेरा सम्बन्ध मेरे जीवन का एक सुखद संस्मरण है । जब से मेरा उनसे प्रथम परिचय हुआ तब से आज तक मुझे उनके छोटे भाई जैसा स्नेह-भाजन बने रहने का सौभाग्य मिला है । यह भी कह देना अनुचित नही होगा कि केवल एक दो बार छोड़ हम दोनो मे सहमति भी रही जिसके कारण यह दीर्घ-कालीन प्रेमभाव और काम में समभाव और सहकारिता रही । बीतते हुए दिनों के साथ-साथ उनके प्रति मेरा आदर और सद्‌भाव बढ़ता ही गया है । और आज उसी छोटे भाई के रूप में बड़े भाई का आदर-मान करते हुये मुझे अपूर्व हर्ष हो रहा है । मैं आप सबकी ओर से इस अभिनन्दन ग्रन्थ के समर्पण के साथ-साथ अपना समस्त स्नेह, सद्‌भाव और समादर टंडन जी को समर्पित करता हूं ।

हरिजन छात्रावास में

मुन्शी शंकर शरण, बहनों तथा भाइयो,

जब से इस आश्रम की स्थापना हुई मै कई बार यहां आ चुका हूं और जब-जब मुझे यहां आने का मौका मिलता है मैंने इसमें प्रगति पायी है। अभी शायद एक ही वर्ष हुआ होगा उस समय जो प्रगति हुई थी और आज जब मै आ रहा था और खेतो होकर मेरी गाडी आयी उस वक्त मैंने समझा कि पार साल जहां तक काम पहुचा हुआ था उससे कही आगे बढ़कर काम किया जा रहा है। इससे काम की प्रगति का पता चलता है।

अभी आपने बताया कि यूनिवर्सिटी कक्षा के विद्यार्थियों के पठन-पाठन का यहां प्रबन्ध है और अब लड़कियों के लिये भी एक कालेज खोला जा रहा है। अभी जिस छात्रावास का शिलान्यास आप मेरे हाथों से करायेंगे उसमे इन्टरमीडिएट के 200 छात्र रहेंगे और दूसरे छात्रावास जो बन गये है उनमें भी सैंकड़ों विद्यार्थियों के रहने की जगह है। इस तरह से मै समझता हूं कि यह विद्या का एक केन्द्र बन गया है। यहां सिर्फ स्कूली और कालेजी शिक्षा का ही काम नही किया जा रहा है बल्कि दूसरे प्रकार की शिक्षा का काम भी होता है उसको भी सिखाने का काम होता है और उसको भी लोग सीख रहे है और मै जानता हूं कि यहा इन्डस्ट्रियल काम इस वक्त हो रहा है उससे भी बहुत लोग लाभ उठा रहे है। मै यही चाहता था कि इसमें उन्नति हो, तरक्की हो और जब-जब मै आता हूं और देखता हूं कि पिछली बार से काम मुझे ज्यादा देखने को मिला तो मुझे खुशी होती है।

मै आप सबको इसके लिये बधाई देना चाहता हूं और यह चाहता हूं कि जिस उत्साह के साथ लोग यहा के सचालकों की सहायता कर रहे है वह बना रहे और हमेशा जैसे-जैसे काम बढ़ता जायगा उस बढ़ते हुए काम के लिये आपको किसी की मुहताजी करने की जरूरत नही होगी बल्कि बिना मांगे आपके पास पैसे आते जायेंगे। गवर्नमेंट की सहायता भी अब आपको मिली है, पहले भी मिली थी। मै आशा करता हूं कि आपका काम और तेजी के साथ बढ़ेगा। इस सबके लिए मै आपको एक बार और बधाई देना चाहता हूं।

मुन्शी ईश्वर शरण आश्रम में एक नये छात्रावास की नींव डालते हुये भाषण; इलाहाबाद, 1960

संयुक्त राष्ट्र दिवस के अवसर पर

संयुक्त राष्ट्र के वार्षिक दिवस के अवसर पर सब सदस्य राष्ट्रों का मैं सहर्ष अभिनन्दन करता हूं। संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के समय से गत पन्द्रह वर्षो में यह संस्था संवाद का ऐसा विषय पहले कभी नहीं रही जितनी आज है। यह बात कि सयुक्त राष्ट्र संघ दिनोंदिन लोगों का ध्यान अधिक आकर्षित करती जा रही है, एक शुभ लक्षण है। जैसे-जैसे स्वतन्त्र राष्ट्रों की संख्या बढ़ रही है और विचारणीय समस्याओं में वृद्धि हो रही है, 99 राष्ट्रों की प्रतिनिधि संस्था क रूप मे संयुक्त राष्ट्र का महत्व इस गति से बढ़ रहा है जिसकी बहुतों ने पहले कल्पना नही की होगी। अनेक उलझनो और समस्याओ के बावजूद, यह सन्तोष का विषय है कि अब संयुक्त राष्ट्र का नाम सभी प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को शान्तिपूर्ण ढंग से और सफलता से सुलझाने के साथ जुड गया है।

संयुक्त राष्ट्र के इस दायित्व से ही उन समस्याओ का उद्‌भव हुआ है, जिनके सुलझाने में आज वह व्यस्त है। इन चालू प्रश्नों का शान्तिपूर्ण हल ढूढ़ निकालने मे चाहे कुछ भी कठिनाई हो और कितनी ही देर लगे, यह अब सब स्वीकार करते है कि बढ़ते हुए तनाव में और परस्पर-विरोधी मांगों के बीच संयुक्त राष्ट्र एक रचनात्मक और विश्वसनीय ढाल के समान सिद्ध हुआ है। कांगो का मामला इस बात का विलक्षण उदाहरण है कि अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े बढ़ते-बढ़ते कहां तक पहुंच सकते है और ऐसी उत्तेजनापूर्ण स्थिति में बीच-बचाव करने की संयुक्त राष्ट्र की कितनी क्षमता है। कागों और इस प्रकार की अन्य समस्याओ पर विभिन्न राष्ट्रों ने जो मत प्रकट किए है, उनसे राष्ट्रों का विचार-वैभिन्य और कार्यप्रणाली सम्बन्धी मतभेद प्रकट होता है। पूर्ण विचार-स्वातंत्र्य पर किसी को आपत्ति नही हो सकती। यह आशा की जाती है कि तीव्र विचार वैभिन्य तथा मतभेद ही अन्त में सदस्यराष्ट्रों को शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की वांछनीयता का दृढ़ समर्थक बना देंगे। यह एक ऐसा आदर्श है जिसे हमें स्वीकार करना पड़ेगा यदि अन्तर्राष्ट्रीय ही नही बल्कि राष्ट्रीय झगड़ों का व्यावहारिक हल अपेक्षित है। हम आशा करते है कि वह दिन दूर नही जब इस बात तथा आदर्श को सभी राष्ट्रों द्वारा मान्यता मिलेगी। जब वह दिन आएगा तो हम कह सकेंगे कि राष्ट्रों के आपसी झगड़ों को सुलझाने के साधन के रूप में युद्ध अथवा हिंसा अवैध या त्याज्य हो गये हैं। इस बीच में हमारी यह आशा है कि जो पेचीदा प्रश्न और

संयुक्त राष्ट्र दिवस पर भाषण; नई दिल्ली, 23 अक्तूबर, 1960

जटिल समस्याएं इस समय संयुक्त राष्ट्र के विचाराधीन हैं और जो बहुत से राष्ट्रों को उत्तेजित किए हुये है, उन पर राष्ट्र भविष्य में अधिक एकमत हो सकेंगे । इन प्रश्नों में शायद सबसे अधिक महत्वपूर्ण निःशस्त्रीकरण का प्रश्न है जिसकी वांछनीयता के सम्बन्ध में सभी राष्ट्र सहमत है, यद्यपि कुछ राष्ट्रों की कार्यप्रणाली में विभिन्नता है । हमें धैर्य से काम लेना चाहिये, क्योंकि नि-शस्त्रीकरण बहुत बड़ा प्रश्न है और इसके सफलतापूर्वक सुलझाने पर ही राष्ट्रों की आशाएं तथा संयुक्त राष्ट्र का अस्तित्व निर्भर करता है ।

हम भारतवासियों की उन आदर्शों में पूर्ण आस्था है जिनसे 1945 में संयुक्त राष्ट्र अधिकारपत्र के प्रेरित निर्माता हुए थे । हो सकता है कि आज की परिस्थितियों के अनुकूल बनाने के लिए उस अधिकारपत्र में कुछ परिवर्तन अथवा संशोधन आवश्यक समझे जायें । अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के शान्तिपूर्ण निबटारे में हमारा विश्वास अडिग है और हमारी यह धारणा है कि वह प्रमुख संस्था संयुक्त राष्ट्र ही है जो इस आदर्श को व्यावहारिक रूप दे सकती है । प्रस्तुत विचाराधीन समस्याओं पर सदस्य-राष्ट्रों का चाहे कितना ही मतभेद हो, प्रत्येक राष्ट्र का यह कर्तव्य है कि हर सम्भव उपाय से वह संयुक्त राष्ट्र को दृढ़ बनाने और इसकी कार्यवाही को अधिक सफल करने का यत्न करे । आज के शुभ दिन, जो संयुक्त राष्ट्र की स्थापना का विषय है, मैं अब सदस्य-राष्ट्रों तथा उनके नागरिकों के प्रति अपनी शुभकामनाएं भेंट करता हूं ।

भारत सेवक समाज के कार्यकर्त्ताओं से

श्री शंकर शरण जी, बहनों और भाइयो,

आज आप सब से मिलकर मुझे इस बात की प्रसन्नता हो रही है कि आप बहुत जगहों से घूम फिर कर दिल्ली में पहुंचे हैं और यहां आकर मुझ से मिलने का आपने एक मौका निकाल रखा।

आजकल मैं देखता हूं कि इस तरह से मेरा परिचय प्रायः प्रतिदिन नही तो तो कम से कम सप्ताह मे 3, 4 दिन अवश्य होता है। छोटी बड़ी टोलियां देश के भिन्न भिन्न भागों से निकल कर और देश के दूर-दूर स्थानों में जाकर वहां की सब चीजों को देखकर फिर अपने यहा वापस जाते हैं और इस प्रकार की टोली एक दो नहीं, कभी स्त्रियों की टोली होती है, कभी किसानों की टोली होती है, कभी विद्यार्थियों की टोली होती है कभी स्वयंसेवकों की टोली होती है और आज आपकी भारत युवक समाज की टोली आयी। इस तरह से मुझे यहां बैठे बैठे सारे देश के लोंगों से जो कितने तरह के स्थानों से आते हैं परिचय दिन प्रति दिन होता रहता है। कुछ दिनों से गवर्नमेंट ने भी इस काम में रेल आदि द्वारा मदद करने का निश्चय कर लिया है और इस तरह से जो लोग यात्रा में निकलते हैं उनके लिए यात्रा का काम बहुत सहज हो गया है, उसमें कठिनाई कम होती है और मैं समझता हूं कि जो खर्च होता है उसमें भी थोड़ी बहुत कमी होती है। तो जो लोग यात्रा में जाते हैं उनको भी फायदा होता है क्योंकि उनको देश के भिन्न-भिन्न भागों से परिचय करने का मौका मिलता है, भिन्न-भिन्न भागों मे कैसे-कैसे लोग रहते हैं, कहां कौन सी बोली बोली जाती है, कहां कौन भाषा प्रचलित है, वहां किस किस धर्म के अनुयायी लोग बसते हैं ये सब चीजें थोड़ी बहुत देखने को मिल जाती हैं और देश का फायदा यह होता है कि जब वे अपने-अपने स्थान घूम करके जाते हैं तो यह ख्याल लेकर जाते हैं कि देश सेवा करनी चाहिए। तो यह आशा होती है कि वे इसको भूलेंगे नहीं। तो इस तरह से जो लोग टोली मे निकलते हैं उनको और देश को भी इस तरह की यात्रा से लाभ होता है।

यह हमारे लिए कोई नई चीज नही है क्योंकि जब तक किसी को देखें नही तब तक ठीक तरह से उसे जान नही सकते, पहचान नहीं सकते और इस देश

भारत युवक समाज, बम्बई, के 100 सदस्यों से राष्ट्रपति भवन में मुलाकात के समय भाषण; 28 अक्तूबर, 1960

को जानने और पहचानने का सब से अच्छा तरीका यही है कि सफर किया जाए, दूर दूर की मुसाफिरात की जाए। तभी कोई जहा जाएगा उस जगह को जान सकता है, समझ सकता है और इस तरह से केवल स्थानों के साथ परिचय काफी नही है बल्कि जो भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग रहते है उनके साथ भी परिचय होना चाहिए और वह परिचय इन यात्राओं के जरिए से आसानी से हो जाता है। यह कोई नई चीज नही है।

आप जानते है कि हिन्दुस्तान एक बहुत बडा देश है और उसके एक हिस्से के लोगों का दूसरे हिस्से के लोगो के साथ परिचय आसान नही, कठिन है। आज तो गरचे आपको कही-कही कुछ कष्ट हुआ होगा पर पहले जमाने में जब रेल नही थी, मोटर का नाम भी कोई नही जानता था, दूसरी सवारी नही थी, तो भी हमारे देश मे लोग निकलते थे और देश में एक कोने से दूसरे कोने तक की यात्रा किया करते थे और हमारे पूर्वज ऋषि-महर्षियों ने ऐसे-ऐसे स्थान यहां मुकर्रर कर दिए जिनको तीर्थ स्थान कहते है, जहां जाने के लिए बहुत-बहुत दूर सफर करके आना जाना होता है। इस तरह से दक्षिण में रामेश्वर तथा कन्या-कुमारी, उत्तर में बदरिकाश्रम, पूर्व मे जगन्नाथपूरी और पश्चिम में द्वारका ये चार स्थान हिन्दुस्तान के चार कोने पर बसाये गये और इन्ही को चार महातीर्थ कहते है। कोई आदमी निकलता था तो वह अपना धर्म समझता था कि इन चारों तीर्थो का दर्शन कर आवे। यह दर्शन धर्म तो था ही, जब आदमी भगवान के प्रति प्रेम लेकर निकलता था तो भगवान से प्रेम तो होता ही था, साथ ही इतनी दूरी मे जिन स्थानों से वह गुजरता था वहां के लोगो से उसका परिचय हो जाता था, देश का हाल-चाल मालूम हो जाता था कि कहां किस तरह के लोग बसते है, कहां क्या पैदा होता है, कहां नदियां है, कहा पहाड़ है इत्यादि। यह सब चीजें देखने को मिल जाती थी। इतने बड़े देश मे सर्दी, गर्मी, बरसात सूखा सब साथ-साथ देखने को मिल जाते थे।

देश का वह जो तीर्थ का सिलसिला था आज उस सिल-सिले को और बहुत आसान कर दिया गया है, जो रेल वगैरह से आसान हो गया है वह अच्छा ही है। जब से हम स्वतन्त्र हुए है तब से लोगों को प्रोत्साहन देने के लिए कितनी जरूरी बातें जारी कर दी गयी है जिसमें लोग आसानी से जा सके। तो मै देखता हूं कि इस तरह से लोग जानकारी हासिल करने के लिए यात्रा में निकलते है। मेरा अपना ख्याल है कि साल भर मे 25, 30 हजार ऐसे आदमी मुझसे मिलते है। एक-एक टोली में पांच-पांच सौ, छे-छे सौ, आठ-आठ सौ लोग

होते हैं, कुछ टोलियां कम लोगों की भी आती है, पचास, सौ की भी होती हैं। इस तरह से हफ्ते में तीन-चार दिन मुलाकात होती है। और सबों के सामने कुछ कहना पड़ता है। इसी बात को मैं किसी न किसी तरह से हेर-फेर करके, उलट फेर करके कहता हूं और बताता हूं कि आपको घूमने-फिरने के बाद और सब कुछ देख लेने के बाद घर जाकर यह कहना कि मैंने यह देखा वह देखा कोई अर्थ नहीं रखता। आपके घूमने का अर्थ यह होना चाहिए कि आपके हृदय में जो कुछ आपने देखा उसका नक्शा बैठ जाए। इसका अर्थ यह है कि उसके साथ आपका प्रेम होना चाहिए, उसके साथ आपका प्रेम इस तरह से जुट जाए कि यदि मौका आवे और वहां के लोगों की सहायता करने की जरूरत हो तो उसके लिए आप तैयार रहे। अभी आप भाखरा और नगल देखकर आये। नंगल एक गाव ही नही है, वह सिर्फ पंजाब में ही नही आता है आपको याद रखना है कि इसमें सारे देश का हिस्सा है। इस तरह से घूमने फिरने का अर्थ यह निकलना चाहिए कि लोग देश को समझे। इतना बड़ा देश है कि जो स्वतन्त्र हो गया है। जगह-जगह पर बड़े-बडे काम हो रहे हैं। आपने इतना देखा है, सुना है। आपने निश्चय कर लिया होगा कि कितना काम हो रहा है। आपने भाखरा भी देखा है। वह एक नयी चीज है, आलीशान चीज है। वह पूरा बना हुआ है। उसको आप समझें कि कितना बड़ा काम हुआ है। आप समझ सकते है सब का अर्थ देश को ऊचा उठाना है। ये सब काम हो रहे हैं। आपकी यात्रा का माने यह होना चाहिए कि आप देखे कि कहां कितना काम हुआ है। आपने अपने इलाके में भी देखा होगा। आप जाकर देखें कि कितना काम हुआ है, क्या काम बाकी है, क्या आपको करना है। यही देश की यात्रा का अर्थ होना चाहिए।

खास करके आप अपने को सेवक समाज का सदस्य मानते है। उनके सामने सेवा की ही भावना कायम रहनी चाहिए कि किसी तरह से सेवा की कमी नही हो। सेवा का मौकाम तो तमाम हिन्दुस्तान भर मे फैला हुआ है। देश मे कोई ऐसी जगह नहीं है जहां सेवा की जरूरत नही हो। जो कोई सेवा का व्रत लेता है उसको इस चीज की कमी नही, वह यह नही कह सकता कि उसको सेवा का मौका नहीं मिला। अगर सेवा की भावना रहे और लोगों का उस पर विश्वास रहे तो मौका क्यों नही मिलेगा। अगर किसी को मौका नहीं मिला तो समझना चाहिए कि उसकी सेवा मे कमी है। आपकी इस यात्रा का बहुत बड़ा महत्व होना चाहिए।

आपने कहा कि स्वास्थ्य खराब रहते हुए भी मैंने आपको मिलने का मौका दिया ? आप मेरे स्वास्थ्य की चिन्ता न करें। मेरा स्वास्थ्य जैसा आज है वैसा पिछले 50 वर्षों में नही रहा । इसी स्वास्थ्य को लेकर आज 50 वर्षों से मैं काम करता रहा हूं। यदि यह स्वास्थ्य 50 वर्षों से मुझसे काम कराया है तो अब कैसे छोड़ सकता है । इसकी चिन्ता आप नहीं करें। बात यह है कि हमारे जैसे जो पूराने लोग हैं उनसे काफी काम निकालना चाहिए, जितना काम आप लेना चाहें मुझसे लें, मेरी चिन्ता आप नही करे।

मेरी आशा है कि आपकी यह यात्रा पूरी तरह सफल होगी, इससे आप लाभ उठाएंगे और देश का भी लाभ होगा ।

गुरु नानकदेव का कल्याणकारी सन्देश

बहनों और भाइयो,

कई वर्षों से मैं हर साल इस दिन पर आपके इस जलसे में हाजिर हुआ करता हूं और वह इसलिए नही कि मैं अपनी ओर से आपको कुछ कहूं, बताऊ या कुछ आपको सिखाऊं। बल्कि मेरी गरज़ इसमें यह रहती है कि यहां आने से गुरु नानकजी के सम्बन्ध में सुनकर मैं कुछ हासिल करूं या कुछ सीखू। हिन्दुस्तान के इतिहास में इस तरह की हस्तिया समय-समय पर होती रही है, जिन्होंने समय को बदल दिया, और लोगों के विचारो को पलट दिया और एक नया दौर शुरू कर दिया। गुरु नानकदेव का स्थान ऐमे लोगों में एक बहुत ही ऊंचा स्थान है। उन्होंने अपनी जिन्दगी में लोगों के ख्यालात बदले और वही नहीं उनके बाद भी उनके विचार और उनकी सीख को लोगों ने और जोरों से कबूल किया और आज तक वह चीज उसी तरह से जिन्दा है, तथा आज भी लाखो लोगों को जिन्दा कर रही है। इसलिए एक ऐसे गुरु की कहानी, ऐसे गुरु के शब्द अगर सुनने को मिल जाएं और कुछ लोग उनके सम्बन्ध मे हमे कुछ बता सकें और सुना सकें तो वह सुनना और सीखना हम सब का फर्ज हो जाता है। इसी को सुनने के लिए मै आप लोगों के बीच हर साल आया करता हूं।

गुरु नानकदेव ने तमाम मज़हबों के निचोड़ को लेकर उसे अपने शब्दों में रख दिया। यह नहीं कि उसमें उन्होंने अपना कुछ नहीं जोड़ा, बल्कि उन्होंने उन सब को इकट्ठा करने में ही दूर-दर्शिता और दूर-दर्शिता से भी अधिक ईश्वर की पहचान देखने में आये यही सब से बड़ी चीज अपनी जिन्दगी मे रखी। और वही आज भी लाखों में उसी तरह से जिन्दा है, जिस तरह उन लोगों मे थी जो उनके आगे-पीछे चलते थे और इर्द-गिर्द रहते थे। इसलिए अगर साल में एक दिन भी हर मज़हब के, हर तबके के लोग उनके नाम को याद कर सकें, उनके शब्दों को स्मरण करें और उनकी सीख की ओर ध्यान दें तो वह हम सब के लिए बहुत बड़ी चीज हो जाती है। मै यहां आकर अपनी श्रद्धांजलि तो भेंट करता ही हूं पर साथ ही साथ सब लोगों से बहुत कुछ सुनकर, सीख कर वापस जाता हूं। इस वक्त खासकर इस चीज की जरूरत है कि हम एक दूसरे के साथ किस तरह से प्रेम का बर्ताव करें और कैसे आपस के मतभेदों के बावजूद भी प्रेम के बर्ताव को न छोड़ें।

श्री गुरु नानक देव जी के जन्मदिवस पर चेम्सफोर्ड क्लब में भाषण; 2 नवम्बर, 1960

यह सीखना जरूरी है। खासकर के हिन्दुस्तान जैसे मुल्क में जहां बहुत-सी जबानें बोलने वाले लोग, कई मजहबों के लोग रहते हैं, वहां इन ख्यालों का जहां तक प्रचार हो सके अच्छा है। इसलिए ऐसे दिन में इकट्ठे होकर कुछ सीखना इस मुल्क के लिए बहुत जरूरी और फायदे की चीज होगी।

मैं आप सब को बहुत धन्यवाद देता हूं कि आप इतने बहन भाइयों को यह मौका देते है कि चाहे कुछ देर के लिए ही सही दो-चार शब्द सुन सकें और मुझे भी मौका देते है इसके लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं।

महात्मा विदुर की मूर्ति का अनावरण

मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि हाफिज मोहम्मद इब्राहीम साहब और इस इलाके के दूसरे लोकनायकों के कृपापूर्ण आग्रह पर मुझे आज यहां आने का मौका मिला और विदुर सेवा आश्रम के निर्माण और विकास के बारे में जो आपने योजना बनाई है उसे देख सका । महात्मा विदुर के सम्बन्ध में मुझे कुछ कहने की आवश्यकता नही । आप सब लोग, हो सकता है, उन के बारे में पहले ही से बहुत जानते हो, क्योंकि जिस क्षेत्र में आप रहते है उस से उनका नाम घनिष्ट रूप से सम्बन्धित है । इस सम्बन्ध का आधार किंवदन्ती या कथा कहानी ही नही है । इस आश्रम के रूप में जो सदियों से यहां चला आता है और जिसे यहा की जनता ने उत्सवों, त्योहारों और अनेक प्रकार की सांस्कृतिक परम्पराओ मे गूथ लिया है, यह आश्रम भी यहा ही स्थित है । इसलिए महात्मा विदुर के व्यक्तित्व, उनकी विश्वविख्यात नीति और उनके दिव्य गुणो का स्मरण करन के लिए और लोगो को भले ही कल्पना का सहारा लेना पड़ता है, किन्तु आप लोग प्रतिदिन उस कुटिया के दर्शन कर सकते है जहां उन्होने निवास ग्रहण किया था और जहां बैठकर उन्होने वर्षो तक चिन्तन किया और अपनी नीति को सूत्रबद्ध किया ।

फिर भी मैं समझता हूं महात्मा विदुर के नैतिक विचारो की बानगी देखना उचित होगा । एक श्लोक में उन्होने कहा है :

> शील प्रधानं पुरुषे तद् यस्येह प्रणश्यति,
>
> न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुभिः ।

(पुरुष में शील ही प्रधान है । जिस व्यक्ति का शील ही नष्ट हो जाता है, इस संसार में उसका जीवन, धन और बन्धुओ से कोई प्रयोजन सिद्ध नही होता ।)

शील और चरित्र की महिमा का यह कैसा सुन्दर वर्णन है । इसी प्रकार परोपकार और दूसरो के कल्याण पर जोर देते हुए विदुर ने अपनी नीति में कहा है :—

> यथा यथा हि पुरुषः कल्याणे कुरुते मनः
>
> तथा तथास्त सर्वार्थाः सिध्यन्ते, नात्र संशयः ।

दारानगरगंज (बिजनौर) में विदुर सेवा आश्रम मे महात्मा विदुर की मूर्ति का अनावरण करते हुए भाषण; 3 नवम्बर, 1960

(मनुष्य जैसे-जैसे कल्याण में मन लगाता है, वैसे ही वैसे उसके सारे अभीष्ट सिद्ध होते हैं—इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है)।

परोपकार की इस उदात्त भावना और समाज-कल्याण की आकांक्षा का आधार नैतिकता है, पर इसके साथ ही मानव का अपना हित भी है।

इसी विचार को अधिक स्पष्ट करते हुए विदुर ने इस प्रसिद्ध श्लोक की रचना की थी।

"न तत् परस्य संदध्यात् प्रतिकूलं यदात्मनः"

अर्थात् हमें दूसरों के प्रति ऐसा व्यवहार नही करना चाहिए जो हम दूसरो से अपने प्रति नही चाहते। यही विचार अन्य देशों के साहित्य में और सन्तों की वाणी में भी पाया जाता है। परन्तु मेरा विश्वास है कि संसार में सब से पहले यह विचार विदुर की नीति मे ही व्यक्त हुआ है।

हमारे देश में स्वतन्त्रता-प्रप्ति के बाद सर्वप्रभुता-सम्पन्न स्वराज्य की स्थापना हो गई है और देश के उत्थान के लिए अनेक प्रकार की योजनाएं बनाई गई हैं। राजनीति और शासन चलाने के लिए विधान सभाएं काम कर रही हैं जो बालिग मताधिकार द्वारा निर्वाचित होती हैं और जिनसे यह आशा की जाती है कि वे सबके हित की रक्षा करेंगे और सर्वव्यापी कल्याणकारी उद्योगों द्वारा सब को उन्नत करेंगें। उनके द्वारा ऐसा प्रयत्न भी हो रहा है पर समष्टि व्यक्तियों से ही बनती है और जब तक मनुष्य का व्यक्तिगत सुधार न हो और उच्चादर्शों से वह प्रभावित न हो, तब तक समाज उन्नत नहीं सकता। जहां विधान सभाओं का काम समष्टि-प्रदत्त अधिकारों द्वारा जनसाधारण की सेवा और सहायता करना है, वहां शिक्षालयों और विशेष करके इस प्रकार के आश्रमों का कर्तव्य है कि, वे व्यक्ति का निर्माण करे और वह व्यक्ति ऐसा हो जो परमार्थ में ही स्वार्थ समझे और सेवा मे ही सतोष प्राप्त करे। विदुर आश्रम के वासियों से इतना ही कहना काफी है कि यदि विदुर द्वारा दिए हुए उपदेश जो विदुर-नीति में संग्रहीत हैं, वे लोगों के और समाज के जीवन में उतरवा सकें तो आश्रम का उद्देश्य सिद्ध हो जाए और उनका अपना जीवन भी सफल हो जाए। मैं आशा करता हूं कि यह आश्रम इसी प्रकार के व्यक्तियों के निर्माण में अपनी शक्ति और साधना का उपयोग करेगा और इस नये युग में भी हमारी प्राचीन परम्परा की उपादेयता सक्रिय रूप से प्रतिपादित करेगा।

मै इस इलाके के लोगों को बधाई देना चाहता हू कि उन्होंने इस कुटिया के महत्व को समझा और इस परम्परा के फलस्वरूप जो गौरव इस क्षेत्र का है उसे भी पहचाना। किन्तु इस गौरवपूर्ण घटना के कारण जहां आप में हर्ष और उत्साह का संचार होता है, वहां कुछ दायित्व भी यहा के लोगों पर आता है। आप का यह कर्तव्य है कि आप इस आश्रम का इस प्रकार विकास करें कि इस जनपद का समस्त जीवन, यहां के लोगों की समस्त प्रवृत्तिया उसमे प्रतिबिम्बित हो उठें। आपको विदुर सेवा आश्रम का निर्माण एक नवचेतना के केन्द्र के रूप में करना होगा जिससे कि इस जनपद के लोग उसके द्वारा अनुप्राणित हों और अपने दैनिक जीवन में त्याग, स्पष्टवादिता और नैतिकता के उन आदर्शों को उतारने का यत्न करें जो महात्मा विदुर के जीवन की विशेषता थी। यदि आप लोग इस आश्रम का निर्माण उक्त आदर्शों के अनुरूप करेगे तभी उस योजना को सफलता मिल सकती है जिसकी कल्पना मै कर रहा हूं और जो विदुर सेवा आश्रम के कार्यकर्ताओं के सामने है।

मै जब राष्ट्र के इतिहास पर नजर डालता हूं तो उसमें सब स महत्वपूर्ण और युगप्रवर्तक घटनाओ मे हमारे महापुरुषों के जीवन, उनकी शिक्षा तथा उनकी विचारधारा ही दिखाई देती है। जिसे हम प्रगति कहते है उसका विवेचन तथा नापतौल भी महापुरुषों की की जीवनियो, उनके द्वारा प्रतिपादित आदर्शो और जनसाधारण के जीवन पर उनके प्रभाव से ही जाना जा सकता है। यद्यपि पुस्तकों में जिस इतिहास की सब से अधिक चर्चा है वह अधिकतर राजाओं और सम्राटों के कारनामों से ही सम्बन्ध रखता है, किन्तु मै समझता हूं राजदरबारों की गतिविधि समाज के ऊपरी स्तर तक ही सीमित रहती है। कम से कम यह तो कहा जा सकता है कि जनता के जीवन में वह इतनी गहरी नहीं उतर पाती जितनी सन्तों, महात्माओं और महापुरुषों की शिक्षा उतरती है हमारे देश का इतिहास इस तथ्य की सच्चाई का ज्वलन्त प्रमाण है। यह ठीक है कि अपने समय में चक्रवर्त्ती राजाओं और महाराजाओं ने असीम शक्ति का भोग किया, किन्तु यदि इस शक्ति की परीक्षा समय की कसौटी पर की जाए तो, यह उस शक्ति के सामने कुछ भी नहीं जो ऐतिहासिक युग में शंकराचार्य, तुलसीदास, कबीर आदि सन्तों की वाणी और उनके विचारों को प्राप्त हुई। प्रागैतिहासिक युग में ऐसी ही शक्ति महात्मा विदुर की वाणी और उनकी नीति को मिली। आज भी उनकी नीति के श्लोक कहावतों के रूप में जनगण के हृदय मे विद्यमान है। जहां तक मैं जानता हूं वह नीति ऐसी है, कम से कम उसका अधिकांश

भाग ऐसा है, जो आधुनिक परिस्थितियों पर भी उसी प्रकार लागू हो सकता है जैसे प्राचीन काल में होता था । यदि हम चाहें इस नीति को हम जनकल्याण और मानव सुधार का प्रभावशाली अस्त्र बना सकते हैं । मेरे विचार में विदुर सेवा आश्रम की यही सबसे अधिक सार्थकता होनी चाहिए ।

आधुनिक जीवन और राष्ट्रनिर्माण की आवश्यकताओ को देखते हुए हमें ऐसे केन्द्रों का विकास सूझबूझ से करना चाहिए । इन पवित्र स्थानों और इनकी परम्पराओं मे निहित प्रेरणा शक्ति का जन और समाज के हित में उपयोग अत्यन्त आवश्यक है । हमारी विकास योजनाएं इतनी व्यापक होनी चाहिएं कि उनसे मानव की धार्मिक उन्नति के साथ-साथ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक प्रगति का मार्ग भी प्रशस्त हो । अर्थात् हमारे महापुरुषों के स्मारक ऐसे सजीव और उपयोगी केन्द्र बने जिनसे समाज को प्रकाश मिले, पथ-प्रदर्शन मिले और नवचेतना के साथ-साथ नवस्फूर्ति प्राप्त हो सके । हमारे पास भौतिक साधनों की कमी नही, और बिजनौर के उदाहरण से ही सिद्ध होता है कि उत्साही लोगो और नेतृत्व का भी हमारे देश में अभाव नही । आवश्यकता केवल इस बात की है कि देश के विभिन्न भागों मे, विशेष कर देहाती इलाको में, सुविचारित योजना के अनुसार इन स्मारको को ऐसे केन्द्रो का रूप दिया जाए जिनसे सहज, सरल रूप मे नवजीवन का प्रवाह हो और नवयुग का उदय हो और इसके साथ ही सधर्म और परम्परागत शील के प्रति आस्था और कर्तव्य भावना उत्पन्न हो ।

मुझे खुशी है कि विदुर सेवा आश्रम समिति ने इस केन्द्र की विकास योजना व्यापक ढंग पर बनाई है और मुझे यह आशा है कि आश्रम के कार्यकर्ता उन सभी विचारों और आदर्शों का पूरा ध्यान रखेंगे जिनके बारे में अभी मैंने कहा है । इसमें आपके जनपद का हित है और इसी मे राष्ट्र का कल्याण निहित है । मैं आप सबका आभारी हूं कि आपने मुझे यहां निमन्त्रित किया, मुझे अपना स्नेह और सत्कार उदारतापूर्वक दिया । मेरी यह कामना है कि विदुर सेवा आश्रम एक आदर्श जनहित केन्द्र के रूप में विकसित हो और इसके द्वारा जहां महात्मा विदुर की कीर्ति का विस्तार हो, वहां नव-निर्माण और नव-जागरण की शक्तियों को उससे अधिकाधिक बल मिले ।

जामिया मिलिया का प्रशंसनीय कार्य

जामिया मिलिया इस्लामिया के चालीसवें जलसे में शरीक होना मेरे लिए खुशी और फ़ख़्र का बाइस है। यहां आकर और मुजीब साहब और दूसरे साहबान की तकरीरें सुनकर मुझे ऐसा महसूस होने लगता है कि मैं सिर्फ एक तालीमी इदारे या संस्था के सालाना इजलास मे हिस्सा नही ले रहा हूं। मेरे सामने हमारे मुल्क की गुज़श्ता चालीस बरसों की तारीख और हमारे समाजी और सियासी हालात का नक्शा एक चलती-फिरती तस्वीर के मानिन्द गुजर रहा है। एक जमाना था जब हर बात के लिए हिन्दुस्तान के गैरमुल्की हुकमरानों का मुह हमे देखना पड़ता था। हमारी खुद-मुख्तारी इसी हद तक ही थी कि हम कोई काम करें या न करे। अगर कुछ करने का हम फैसला करते थे तो अक्सर गैर-मवाफ़िक हालत से लोहा लेना जरूरी हो जाता था। इसके अलावा मुल्क के अन्दरूनी हालात भी हौसला देने वाले नही थे। आपसी फूट और फिर्कापरस्ती की वजह से फ़ज़ा के बिगड़ने का बराबर डर रहता था। ऐसे वक्त में ही अनेक मुश्किलों के बावजूद महात्मा गांधी की रहनुमाई मे हिन्दुस्तान की आजादी की जद्दोजहद शुरू हुई। उसी रहनुमाई और उससे वाबस्ता हालात और मकासद से जामिया मिलिया का जन्म हुआ। इसे इत्तिफाक कहें या दानिस्तन की गई कार्रवाई कहें या कुछ भी कहें, जामिया में आना और इसके माज़ी या मुस्तकबिल पर गौर करना ख्यालात की उस लड़ी को दावत देना है जिसका मैंने अभी ज़िक्र किया। उस जद्दोजहद और मुताल्लक हालात से किसी कद्र मैं भी मुतासर हुआ हूं। इसलिए मुझे इस इदारे के पसमंजर में बहुत सी ऐसी हस्तियां दिखाई दे रही है जो असल में आज यहां मौजूद नही मगर जिनकी रहनुमाई, हौसला-अफ़ज़ाई और कुर्बानी के बिना जामिया का जिन्दा रहना और तालीम के दायरे मे इतना अहम काम कर सकना मुमकिन नही था।

जामिया के इस तारीखी पहलू पर मुजीब साहब रोशनी डाल चुके है। मैं जामिया की तालीमी सरगर्मियों के बारे में चन्द अलफाज कहना चाहूंगा। गांधीजी के असर से ही आपने बुनियादी तालीम को असूलन और अमलन अख्तियार किया और इस नई तालीम के बारे में इतने बड़े पैमाने पर तजरुबा किया कि आज जामिया का शुमार बुनियादी तालीम के सबसे बड़े मरकज़ों में होता है। इस बात की मुझे खास तौर पर खुशी है क्योंकि तालीम के

जामिया मिलिया इसलामिया, ओखला (दिल्ली) के चालीसवें जलसे के अवसर पर भाषण; 14 नवम्बर, 1960

इस नये तरीके से मेरा थोड़ा बहुत ताल्लुक शुरू से ही रहा है। अगरचे बुनियादी तालीम अभी तक पूरी तरह कसौटी पर नहीं उतारी जा सकी है और जो कुछ इसे अमली रूप देने के लिए अभी तक किया गया है वह इसके मुख़ालिफ़ों और नुक्ताचीनों की निगाह में आखिरी फैसले के लिए नाकाफ़ी है, फिर भी मै यह कहे बिना नही रह सकता कि यह तरीका-तालीम हिन्तुस्तान के लिए उसके मौजूदा हालत और जरूरतों को मद्देनजर रखते हुए अगर बेहतरीन नही तो मौज़ू जरूर है । सवाल सिर्फ इतना है कि इस तरीके की आजमाइश के लिये हम कहां तक सही और मवाफिक हालात पैदा कर पाये हैं। जहां तक मै जानता हूं हमारा तजरुबा आजमाइश के आदर्श हालात का मोहताज रहा है। इसीलिए नई तालीम के बारे में कोई फैसलाकुन राय कायम करने में माहिर लोगों को दिक्कत महसूस हो रही है । कुछ भी हो, मुझे खुशी है कि मुल्क में कुछ तालीमी इदारे ऐसे है जिन्होंने सिदकदिली और ईमानदारी से इस तरीके को अपनाने की कोशिश की है । ऐसे इदारो मे हमें जामिया मिलिया का नाम लेना होगा। यहां के मुखतलिफ स्कूल, कालिज और तालीमी इदारे और शोबे इस बात का जीता-जागता सबूत हैं। इन्हे काफी कामयाबी भी मिली है, और इस हद तक यह खुशी की बात है । इसके लिए जामिया मुबारकबाद की मुस्तहक है। पुराने ढर्रे को छोड़कर कम-मकबूल नयी लीक पर चलना आसान काम नही, मगर समाज की बहबूदी और तरक्की के लिए यह जरूरी है, खासकर तालीम के हलके में। बदकिस्मती से आजाद हिन्दुस्तान के सामने अनेक पैचीदा मसले दरपेश रहने की वजह से अभी तक हमारे तामीरी प्रोग्रम में तालीम वह जगह और वह तरजीह हासिल नहीं कर पाई है जिसकी वह हकदार है। हम सब बरसों से यह महसूस करते आए है कि हमारे मुल्क मे तालीम का जो आदर्श या नस्बुलऐन होना चाहिए मौजूदा तरीका या प्रणाली, जो अंग्रेजों के जमाने में चलन में आई, उसकी जरूरयात को पूरा कर सकती । उस प्रणाली में रद्दोबदल करने पर गुज़श्ता 50 वर्षो से बराबर जोर दिया जा रहा है । और गांधी जी ने भी नई तालीम को इसी ख्याल से जारी किया था। उनकी निगाह मे यह तरीका मौजूदा तरीके-तालीम से बेहतर और कौम के ज्यादा मवाफिक था। इस सिलसिले में गांधी जी का हर लफ्ज और हर एक दलील आज भी उतनी ही सही और पुरजोर है जितनी 25 बरस पहले थी ।

जहां तक मै समझता हूं वही तालीम सबसे अच्छी हो सकती है । जिसमें बच्चे के अन्दर जो भी औसाफ़ मौजूद है उनको तरक्की का पूरा मौका मिले

और वह अपनी कुदरती रुझानात को तरक्की दे और साथ ही जो कुछ भली चीजे बाहर से ली जा सकती है उनको लेकर अपने मे जज्ब कर ले। यह तभी हो सकता है जब उसके हाथ और पैर, दिल और दिमाग, सब की तरबीयत हो और वह एक पूरा और अच्छा इन्सान बनकर तैयार हो सके। इसलिए जहां पढ़ने-पढ़ाने का इन्तजाम हो, साथ ही साथ हाथ-पैर की जिस्मानी ताकत बढ़ाने और मुफीद कामों के करने की गुजाइश हो और उसके साथ ही चाल-चलन और ऊंचे व सच्चे विचारो के उठने और उनके मुआफिक कशमकश करने की तरफ रुझान पैदा हो, वही तालीम सबसे अच्छी मानी जा सकती है। इस मुल्क के हालात पर अगर ध्यान दिया जाए तो लाजमी तौर पर यह एक नतीजा सामने आता है कि अगर इस तरह की तालीम देनी हो तो इसमे इसकी भी पूरी गुजाइश रहनी चाहिए कि वह अपना खर्च कुल नही तो कुछ हद तक खुद-ब-खुद पैदा भी कर ले याने बच्चे इन्सान बनने की जद्दोजहद मे ही इतना पैदा करते चलें कि तालीम का खर्च कुछ न कुछ अपनी अक्ल और मेहनत से हासिल करते रहें। जहा एक तरफ अच्छी से अच्छी तालीम निहायत जरूरी है वहा उसी को हासिल करने के लिए हिन्दुस्तान जैसे मुल्क में बच्चों को अपने ज़हन और महनत से कुछ माली जराय भी हासिल करना उतना ही जरूरी है। मुझे अफसोस है कि वहा ऊपर कहे हुए तालीम के पहले मकसद पर अकसर करके इत्तफाक हो जाता है, दूसरे पर खास करके माहिरो की राय नही मिलती, जब मकसद मै ही नाइत्तफाकी हो तो उसका पूरी तरह हासिल न होना कोई ताज्जुब-अगेज़ बात नही है।

हमें उम्मीद करनी चाहिए कि देर सबेर मुल्क का बेदार तबका और हकूमत इस तरफ राग़िब होगी और बुनियादी तालीम को तजरुबे की स्टेज से निकाल कर एक कौमी पालिसी की हैसियत देगी। इसलिए में समझता हूं कि जामिया और ऐसी ही दूसरी तालीमी दरसगाहो को निराश नही होना चाहिए क्योकि कौमी तालीम की नई-नई राह की खोज एक न एक दिन सबको इधर लाकर रहगी।

मै जानता हूं कि एशिया के कुछ मुल्कों में जो हमारी तरह हाल ही में आजाद हुए है तालीमी तरक्की की रफ्तार हमारी निस्बत ज्यादा तेज है और उनमें से कुछ जो जहालत और बेइल्मी को दूर करने में नुमायां कामयाबी हुई है। मगर हर मुल्क की अपनी मुश्किलें है, अपने-अपने मसले है। हिन्दुस्तान बहुत बड़ा मुल्क है जिसमें मुखतलिफ महजबों के लोग रहते है और जहां चौदह बड़ी जबानें बोली जाती है और जिनमें से बहुतों के अपने अलग-अलग समाजी तौर-

तरीके है और अपनी रवायात है। जमहूरी नज़ाम में हमारा अकीदा हमें इन सब मजहबों, ज़बानों और मकामी रवायातो की एक-सी ताज़ीम करने पर मजबूर करता है। इसके अलावा हमारा आईन इन सभी को अपने-अपने दायरे में आजादी देने के हक मे है। हमारे मुल्क में कौम के नुमाइन्दे ही कसरत राय से कोई कदम उठा सकते है। इस तरजे-अमल की रफ्तार यकीनन धीमी होती है, मगर इसमे पुख़्तगी है, कौमी रवादारी है और सदियों पुराने हमारे आदर्शों और असूलो का अक्स हमे इसी में दिखाई देता है। अपनी कौमी तरक्की को आंकने के लिए जहां माद्दी तरक्की जरूरी है वहां और कई बातें भी है जो कम जरूरी नही। मसलन, अगर हम समाज के सब तबकों को साथ लेकर और पिछडे हुए साथियों को साथ मिलाकर आगे नही बढ़े, तो हमारी तरक्की अधूरी है। इसी तरह अगर हम अपने मुल्क के लोगो में वह जज़बाती मेल-मिलाप, समन्वय या हम-आहंगी पैदा नही कर सके जिस पर हर कौम की बुनियाद रखी जाती है, तो हमारी तरक्की यकतरफ़ा मानी जाएगी। और तरक्की के मनसूबे उस दरख्तों से बढ़कर और कुछ नही होगे जिन्हे कभी फल नही लगता। जामिया जैसी तालीमी दरसगाहें इस अहम बात को आगे बढ़ाने में बहुत मदद कर सकती है और मुझे खुशी है कि जामिया मिल्लिया का ऐसा असर पडा भी है। अगरचे इस्लामी नुक्तानिगाह और इस्लामी तहज़ीबो-तमद्दुन को फ़रोग पहुंचाने और मौजूदा तालीम में उसे सही जगह दिलाने के मकसद से जामिया की शुरूआत हुई, पर इसके जरिए कौम की खिदमत भी कम नही हुई। मेरा यह अकीदा है कि किसी भी मजहब के असूलों पर ठीक तौर से चलने से इन्सान अच्छा शहरी, साबित कदम और सच्चा मुहिबेवतन बन सकता है। मै यह मानने को तैयार नही कि मजहब या रूहानी रुझान किसी इन्सान को किसी भी मुल्क में उसके कौमी फ़रायज़ की अदायगी मे किसी किस्म की रुकावट डाल सकते हैं। इसके बरअक्स, मेरा यह ख्याल है कि मजहबी तरबियत और रूहानी नुक्ता-निगाह किसी भी नेक काम को सरअंजाम देने में इन्सान को मदद पहुंचाता है। सच पूछिए तो यह ख्याल ही बुर्दबारी और तहम्मुल, आपसी सद्‌भावना और मुहब्बत की बुनियाद है। इस राय से मै मुत्तफिक हूं कि जिस जज़बाती हम-आहंगी का अभी मैंने जिक्र किया उसे हासिल करने का जरिया मजहबी उसूलों को समझना और मुखतलिफ मजाहब के लोगों का आपस में मिलजुलकर किसी काम को हाथ में लेना है। जामिया में सभी मजहबों के लोग तालीम हासिल कर रहे है और इसलिए यह दरसगाह भी उस मकसद को पूरा करने में मददगार साबित हो रही है।

मुल्क की बेहतरी के ख़ाहां हर हिन्दुस्तानी को इस बात से खुश होनी चाहिए श्रौर ऐसे तालीमी मरकज़ों की हौसला-अ्रफ़ज़ाई की हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिए ।

मेरी यही दुआ है कि जामिया मिल्लिया अपने मकसद को हासिल करने में कामयाब हो और बुनियादी तालीम के फैलाव के जरिए कौम की बराबर खिदमत करती रहे और मुल्क में इल्मी बेदारी के साथ-साथ तहम्मुल और जज़बाती मेल और हम-आहंगी को बढ़ावा देती रहे । मुझे उम्मीद है कि जामिया की चालीस बरस की खिदमतों का सभी हलकों में एतराफ़ किया जाएगा और इससे जहां जामिया के मुन्तज़मीन को हौसला मिलेगा वहां इस दरसगाह के मुस्तकबिल पर भी खुशगवार असर पड़ेगा ।

मैं आपका ममनून हूं कि इस तकरीब में आपने मुझे बुलाया और मुझे चन्द अलफाज कहने का मौका मिला ।

"भारती संगम" का उद्घाटन

"भारती संगम" के नियम, उपनियम और समरण-लेख पढ़ने के बाद यह सम्भव नही कि इस नवोदित संस्था का स्वागत न किया जाय। इसके उद्देश्य ऊंचे और वांछनीय हैं और इसके संयोजक तथा प्रणेता अनुभवी राष्ट्र-सेवी और साहित्य-सेवी हैं। इसलिये जब मुझ से इस संस्था का उद्घाटन करने के लिये कहा गया तो मैंने इसे सहर्ष स्वीकार किया, क्योकि ऐसी संस्था से निजी सम्बन्ध जोड़ना मुझे मंजूर ही नहीं बल्कि मेरे लिये सुखद है। "भारती संगम" विभिन्न भाषाओं के लेखकों और साहित्यकारों की संस्था है और इन भाषाओं के माध्यम द्वारा भारतीयता की उच्च परम्पराओं को प्रोत्साहन और जनगण के हृदयों में उदात्त राष्ट्रीय भावनाओं का संचार करना इसका लक्ष्य है। इस आदर्श की प्राप्ति के लिये भाषा अथवा साहित्य ऐसा माध्यम है जो सरल होने के साथ साथ नैसर्गिक भी है। भावों तथा विचारों का प्रसार भाषा के द्वारा ही होता है और इस प्रसार के फलस्वरूप जो चेतना जागृत होती है, उसी से सहानुभूति और समन्वय का जन्म होता है। शब्द हमारे मन्तव्यो, गहनतम, उद्गारो के संदेशवाहक होते हैं और उन्हीं के द्वारा पारस्परिक सम्बन्ध तथा तारतम्य का उद्भव सम्भव है। चूकि लेखक, विचारक और साहित्यक लोग अपनी कृतियो द्वारा जनसाधारण पर विशेष प्रभाव डाल सकते हैं, इसलिये इस उद्देश्य की पूर्ति मे उनका सहयोग खास तौर से जरूरी है।

किसी भी समाज अथवा राष्ट्र की उन्नति का आधार केवल भौतिक सम्पन्नता नहीं हो सकती। भौतिक साधनों का जीवन में नि:सन्देह ऊंचा स्थान है, किन्तु यह सम्पन्नता सुखदायी हो, और मानव के लिये कल्याणकारी हो इसके लिये भावात्मक तथा आध्यात्मिक उन्नति आवश्यक है। यह उन्नति व्यक्ति के ही हित में नहीं, समष्टि अथवा समाज के हित में भी है। इसीलिये राष्ट्र की उन्नति में समाज के विभिन्न वर्गों और अंगों का भावात्मक समन्वय आवश्यक है। जनसंख्या की दृष्टि से हमारा देश बहुत बड़ा है, जिसमे विभिन्न भाषाओं के बोलने वाले, विभिन्न धर्मों के अनुयायी और विभिन्न परम्पराओं तथा रीति-रिवाजों के मानने वाले लोग रहते हैं। एतिहासिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक कारणों से हमारा समस्त देश और उसके निवासी एकता की भावना से संचालित होते रहे हैं। फिर भी इस भावना को समृद्ध करना और भावात्मक समन्वय के लिये अनुकूल तत्वो को प्रोत्साहन

"भारती संगम" के उद्घाटन के अवसर पर भाषण; नई दिल्ली में, 3 दिसम्बर, 1960

देना इतना बडा कार्य है जिसे हम केवल संयोग पर ही नहीं छोड़ सकते । इसके लिये सुविचारित योजनाबद्ध कार्यक्रम की आवश्यक्ता है ।

मै भारती सगम के संयोजकों से पूरी तरह सहमत हू कि विभिन्न भारतीय भाषाओं को, और उनके साहित्य को एक दूसरे के निकट लाकर हम विचार जगत मे साम्य और सद्भावना के साथ भावनात्मक एकता का वातावरण पैदा कर सकते है । यह प्रयास हमारे देश के इतिहास में नवीन नही कहा जा सकता । एकता की भावना को सुदृढ़ करने के लिये यदा-कदा ऐसे प्रयत्न पहले भी होते रहे है । सदियो तक विभिन्नता और विविधता-रूपी मणियो को संस्कृत भाषा ने एकत्रित कर एक माला के रूप में पिरोये रखा । फिर मध्य-युग मे ऐसा समय आया जब विभिन्न भारतीय भाषाओं के उदय से भक्ति का मार्ग प्रशस्त हुआ और उससे एकता की भावना सुदृढ़ हुई । मै समझता हूं आज स्वाधीन भारत में वैसा ही सुयोग फिर से हमारे सामने आया है । किन्तु आज हमारे लिये सामान्य राष्ट्रीय भाषा का उतना ही महत्व है जितना विभिन्न प्रादेशिक भाशाओ का । सभी भाषाओ और उनके साहित्य का अपना अपना स्थान है । सभी भाषाये देश की सर्वांगीण उन्नति के लिये समान रूप से आवश्यक है । इस ध्येय की प्राप्ति के लिये भारती संगम जैसी संस्थाओं द्वारा प्रयास आवश्यक है । सास्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्र में कार्य करके ही जनसाधारण के विचारों तथा भावो का नियमन किया जा सकता है । इस नियमन का आधार राजनीतिक न होकर मानवीय ही हो सकता है । तभी इसका लोगो पर प्रभाव पड सकता है । मेरा विश्वास है आपकी संस्था इस बात का सदा ध्यान रखेगी ।

मुझे खुशी है कि भारती संगम ने साध्य की पवित्रता के साथ साथ साधन की श्रेष्ठता पर भी बल दिया है । जब तक साधन नैतिक दृष्टि से निष्कलंक नही होगे, साध्य भी जनकल्याणकारी नही हो सकते । नीति शास्त्र का यह आधारभूत सिद्धान्त है । इसलिये साध्य और साधन दोनो की पवित्रता पर समान बल देना अनुकूल वातावरण की नीव रखना है । किन्तु हमे एक बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि यह कार्य ऐसा नहीं जिसमे नामवरी हो या किसी भी प्रकार की ख्याति अथवा चमक-दमक की आशा की जा सके । मै चाहूगा कि भले ही आप आरम्भ में अपने कार्य को सीमित रखे, परन्तु सगम के कार्य के लिये कार्यकर्ताओं का चुनाव सावधानी से करें ।

मै आशा करूंगा कि आप जिस बीज का वपन कर रहे है वह समय पा कर एक बहत वृक्ष के रूप में सारे भारत के सांस्कृतिक जीवन को आच्छादित करेगा और

जिस तरह् कलम लगाने पर एक ही वृक्ष विभिन्न प्रकार के ग्राम के फल दे सकता है, वैसे ही विभिन्न भाषाग्रों के साहित्यिक फल देश को इस संगम द्वारा उपलब्ध हो सकेंगे। मैं इसके भावी कार्य की सफलता के लिये ग्रपनी शुभ कामनायें देता हूं। ग्रौर सहर्ष भारती संगम का उद्घाटन करता हूं।

वल्लभ विद्यापीठ में समावर्तन भाषण

वल्लभ विद्यानगर में आने का मेरे लिये यह दूसरा अवसर है। कुछ वर्ष हुए जब मै पहले यहां आया था, उस समय विभिन्न महाविद्यालयों को एक सूत्र में बांधने के लिये यहां की समस्त शिक्षा-सम्बन्धी गति-विधि को विश्वविद्यालय का रूप दिया ही गया था। तब से इन चार-पांच वर्षो मे सरदार वल्लभभाई विश्वविद्यालय की नीव सुदृढ़ रूप से रख दी गई है और अन्य शिक्षा केन्द्रों के समान शिक्षण अनुसन्धान आदि का काम यहां सुचारू रूप से चलने लगा है। इस कार्य को शैशवावस्था मे देख चुकने के बाद आज आपने मुझे इस संस्था को विकासोन्मुख होते हुए देखने का अवसर दिया, इसके लिये मै आभारी हूं। शिक्षण और शिक्षा सम्बन्धी विषयों में आरम्भ से ही मुझे काफी रुचि रही है, किन्तु कई कारणों से, जिनमें कुछ भावात्मक और व्यक्तिगत भी हो सकते हैं, इस विश्वविद्यालय का मुझ पर विशेष अधिकार है। मै नही कह सकता कि आपके सहायतार्थ मैंने कोई ठोस कार्य किया हो, अथवा किसी भी प्रकार आपकी कठिनाइयो या उलझनों को सुलझाने में मैंने कोई सक्रिय योगदान दिया हो, किन्तु फिर भी इस संस्था के प्रति अपने विशेष लगाव और स्नेह के आधार पर मै यह कहने की अनुमति चाहूंगा कि आज यहा आकर, आपकी योजनाओं के बारे में सुनकर और इस केन्द्र के विद्यालयों के चहुमुखी विस्तार को देखकर मुझे विशेष खुशी हुई है।

सरदार वल्लभभाई विद्यापीठ का प्रारम्भ किन परिस्थितियो में हुआ और किन आदर्शो तथा उद्देश्यों से प्रेरित होकर कर्मठ कार्यकर्त्ताओं और दानशील व्यक्तियो ने एक स्वप्न को साकार बनाया, इसकी कहानी आरम्भ से अन्त तक मुझे ज्ञात है। इसी लिये आपके उत्साहवर्धक वार्षिक विवरणों से सन्तोष और उल्लास का अनुभव होना स्वाभाविक है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना के लिये जो केन्द्र चुना गया, वह पहले और आज भी ठेठ ग्रामीण क्षेत्र है। बड़े शहरों के शोरगुल से दूर और आधुनिक नगरों की चमक-दमक से अपरिचित यह इलाका खेतीबाड़ी और छोटे उद्योगधन्धों के लिये ही प्रसिद्ध रहा है। ग्रामीण जनता को आधुनिक शिक्षा की सुविधायें उपलब्ध करके यहां के नेताओं ने इस परम्परा को और भी सुदृढ़ तथा सुन्दर बनाने के उद्देश्य से गत बीस वर्षो में यहा विभिन्न विद्यालयों की स्थापना की है। जैसा कि मै समझता हूं स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई पटेल का और इस विश्वविद्यालय के निर्माताओं का एक अभिप्राय यह भी था कि ग्रामीण और

सरदार वल्लभभाई विद्यापीठ, वल्लभ विद्यानगर के समावर्तन के अवसर पर भाषण; 4 दिसम्बर, 1960

शहरी जीवन में समन्वय स्थापित किया जाय। हमारे देहात वर्षों तक उपेक्षा और अवहेलना के शिकार रहे और शिक्षा की सुविधायें अधिकतर शहरों तक ही सीमित रही, इसका फल यह हुआ कि देहाती और शहरी जीवन के बीच जो खाई विद्यमान थी वह बराबर बढ़ती गई और अधिक गहरी होती गई। सरदार पटेल जो स्वयं एक ग्रामीण थे, किन्तु जो शहरी जीवन के उपकरणों और तत्सम्बन्धी सुविधाओं से अपरिचित नहीं थे, उन्हें हमेशा यह बात अखरती थी कि देश में शिक्षा का प्रसार एकांगी हो रहा है। इसलिये वह प्रायः देहाती क्षेत्रों में उच्च शिक्षण संस्थाओं की स्थापना का स्वप्न देखा करते थे। उनकी कल्पना, और प्रारम्भ में उनके पथ-प्रदर्शन और यहां के नेताओं की कर्मठता के परिणामस्वरूप आज हम इस महान शिक्षा संस्था के दर्शन कर रहे हैं। मुझे खुशी है कि यद्यपि सरदार वल्लभभाई विद्यापीठ दिनोदिन प्रगति कर रही है और देश के अन्य विश्वविद्यालयों की तरह विस्तार और वृद्धि की ओर अग्रसर है, फिर भी समन्वय-सम्बन्धी अपने आदर्शों से आज भी आप अपना पथ आलोकित देखने को उत्सुक हैं। इसके लिये मैं आप सब को जिनका किसी भी रूप में इस विश्वविद्यालय से सम्बन्ध है या पहले रहा है, हार्दिक बधाई देता हूं।

मुझे यह जानकर कोई आश्चर्य नहीं हुआ कि इस विश्वविद्यालय के सभी विभागों में आप स्थान की कमी महसूस करने लगे हैं। स्वाधीनता के बाद शिक्षा के प्रसार के लिये जनता की मांग और उसे पूरा करने और कराने का उत्साह दिनों दिन बढ़ता जाता है। इसका कारण चाहे जनसाधारण की बढ़ती हुई सम्पन्नता हो, अथवा देश के नागरिकों की महत्वाकांक्षा, किन्तु यह सत्य है कि क्या देहातों की और क्या शहरो की, सभी छोटी-बड़ी शिक्षण संस्थायें इस समय स्थान और साधनों की न्यूनता की शिकायत करती दीख रही हैं। इसमें उनका दोष नही। बात यह है कि जिस तेजी से उच्च शिक्षा की मांग में वृद्धि हो रही है, उस गति से शिक्षा के साधन जुटाना सम्भव नही। फिर भी इस क्षेत्र में जो प्रगति अभी तक हुई है और जो आगामी वर्षो में होने जा रही है, वह आश्चर्यजनक ही कही जायेगी। दूसरी बात यह है कि उच्च शिक्षा, खासकर इतिहास, साहित्य आदि कला-सम्बन्धी विषयों की शिक्षा के सम्बन्ध में कुछ ऐसे संशय हमारे सामने हैं जिनका अभी तक समाधान नहीं हो सका है। उच्च शिक्षा कितने विद्यार्थियों को दी जाय, और जिन्हें वह दी जाय उनका चुनाव किस प्रकार किया जाय, उच्च शिक्षा का माध्यम क्या हो, यदि अंग्रेजी के स्थान पर दूसरा माध्यम किया जाय तो शिक्षण के स्तर अथवा मानक को बनाय रखने के लिये क्या किया जाय और उच्च शिक्षा तथा विद्यार्थियों के भावी जीवन में ऐसा तारतम्य किस प्रकार बैठाया जाय

जिससे शिक्षा और व्यावहारिक जीवन को अधिक निकट लाया जाय ? ये सभी प्रश्न ऐसे है जिनका शिक्षा के अतिरिक्त देश के विकास और पुर्ननिर्माण सम्बन्धी समस्याओं से भी सम्बन्ध है । इसी कारण यह प्रश्न कुछ पेचीदा सा बन गया है, और जहां एक ओर इस सम्बन्ध मे राष्ट्र का अन्तिम निर्णय होना अभी रहता है, वहां दूसरी ओर शिक्षार्थियों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है और उपलब्ध सुविधाओ पर असाधारण दबाव पड़ रहा है ।

कुछ भी हो सामयिक समस्याए अथवा किसी भी प्रकार की उलझनों के कारण शिक्षा की प्रगति मे बाधा नही डाला जा सकती । यह ऐसा क्रम है जिसे रोकना न सम्भव है और न ही उचित । इसलिये इस दिशा मे नयी संस्थाओं और नये विश्व-विद्यालयों का राष्ट्र के हित्त में स्वागत होना चाहिये। किन्तु मै नहीं समझता कि जिन संशयों का मैने उल्लेख किया है उनमें से अधिकाश आपके विश्वविद्यालय पर लागू होते है । इस सस्था के निर्माताओ ने पूरी सूझबूझ से काम लिया है और आरम्भ से ही शिक्षण की ऐसी परिपाटी अपनाने का फैसला किया है जिसमें परम्परागत गुणों के साथ-साथ नवीन परिस्थितियों को अपनाने की क्षमता भी है । वास्तव मे सरदार वल्लभभाई पटेल विद्यापीठ ने समन्वयात्मक शिक्षण की प्रणाली का विकास करने की दिशा में जो कुछ किया है वह प्रशसनीय ही नही बल्कि उससे इसी प्रकार की अन्य संस्थाओं का पथ-प्रदर्शन भी होगा ।

एक शिक्षण संस्था का निर्माण किन्ही आदर्शों को सामने रखकर किया गया हो और कैसी ही प्रणाली को उसने अपनाया हो, अन्ततोगत्वा उसका भविष्य बहुत कुछ अध्यापकों तथा छात्र-छात्राओं के सत्प्रयास पर निर्भर करता है । जब तक अध्यापकगण और विश्वविद्यालय का जलवायु छात्रों को सत्प्रेरणा नहीं दे सकता हमें शिक्षा के सभी प्रयास निष्फल समझने चाहिये । मुझे खुशी है कि इस संस्था में छात्रों को प्रेरित करने के लिये किसी भी प्रकार का अभाव दिखाई नहीं देता । यहां के प्रबन्धकों और अध्यापकगण उच्च कोटि के व्यक्ति है और जिस महापुरुष का नाम इस संस्था से सम्बद्ध है वह आज भी स्वतन्त्र भारत के लिये प्रेरणापुज से कम नहीं । इसलिये मै समझता हू यहां के विद्यार्थियों को उस भावना को ग्रहण करने में कठिनाई नहीं होनी चाहिए जो देशसेवा और राष्ट्रनिर्माण का आधार होती है । मैं आशा करता हू कि इस विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में शिक्षा पाने वाले छात्र सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन से बहुत कुछ सीखेंगे और इस प्रकार जहां वे अपने कर्तव्य का पालन करेंगे वहां इस विश्वविद्यालय के नाम को भी ऊंचा कर सकेंगे ।

दिल्ली दूध योजना

दिल्ली दूध-योजना के अन्तर्गत केन्द्रीय डेयरी के उद्घाटन के लिये यहां आना मेरे लिये हर्ष और व्यक्तिगत संतोष का विषय है। मेरा सदा यह विचार रहा है कि जैसे खेती हमारी आर्थिक व्यवस्था का आधार है, उसी तरह डेयरी उद्योग और दुधारू पशुओं में सुधार हमारे देश की कृषि व्यवस्था का आधार माना जा सकता है। किन्तु वास्तव में डेयरी उद्योग का बहुत व्यापक महत्व है, क्योंकि खेती का काम करने वाले शहरी इलाकों के लिये भी यह उद्योग कम आवश्यक नही। ताज़े दूध-दही आदि की प्राप्ति की गणना आज उन सुविधाओं में होती है जो शहरो के निवासी प्रशासन से पाने की आशा रखते हैं। पोषण और खाद्य की दृष्टि से दूध के महत्व को देखते हुए इस विचार का हमें स्वागत करना चाहिए, और इसे प्रोत्साहन देना चाहिये। सच बात यह है कि इसे प्रोत्साहन देने का एकमात्र उपाय बड़े-बड़े शहरों में डेयरी-उद्योग की स्थापना करना और दूध तथा इससे तैयार होने वाले पदार्थों के वितरण की उचित व्यवस्था करना है।

मुझे खुशी है कि हमारे खाद्य तथा कृषि मन्त्रालय और योजना आयोग ने इस प्रश्न पर पूरा ध्यान दिया है और इसके फलस्वरूप दिल्ली समेत तेरह बड़े शहरो म डेरिया स्थापित करने का काम हाथ मे लिया जा चुका है। इस दिशा में पहला परीक्षण बम्बई में किया गया था। जिसकी सफलता की सभी ने मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है। हमें आशा है कि दूसरे सभी बड़े शहरों में जहां दूध की योजना लागू की गई है, दूध के वितरण के बारे में वैसी ही सुविधाएं प्राप्त हो सकेंगी।

आधुनिक ढंग की डेयरियां स्थापित करने का उद्देश्य शहरी आबादी की ज़रूरत पूरा करने के अतिरिक्त कुछ और भी है। हम चाहते है कि देहातों में दूध का उत्पादन बढ़े और किसान को ठीक दाम मिलें। दूध-योजना द्वारा बिक्री की निश्चित व्यवस्था हो जाती है। हमें यह भी याद रखना चाहिये कि शहरी लोगों तक दूध पहुचाने के प्रशंसनीय प्रयत्नों में हम देहातों को दूध से बिल्कुल ही सूखा न कर डालें, क्योंकि पौष्टिक खाद्य की दृष्टि से दूध गांव वालों के लिए भी इतना ही जरूरी है जितना शहरी आबादी के लिए। किसान छोटे-छोटे खेतों का मालिक होता है। इसलिए शोषण की सम्भावना रोकने के लिए यह आवश्यक है कि वह सहकारी समितियां बनाए। ऐसी सहकारी समितियों का निर्माण जो दूध के उत्पादन, वितरण और यातायात का काम सम्भाल सकें, देहातों की सम्पन्नता का आधार बन सकता है। पशु सुधार के काम को पूर्ण प्रोत्साहन देने के लिए श्री पाटिल ने अपनी स्वाभाविक

दिल्ली दूध योजना के उद्घाटन के अवसर पर भाषण; 6 दिसम्बर, 1960

सूझबूझ के अनुरूप केन्द्रीय गोसंवर्धन समिति का पुनर्गठन किया है । श्री ढेबरभाई ने समिति का अध्यक्ष बनना स्वीकार किया है । समिति के कार्यक्रम को अधिक व्यापक कर एक गैरसरकारी संस्था का रूप दिया गया है । यहां मैं यह सुझाव देना चाहूंगा कि आवश्यकता के अनुसार हम दूध के उत्पादन में वृद्धि तभी कर सकते है यदि पशुओं की नस्ल में सुधार हो, और यह काम गोसंवर्धन समिति का है । इससे बढ़ कर यह संस्था और कुछ नहीं कर सकती कि गांधी जी के विचारों और सुझावों पर अमल करे । उनका यह स्पष्ट मत था कि हमारे देश के लिये द्विपक्षीय नस्ल सुधार की प्रणाली ही अधिक उपयोगी और सफल हो सकती है । इसका अर्थ यह है कि गउओं से जो बछड़े पैदा हों वे भी इतने मज़बूत हों कि उन सभी कामों को कर सकें जो भारत मे बैलों को करने होते हैं, और बछड़ियां ऐसी योग्य हों जो अच्छी किस्म का दूध संतोषजनक मात्रा में दे सकें । जब तक बैल उच्चकोटि के नही होगे वे समाज पर भार रहेंगे और इस भार को समाज सह नहीं सकेगा । दूसरे देशों में लोग अच्छी किस्म के दूध पर ही सन्तोष कर लेते हैं, क्योंकि बछड़े वहां केवल खाने के काम आते है । भारत में यह सम्भव नही और न वाछनीय है । इसलिये यहां अच्छे बछड़ों का पैदा करना जरूरी है जो दूसरे कामों में आसकें । मुझे विश्वास है कि गोसंवर्धन समिति इस ओर जागरूक है । हमें यह नही भूलना चाहिये कि उत्पादन में वृद्धि के लिये अन्त मे हमें किसान पर ही निर्भर करना होगा । सहकारी समितियों और पंचायतों आदि का संचालन उसे स्वयं करना होगा । सरकारी विभाग उसे टेकनिकल सहायता और उधार की सुविधा उपलब्ध करके सहायता दे सकते हैं, किन्तु वास्तविक ज़िम्मेदारी उसी की है । उसकी सूझ और कार्यक्षमता को दबाना ठीक नही और अपनी स्थिति में आप सुधार करने की दिशा में उसे हर सम्भव प्रोत्साहन मिलना चाहिए ।

दिल्ली दूध योजना के अन्तर्गत उदारता से ऋण दिए जाने लगे हैं । इस समय उत्पादकों के लिये पशु खरीदने के हेतु एक करोड़ रूपये की रकम उपलब्ध है । दूसरे स्थानों में भी निःसन्देह ऐसी सुविधा मिल सकेगी । पैसे की कोई कमी नहीं होगी, किन्तु जिस बात की अधिक जरूरत है वह व्यवस्था का व्यापक प्रयास है । राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, गुजरात आदि राज्यों में डेयरी उद्योग को प्रोत्साहन दिये जाने की दिशा में हमें हाल में पुनर्गठित केन्द्रीय गोसंवर्धन समिति से बहुत आशायें हैं ।

विदेशों से हमें बहुत उदार सहायता मिली है । न्यूज़ीलैन्ड के अतिरिक्त, जो एक छोटा सा देश है और जिसकी आबादी दिल्ली शहर की आबादी से अधिक नहीं,

किन्तु जो डेयरी उद्योग में बहुत अग्रणी है, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, इंगलैंड, कनेडा, डेनमार्क, हालेंड ने भी हमारी सहायता की है। कोलम्बो योजना, यूनीसेफ और एफ० ए० ओ० के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों ने विभिन्न प्रकार से, मशीनें देकर, धन की सहायता, टेकनीकल सहायता और प्रशिक्षण की सुविधायें देकर हमारी सहायता की है। इस अन्योन्याश्रितता से जान पड़ता है कि राष्ट्रों के विकास के लिये पारस्परिक सहायता की कितनी आवश्यकता है। अपने साधनों के अनुसार हम भी दूसरे देशों की कुछ न कुछ सहायता कर रहे हैं। मुझे खुशी है कि दूर पूर्वी देशों के डेयरी कार्यकर्ताओं की ट्रेनिंग के लिये हाल में बम्बई के पास एक स्कूल खोला गया है।

यह सब इस बात का परिचायक है कि खेती सम्बन्धी विकास के लिये अब परिस्थितियां अनुकूल हैं। उस समय की अपेक्षा जब मैं खाद्यमन्त्री था हम बहुत आगे बढ़ चुके हैं। मुझे बहुत खुशी है कि कृषि के सम्बन्ध में हमने व्यापक दृष्टिकोण को अपनाया है, जिसमें पशुपालन और डेयरी उद्योग को भी स्थान दिया है।

दिल्ली दूध-योजना में वे सब बातें शामिल हैं जो आधुनिक देशों में ऐसी योजनाओं में होती हैं और जो बम्बई की योजना का अंग भी थीं। मुझे आशा है कि दिल्ली दूध-योजना जिसकी शुरूआत सफलता से की जा चुकी है, बराबर उन्नति करती रहेगी। दिल्ली के हर नागरिक को इस योजना से दूध मिलना चाहिये और मैं आशा करता हूं कि शीघ्र ही इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये सात हज़ार मन दूध प्रतिदिन मिल सकेगा। दिल्ली के लिये, जो बराबर सब दिशाओं में अकथनीय रूप से फैल रही है, यह योजना और भी अधिक उपयोगी है, केवल इसलिये नहीं कि इसके द्वारा यहां की बढ़ती हुई आबादी को दूध मिल सकेगा, बल्कि इसलिय भी कि जगह-जगह डेयरियां खुलने के कारण जो गन्दगी फैल रही है उसे दूर कर बस्तियों को साफ सुथरा बनाने का यत्न करना आवश्यक है। सरकार को जनता के सभी दलों के हितों का पूरा ध्यान है, इसलिये मुझे इसमें सन्देह नही कि इस योजना को कार्यान्वित करने में जनता का पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा।

विभिन्न मन्त्रालयों में पारस्परिक सहयोग के फलस्वरूप जिस गति से इस डेयरी की स्थापना की गई है उसे मैं प्रशंसनीय समझता हूं। आपसी सहयोग का यह प्रमाण और आदर्श दोनों ही है। मैं आशा करता हूं कि ऐसी योजनायें देश के अन्य भागों में भी इसी प्रकार सफल होंगी।

मैं सहर्ष दिल्ली दूध-योजना की केन्द्रीय डेयरी का उद्घाटन करता हूं।

इंदौर में नागरिकों द्वारा सम्मान

महामहिम राज्यपाल महोदय, माननीय मुख्य मन्त्री, नगरपालिका के अध्यक्ष महोदय, बहनों और भाइयो,

मै आपका हृदय से धन्यवाद मानता हूं कि आपने इस प्रम और आदर के साथ मेरा स्वागत किया और आपके हृदय की अच्छाई एक प्रकार से आइना है। मैं इसके पहले कई बार इन्दौर शहर में आ चुका हूं। पहले मरतबे मैं 1918 में यहां आया था तो आज से 42 वर्ष पहले की बात है। तब से आपके शहर में बहुत वृद्धि हो गयी है और आप तरक्की करते जा रहे है।

जब से आज से 12 वर्ष पहले हम स्वतन्त्र हुए, देश ने अपने हाथों में अपने शासन की बागडोर सम्भाली, हर प्रकार की उन्नति का प्रयास किया जा रहा है और यद्यपि अभी जो कुछ हम कर रहे है सबका नतीजा पूरा-पूरा देखने में नहीं आ रहा है, तो भी उनका आभास मिल गया है और हम कह सकते हैं कि हम एक ऐसे रास्ते पर चल रहे है जिसमें आगे जैसे-जैस बढ़ते चलेंगे, हम उन्नति की दिशा मे बढ़ते जायेगे। इसीलिये पंचवर्षीय योजना बनायी जा रही है जिसमे सारे देश की चौमुखी उन्नति हो। जो योजनाएं पूरी हो चुकी है उनका फल भी देखने में आ रहा है और तीसरी योजना भी बन रही है और आशा की जाती है कि उन दो योजनाओं में जो पहले चली थीं कई प्रकार के काम शुरू किये गये थे वे पूरे हो जायेंगे और उनका पूरा फल हम को मिलने लग जायगा तथा नई योजनाएं आगे बनेंगी। यही सारे देश की कैफियत है और मै समझता हूं कि आपका मध्य प्रदेश उन योजनाओ से पूरीत रह से लाभान्वित हो रहा है और होता जायगा जैसे देश के दूसरे भाग लाभान्वित हो रहे हैं।

जहां हम एक तरफ भौतिक उन्नति का प्रयास कर रहे है हमको यह भी चाहिये कि हमारी परम्परा जो आज की नहीं, हजारों वर्षों से देश में आ रही है जिसके द्वारा इस देश को हम एक प्रकार से जीवित रख सके है, उस परम्परा में जो खूबियां है, जो अच्छाई है, जो अच्छी चीजें है उन सबको बचा कर रखा जाय और इसलिये मै जहां जाता हूं दो बातों पर जोर देता हू। एक कहा करता हूं कि कोई भी योजना गवर्नमेंट की तरफ से क्यो नही हो, वह पूरी सफलता

इन्दोर निगम द्वारा दिये गयें मानपत्र के जवाब में भाषण; 8 दिसम्बर, 1960

तब तक प्राप्त नहीं कर सकती जब तक जन साधारण का सहयोग और सहायता उसे प्राप्त न हो। इसलिये प्रत्येक भारतवासी का यह कर्तव्य हो जाता है कि इन योजनाओं को सफल बनाने में वह पूरा हिस्सा ले और तभी हम एक तरह से नही बल्कि चारों तरफ से उन्नति कर सकेंगे।

जरूरत इस चीज की है कि खेती पैदावार अधिक बढ़े और खेती के जरिये से देश को अन्न से हम भरपूर कर दें जिसमे जो कमी होती है, अन्न की दिक्कत जो हम कभी-कभी महसूस करते है वह दिक्कत हमेशा के लिये दूर हो जाय। हमको यह देखना है कि खेती के साथ-साथ गोवंश की भी तरक्की हो, वृद्धि हो जिसमें अन्न के साथ-साथ दूध घी की कमी को भी हम पूरा कर सकें जिसमे हम अपने स्वास्थ्य को ठीक बना सकें। इसी प्रकार से उद्योग की छोटी-छोटी योजनाओं को भी हमको कार्यान्वित करना है जिसमें हमारे देश के करोड़ो लोगों को जो बड़े कारखानो में काम नही कर सकते और जिनको छोटे-मोटे कामो से गुजारा करना है रोजगार काफी मात्रा में हम दे सकें।

बडे-बडे कामों के लिये बड़ी-बड़ी योजनाएं बन रही है और बनेंगी और उसमें भी हर प्रकार की योजनाएं होगी। बहुतेरी तो ऐसी होगी जिनको सरकार ही चला सकती है मगर बहुत ऐसी भी होगी जिनको हमारे देश के नागरिक अपने बल बूते पर चलावे और देश को लाभ पहुंचावे। इस प्रकार से जहां एक तरफ से खेती और गोवंश की उन्नति होगी, दूसरी तरफ बडे-बड़े कारखानो की उन्नति आवश्यक है और इसके लिये पूरा प्रयत्न किया जा रहा है। इसी तरह से हमको यह भी देखना है कि हमारी शिक्षा भी उन्नति करे। शिक्षा के लिये बहुतेरे स्कूल, कालेज, नयी-नयी यूनिवर्सिटियां कायम होती जा रही है तथा और भी चीजें जो ऐसी कायम होती जायेंगी इसमें कोई संदेह नही।

मगर सच्ची शिक्षा तो वह है जिससे मनुष्य का शरीर उन्नत हो, पुष्ट हो और जिससे उसका दिमाग अच्छी तरह से तेज बन जाय और विद्या से उसको पूरा लाभ उटाने का मौका मिल जाय और साथ-साथ उसका चरित्र ऐसा हो जाय कि उस पर भरोसा किया जा सके, जिस बात को एक बार कह दे उसे टलने नही दे, जिस काम को हाथ में ले उसको पूरा करे, जिसका जो हक हो उसे देवे और अपनी तरफ से दान देने की इच्छा रखे। जब इस तरह से मनुष्य हर तरह से दिल से, शरीर से, दिमाग से उन्नत हो जाय तभी इस देश को हम उन्नत कर सकते है और करेंगे। हम आशा करते है कि हमारे

देश में इस तरह की चौमुखी उन्नति होगी और आप इससे वंचित नहीं रहेंगे। वास्तव में आप अग्रणी रहेंगे ऐसा मैं कहूं तो अत्युक्ति नहीं होगी।

जैसा मैंने सुना आपके इस शहर में और प्रान्त में बहुत उन्नति हुयी है। इससे अन्दाज मिलता है कि आगे यह उन्नति कैसे चलेगी। जह एक तरफ इस प्रान्त के कामों और साधनों की उन्नति पर ध्यान आप देंगे, आपको यह भी ध्यान रखना है कि उन्नति के रास्ते में जो बाधाएं है उनको भी किसी न किसी तरह से बन्द करें, उनको आप मिटा नहीं सकते तो उनकी शक्ति को कम कर सकते हैं। बाधाएं तरह-तरह की है। देश में अनेक प्रकार के विचार है, ख्याल हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद यह देश एक हो गया है जिसमें एक छत्र के अन्दर सारा देश एक राज्य में आ गया और एक संविधान के अन्दर सारे देश में एक शासन चल रहा है, उस एकता को किसी न किसी तरह से हमको सुरक्षित रखना है। कोई ऐसी बात नहीं हो, ऐसा काम नहीं हो जिससे किसी प्रकार का उस पर आघात पहुंचे। यह देश के लिये अत्यन्त आवश्यक चीज है। हममें, से प्रत्येक भारतवासी को चाहे वह स्त्री हो या पुरुष हो, बच्चा हो या बूढ़ा हो, इसके लिये तैयार रहना चाहिये कि वह अपनी तरफ से कोई ऐसा काम नहीं होने देगा न खुद करेगा न दूसरों को करने देगा जिससे देश की एकता और स्वतन्त्रता में थोड़ा भी खलल पहुंचता हो या किसी तरह से खतरा पैदा हो। तो इस तरह से देश की उन्नति का काम रोकने के लिये उसके रास्ते में जितनी बाधाएं आवें उनको हल करना जरूरी होगा।

उसके साथ-साथ हमको देखना है कि लोगों का चरित्र आगे बढ़े, सुन्दर हो, अच्छा हो, जिसमें उन पर भरोसा किया जाय। मैं जहां जाता हूं तो लोग कहा करते है कि चोरबाजारी चलती है, लोग कहते हैं कि रिश्वत चलती है और इसी तरह की शिकायत किया करते है। मै मानता हूं। मगर इसका मूल कारण यही है कि हमारे लोगों के चरित्र में कमी है। अगर लोगों का चरित्र दुरुस्त हो तो न तो रिश्वतखोरी चले और न चोरबाजारी चले। जब सब लोग अपने-अपने हक पर ही नहीं कर्तव्य पर जुट जायें, अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिये तैयार रहें तो किसी किस्म की दिक्कत किसी काम में नहीं आयगी।

मैंने सुना है कि विनोबा जी ने आपके इस शहर को अपना केन्द्र बनाया है जिसको वह एक आदर्श शहर के रूप में देखना चाहते हैं, किस तरह से एक सुन्दर स्वच्छ शहर हो सकता है, स्वच्छा केवल सफाई के मामले में ही नहीं, चरित्र के मामले में भी साफ हो और आपने आन्दोलन शुरू कर दिया है जिसमें

भद्दे और बुरे प्रकार की तस्वीरें नहीं दिखलाई जायें जिनका किसी तरह स लोगों के चरित्र पर आघात पहुंचता हो। मैं चाहूंगा कि इस बात पर आप लोग पूरा ध्यान दें और इस ध्यान के दो रूप हो सकते हैं। एक तो यह कि जो इस तरह का काम करते हैं वे इसको खुद बुरा मान कर छोड़ दें और दूसरा जो दूसरे लोगों को करना है और उनको करना चाहिये कि वे उनके बनाये हुए चित्रों को नहीं देखें जिनका लोगों के ऊपर बुरा प्रभाव पढ़ता है। अगर सब अपना-अपना कर्तव्य करें, गवर्नमेंट अपना कर्तव्य करे, म्यूनिसि-पलिटी अपना कर्तव्य करे तो लोगों का सुख सम्मान, लोगों की धार्मिकता स्वच्छ बनी रहे। इसके लिये गवर्नमेंट या म्यूनिसिपलिटी को जो आवश्यक अधिकार लेने का काम करना है तो इसमें कोई शक नहीं कि किसी तरह की कोई दिक्कत पैदा हो सकती है वह दूर हो सकती है और मुझे विश्वास है कि आप इस शहर को ऐसा स्वच्छ शहर बना देंगे जिसको देखकर जो यहां आवें खुश हो जायें और यहां से प्रेरणा लेकर वापस जायें।

आपने जो मानपत्र में कोई ऐसी चीजें बताई जिनकी आपको जरूरत है उनके सम्बन्ध में मैं यही कह सकता हूं कि यहां आपके प्रदेश के राज्यपाल महोदय तथा मुख्य मन्त्री भी मौजूद हैं। उन्होंने भी इस मानपत्र को सुन लिया है और मैं आशा करता हूं कि इसमें लिखी हुई बातों पर वे ध्यान देंगे। अगर इसमें कोई चीज ऐसी होगी जिस पर दूसरे अधिकारियों के ध्यान देने का मौका होगा तो मैं उनका ध्यान इस तरफ आर्कषित करूंगा।

यद्यपि सर्दी का जमाना है पर मैं देखता हूं कि धूप और गर्मी यहां काफी है। इस धूप में आप बैठे रहे इसके लिये आपको धन्यवाद देता हूं और एक बार फिर आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूं कि आपने मेरा इतना सम्मान किया।

सेठ वालचन्द जयन्ती के अवसर पर

महामहिम राज्यपाल महोदय, सेठ लालचन्द हीराचन्द, देवियो और सज्जनों,

कई वर्ष हुये सेठ लालचन्द नें यह इच्छा प्रकट की थी कि मुझे एक दिन न एक दिन सेठ वालचन्द की कृतियों में जाकर उन्होंने जो कुछ किया है उसका कुछ दिग्दर्शन करूं। मुझे इस बात की खुशी है कि आज मै उनकी इच्छा और अपनी इच्छा पूरा कर सका। इस बात की लालसा होना स्वाभाविक है कि मै किसी एक बड़े कारखाने में जाऊं जहा छोटे-छोटे पुर्जे से लेकर भिन्न-भिन्न भाग का एक बड़ा यंत्र तैयार किया जाता हो और अपनी आखों स देखू कि कैसे आहिस्ता-आहिस्ता करके एक मोटरगाड़ी जैसा अच्छा और सुन्दर यन्त्र छोटे-छोटे पुर्जों को मिलाकर तैयार किया जाता है। मुझे इस बात की खुशी हुई कि मैने इसको देखा और साथ ही यह भी देखा कि किस तरह से यह सारा काम हमारे अपने देश के भाई तैयार कर रहे है और किस तरह से अच्छे-से-अच्छे कारखाने में बने हुए कार के मुकाबले मे कार यहां भी तैयार कर रहे है। यह अच्छा तो थी ही मगर साथ ही यह भी एक बडी अभिलाषा थी कि मै सेठ वालचन्द को अपनी श्रद्धांजलि दे सकू। वह अपने देश में उन महान लोगों में थे जिन्होने उसके औद्योगिकरण का सपना देखा था और एक-एक करके सिर्फ एक दिशा में नहीं कई दिशाओं में कई बडे और महत्व के काम किये। मुझे वह दिन याद है जब मै 1942 मे महात्मा गान्धी की आज्ञा से विशाखापटनम गया जहां मैने शिपयार्ड की नीव डाली। सेठ वालचन्द से उस वक्त जो मेरा परिचय था वह और भी घनिष्ट हो गया और मै यह कह सकता हूं कि जो बड़े-बड़े काम उन्होंने हाथ में लिये उनको मै दूर से ही मगर रुचि से देखता रहा हूं।

उन्होंने जहाज रानी के सम्बन्ध में जो काम किया उसका जिक्र आपन किया है। वह काम बड़े महत्व का है और उसका महत्व आज और भी हम महसूस करने लग गये है क्योंकि हम इस बात को समझ गये है कि अपने जहाज नही होने के कारण कितने करोड़ रुपये हमको खर्च करने पड़ते है और इसलिये देश में आज इस बात का पूरा प्रयत्न किया जा रहा है कि हमारे अपने लोग देश में जहाज रखें जिसमें हमको विदेशी जहाजों पर जो खर्च करना पड़ता है वह नहीं देना पड़े, जो भाड़ा विदेशी से माल लाने और विदेशों में माल पहुंचाने में

प्रीमियर ओटोमोबाइल फैक्टरी, कुर्ला, बम्बई में भाषण; 9 दिसम्बर, 1960

देना पड़ता है वह अपने देश को मिले। इसका सूत्रपात सेठ वालचन्द ने किया था और सिर्फ जहाज चलाने का ही काम नहीं बल्कि उन्होंने यह भी सोचा कि अगर जहाज चलाने हैं तो अपने देश में बनने भी चाहिये और अगर हम हमेशा विदेश पर ही भरोसा करते रहेंगे तो न मालूम कितने दिनों में अपने देश का काम पूरी तरह से अपने हाथों में हम ले सकेंगे। यही सोचकर उन्होंने सिंदिया यार्ड की योजना बनाई और जैसा मैंने कहा, मुझ इस बात का आज भी बहुत उल्लास होता है कि मैंने जाकर उसकी नींव डाली थी।

उन्होंने खेती का काम भी नहीं छोडा। चीनी के कारखाने बनाकर ही उनको संतोष नहीं हुआ क्योंकि उन्होंने यह भी सोचा कि जब तक खेती में किस तरह से गन्ना ज्यादा हो, सुन्दर हो, अच्छा हो इस पर ध्यान नहीं देंगे तब तक गन्ने की जरूरत को पूरा नहीं कर सकेंगे। इसलिये उन्होंने कारखाने बनाये वहां गन्ने की खेती में ज्यादा तरक्की करने के लिये उसको मूर्तरूप से रख कर दिया। उसके बाद और और चीजें जो उन्होंने की उनका जिक्र सेठ लालचन्द ने किया है। उन कारखानों में से यह ओटोमोबाइल का कारखाना भी है। इसके इलावा जितने देश के अन्दर बड़े-बड़े कारखाने हैं उनको बनाने का काम उन्होंने अपने हाथ में लिया और आज भी जो बडी-बड़ी योजनाएं बांधों की हम बना रहे हैं उनमें से इस संस्था की तरफ से आज भी काम किया जा रहा है। और कई आवश्यक दिशाओं में उन्होंने काम किया और सिर्फ किया ही नहीं बल्कि एक प्रकार से आगे रास्ता दिखाने वाले हुये।

यह भी एक आवश्यक बात है कि जब देश को हमको उन्नत करना है तो इसमें जहा तक हो सके अपने देश के लोगों से ही काम लेना जरूरी है। आज औद्योगीकरण का युग है। हम बहुत जोर से देश में उद्योगों को स्थापित करने में लगे हुय हैं। इसमें किसी के न चिन्ता करने की बात है न घबराने की बात है क्योंकि इस औद्योगीकरण में तो सबका हिस्सा है। गवर्नमेंट की तरफ से बड़े-बड़े कारखाने बनाये गये है तथा और बनाये जायेंगे। जितने दशी कारबारी लोग हैं उनका भी इसमें हिस्सा है। वे अपनी बुद्धि और तजुरबा से देश को लाभ पहुंचायें और काम को आगे बढ़ाये। इस तरह से यह काम इतना बड़ा है जिसमें जितनी मेहनत की जाये, जितना उत्साह दिखलाया जाय, परिश्रम किया जाय वह पूरा नहीं होगा क्योंकि काम बहुत बड़ा है। इसमें इसकी जरूरत भी है हम अपने देश के कार्यकर्ता तैयार करें, उनको पूरी इस बात की शिक्षा

दें, मौका दें कि वे सब काम कर सकें। मुझे यह जानकर खुशी हुयी कि इसका आप पूरा प्रबन्ध करते हैं।

अभी हमारे देश में उद्योग आगे बढ़ रहा है और तेजी से बढ़ रहा है। तो भी हमें बहुत करना बाकी है और इसमें रह जरूरी है कि उद्योगपति और कार्यकर्ताओं का अच्छा मेल रहे और उनका आपस का सम्बन्ध सुन्दर बना रहे जिसमें किसी को शिकायत की जगह नहीं मिले। सब काम आगे बढ़े। दो काम होता है। एक तो यह कि उसके लिये कुछ लोग साधन प्रस्तुत करते हैं जो केवल मजदूर अपने बल पर प्रस्तुत नही कर सकते और दूसरे मजदूर होते हैं जो अपने परिश्रम से काम को आगे बढ़ाते हैं। दोनो को मिलजुल कर काम करने का मौका होता है तो काम तेजी के साथ आगे बढ़ता है। मुझे इस बात की खुशी है कि हमारे देश के अन्दर सचमुच अच्छी तरह से देखा जाय तो मजदूर और उद्योगपति का आपस का सम्बन्ध कुछ बुरा नही है, मै तो कहूंगा कि बहुत अच्छा है, यद्यपि कही-कही कुछ मतभेद देखने में आता है तो वह स्वाभाविक ही है। किसी भी एक बड़ी चीज में आपस में कही मतभेद हो जाना, कही कुछ मत-भेद के कारण वैमनस्य पैदा हो जाना अनिवार्य ही है। इसलिये यदि कहीं ऐसा थोड़ा-बहुत मतभेद भी हो तो उसको आपस मे उत्साहपूर्वक सुलझा देने का प्रयत्न करना चाहिये जिसमें काम में रुके नहीं।

मै आशा करता हूं कि आपने न हाथों सेठ वालचन्द की मूर्ति का अनावरण करवाया तो उन्होंने जो उदाहरण हबारे देश के सामने रखा है उस उदाहरण को और भी आगे बढ़ाने में और भी अच्छी तरह से कारगर और सफल होंगे।

मुझे इस बात की खुशी है कि सेठ लालचन्द और उनके सहकर्मियो ने इस काम को अच्छी तरह से चलाया है और एक प्रकार से परम्परा कायम कर दी है। यह काम आगे बढ़ता जायगा। मै आशा करता हूं कि यह काम और भी तरक्की करेगा और जो आशाएं सेठ वालचन्द ने की थीं वे पूरी होंगी, जो आशा उनके देश के लोगों की है वह भी पूरी होगी। धन्यवाद।

कोंकण के दौरे पर : मुरुड में भाषण

राज्यपाल महोदय, नगरपालिका के अध्यक्ष महोदय, बहनों तथा भाइयो,

25 वर्ष पूर्व मैंने महाराष्ट्र का एक बड़ा दौरा किया था और जहां तक मुझे स्मरण है मै प्राय: सारे महाराष्ट्र का, उस समय वह जैसा था, एक कोने से दूसरे कोने तक भ्रमण किया था और जहां-जहां मै गया वहां मुझे बड़ा ही स्वागत, बडा ही प्रेम और बड़ा ही आदर मिलता गया। आज चन्द दिनों के लिये महाराष्ट्र में मै फिर आवा हू तो वही पुराना दृश्य देखने में आ रहा है, वही आदर और प्रेम मुझे मिल रहा है। मै आप सब भाइयों और बहनो का इसके लिए बहुत ही आभारी हू।

आपने मानपत्र में बहुत बाते कही है। उनके सम्बन्ध में मै इतना ही कह सकता हूं कि आपकी सब बातों पर विचार किया जायगा। मुझे इस दौरे पर खास करके इसलिये आना पड़ा है कि घूम-फिर करके जन साधारण के साथ मेरा सम्पर्क हो, मै उनको जान सकू, समझ सकू और साथ ही उनके हृदय में भी कुछ ऐसा आभास हो कि सारे भारतवर्ष का एक प्रतीक जो राष्ट्रपति में कहलाता हूं वह उनके बीच भारत की एकता का प्रतीक मात्र हू। भारत बहुत प्राचीन देश है और इसके इतिहास में बहुत उलट-पुलट हुए है, इसके इतिहास ने बहुत पलटा खाया है और आज हम एक ऐसे मोकाम पर पहुंच गये है जहा हमारे लिये रास्ता प्रशस्त हो रहा है और उन्नति के लिये तरह-तरह के आयोजन किये जा रहे है, योजनाएं बनायी जा रही है, बड़े पैमाने पर बड़े-बड़े काम किये जा रहे है। उनमे बहुतेरे बहुत दूर तक आगे बढ़ गये है, बहुतेरे आरम्भ ही हो रहे है और बहुत से ऐसे है जो अभी आरम्भ नही हुए है।

इतने बड़े देश में जो सैकड़ों वर्षों तक एक से उन्नति का पथ वचित रह गया जब आज सभी रास्ते मिलते है तो उन पर जहां तक तेजी से हो सकता है चलने का प्रयत्न हम करते हैं। मगर इस तेजी में इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि कही हम लुढ़क न जायें, कहीं हमारा पैर न फिसल जाए, कहीं हमें ठोकर न लग जाए। जितनी योजनाए बनी है या बनती जा रही है सब के सामने देश की उन्नति है और साथ-साथ लोगों पर भी ध्यान है।

मुरुड म्यूनिसिपलिटी द्वारा दिये गये मानपत्र के उत्तर में भाषण; 10 दिसम्बर, 1960

सब काम होते जा रहे है, फल उनके मिलेंगे ही । इसलिये इन योजनाओं का फल हमको तुरन्त नही मिलता हो और अगर मिलता हो तो थोड़ा-बहुत मिलता हो तो उससे न तो घबड़ाना चाहिये और न किसी को इस बात की चिन्ता होनी चाहिए क्योंकि इन योजनाओं का फल अवश्यम्भावी है। लोग अपने उत्साह से, अपनी सहायता से, अपने सहयोग से इस उन्नति की प्रगति को बहुत आगे बढ़ा सकते है। इसलिए हमे अभी तरक्की का काम करते जाना है। मगर हमें बहुत देर तक ठहरने की बात नही है। मै चाहे अपने जीवन में सब कुछ देख सकू या नहीं देख सकू, जो भारी समूह मेरी आखों के सामने बैठा है, इसमें कोई शक की बात नही है वह इन योजनाओं के फल को देख सकेगा। इसलिये यदि आपके यहां की योजनाए अभी हाथ में नही ली गयी है तो आप धैर्य रखें। देश के सभी काम एक साथ हाथ में नही लिये जा सकते हैं, आहिस्ता-आहिस्ता लिये जाते है और लिए जायेंगे। और इसीलिये हमारे देश की प्रगति बहुत ही अच्छी तरह से, अच्छी गति से चल रही है और कोई भय भी नही है, काम भी आगे बढ़ता जायगा।

मैंने कहा कोई भी काम हो उसका फल तभी मिल सकता है जब सब लोगों की सहायता और सहयोग मिले। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आपके इस जिले में जो बचत आन्दोलन हुआ था उसमें सबसे अधिक सफलता आपके जिले में मिली है। तो आपने तो एक प्रकार से अपने उत्साह का परिचय भी दे दिया है और मै आशा करता हूं कि यदि इसी तरह से आपका उत्साह बढ़ता गया तो इसमें कोई शक नही कि बहुत जल्दी आपकी जो कमियां है वह भी पूरी हो सकेंगी।

मैंने राजपुर की खाड़ी देखी। वह बहुत ही सुन्दर है और उसमें जहाज लगने के लिये काफी गहराई है। वह बम्बई के बहुत करीब है। इसलिये हो सकता है कि बम्बई में और जहाजों की जरूरत हो तो इसकी तरफ ध्यान दिया जाय और मै समझता हूं कि ध्यान दिया जायगा क्योंकि इस तरह की खाड़ी और इतनी बड़ी खाड़ी जल्द कम मिलती है और जब बम्बई का बन्दरगाह नही बना था, यह समुद्री बेड़े का केन्द्र हुआ करता था। बात दोनों मिल गई।

मै आपसे यही कहना चाहता हू कि आप लोग जिस प्रकार से उत्साह के साथ काम करते आये है उस उत्साह को जारी रखें तो यह सुन्दर वाटिका जैसी

जगह और भी सुन्दर हो जायगी। मैं अपनी आंखों से देखकर बहुत खुश हुआ कि किस तरह से यह सारा प्रान्त बगीचे की तरह बना हुआ है। इसमें तरह-तरह के फल पैदा हो रहे हैं और आम का तो कहना ही क्या है। यह प्रदेश आम का स्थान ही है। यहा पर खनिज पदार्थ मौजूद हैं। उसको काम में लाने का काम है। वह चीज़ छिपी नही रह सकती है। आपको इन्तजार नही करना पड़ेगा। इसकी जरूरत इतनी बढ़ती जा रही है कि इस पर ध्यान जाना चाहिये और जायगा।

इसी तरह से इस शहरके रहनेवाले है। यद्यपि रास्ते लम्बे है और शहर बड़ा मालूम पडता है पर यहा 20 हजार ही लोग रहते है। तो आपको बम्बई शहर के कारखानो से लाभ पहुंचता है और मै समझता हू कि लाखों लाख आदमी इधर से जाकर बम्बई मे काम करते हैं। इसी तरह से वहा जब कारबार बढ़ता जायगा, और ज्यादा लोगों को काम मिलेगा। जो किसी न किसी वजह से बेकार हो जाएं उनके लिये भी मैदान खुला हुआ है। नये-नये काम जारी हो रहे हैं, नये-नये कारखाने बनते जा रहे है औ नये-नये काम करने के लिये मौके आते जा रहे है जो और आगे बढ़ते जायेगे और उनको कोई न कोई रास्ता मिलता ही जायगा। मै तो आशा रखता हूं कि आपकी सारी अभिलाषाएं पूरी होती जायेंगी। मेरी यही ईश्वर से प्रार्थना है कि आप सबको धैर्य दें, आप सबको शक्ति दे और आप देश को हमेशा सामने रखकर अपनी शक्ति को देश के काम मे लगाते रहे।

कोंकण शिक्षण संस्था सम्मेलन का उद्घाटन

राज्यपाल महोदय, मन्त्री महोदय, श्री देशमुख, डाक्टर खानोलकर, बहनों तथा भाइयो,

मुझे बड़ी खुशी है कि आज आपके इस सम्मेलन का उद्घाटन करने का आपने मुझे सुअवसर दिया । आपने इस जिले के सम्बन्ध मे बहुत जानकारी मुझे दी जो पहले मै नही जानता था और मुझे इस बात की खुशी है कि मै एक ऐसे जिले में आया हू जो आज से नही बहुत जमाने से इतिहास में अपना योगदान देता आया है और इस देश के बहुमुखी गौरव को प्राप्त हुए योगदान करता आया है ।

शिक्षा का प्रश्न बड़े ही महत्व का प्रश्न है और आपका महाराष्ट्र प्रान्त पिछले 70, 75 वर्षो से इसके महत्व को पहचानकर इसके प्रचार के लिये स्थान-स्थान पर एड्केशनल सोसाइटी जैसे कोकण एड्केशनल सोसायटी स्थापित कर शिक्षा प्रचार में योगदान देता रहा है और इस तरीके से एक ऐमा सिलसिला जम गया है कि बहुत मे शिक्षणालय भिन्न-भिन्न प्रकार के नीचे से लेकर ऊंचे से ऊंचे दर्जे तक के, स्त्रियो के लिये, पुरुषो के लिये, बच्चो के लिये अलग-अलग कायम हो गये है और अपनी-अपनी जगह पर काम कर रहे है । यह जरूरी है कि शिक्षा का काम और तेजी से आगे बढ़ाया जाए क्योंकि अभी भी देश के अन्दर बहुतेरे ऐसे स्थान है जहा कोई स्कूल कायम नही है, बहुतेरे ऐसे लोग है जो निरक्षर है और दूसरी तरह से भी शिक्षाप्रणाली मे बहुत हेरफेर करने की जरूरत हो गई है । शिक्षा का अर्थ यही है कि मनुष्य अपने जीवन को सुख से से बिताने योग्य बन जाए और केवल अपना सुख, निजी सुख ही नही, दूसरों को भी सुखी और सम्पन्न बनाये, आदमी अपना निर्वाह करे, स्वय सुखी रहे और दूसरों को भी सुखी बना सके ।

हमारे देश में पहले शिक्षा कुछ दूसरे ही ढंग की थी और उस समय अक्षर-ज्ञान को उतना महत्व नही दिया जाता था जितना इस चीज़ को कि लोग कार-बारी ज्ञान के अलावा सच्चरित्र और कर्मठ बन जाए और अपना काम करते जाएं । अब जमाना पलट गया है और शिक्षा का उद्देश्य भी कुछ भिन्न-भिन्न

कोंकण एड्केशनल सोसायटी के सम्मेलन का उद्घाटन करते समय भाषण; रोहा, 11 दिसम्बर, 1960

होता जा रहा है और शिक्षाप्रणाली में बड़ा ही अन्तर हो गया है। हमारी जो प्रणाली थी उसकी विशेषता यही थी कि कोई बड़ी-बड़ी इमारतें बनाने की जरूरत नही होती थी और छोटे आरम्भ से बडा काम होता था, छोटे-छोटे स्थानों पर दो-चार शिक्षक बैठकर बहुतेरे बच्चों को अच्छी शिक्षा दिया करते थे। वह शिक्षा केवल अक्षरज्ञान नहीं, केवल प्रकृति का ज्ञान नहीं बल्कि ऐसी होती थी कि जिससे बच्चों का चरित्र अच्छा बने, सुन्दर बने जिसमें वे अच्छी तरह से अपने जीवन को बिता सके। जो कारबार भी चलता था उसके लिये कोई विशेष शिक्षा का साधन नही था। परम्परा से घरों में, परिवारों मे एक-एक तरह का काम काज धंधा चलता आता था और उसकी शिक्षा अपने माँ बाप से ही मिलती थी और उसमें यदि कोई त्रुटि हुई तो उसको अपनी बुद्धि के अनुसार लोग आगे बढ़ाते थे और इस तरह से अच्छे से अच्छे सुन्दर से सुन्दर हमारे देश में काम बने और उनके निशान आज भी पाये जाते है।

ताज को जिसने बनाया था उसने किसी इंजीनियरिंग स्कूल या कालेज में शिक्षा नही पायी था। जो सुन्दर से सुन्दर आज भी बनारस, सूरत, कश्मीर और दूसरी जगहों में बुनाई का काम होता है वे लोग किसी स्कूल में शिक्षा पाये हुए नही है। लोग इसको जानते थे, सुन्दर से सुन्दर काम बना सकते थे और बाजाप्ता आजकल जैसे स्कूल में पढ़ाई होती है उससे लाभ नही उठाते थे। जो बड़े-बड़े मन्दिर, बड़ी-बड़ी मूर्तियां और चित्रकला आज भी हमको मिलती है वे ऐसे लोगों के बनाये हुए नही है जिन्होंने किसी स्कूल में शिक्षा पायी हो। एक तरह से परम्परा से, बाप से बेटा हासिल करता था और इस तरह से बिना बहुत खर्च के ऊंचे से ऊंचे दर्जे का काम करने की योग्यता लोगों में आ जाती थी।

अब दुनिया का हाल बदल गया है और अब यह आशा करना भी फजूल है कि हम इस चीज़ को फिर से स्कूलों मे कायम करें क्योंकि इसमे एक विशेष बात यह थी कि यहां सुन्दर से सुन्दर काम होता था मगर वह बड़े पैमाने पर तैयार नहीं किया जा सकता था। आज के युग में किसी चीज़ की बहुतायत से पैदा करने की आवश्यकता हो गयी है और वह किसी एक मनुष्य के हाथ से नहीं हो सकता है। इसीलिये मशीन से आज हम मदद ले रहे हैं जिसमें हम उन चीजों को बहुतायत से तैयार कर सकें। एक कलाकार पहले वर्षों में एक चीज़ को तैयार करता होगा उस चीज़ को घंटों या उससे भी कम समय में हम कारखाने तैयार कर सकते है। यद्यपि उस तरह की कला की नहीं जैसी विशेष

कलाकार अपनी बुद्धि से, अपने हृदय के उल्लास से चीज़ निकालता था, मगर कुछ घटिया ही सही मगर बहुतायत से सब चीजें तैयार हो सकती हैं। आप चित्र को ले लीजिए। चित्र जो सुन्दर-से-सुन्दर चीज़ का बनता है उसको छापा जाय तो शायद कला मे छपा चित्र वहां तक नहीं पहुंचता हो मगर तो भी थोड़ा-बहुत कला की कमी करके यदि कारखाने में वह चीज़ छापी जाय तो वह लाखों की तायदाद में पैदा हो सकती है तो आज के युग मे इस चीज़ की जरूरत है कि बहुतायत से सब चीजों का प्रचार किया जाय। उन दिनो में बहुतायत का ख्याल नही था, इसका ध्यान रहता था कि कितनी सुन्दर मर्ति बने, कितना उसमें कला का समावेश हो।

आज इस चीज़ की आवश्यकता है कि शिक्षा फैले, उसका प्रचार हो और उसे ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाया जाय। आपकी सोसायटी और इस तरह की संस्थाएं बहुत काम कर रही है। मगर उनके अलावा गवर्नमेंट की तरफ से भी यह काम बहुत बड़े पैमाने पर हो रहा है और यह आशा रखी जाती है कि तीसरी योजना के अन्त तक एक मनुष्य भी नही रहेगा जिसको अक्षरज्ञान नही हुआ हो और इसके लिये सभी जगहो पर स्कूल बनाने का निश्चय हो गया है और जोरो से काम हो रहा है। आप शिक्षाविद है आपसे मै यही कहूगा कि आपको यह देखना है, सोचना है कि जो शिक्षा दी जाय वह ऐसी शिक्षा हो जिससे जो हम आशा रखते है वह पूरा हो सके।

जब मै पढ़ता था उस समय स्कूलों की संख्या बहुत कम थी। मै अपने जिले के बारे में कह सकता हू कि 3,4 स्कूल जिले भर मे थे। आज मै नही जनता हूं कि 100, 150 या कितने हैं, उस समय बिहार सूबे मे 4,5 कालेज और आज वहां तक मै समझता हूं 150 कालेज मौजूद है। उस समय वहां एक यूनिवर्सिटी थी आज 5 यूनिवर्सिटियां हैं। मै सभी तरह से आपको बता रहा हूं जिसमे आप समझ जाएं कि कितनी तेजी के साथ शिक्षा का प्रचार हो रहा है। प्रचार बहुत हो रहा है। साथ ही पढ़ाई मे जितनी गहराई होनी चाहिए उसमें कमी हो गई है। इसको यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन के चेअरमैन से ज्यादा कौन जानता है। श्री सी० डी० देशमुख इसे जानते और भलीभांति समझते हैं। जहां प्रचार जरूरी है वहां गहराई लाना भी जरूरी है और गहराई लानी है केवल एक प्रकार की शिक्षा में नही बल्कि हर तरह की शिक्षा में और जिक्षा पाकर तरह-तरह की कला के काम के लिये स्कूल में जाना होगा तभी लोग तैयार होंगे। क्योंकि यह परम्परा बहुत देर से गिर चुकी है कि एक जाति के

लोग एक काम को हाथ में लेते थे और वह जाति उस काम में कलाविद हो जाती थी। अब जातिप्रथा तो टूट गई और जो लोग कला का काम करते थे वह बहुत करके अब काम नहीं करते है।

मुझे यह भी मालूम है कि विद्वान लोग अपने लड़कों को अंग्रेजी पढ़ाने पर अब ध्यान देते है और संस्कृत नहीं पढ़ाते। यह भी देखने में आता है कि यह बहुत प्राचीन काल से चला आता था कि विद्वान लोग थोड़ा-बहुत संस्कृत का ज्ञान रखते थे। तो यह समय का फेर है जिसको हम शायद रोक नहीं सकते मगर यह जरूर कह सकते है कि उसमे गहरापन आना चाहिए। अगर शिक्षा पानी हो तो जिस विषय को सीखे उसमे काफी गहराई हो या ऐसी शिक्षा पानी हो जिसका रोजगार से सम्बन्ध हो तो उसमे भी गहराई आनी चाहिये, योग्यता आनी चाहिए। मै आपसे यही कहूगा कि यह प्रश्न सारे देश के सामने आज है जिस पर सभी विचारशील लोग विचार कर रहे है और अभी कोई ऐसा साफ रास्ता नहीं सूझता है। गहराई और प्रचार दोनों का कम्बीनेशन कैसे किया जाए। केवल गहराई ही नही ,उसके साथ साथ चरित्र का गठन भी चाहिए। लोगों को शरीर से मन से और बुद्धि से, हर तरह से बढ़ना चाहिये जिसमे वे अपना और देश का सब का भला कर सके।

मै आपसे यही निवेदन करना चाहता हूं कि आपका इस बात का बड़ा सौभाग्य है कि यहां की परम्परा को कायम रखे हुए है और आपका जो स्कल चलाने का तरीका रहा है उस तरीके से आपने बहुत कुछ सीखा होगा। तो मै चाहूंगा कि आपका अनुभव और तजुरबा दोनों मिलाकर आप सोचे कि किस तरह से शिक्षा का काम आगे बढ़ाया जा सकता है और ऐसी शिक्षा जो हर तरह से अच्छे नागरिक तैयार कर सके।

मै इन्हीं शब्दों के साथ सम्मेलन का उद्घाटन करता हू और आशा करता हूं कि आप अपने काम में सफल होंगे।

रोहा नगरपालिका द्वारा सम्मान

राज्यपाल महोदय, म्यूनिसिपलटी के चेग्ररमैन, श्री वाई० डी० देशमुख, लोकल बोर्ड के चेग्ररमैन महोदय, श्री सी० डी० देशमुख, श्रीमती दुर्गाबाई, देशमुख, देवियो और सज्जनो,

आपने जिस उत्साह के साथ मेरा स्वागत किया है और कष्ट सहकर धूप में इतनी देर तक मेरे भाषण के लिये इन्तजार करते रहे सब के लिये मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूं।

जैसा मानपत्र में कहा गया, म्यूनिसिपलिटी का पहला काम वहां की जनता की सेवा है और वहां लोग आराम से, सफाई से अपनी जगह पर रह सके और उनको बिना दूसरी चीजों से मिलावट किये हुए खाद्य पदार्थ सभी स्थिति में मिल सके। सड़कों का प्रबन्ध करना, चिकित्सा का प्रबन्ध करना म्यूनिसिपलिटी का कर्तव्य होता है। जन संख्या के ख्याल से आपकी म्यूनिसिपलिटी बड़ी नहीं है मगर तोभी आपके शहर और जिले का इतिहास गौरवपूर्ण रहा है और इसके लिए आप सब बधाई के पात्र हैं।

हिन्दुस्तान इस वक्त एक ऐसे युग से होकर गुजर रहा है जिसमें उसके सामने बहुत कठिनाइया भी है और साथ ही साथ ऐसे साधन भी है कि वह उन कठिनाइयो का मुकाबला कर सके और उसके साथ इतनी बड़ी जनता है कि यदि वह अपने कर्त्तव्य को समझ ले तो कोई भी कठिनाई देश के सामने नहीं आवे। यह हमारा सौभाग्य है कि बहुत दिनों के बाद आज एक ऐसा भारतवर्ष हमको मिला है जो दक्षिण में कन्याकुमारी से लेकर उत्तर में हिमालय तक और पश्चिम में अरब समुद्र से लेकर पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक फैला हुआ है। इस बड़े देश का एक छत्र राज्य चल रहा है, एक संविधान के अनुसार इसका शासन हो रहा है। सब प्रकार से इसकी एकता पूरी तरह से संपादित हो गई है। पहले भी हमारे देश में भिन्न-भिन्न प्रदेश एक-दूसरे से अलग नही थे। लोगों का यातायात बहुत हुआ करता था और यद्यपि भिन्नता थी, भाषा की भिन्नता, धर्म की भिन्नता, रहन-सहन की भिन्नता, सब के रहते हुए एकसूत्रता भी थी जिसकी वजह से यह भारत भारत बना रहा और आज भी बना है। बड़ी मुश्किल

रोहा नगरपालिका, कोलाबा डिस्ट्रिकट बोर्ड तथा मनगांव एडूकेशनल सोसायटी द्वारा दिये गये मानपत्र के उत्तर में भाषण; रोहा, 11 दिसम्बर, 1960

से आज हमको एक चीज मिल गई है जो पहले नही थी और वह है एकछत्र राज्य। सारा भारत आज, जैसा मैंने कहा, एक संविधान के अनुसार शासित हो रहा है और सारे देश के लोग एक दूसरे से जो कुछ उनकी भिन्नता है उसमे किसी तरह से एकता लानी है।

पर इसमे आप को एक बात की चेतावनी भी देनी है। अभी हाल मे कई ऐसी घटनाएं हो रही है, कई ऐसी बात देखने मे आयी है जिससे उस एकता पर आघात होने का भय होता है और चिन्ता होती है। तो मै कहूगा कि प्रत्येक भारतवासी का सब से पहला फर्ज यही है कि वह इस देश की एकता को सुरक्षित रखे और उस एकता को सुरक्षित रखने मे ही इस देश का हित निहित है। अगर हम एकता को बनाये रखेंगे तो कोई भी शक्ति ऐसी नही है जो हमको दबा सके और दूसरे को पराधीन बना सके। इसलिये बहुत ही सतर्क रहने का समय है जिसमे हमारी अपनी ही किसी भी गलती से, किसी भी काम से उन शक्तियो को प्रोत्साहन न मिले जिससे हमारी एकता जाने अनजाने कमजोर हो। बहुत काम हमको ऐसे करने पडते है जिनका नतीजा बुरा हो जाता है। पर काम करने के समय उसकी ओर हमारा ध्यान नही जाता। इसलिये हम कुछ ऐसी बाते कर लेते है, बाते कह देते है, कुछ काम भी कर लेते है। मगर यदि हमे पहले से इसका आभास मिल जाए कि उसका असर सारे देश की एकता पर इतना बुरा पडने वाला है तो मै ऐसा समझता हूं कि कोई भी भारतवासी इस तरह की गलती नही करे। जो हमारे देश की शिक्षा सस्थाए है उनका यह काम है कि सभी लोगों को उनके कर्तव्य से परिचित बनाया करे और उनको हमेशा जागृत रखे जिसमे कोई गलती, कोई ऐसी भूल नही हो जाए जिसका असर देश की एकता पर पड़ता हो।

यह एक मानी हुई बात है कि किसी प्रकार की शासनपद्धति हो जिसके अनुसार वहां काम हो रहा हो उसके लिये काम करने वालो को और साधारण जनता को भी एक प्रकार की शिक्षा चाहिए और जो स्थानीय सस्थाएं हैं जैसे लोकल बोर्ड, म्यूनिसिपल बोर्ड, वहां पर एक छोटे पैमाने पर उसी प्रकार का काम करना पड़ता है जो बड़े देशव्यापी रूप में लोक सभा के सदस्यों को या महाराष्ट्र प्रान्त की विधान सभा के सदस्यों को करना पड़ता है। इसलिये म्यूनिसिपलटी अपना काम ठीक तरह से करें तो उनमें ऐसे लोग तैयार हो सकते है जो उस काम को अपने आप ले सकें। वह एक प्रकार से ट्रेनिग इन्स्टीट्यूट होगी जहां तैयारी करके लोग आगे बढ़ सकते है। इस प्रकार के काम की

महानता ग्रौर उसकी ग्रावश्यकता को विदेशों में ग्रौर विशेष करके इंगलैण्ड में लोग भलीभांति जानते है। इसलिये उनके बड़े बड़े राजनीतिज्ञ, ग्रफसर या नेता जो होते है वे किसी न किसी समय ग्रपने इलाके में इसी तरीके की स्थानीय संस्थाग्रों में काम करके ग्रागे बढ़ते है। तो ग्रापको यह मौका है कि ग्राप लोगों की सेवा के साथ साथ ऐसे लोगों को तैयार करें जो देश काम सम्भाल सकें ग्रौर सब से बड़ा काम है इस देश को सुरक्षित रखना, इस देश की एकता को रखना जिसमे देश मे एकता बनी रहे।

हो सकता है कि कुछ लोग ऐसे हो जिनका ग्रपने प्रान्त से, ग्रपनी भाषा से गहरा लगाव हो। मगर तो भी सब को यह याद रखना है कि ऐसे प्रश्नों को कितना स्थान दिया जाए। सब से ऊंचा स्थान सारे देश की एकता को ही मिलना चाहिए। तो मै ग्राजकल जहा जाता हू इस बात की ग्रोर लोगों का ध्यान दिलाता हू ग्रौर उनसे कहता हूं कि पहले की पीढी ने जो उठती जा रही है जिस में मै हू, हमारे भाई श्री प्रकाश जी है ग्रपने त्याग से, परिश्रम से इस देश को स्वतन्त्र बनाने मे ग्रपने जीवन को सफल समझा तो ग्राज की जो पीढी मौजूद है उसका परम कर्तव्य है कि स्वतन्त्रता को जबर्दस्त बनावे, स्थायी बनावे जिसमे जो काम हमारे लोगों की उन्नति के लिये हो रहे है पूरे हो सकें ग्रौर देश सुरक्षित रह सके, देश की एकता बनी रहे। मै ग्राशा करता हूं कि ग्राप सब भाइयो ग्रौर बहनों का ध्यान इस ग्रोर होगा ग्रौर ग्रापके जरिये से उसमें पूरी तरह मदद मिलती रहेगी जो देश के हित मे होगा ।

केवलानन्द स्मारक मंदिर का उद्घाटन

मैं आप विद्वज्जनों का आभारी हूं कि आपने स्वामी केवलानन्द महाराज स्मारक मन्दिर के उद्घाटन समारोह के लिये मुझे आमन्त्रित किया और संस्कृत तथा भारतीय साहित्य के प्रख्यात केन्द्र वाई की यात्रा का मुझे अवसर दिया। साहित्य निर्माण और सस्कृत के अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से वाई का जो महत्व है उसके सम्बन्ध मे कुछ जानकारी मुझे पहले भी थी। किन्तु आज और बहुत कुछ बातों का पता चला। वाई को चाहे दक्षिण काशी की उपाधि दी जाए अथवा किसी भी और नाम से पुकारा जाए, किन्तु यह असन्दिग्ध है कि कृष्णा महानदी के तट पर स्थित यह स्थान अध्ययन और विचार जगत में अपना विशेष स्थान रखता है। इसलिए यहा आना और आप सब विद्वानों के दर्शन कर सकना मैं अपने लिए सौभाग्य का विषय मानता हूं।

वाई की ख्याति और परम्परा के अनुरूप ही स्वामी केवलानन्द की जीवन-चर्या थी। संस्कृत के प्रचार और साहित्य के अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में उन्होंने जो विलक्षण कार्य किया वह इतना उच्च कोटि का था कि शिक्षानुरत वाई के लोग भी उसे विशिष्ट मानते है। संस्कृत के अध्यापन और अध्ययन के लिए ही उन्होंने प्राज्ञ पाठशाला की स्थापना की। सस्कृत भाषा तथा साहित्य को जीवित रखने में महाराष्ट्र का विशेष योगदान रहा है। यदि इस कार्य का संक्षिप्त विवरण भी तैयार किया जाए तो मैं नही समझता कि वाई नगर के योगदान और उसमें भी स्वामी केवलानन्द के व्यक्तित्व प्रयास तथा प्राज्ञ पाठशाला की तत्सम्बन्धी गतिविधि का उल्लेख किए बिना वह विवरण पूर्ण कहा जा सकेगा।

मुझे इस बात का अफसोस है कि विद्याध्ययन की वह परम्परागत परिपाटी जिसने स्वनामधन्य पं० राजाराम शास्त्री, बाल शास्त्री, गंगाधर शास्त्री, शिवकुमार शास्त्री, दामोदर शास्त्री, गंगानाथ झा, मधुसूदन झा जैसे उद्भट विद्वानों को उत्पन्न किया, वह अब लुप्त होती जा रही है। मैं चाहता हूं कि उसका लोप न हो और यह बहुत करके विद्वानों के प्रयास और उत्साह पर निर्भर है। मैं यह मानता हूं कि यद्यपि आप की परिस्थिति में उसके लिए पहले जैसा अनुकूल वातावरण नहीं है, तथापि महाराष्ट्र के विद्वानों को देख कर और विशेषकर

स्वामी केवलानन्द स्मारक मंदिर के उद्घाटन के समय भाषण; 13 दिसम्बर, 1960

स्वामी केवलानन्द के उदाहरण को समक्ष पाकर यह आशा अवश्य होती है कि आप उसे लुप्त न होने देंगे ।

स्वामी केवलानन्द केवल संस्कृत के पण्डित और अध्यापक ही नही थे । वे एक कर्मयोगी जननायक भी थे जिन्होंने जीवन भर राष्ट्र-सेवा के व्रत को निभाया । उनके द्वारा की गई प्राचीन भारतीय परम्परा की व्याख्या का आधार उनका पाण्डित्य और उनकी नैसर्गिक उदात्त भावना थी । वे प्राचीनता और आधुनिकता को परस्पर-विरोधी नही मानते थे । आधुनिक भारत की समस्याओं में उनकी गहरी रुचि थी और उनके प्रति उनका दृष्टिकोण लगभग वही था जो लोकमान्य तिलक और महात्मा गाधी का था । इसलिए उनकी सेवाओ से साहित्य ही नही बल्कि राजनीति और भारतीय समाज भी लाभान्वित हुआ । उस समय गांधी जी के साथ उन्होंने अप्रिय और अप्रचलित अछूतोद्धार जैसे कार्य का भी समर्थन किया और इसे आगे बढ़ाने मे कभी पीछे नही हटे । जिस कार्य में भी उन्होने हाथ डाला उसी को निष्ठा और लगन के साथ निभाया । यदि आज भी उनका जीवन और उनके द्वारा स्थापित सस्थाये इस क्षेत्र के जनगण को अनुप्राणित करती है तो इसमें कोई आश्चर्य नही । आत्मविश्वास और सतत प्रयास ही उनका सम्बल था ।

इस अवसर पर स्वामी केवलानन्द सरस्वती के प्रति मै अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और सहर्ष इस स्मारक मन्दिर का उद्घाटन करता हूं । मुझे पूर्ण आशा है कि यह स्मारक उस जाति को सदा जगाए रखेगा जिसे प्रदीप्त करने के लिए स्वामीजी ने अपना जीवन-दान दिया ।

कराड साइंस कालिज के भवन का उद्घाटन

गत पांच दिन से मै महाराष्ट्र का दौरा कर रहा हूं और इन दिनों मैंने पूना, कोलाबा और सतारा ज़िलों में कई शिक्षण संस्थाओं का निरीक्षण किया है और करीब छः सात शिक्षण समितियों के कार्य के बारे में बहुत कुछ जानकारी मुझे मिली है इन समितियों ने प्रारम्भिक से लेकर उच्च शिक्षा तक सभी स्तरो के शिक्षण के लिए संस्थाओं का जाल सा बिछा दिया है।

जैसा कि दो दिन हुए मैंने पूना मे कहा था, सार्वजनिक द्वारा शिक्षा प्रसार की पद्धति से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं दूसरी समितियों की तरह श्री शिवाजी एजुकेशन सोसायटी का कार्य भी बहुत प्रेरणादायक है इस सोसायटी का प्रारम्भ भी कर्मशील जननायको के उत्साह से हुआ, जिन नायको मे मेरे मित्र श्री यशवन्त राव चोहान, महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री, भी शामिल है इस सोसायटी का विशेष कार्य यह है कि इस ने विद्या और ज्ञान के प्रकाश को ऐसे ग्रामीण क्षेत्रो मे फैलाया है कि जहा शिक्षा की सुविधाये नही थी अथवा आसानी से उपलब्ध नही थी 15 वर्षों के अल्प समय मे श्री शिवाजी एजुकेशन सोसायटी को इस दिशा में जो सफलतायें मिली है वे निश्चय ही प्रभावोत्पादक है छः माध्यमिक स्कूलों के अतिरिक्त सोसायटी ने कराड मे एक साइंस कालेज भी स्थापित किया है इससे पहले कराड मे विज्ञान के शिक्षण की सुविधा उपलब्ध नहीं थी।

आप की सोसायटी के कार्य के सम्बन्ध मे मैं जितना सोचता हू मुझे उतना ही विश्वास होता जाता है कि अपने साधारण साधनो के बल पर जनता बहुत कुछ प्राप्त कर सकती है इस दिशा में सतारा ज़िला बहुत भाग्यशाली है क्योंकि इसमें दो शिक्षा समितियां काम कर रही है, एक कराड में और दूसरी सतारा मे सतारा की शिक्षा समिति के सम्बन्ध मे कुछ घण्टे बाद ही मुझे कुछ कहने का अवसर मिलेगा इन दोनों समितियों ने जिले के काफी बड़े भाग मे शिक्षा का प्रसार किया है और मध्यम वर्ग क हजारो बालकों तथा बालिकाओं के लिए शिक्षा की व्यवस्था की है।

मुझे खुशी है कि आर्थिक कठिनाइयों के कारण श्री शिवाजी एजुकेशन सोसायटी के काम में बाधा नही पड़ी ये कठिनाइयां यहा की जनता, कराड नगरपालिका और महाराष्ट्र सरकार की सहायता से दूर की जा सकती है कितना अच्छा हो यदि इस प्रकार का रचनात्मक कार्य जिसका प्रमुख लक्षण निस्स्वार्थ भावना से चुपचाप काम करना है अन्य सार्वजनिक क्षेत्रों तक भी विस्तृत किया जा सके,

---

प्रादेशिक प्रकाशन कार्यालय, पूना महाराष्ट्र सरकार कराड सांइस कालेज के भवन के उद्घाटन के समय भाषण; 14 दिसम्बर, 1960

जैसे रहने के घरों का निर्माण, छोटे उद्योग-धन्धे और खेती का काम इत्यादि मेरा यह विश्वास है कि इस प्रकार का काम जो सच्चे अर्थो में सहकारी है हमारे देश की समस्याओं का वास्तविक हल है मै यह सुझाव दूगा कि विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऐसी समितियां देश के प्रत्येक भाग में संगठित होनी चाहिएं यदि प्रत्येक ज़िले में नही तो कम से कम कुछ संख्या मे प्रत्येक राज्य मे ऐसी सार्वजनिक समितियो का सगठन हो जाए तो मै समझता हू उस से भारत मे सार्वजनिक जीवन को स्फूर्ति मिलेगी इससे रचनात्मक कार्य मे अभिवृद्ध होने अतिरिक्त जनसाधारण में उद्देश्य के प्रति जागरूकता और ठीक दिशा मै चलने की प्रेरणा भी मिलगी मुझे यह कहने की आवश्यकता नही कि इन प्रयत्नों से सरकार द्वारा चलाई जाने वाली सामुदायिक विकास और खेती मे सुधार की योजनाओ को भी बहुत सहायता मिलेगी ।

मै सतारा जिले के लोगो, विशेष कर कराड के लोगों को श्री शिवाजी एजुकेशन सोसायटी की सफलता पर बधाई देता हूं अधिकतर उनके साधनों पर भरोसा करके और श्रम को ही पुरस्कार माना उन्होंने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है मै यह कामना करता हूं कि यह सोसायटी दिनोंदिन उन्नति करे और मेरी यह प्रार्थना है कि यह सायस कालेज भवन जिस के उद्घाटन के लिए आपन मुझ निमन्त्रित करने की कृपा की है, कराड आस-पास के लोगों के बीच विद्या तथा ज्ञान की सरिता को प्रवाहित करने मे सफल हो ।

मुझे अफसोस है कि पढते पढ़ते बीच मे कुछ खासी आ गई और मेरी आवाज रुक गई और इसलिये मेरे भाई श्रीप्रकाश जी को कष्ट देना पडा । मै आप लोगो से इस त्रुटि के लिये क्षमा चाहता हूं और यह कह देना चाहता हू कि जब से महाराष्ट्र मे मै आया हूं, जो कुछ मैंने दखा है उससे जो मेरी धारणा थी वह और भी पुष्ट हो गई है। आप एक जागृत और सजीव जाति है और आप जिस काम को हाथ मे लेंगे उस काम को अच्छी तरह से पूरा कर सकेंगे। शिक्षा के काम में भी आपने एक नया तरीका अख्तियार किया है। खास खास स्थानो पर समितियां कायम करके उनको शिक्षण सस्थाओ का काम सौप देते है और वे समितिया उनके संचलान का भार लेती है। इसी तरह से मै समझता हूं कि सारे महाराष्ट्र में शिक्षण संस्थाओं का काम चालू है। और जगहों पर भी लोग इस चीज़ की नकल करें और काम करें तो काम बहुत आगे बढेगा। मै आपका और अधिक समय नहीं लेकर आप स माफी चाहता हूं ।

सतारा नगरपालिका द्वारा सम्मान

महामान्य राज्यपाल महोदय, माननीय मुख्य मन्त्री जी, सतारा नगरपालिका के अध्यक्ष एवं सदस्यगण, देवियो और सज्जनों,

आपने जिस प्रकार मेरा आदर और सम्मान किया है और जिस उत्साह के साथ आप इतनी बड़ी संख्या में यहा उपस्थित हुए है उसके लिये मैं आप लोगों का धन्यवाद मानता हूं।

25 वर्ष हुए होंगे जब मै महाराष्ट्र मे पहले-पहले बड़े दौरे पर निकला था और आप के इस नगर में भी आया था और शायद उसके बाद भी एक बार मैं यहां से गुजरा हूं। आज स्वराज्य प्राप्ति के बाद यह पहला सुअवसर है जब मैं आपके नगर मे आ सका हूं और महाराष्ट्र के और कई प्राचीन और मशहूर शहरों को देखने और पहचानने का मुझे मौका मिला है। जब से मै यहां आया हूं, इसके इतिहास का एक सुन्दर दृश्य मरी आंखों के सामने आ गया है और मै यह देख सकता हूं कि किस प्रकार से ऐसे समय में जब देश में चारों तरफ एक प्रकार से सुस्ती छायी हुई थी शिवाजी महाराज ने इस देश को जागृत किया और किस तरह से उन्होंने एक बहुत ही मामूली जगह से अपना काम आरम्भ करके उसे देशव्यापी काम बना दिया जिसको उसके बाद लोगों ने और भी बढाया। वह सारा इतिहास इन सब जगहों मे, पहाड़ों में, प्रत्येक गाव में, गांव के प्रत्येक घर-घर में इतिहास की चीजें आज भी मौजूद है और उस इतिहास को भी सामने रखकर जब हम लोगों ने देश की सेवा का काम आरम्भ किया था तो उस वक्त भी वही दृश्य, वही चिह्न हमारी आंखों के सामने था और उन आशाओं को लेकर उसी प्रकार के जोश से देश के लोगों ने महात्मा गान्धी के नेतृत्व में काम आरम्भ किया और ईश्वर की दया से उन्होंने एक ऐसा रास्ता भी निकाला जिस पर चलकर बिना खून बहाए हम ने स्वराज्य प्राप्त भी कर लिया।

अब 10, 12 वर्ष हो चुके है जब से हम अपने देश में स्वतन्त्र हैं और यह भारत एक बहुत बड़ा भारत है जितना बड़ा भारत कभी एकछत्र के नीचे

सतारा नगरपालिका द्वारा दिये गये मानपत्र के उत्तर में भाषण; 14 दिसम्बर, 1960

नही था। देश में हमारी सांस्कृतिक एकता न मालूम कितने हजार वर्षों से चली आयी है और कन्याकुमारी से हिमालय तक और पश्चिम मे अरब समुद्र से पूर्व मे बंगाल की खाड़ी तक देश संस्कृति की हैसियत से एक बना रहा है, कभी कोई बावजूद इसके कि बहुत प्रकार की भिन्नताएं रही है अलग नही समझा गया। मगर राजनीतिक एकता हमारे देश में नही थी। छोटे-छोटे राजवाडे, छोटे छोटे नबाव और उनके ऊपर चक्रवर्ती राजा या बादशाह रहे मगर एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक कानून, एक संविधान के नीचे, एकछत्र के नीचे सारे भारतवर्ष का आधिपत्य आज ही हमारे हाथो में आया है। इसलिये यह बहुमूल्य चीज़ जो हमको मिली है उसको सुरक्षित रखना और उस पर किसी प्रकार का आच नही आने देना हममें से प्रत्येक का कर्त्तव्य है और इस समय सबका यह काम है कि इस संदेश को सभी जगहों पर पहुंचावे।

भारत स्वतन्त्र हो चुका है पर भारत को अभी बहुत कुछ करना है। भारत मे गरीबी निकालनी है। भारत मे बहुत लोग जो निरक्षर है उनको अक्षरज्ञान देना है। देश मे बहुत तरह की बीमारियां फैली हुई है उनसे लोगो को बचाना है। सब लोगों को सम्पन्न बनाना है। यह बहुत बड़ा काम है। इसके लिये गवर्नमेंट की तरफ से तरह-तरह की योजनाएं बनायी जा रही है और उन योजनाओं को जारी किया जा रहा है। उन्ही योजनाओ मे से एक आपके जिले में कोयना की योजना चल रही है। आप यह समझें कि आप जितनी आशाएं उस योजना से लगाये हुए है वह ईश्वर चाहेगा तो पूरी होंगी। मै आप से कहना चाहूंगा कि उस योजना के अलावा और कई प्रकार की योजना शिक्षा प्रचार के लिये, खेती की उन्नति के लिये, लोगों को जो कुछ जानना चाहिये, सीखना चाहिये, जो कुछ उनको मिलना चाहिए सब का पर्याप्त प्रबन्ध करने का सरकारी काम हो रहा है। मगर सब कामों के लिये सब अधिक से आवश्यक बात यह है कि उनमें जनता का सहयोग हो, जनता अपनी तरफ से ऐसे कामों को हाथ में ले तभी वे काम सफल हो सकते है। मै यही कहने आया हूं और कहना चाहता हूं कि आप जिस उत्साह के साथ सभी जगहों पर अनेक प्रकार के शिक्षणालय खोल चुके है, समितियां कायम करके उनके द्वारा सभी जगहों पर विद्यालय, महा-विद्यालय, प्राइमरी स्कूल, अनपढ़ पुरुषों के लिये विद्यालय कायम करते जा रहे हैं, उसी प्रकार से खेती की तरक्की के लिये, उद्योग की तरक्की के लिये आप संस्थाएं कायम करें और उनको चलावें और तभी हर तरह से यह काम पूरा होगा।

मुझे यह देख कर बडी खुशी हुई कि लोगों को जो अक्षरज्ञान दिया जाता है वह कुछ दिनों के बाद किसी काम में नही लाने के कारण अक्षरज्ञान लुप्त हो जाता है। यहां आपने एक तरीका निकाला है। जिसमें जिनको आप थोड़ी बहुत शिक्षा दी है उनकी सेवा अपने केन्द्र में प्राप्त करायेंगे। इससे उनको सहायता मिलेगी। यह सब शुभ लक्षण है कि आप अपने भरोसे पर और बाहुबल पर भरोसा करके सब कामो में आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रहे हैं। मै आशा करता हूं और मै यही ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह आपको हमेशा बल दे कि आप जिस मनसूबे पर काम आरम्भ करते है उसको पूरा भी करें। महाराष्ट्र का जैसा इतिहास रहा है और महाराष्ट्र के लोगों का जैसा आपने बुद्धि बल का गौरव रहा है उसको जानते हुए किसी के दिल में संदेह नही हो सकता कि आप ऐसे काम को सफलतापूर्वक समाप्त कर सकेंगे। मै नगरपालिका का एक बार फिर भी आभार मानता हू और आप सब को धन्यवाद देता हूं और नमस्कार करता हूं।

वल्लभ विद्यानगर में

वल्लभ विद्यानगर में आने का मेरे लिये यह दूसरा अवसर है। कुछ वर्ष हुए जब मै पहले यहां आया था, उस समय विभिन्न महाविद्यालयों को एक सूत्र में बाधने के लिये यहां की समस्त शिक्षा-सम्बन्धी गतिविधि को विश्वविद्यालय का रूप दिया ही गया था। तब से इन चार-पांच वर्षों में सरदार वल्लभभाई विश्वविद्यालय की नीव सुदृढ रूप से रख दी गई है और अन्य शिक्षा केन्द्रो के समान शिक्षण, अनुसन्धान आदि का काम यहां सुचारू रूप से चलने लगा है। इस कार्य को शैशवावस्था में देख चुकने के बाद आज आपने मुझे इस संस्था को विकासोन्मुख होते हुए देखने का अवसर दिया, इसके लिये मै आभारी हू। शिक्षण और शिक्षा सम्बन्धी विषयो में आरम्भ से ही मुझे काफी रुचि रही है, किन्तु कई कारणो से, जिनमें कुछ भावात्मक और व्यक्तिगत भी हो सकते है। इस विश्वविद्यालय का मुझ पर विशेष अधिकार है। मै नही कह सकता कि आपके सहायतार्थ मैंने कोई ठोस कार्य किया हो, अथवा किसी भी प्रकार आपकी कठिनाइयो या उलझनों को सुलझाने में मैंने कोई सक्रिय योगदान दिया हो, किन्तु फिर भी इस संस्था के प्रति अपने विशेष लगाव और स्नेह के आधार पर मै यह कहने की अनुमति चाहूंगा कि आज यहा आकर, आपकी योजनाओ के बारे मे सुनकर और इस केन्द्र के विद्यालयो के चहुमुखी विस्तार को देखकर मुझे विशेष खुशी हुई है।

सरदार वल्लभभाई विद्यापीठ का प्रारम्भ किन परिस्थितियो में हुआ और किन आदर्शों तथा उद्देश्यो से प्रेरित होकर कर्मठ कार्यकर्ताओं और दानशील व्यक्तियों ने एक स्वप्न को साकार बनाया, इसकी कहानी आरम्भ से अन्त तक मुझे ज्ञात है। इसीलिए आपके उत्साहवर्धक वार्षिक विवरणों से सन्तोष और उल्लास का अनुभव होना स्वाभाविक है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए जो केन्द्र चुना गया, वह पहले और आज भी ठेठ ग्रामीण क्षेत्र है। बड़े शहरों के शोरगुल से दूर और आधुनिक नगरों की चमक-दमक से अपरिचित यह इलाका खेतीबाड़ी और छोटे उद्योग-धन्धों के लिये ही प्रसिद्ध रहा है। ग्रामीण जनता को आधुनिक शिक्षा की सुविधाएं उपलब्ध कराके यहां के नेताओं ने इस परम्परा को और भी सुदृढ़ तथा सुन्दर बनाने के उद्देश्य से गत

सरदार वल्लभभाई विद्यापीठ, वल्लभ विद्यानगर के समावर्तन के अवसर पर भाषण; 15 दिसम्बर, 1960

वर्षों मे यहां विभिन्न विद्यालयों की स्थापना की है। जैसा कि मै समझता हूं स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई पटेल का और इस विश्वविद्यालय के निर्माताओं का एक अभिप्राय यह भी था कि ग्रामीण और शहरी जीवन में समन्वय स्थापित किया जाए। हमारे देहात वर्षों तक उपेक्षा और अवहेलना के शिकार रहे और शिक्षा की सुविधाये अधिकतर शहरों तक ही सीमित रही, इसका पट फल यह हुआ कि देहाती और शहरी जीवन के बीच जो खाई विद्यमान थी वह बराबर बढती गई और अधिक गहरी होती गई। सरदार पटेल जो स्वयं एक ग्रामीण थे, किन्तु जो शहरी जीवन के उपकरणो गौर तत्सम्बन्धी सुविधाओं से अपरिचित नही थे, उन्हें हमेशा यह बात अखरती थी कि देश मे शिक्षा का प्रसार एकांगी हो रहा है। इसलिये वह प्राय. देहाती क्षेत्रों में उच्च शिक्षण संस्थाओ की स्थापना का स्वप्न देखा करते थे। उनकी कल्पना, और प्रारम्भ मे उनके पथ-प्रदर्शन और यहा के नेताओं की कर्मठता के परिणामस्वरूप आज हम इस महान शिक्षा संस्था के दर्शन कर रहे हैं। मुझे खुशी है कि यद्यपि सरदार वल्लभभाई विद्यापीठ दिनोंदिन प्रगति कर रही है और देश के अन्य विश्वविद्यालयों की तरह विस्तार और वृद्धि की ओर अग्रसर है, फिर भी समन्वय-सम्बन्धी अपने आदर्शों से आज भी आप अपना पथ आलोकित देखने को उत्सुक हैं। इसके लिये मै आप सब को जिनका किसी भी रूप में इस विश्वविद्यालय से सम्बन्ध है या पहले रहा है, हार्दिक बधाई देता हू।

मुझे यह जानकर कोई आश्चर्य नही हुआ कि इस विश्वविद्यालय के सभी विभागो मे आप स्थान की कमी महसूस करने लगे है। स्वाधीनता के बाद शिक्षा के प्रसार के लिये जनता की माग और उसे पूरा करने और कराने का उत्साह दिनोदिन बढ़ता जाता है। इसका कारण चाहे जनसाधारण की बढ़ती हुई सम्पन्नता हो, अथवा देश के नागरिकों की महत्वाकांक्षा, किन्तु यह सत्य है कि क्या देहातों की ओर क्या शहरो की सभी छोटी-बड़ी शिक्षण संस्थायें इस समय स्थान और साधनों की न्यूनता की शिकायत करती दीख रही है। इसमें उनका दोष नही बात यह है कि जिस तेजी से उच्च शिक्षा की माग में वृद्धि हो रही है, उस गति से शिक्षा के साधन जुटाना सम्भव नहीं। फिर भी इस क्षेत्र में जो प्रगति अभी तक हुई है और जो आगामी वर्षों में होने जा रही है, वह आश्चर्यजनक ही कही जायेगी। दूसरी बात यह है कि उच्च शिक्षा, खासकर इतिहास साहित्य आदि कला-सम्बन्धी विषयों की शिक्षा के सम्बन्ध में ऐसे संशय हमारे सामने है जिनका अभी तक समाधान नही हो सका है। उच्च

शिक्षा कितने विद्यार्थियों को दी जाय, और जिन्हें वह दी जाए उनका चुनाव किस प्रकार किया जाए उच्च शिक्षा का माध्यम क्या हो, यदि अंग्रेजी के स्थान पर दूसरा माध्यम किया जाए तो शिक्षण के स्तर अथवा मानक को बनाए रखने के लिए क्या किया जाए और उच्च शिक्षा तथा विद्यार्थियों के भावी जीवन में में ऐसा तारतम्य किस प्रकार बैठाया जाए जिससे शिक्षा और व्यावहारिक जीवन को अधिक निकट लाया जाए ? ये सभी प्रश्न ऐसे है जिनका शिक्षा के अतिरिक्त देश के विकास और पुनर्निर्माण सम्बन्धी समस्याओं से भी सम्बन्ध है। इसी कारण यह प्रश्न कुछ पेचीदा सा बन गया है, और जहा एक ओर इस सम्बन्ध में राष्ट्र का अन्तिम निर्णय होना अभी रहता है, वहा दूसरी ओर शिक्षार्थियों की संख्या उत्तरोत्तर बढती जा रही है और उपलब्ध सुविधाओं पर असाधारण दबाव पड़ रहा है ।

कुछ भी हो सामयिक समस्याये अथवा किसी भी प्रकार की उलझनों के कारण शिक्षा की प्रगति मे बाधा नही डाली जा सकती । यह ऐसा क्रम है जिसे रोकना न सम्भव है और न ही उचित । इसलिये इस दिशा में नयी संस्थाओं और नये विश्वविद्यालयो का राष्ट्र के हित मे स्वागत होना चाहिए । किन्तु में नही समझता कि जिन संशयों का मैने उल्लेख किया है उनमे से अधिकाश आपके विश्वविद्यालय पर लागू होते है । इस संस्था के निर्माताओ ने पूरी सूझबूझ से काम लिया है और आरम्भ से ही शिक्षण की ऐसी परिपाटी अपनाने का फैसला किया है जिसमें परम्परागत गुणों के साथ-साथ नवीन परिस्थितियों को अपनाने की क्षमता भी है । वास्तव मे सरदार वल्लभभाई पटेल विद्यापीठ ने समन्वयात्मक शिक्षण की प्रणाली का विकास करने की दिशा में जो कुछ किया है वह प्रशसंनीय ही शिक्षण नही बल्कि उससे उसी प्रकार की अन्य संस्थाओं का पथ-प्रदर्शन भी होगा ।

एक शिक्षण संस्था का निर्माण किन्ही आदर्शो को सामने रख कर किया गया हो और कैसी ही प्रणाली को उसने अपनाया हो, अन्ततोगत्वा उसका भविष्य बहुत कुछ अध्यापकों तथा छात्र-छात्राओं के सत्प्रयास पर निर्भर करता है । जब तक अध्यापकगण और विश्वविद्यालय का जलवायु छात्रों को सत्प्रेरणा नहीं दे सकता हमें शिक्षा के सभी प्रयास निष्फल समझने चाहियें । मुझे खुशी है कि इस संस्था में छात्रों को प्रेरित करने के लिये किसी भी प्रकार का अभाव दिखाई नहीं देता । यहां के प्रबन्धक और अध्यापकगण उच्च कोटि के व्यक्ति हैं और जिस महापुरुष का नाम इस संस्था से सम्बद्ध है वह आज भी स्वतन्त्र भारत के

लिये प्रेरणापुंज से कम नही। इसलिये मै समझता हूं यहा के विद्यार्थियों को उस भावना को ग्रहण करने में कठिनाई नही होनी चाहिये जो देशसेवा और राष्ट्रनिर्माण का आधार होती है। मै आशा करता हूं कि इस विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में शिक्षा पाने वाले छात्र सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन से बहुत कुछ सीखेंगे और इस प्रकार जहां वे अपने कर्तव्य का पालन करेंगे वहा इस विश्वविद्यालय के नाम को भी ऊंचा कर सकेंगे।

सरदार पटेल की मूर्ति का अनावरण

महामहिम राज्यपाल महोदय, श्री मोरारजी भाई, श्री रसिकलाल भाई, श्री बाबूलाल भाई पटेल, देवियो और सज्जनो,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि मुझे आज इसका सुअवसर मिला कि सरदार वल्लभ भाई पटेल को मैं इस स्थान पर आकर एक बार श्रद्धाजलि अर्पित कर सकू। यह नगर और यहा की विद्यापीठ सभी सरदार पटेल के नमूने है। वह रचनात्मक काम के भी ज्ञाता थे और जो कुछ रचनात्मक काम महात्मा गांधी जी के समय मे आरम्भ हुआ उसमें उन्होंने पूरा-पूरा हाथ बटाया और विद्या के सम्बन्ध में जो उनकी भावना थी उस भावना को मूर्तरूप देने के लिये यहां इस विद्यालय की स्थापना हुई और यह जानकर मुझे खुशी हुई कि यद्यपि इस काम के शुरू हुए बहुत समय नहीं बीता है, आज भी प्राय पांच हजार लडके लड़किया यहां शिक्षा पा रहे है और साथ-साथ अनेक प्रकार की शिक्षा यहां दी जा रही है। यहा खेती, बागबानी, इन्जीनियरिंग, वाणिज्य और दूसरे विषय जो किसी भी यूनिवर्सिटी में पढाये जाते है सब काम हो रहे है। इस प्रकार की यूनिवर्सिटिया तो इस देश मे कई जगहो पर है जहां इन विषयो में शिक्षा दी जाती है मगर यहा की विशेषता यह है कि इसका एक ऐसे स्थान पर जन्म हुआ है और यह ऐसे स्थान पर तैयार होकर काम कर रही है जो पहले एक विरान बन था जहां दस्यु, डाकुओं का राज था, जहां मामूली तौर से आराम से रहना भी कठिन था। यह स्थान साफ-सुथरा बनकर यहा न केवल छोटा-मोटा शहर बस गया है, यहां न केवल अनेक प्रकार के कालेज और स्कूल कायम होकर सभी विषयों में आज यहां शिक्षा दे रहे है बल्कि यह एक नमूने की तरह बन गया है। जैसा हम चाहते है कि सारे देश मे हो जाय कि ये सब शहरों की जो कमजोरियां है उनसे दूर रहें और साथ ही साथ ऊंचे से ऊंचे दर्जे की शिक्षा लोगो को मिल सके।

सरदार का नाम जब कभी कानों में पडता है तो उनके सारे जीवन का चित्र मेरे सामने आ जाता है जिसका यह सौभाग्य था कि 30 वर्षों तक कंधे से कंधा मिलाकर उनके साथ काम करे और आज हम यह देखकर खुश हो रहे है कि जहां एक तरफ उन्होंने शिक्षा सम्बन्धी रचनात्मक काम इतने बड़े पैमाने पर आरम्भ कराया जिसकी प्रगति दिन-प्रति-दिन उनके जाने के बाद भी होती

स्वर्गीय सरदार वल्लभ भाई पटेल की मूर्ति का अनावरण करते समय भाषण; आनन्द, 15 दिसम्बर, 1960

जा रही है और जहा के काम का दायरा बढ़ता ही जा रहा है वहां दूसरी तरफ राजनीति में भी जो उन्होने रचनात्मक काम किया उसका मुकाबला करने के लिये और किसी काम को हम नही बता सकते ।

जिस समय हमको स्वतन्त्रता मिली थी उस समय भारतवर्ष के अन्दर करीब 600 छोटे-मोटे रजवाडे थे । उनमें से कई इतने बड़े थे जो यूरोप के किसी भी देश के बराबर समझे जाते है मगर बहुत इतने छोटे भी थे जिनको चन्द बीघे का मालिक कहा जा सकता था । उन सभी को अंग्रेजो ने यहां से जाने के समय आजादी दे दी कि वे चाहे तो स्वतन्त्र होकर रहें, चाहे तो भारतवर्ष के साथ मिल जायं, चाहे तो पाकिस्तान के साथ मिल जायं । उनमे से बहुत ज्यादा लोगों ने तो यह निश्चय किया कि भारत के साथ मिल जायं । मगर भारत के साथ मिल जाना कहना आसान था मगर सचमुच मिल जाना कठिन था । भारत के साथ मिलकर अपना अलग प्रभुत्व कायम रखना बहुतेरों की मशा थी । बहुतेरे यह सोच रहे थे कि स्वतन्त्र होकर अपना एक स्वतन्त्र राज्य कायम कर लेगे । ऐसी दशा मे सरदार वल्लभ भाई पटेल के दिल मे यह आया कि अनगिनत रजवाड़ो का क्या किया जाय । मगर अपनी चतुराई से कार्यकुशलता से उन्होने काम निकाला । उन्होंने इस तरह से सब को भारत मे मिला लिया कि भारतवर्ष में और उनमे कोई भेद-भाव न रह जाय । जिस समय सविधान का काम आरम्भ किया गया था, उस समय इस बात की चिन्ता थी कि क्या किया जाय । अगर उनको छोड़कर अपनी मर्जी के मुताबिक अपना संविधान बनावें तो हमे यह डर था कि अगर उनका अलग-अलग संविधान बन गया तो फिर सारे भारत को एक साथ जोडना मुश्किल होगा । मगर यह सरदार वल्लभ भाई की चातुरी थी, कार्यदक्षता थी जिसने उनको अलग नही होने देकर सब को इस तरह से मिलाकर भारत में जोड़ दिया और बांध दिया कि वे किसी तरह से अलग नहीं हो सकते थे । पीछे चलकर उन्होंने कई ऐसे काम किये उनका नाम निशान भी नही रह गया । यह सरदार वल्लभ भाई का ही काम था कि उन्होने इस तरह से भारतवर्ष को एक बना दिया । आज कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक और पश्चिमी सागर से लेकर पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक जितने रजवाडे भारतवर्ष में थे सब भारत के साथ मिलकर एक हो गये और इस तरह से उनको आज एक ऐसा भारतवर्ष मिल गया जो एक संविधान के नीचे इतना बड़ा भारतवर्ष एक नही हुआ था । यद्यपि हमारे दो तरफ से दो अंग कट गये हैं और पाकिस्तान हम से अलग हो गया है, तो भी जो बाकी हिस्सा रह गया है वह इतना बड़ा भारत है जितना बड़ा भारत एक छत्र के नीचे पहले कभी नहीं आया था ।

अब यह हमारा और आपका काम है कि जिस काम को सरदार ने इतनी खूबी से और इतने कम समय में पूरा कर दिया उसको हम कायम रखें। जिस काम को उन्होंने पूरा नहीं किया चाहे जो भी कारण हो वह काम जहां का तहां रहा जैसे कश्मीर का मसला है। आप भी उसी धरती पर जहा सरदार ने जन्म लिया था और जहा की मिट्टी मे उन्होंने खेलकूद किया तैयार हो रहे है। मैं चाहूंगा कि आप मे से उसी प्रकार के लोग, उसी प्रकार के देशसेवक तैयार हों जो अपना स्वार्थ किसी प्रकार नही सामने रखकर देश के लिये जो कुछ हो सके करें।

मुझे इस बात का गर्व है कि मै सरदार को चलते-फिरते देख सका था और यह कहने मे मुझे एक प्रकार से प्रसन्नता और दु:ख भी है कि मै एक बार भी कभी न तो उनसे अलग हुआ और न हमारे और उनके विचारो में भेद हुआ। मगर दु.ख यह है कि जब काम हो गया और उनका काम पूरा हो रहा था तो हम लोगों से बिछुडकर वह चले गये। ऐसी अवस्था में हमारा और आपका परम कर्तव्य हो जाता है कि जिस भारतवर्ष की उन्होंने इस प्रकार से रचना की उस भारत को हम हर तरह से कायम रखे, उसकी स्वतन्त्रता को कायम रखें और जितनी तरह से उसकी तरक्की हो सकती है उसमें ऐसी तरक्की लाने की हम कोशिश करे।

यह मूर्ति देखने में सुन्दर है और बहुत ही अच्छी है। जैसा सरदार देखने में आते थे उनके ही रूप की है। यह खुशी की बात है। इसको बनाने वाले आप लोगों में से ही कलाकार है जिन्होंने इस मूर्ति को तैयार किया है। मैं आशा करता हूं कि जिस तरह से यहां के कलाकार ने इस मूर्ति को तैयार करके सरदार के रूप की लोगों को याद दिलाने में हमेशा के लिये कारगर हुए है, सरदार के जो दूसरे काम हुए उन कामों को उसी तरह से आप करके दिखलायेंगे कि उनका पूरा चित्र लोगों के सामने आता रहेगा।

मै और कुछ नहीं कहकर आप लोगों का बहुत ही आभार मानता हूं कि आपने मुझे यह मौका दिया कि मै अपनी श्रद्धांजलि सरदार को दे सका और इस मूर्ति का अनावरण कर सका।

नडियाड की कन्या विद्यालय में

राज्यपाल महोदय, श्री मोरारजी भाई देसाई, मणि बहन पटेल, भाइयो और बहनो,

मुझे इस बात की खुशी है कि मै इस रजत जयन्ती के अवसर पर यहां हाजिर हो सका हूं। इसलिये विद्यालय के नाम से मैं परिचित था। मगर यहां आकर इसको देखने और आप सब से परिचय प्राप्त करने का अवसर आज ही मुझे मिला है। इस विद्यालय के सम्बन्ध में किसी के भी और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है जब स्वयं पूज्य महात्मा जी ने इसकी नीव रखी और उनकी प्रेरणा, उनके बताये रास्ते पर चलने के लिये प्रोत्साहन उसको हमेशा मिलता रहा और इसके अलावा सरदार वल्लभ भाई पटेल, मोरारजी भाई देसाई और मणि बहन पटेल ने इसका पथ-प्रदर्शन किया।

मै समझता हूं कि हमारे देश के अन्दर आज स्त्रियों के बीच शिक्षा के सम्बन्ध में बहुत विचार चल रहे है और इसमे कोई संदेह नही है कि स्त्रियों के बीच शिक्षा का प्रचार बहुत जोरों से बढ़ता जा रहा है। मै एक ऐसे प्रान्त का रहने वाला हूं जहां पर्दा प्रथा बहुत थी और जहां पर महात्मा गांधी जी के जाने के बाद पर्दा उठाने का अन्दोलन आरम्भ हुआ था और आज अगर आप जाकर देखें तो आपको यह पता नही लगेगा कि वहां कभी पर्दा रहा होगा क्योंकि इतनी संख्या में स्त्रियां और लड़कियां स्कूलो और कालेजों में पढ़ती है। आज मै उस समय की याद करता हूं जब मै स्वयं पढ़ता था। उन दिनों में लड़कियों के स्कूल में पढ़ने की बात तो कभी सुनी भी नहीं जाती थी और जहां तक मेरे प्रान्त का सवाल है मैं नही जानता कि उस समय कोई भी लड़की पढ़ती होगी। मगर आज वह बात बिलकुल बदल गई है और कई शहरों में लड़कियों के लिये अलग स्कूल ही नहीं खुले है, मै समझता हूं कि लड़कियों के लिये कालेज भी खुल गये हैं।

तो यह तो एक समय का प्रवाह है जिसका स्रोत महात्मा गांधी जी नें बहाया और उस वक्त से आज तक इतने जोरों से यह काम बढ़ गया है मगर यह कहना कठिन होगा कि महात्मा गांधी जिस प्रकार की शिक्षा स्त्रियों को देना चाहते थे ठीक उसी प्रकार की शिक्षा आज के विद्यालयों में उनको मिल रही है। आजकल बहुत करके लोग यह कहा करते है कि स्त्रियों और पुरुषों के बीच में किसी प्रकार का भेद नहीं रहना चाहिये और इसलिये उनकी शिक्षा मैं भी किसी प्रकार के भेद

श्री विट्ठल कन्या विद्यालय, नडियाड की रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर भाषण; नडियाड, 15 दिसम्बर, 1960

की जरूरत नहीं है। मै बहुत पुराने विचार का आदमी हूं और इसलिये मै इस बात को पूरी तरह से नहीं मानता। इसका अर्थ यह नहीं है कि जो भी भेद स्त्रियों की शिक्षा में और पुरुषों की शिक्षा मे किया जाय वह इसलिये कि हम स्त्रियों को हेय समझते है या पुरुषों से कमजोर समझते है बल्कि इसलिये कि स्त्रियों और पुरुषों के जीवन के काम बहुत बातों में दो प्रकार के होते है और स्त्रियां चाहें तो पुरुषों के सभी कामों को कर सकती हैं मगर पुरुष चाहें तो स्त्रियों के सभी कामों को नहीं कर सकते है। इसीलिए स्त्रियों की शिक्षा में विशेषता होनी आवश्यक है और इसीलिए पूज्य महात्मा गांधी जी ने स्त्रियो की शिक्षा के सम्बन्ध में जो कुछ काम किया या बताया उसमें उस विशेषता को स्थान दिया गया।

हमारे देश की बहुत दिनों से चली आई परिपाटी के कारण स्त्रियों के बीच में कमजोरी की मात्रा अधिक देखने में थी और इसलिये महात्मा जी ने कहा कि उन दोनों चीजों को स्त्रियों मे से निकालना जरूरी है जिसमें वे सब काम घर मे या बाहर अच्छी तरह से चला सकें और उनमे आत्मनिर्भरता आ जाय जिसमें किसी पर उनको भरोसा नही करना पड़े और अपनी सुरक्षा वे स्वयं कर सकें। और स्त्रियों की शिक्षा भी उन्होंने बताई, शिक्षा पद्धति भी चलाई।

मुझे इस बात की खुशी है कि आपने उनके ही बताये हुए रास्ते पर चलकर शिक्षा का प्रचार किया है और आज जिस भवन का शिलान्यास मेरे हाथों कराया उसमें जैसा श्री मोरारजी भाई ने बताया, आशा की जाती है कि अध्यापिकाए, ऐसी निकलेंगी जो इस रीति-नीति को फैला सकेंगी और जहां-जहां शिक्षिकाओ की जरूरत होगी वहां के लिये शिक्षिकाएं तैयार कर सकेंगी। तो आपका जो काम हुआ है और हो रहा है और होने जा रहा है उसके सम्बध में मुझे केवल इतना ही कहना है कि जिस तरीके से और रीति-नीति से आप गान्धी जी के बताये रास्ते पर चलते जा रहे हैं आगे भी चलते जायं तो केवल इस विद्यालय का ही नही, केवल गुजरात का ही नहीं बल्कि सारे देश का कल्याण होगा।

शिक्षा के सम्बन्ध में मैं यही चाहता हूं कि स्त्रियां ऐसी तैयार हों कि जो घर या बाहर का कारबार हो उसको वे अच्छी तरह से कर सकें, निभा सकें और साथ ही जो आगे के लिये हमारे नागरिक बननेवाले हैं, जो आगे पीढ़ी आनेवाली है वह स्वतन्त्र विचारवाली, अच्छे विचारवाली पीढ़ी तैयार हो और ऐसी पीढ़ी तैयार हो जो देश को उन्नत कर सके और जिससे सब को लाभ पहुंच सके। स्त्रियों का विशेष काम यही होता है और है कि आगे की पीढ़ी को तैयार करने का भार अपने ऊपर सम्भाल लें और उनके ही द्वारा देश की जो नागरिकता है उसका विकास

हो सकता है और वह भावना लोगों के अन्दर आ सकती है जिसके द्वारा हम देश को उन्नत कर सकते है। इसलिये जो लोग यह कहते है कि स्त्री और पुरुष की शिक्षा में भेद नही होना चाहिये वे इस चीज को भूल जाते है कि भावी संतान को तैयार करने का काम बहुत करके स्त्रियो के हाथ में ही होना चाहिये।

हमारे देश मे तो नही पर दूसरे देशों मे यह प्रथा प्रचलित है कि बच्चों की शिक्षा का काम बहुत करके स्त्रियों के हाथ में ही होता है, छोटे-छोटे बच्चों के विद्यालय होते है उनको चलाने का भार बहुत करके स्त्रियों के हाथ मे ही होता है। ऐसा ही होना भी चाहिये क्योंकि माता ही ऐसे बच्चो की जरूरत को समझ सकती है और उनको कैसे पाल-पोस कर तैयार किया जाय वे ही अधिक जान सकती है। तो आपके विद्यालय से जो शिक्षिकाएं तैयार होकर निकलेगी वे इस देश के बच्चों को अपने हाथों में लेकर संभालेगी, तैयार करेगी जिसमे वे अच्छे नागरिक बन सके। तो मै यही चाहता हूं कि इस विद्यालय को उसी रास्ते पर चलाया जाय जिस रास्ते पर महात्मा जी ने आपको इसे चलाने का आदेश दिया था और मै यह भी चाहता हूं कि जो शिक्षिका तैयार हों वे उन्ही भावनाओं के अनुकूल कार्यक्रम के लिये तैयार किये जायं जिसमें उनके हाथों से वह काम पूरा हो सके।

मै और क्या कहूं। आप सब को बधाई देता हूं। आज की पुण्य तिथि पर जो सरदार वल्लभ भाई पटेल की जन्म-तिथि है आपने मुझे यहां बुलाया जिसमें उनको श्रद्धांजलि देने का मुझे मौका मिला और उनके बड़े भाई श्री विट्ठल भाई पटेल के नाम पर इस कन्या विद्यालय के इस उत्सव में भाग लेने का सुअवसर दिया इसके लिये आपका धन्यवाद करता हूं।

सरदार पटेल की देश को देन

श्रीमान् राज्यपाल महोदय, श्री मोरारजी भाई देसाई, अहमदाबाद नगर निगम के मेयर महोदय, बहनो और भाइयो,

आपने मुझे इस मूर्ति के अनावरण का काम सौंपकर मेरा बहुत मान बढ़ाया है। इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

इस शहर के लोगों के सामने सरदार वल्लभ भाई के सम्बन्ध में कुछ भी कहना मेरे लिये ढिठाई होगी क्योंकि उन्होंने न केवल उनको देखा है, उनके काम को अपने सामने आगे बढ़ते हुए देखा है और विशेष करके इस नगरपालिका की आज जो शक्ल है उसको उस दिन से जब उन्होंने इसके काम में हाथ बटाना शुरू किया आज तक किस तरह से नगरपालिका की और इस शहर की तरक्की हुई अपनी आंखों से उन्होंने देखा है, उनको सरदार वल्लभ भाई के सम्बन्ध में क्या कहा जाय। उनसे मैं यही कहूंगा कि वह एक ऐसी चीज हुई है कि भारतवर्ष के लिये जो कुछ सरदार ने किया उसका एक नमूना अपने जीवनकाल के शुरू में ही यहां दिखला दिया। यह अक्सर कहा जाता है कि कोई बड़ा आदमी हो और उसे बड़ा काम करना है तो समझना चाहिये कि अगर स्थानीय काम को, नगरपालिका के काम को ठीक से करके दिखला दे तो उसी से उसका पता चलता है कि वह आगे चलकर देश का बड़ा काम ठीक तरह से करके दिखला सकेगा और उसका उदाहरण सरदार से बढ़कर दूसरा नहीं हो सकता है। जिस समय उन्होने नगरपालिका के काम में भाग लेना शुरू किया उस वक्त जो इस शहर की हालत थी और आज जो हालत है उसे एक तरफ रखा जाय और दूसरी तरफ यह रखें कि देश के अन्दर स्वराज्य प्राप्ति के बाद से जो काम उन्होंने सम्भालना शुरू किया उस वक्त सारा देश ब्रिटिश शासन के अधीन ही नही था, उसके साथ-साथ यहां सैंकड़ों राजवाड़े थें जो अपनी जगह पर स्वतन्त्र हो काम कर रहे थे। उन सब को एक सूत्र में बांधकर सारे देश के लिये एक हार तैयार कर देना यह सरदार की चातुरी थी और उनकी चातुरी उनकी कार्यदक्षता का ही यह फल था।

यही नहीं उन्होंने यह भी किया कि जितने राजवाड़े थे उनका राज्य एक प्रकार से अपने हाथ में कर लिया और साथ ही साथ उनको भी खुश रखा। उसका पता आज लगता है। किसी राजा या नवाब से मुलाकात होती है और उनसे

लाल दरवाजा बाग में सरदार वल्लभ भाई पटेल की मूर्ति का अनावरण करते समय भाषण; 16 दिसम्बर, 1960

हालचाल पूछते है तो वे इस बात का दुख करते हैं कि सरदार नहीं रह, इसलिय उनको कोई पूछने वाला नहीं रहा। किसी का राज्य भी छीन लिया जाय और उसको इस तरह से खुश रखा जाय कि राज्य चले जाने के बाद राज्य छीन लेने वाले की कोई प्रशंसा करे वह सरदार का काम था, दूसरे किसी से मुश्किल था।

जितना काम उन्होंने हाथ में लिया उसको उन्होंने पूरा किया, जिसको उन्होंने अपने हाथ में नहीं लिया वह आज तक अधूरा है और न मालूम कब पूरा होगा। इसी से आप समझ सकते है कि वह कितने बड़े राजनीतिज्ञ थे और केवल उनमें ज्ञान और बुद्धि ही नहीं थी, काम मे वह एक कर्मठ पुरुष थे जिन्होंने हिन्दुस्तान को एक हिन्दुस्तान बना दिया। आज अगर दुनिया की हालत देखें तो हमको मालूम होता है कि कितना बड़ा वह काम हुआ। आये दिन किसी न किसी देश में कोई नया काम, कोई नया आन्दोलन, आन्दोलन ही नहीं, क्रान्ति की खबर हम अखबारों में पढ़ते है। आज, कल, परसों कितनी जगहों मे खून-खराबी हो चुकी है और हो रही है और कितनी जगहों में कितना खून बहा है, बह रहा है और न मालूम कितना कहां बहेगा। जब इस पर हम ध्यान देते है और इस पर ध्यान देते है कि पिछले 10, 12 वर्षो में यहा कोई गड़बड़ी नही हुई जिससे खून-खराबी हुई हो तो मालूम होता है कि अपने देश के अन्दर किस तरह से सरदार ने काम को संभाला कि उनका फल हम भोग रहे हैं। आरम्भ में जो देश के बटवारे के कारण एक भयंकर तूफान आया और कतनी खून-खराबी हुई उस पर ध्यान दे और दूसरी तरफ स्वतन्त्रता के बाद से किस तरह से इस देश का काम शान्तिपूर्वक चल रहा है इसका ख्याल किया जाय तो सरदार की महानता का थोड़ा बहुत आभास मिलता है।

यही नहीं, सरदार ने हमारे देश के रजवाड़ों को इस देश में ऐसा बना दिया कि वे अपनी जगह पर आराम करते रहे, जो उनकी प्रजा के साथ उनका सम्बन्ध था वह देश में घुलमिल जाय और वे भारतवर्ष के दूसरे लोगों के मुकाबले में बैठकर शासन मे काम लें यह बड़ा काम है।

दूसरे हमारे देश के शासन ने और कितने बड़े-बड़े काम पूरे किये है। हमने देखा है कि रजवाड़े हट गये। उसके बाद बड़े-बड़े जमींदार थे जिनके पास सम्पत्ति थी, जमीन थी। केवल कानून के जरिये जमींदारी प्रथा उठ गयी और उसके बाद जो बड़े-बड़े जमींदार थे, जिनकी लाखों-करोड़ों की आमदनी हुआ करती थी वे भी उसी भावना से देश में बसे हुए हैं। उनमें से बहुतेरों को कष्ट हो रहा है पर उसको वे सह रहे है और एक प्रकार से खलबली मच गयी थी

ग्रौर गड़बड़ी होने की चाहे सम्भावना भी रही हो मगर कहीं कुछ हुआ नही ग्रौर शान्ति से काम हो रहा है। इसी तरह से काम किया गया है ग्रौर किया जा रहा है जिसकी वजह से खलबली होना, कुछ लोगों मे विरोधाभास होना ग्रसम्भव या ग्राश्चर्य की बात नही है।

इन्ही सब का नतीजा हुआ कि हमारे देश मे हमने प्रजातन्त्र ग्रख्तियार किया ग्रौर इसको लोगों ने ग्रच्छी तरह से समझा है ग्रौर उसको लोग चलाना चाहते है। उसका मूलमन्त्र यही है कि प्रजा की राय से सब कुछ होना चाहिये ग्रौर प्रजा की राय मिल जाय तो उसे सब को मान लेना चाहिये। जिसको पसन्द नही हो उसको भी जब ग्रन्तिम निर्णय हो जाय तो उसको मानकर उसके मुताबिक चलना चाहिये। प्रजातन्त्र का ग्रर्थ यही है। कही भी इस बात की ग्राशा नही की जाती है कि सब लोग एकमत होकर रहेंगे ग्रौर खास करके एक बड़े देश में जहा करोड़ों ग्रादमी रहते हो वहां एकमत हो जायं, सभी एक-राय हो जायं यह ग्रसम्भव बात है। हम चाहते है कि देश में कितना भी मतभेद हो उसको प्रकट करने की पूरी ग्राजादी होनी चाहिये, सब ग्रपनी राय साफ-साफ कह सके। मगर राय कह लेने के बाद जो निश्चय कर दिया जाय उसको मान लेना ग्रौर प्रजातन्त्र का रूप देकर रखना होता है। इसको ही हम यहां प्रजातन्त्र के रूप में पूरी तरह से देख रहे है। जब हम ग्रौर देशों की स्थिति पर विचार करते है तो विश्वास होता है कि हमारे देश के लोगों ने इसको समझ कर ग्रपना लिया है। ग्रौर यह सरदार वल्लभ भाई की नीति का फल है कि इस बात को या किसी कौम को उन्होंने बिगड़ने नही दिया।

सरदार ने एक बार नही, बार-बार कहा कि वह एक सिपाही है। सरदार ने कहा था कि जो सेवा करता है वही सेव्य हो सकता है। सरदार ने इस चीज को ग्रच्छी तरह से समझा ग्रौर सेवा के जरिये से वे खुद सेव्य हो गय ग्रौर सब लोगो ने उनकी सेवा करना ग्रपना धर्म समझा। ग्रापने उसी निश्चय के ग्रनुसार यह प्रतिमा यहां खड़ी की है जिसको देखकर ग्रागे की पीढिया जिन्होने उनको चलत-फिरते देखा नहीं, ग्राकर इस प्रतिमा को देखें ग्रौर देखने से सरदार का कुछ न कुछ ग्राभास उनको हो सके तो एक बड़ी सेवा केवल इस नगरपालिका ग्रौर शहर की ही नहीं, इस प्रान्त की ही नही बल्कि सारे देश की होगी। उन्होंने देश की एकता कायम करने मे जो महत्वपूर्ण काम किया उसका थोड़ा बहुत ग्राभास इस प्रतिमा से हो जाय तो हम समझेगे कि इस प्रतिमा का कायम होना ठीक ही हुआ।

इस शहर की शक्ल ही इस बात को बताती है कि सरदार ने जो बड़ा काम इस शहर के लिये ग्रारम्भ किया ग्रौर उसको किया ग्राज भी हो रहा है। मै उस समय से इस शहर में ग्रा रहा हूं जब यहां एक ही पुल था, एलिस ब्रिज ग्रौर तीन चार मील चलकर लोग उस पार से इस पार पहुंचते थे। ग्रब तीन-चार पुल बन गये है ग्रौर हर तरह से शहर की तरक्की हो रही है। शहर का रूप भी बदल गया है ग्रौर इतनी तरक्की हो गयी है कि नदी के इस पार नही रहकर दोनों पार में बड़े-बडे हिस्से बस गये है। जैसे इस शहर के लिये सरदार ने एक छोटे काम से ग्रारम्भ करके उसके ग्रागे बढने का रास्ता प्रशस्त कर दिया उसी तरह से देश को एकसूत्र में बाधकर इस तरह से तैयार कर दिया कि वह ग्रागे दिन-प्रति-दिन तरक्की करता जाय। ग्रापने उनके यादगार में इस प्रतिमा को खड़ा किया इसके लिये ग्राप लोगों का धन्यवाद करता हूं ग्रौर इसलिये भी धन्यवाद करता हूं कि ग्रापने मुझे मौका दिया कि मै यहां ग्राकर उनको ग्रपनी श्रद्धांजलि दे सका।

गुजरात विद्यापीठ में

गुजरात विद्यापीठ मेरी अपनी ही संस्था है इसलिए इसमें आने का मेरे लिये यह पहला ही अवसर नहीं है। मैं बार-बार यहां आ चुका हूं और आपके इस दीक्षान्त उत्सव में भी भाग ले चुका हूं। पर जब-जब आता हूं, मुझे बड़ी खुशी होती है और कई पुरानी स्मृतियां मेरी आंखों के सामने आ जाती हैं। यहां आने के अवसर का स्वागत करने के कई कारण है, किन्तु सब से बड़ा खुशी का कारण मेरे लिये यह है कि इस विद्यापीठ को मैं एक वृक्ष के रूप में देखता हूं यह वही वृक्ष है जिसका पौधा स्वयं बापू ने अपने हाथ से लगाया था। उस समय उन्होंने जो आशाएं, इच्छाएं और अपने दिल की आकांक्षाएं व्यक्त की थी, इस अवसर पर उनका सुखद स्मरण हो आता है। सुख के साथ-साथ थोड़ी-सी वेदना भी होती है। कम से कम शिक्षा की स्थिति पर नये राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विचार करने की प्रेरणा तो मिलती ही है। इस दृष्टिकोण को मैं नया कहूं या पुराना यह निर्णय करना भी मेरे लिये आसान नहीं है। कितने ही वर्ष हुए बापू ने शिक्षा के जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था और जिनका उल्लेख आपने अपने विवरण में किया है, आज भी वे सिद्धान्त हमें ललकारते दिखाई देते हैं। मेरी वेदना का यही कारण है कि उन सभी सिद्धान्तों को अभी तक हम अपनी शिक्षा पद्धति में यथोचित स्थान नहीं दे पाये है।

विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास, शिक्षाक्रम में हिन्दी के लिए आवश्यक स्थान और सभी धर्मों के ज्ञान की प्राप्ति पर उन्होंने जोर दिया था। किन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात जो एक भविष्यवक्ता की भांति बापू ने कही थी वह यह थी कि शिक्षा की व्यवस्था करनेवालों को शहरों की अपेक्षा गांवों की तरफ अधिक देखना चाहिये, क्योंकि वास्तव में देश का आधार शहरों पर नहीं बल्कि गांवो पर है। इस निर्देश का कुछ प्रभाव हम लोगों पर पड़ा है और इधर देहातों में अथवा छोटे शहरों में शिक्षण-संस्थाएं स्थापित करने की प्रवृति देखने में आ रही है। कुछ राज्यों में ग्रामीण विश्वविद्यालय स्थापित भी हुए है अथवा उनकी स्थापना की बातचीत चल रही है। यह बात बहुत संतोषजनक है। पर यह सब कुछ होते हुए इस बात की अवहेलना भी नहीं की जा सकती कि बड़े शहरों में स्थित स्कूलों और कालेजों की ओर देहातों के विद्यार्थी जितनी बड़ी संख्या में आज आकृष्ट हो रहे है, इससे पहले इतने कभी नहीं हुए थे। यदि इन शिक्षण संस्थाओं का वातावरण और शिक्षण-पद्धति ऐसी होती कि

गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद में भाषण; 16 दिसम्बर, 1960

ग्रामीण विद्यार्थियों को शिक्षित बनाकर फिर से देहातों में रहने की प्रेरणा देती, तो इसमें किसी को आपत्ति न होती। दुर्भाग्य से स्थिति कुछ और ही है। अधिकांश ग्रामीण विद्यार्थी शहरी वातावरण में आकर देहातों की ओर से विमुख हो जाते हैं और अपने भावी जीवन के कार्यक्रम में वे गांवों को कोई स्थान देने को तैयार नहीं होते। आधुनिक शिक्षा-प्रणाली का यह एक प्रमुख दोष है। सारा दोष ही शिक्षा-प्रणाली पर मढ़ना भी उचित नहीं होगा। जीवन की सुविधाओं की दृष्टि से देहाती और शहरी जीवन में जो गहरी खाई पहले थी वैसी ही अब भी है। शहरी जीवन के सुधार के लिये जो अनेक आयोजन किये गये है अथवा किये जा रहे हैं उन्हें कोई भी देख सकता है, किन्तु हमारी विकास योजनाओं का ग्रामीण जीवन पर अभी तक वैसा प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ा है। इसलिये इस ओर विशेष ध्यान देने की आपकी योजना तथा व्यावहारिक कार्यक्रम का मै हृदय से स्वागत करता हूं।

गुजरात विद्यापीठ ने हिन्दी को आरंभ से ही अपने पाठ्यक्रम का एक आवश्यक अंग माना है। इसलिये यदि इस ओर आप और अधिक उत्साह से आगे बढ़ रहे हैं तो मेरे लिये यह आश्चर्य की बात नहीं। इस सम्बन्ध मे मैं दो शब्द कहना चाहूंगा जो आपके स्नातकों तथा हिन्दी भाषा-भाषियों—दोनों के लिये है। हिन्दी के स्वरूप अथवा क्लेवर के सम्बन्ध में कितना ही वादविवाद हो और कैसा ही मतभेद हो, उसकी हमें चिन्ता नही करनी चाहिये। महत्व केवल इस बात का है कि हिन्दी का ज्ञान प्राप्त किया जाय और ऐसा करने में यदि कोई अहिन्दी क्षेत्र अपनी प्रादेशिक शैली अथवा शब्दों का उपयोग करता है तो उसमें घबराने या चिन्ता की कोई बात नहीं है अपितु उसका स्वागत होना चाहिये। मेरी यह दृढ़ धारणा है कि यदि हिन्दी को अखिल-भारतीय भाषा होना है तो उसके आधार को भी हमें सार्वदेशिक रूप देना होगा। यह बात हमें अंग्रेज़ी के उदाहरण से सीखनी चाहिये। अंग्रेजी कई देशों की भाषा है। यदि उसका आधार इतना विस्तृत और व्यापक न होता कि वह सभी प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों को खपा सके तो संभवत: इंग्लैंड को छोड़ कर अंग्रेज़ी किसी भी दूसरे देश की भाषा आज न होती। सभी शैलियों, शब्दावलियों तथा विशेष प्रवृत्तियों को अपने भाषा-परिवार में स्थान देकर अंग्रेज़ी स्वयं समृद्ध हुई और फली-फूली। अंग्रेज़ों से जहां हम और बहुत सी बातें सीखने का दावा करते हैं, उनसे हमें यह बात भी सीखनी चाहिये और हिन्दी को एक व्यापक और वास्तविक रूप से अखिल-भारतीय भाषा मानना चाहिये। यही दृष्टिकोण इस सम्बन्ध में गांधीजी का भी था। इसलिये गुजरात विद्यापीठ के हिन्दी भवन का

उद्घाटन करके मुझे आज विशेष खुशी हुई और जो विचार मैंने हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में व्यक्त किये हैं, इस भवन के निर्माण से उन्हें और भी बल मिलेगा। मेरा विश्वास है कि हिन्दी-भाषी क्षेत्र भी इस दृष्टिकोण को अपनाएंगे और अन्य प्रादेशिक भाषाओं के सहयोग से हिन्दी को समृद्ध बनाएंगे।

गुजरात विद्यापीठ के स्नातकों को भी मैं बधाई देता हूं। उनसे हमें यह आशा है कि इन सब सिद्धान्तों और प्रणालियों को वे अपने जीवन में उतारेंगे और व्यावहारिक रूप से उनपर चलकर निजी उन्नति के साथ-साथ देश की उन्नति में भी हाथ बंटाएंगे। मैं उन्हें यह परामर्श दूंगा कि वे निजी विवेक से काम लें। कोई भी मार्ग हो, प्रारंभ में उसमें कठिनाइयां हो सकती हैं। किन्तु मेरा विश्वास है कि उन्हें अपने शिक्षण और विद्यापीठ से उपार्जित संस्कारों से जीवन में प्रेरणा मिलती रहेगी और जीवन के कार्यक्षेत्र में वे सफल होंगे। मेरी यह कामना है कि गांधीजी की विचारधारा से जो गुजरात में पूर्ण रूप से विकसित हुई, आपको उससे सत्प्रेरणा और मार्गदर्शन मिलेगा। विद्यापीठ के सभी विद्यार्थियों तथा शिक्षकों का भी मैं हृदय से अभिनन्दन करता हूं और इस अवसर पर सबको बधाई देता हूं।

कस्तूरबा आश्रम में

राज्यपाल महोदय, मन्त्री महोदय, श्रीमती सरला बहनजी, बहनों तथा भाइयो,

आज सबेरे-सबेरे आपके इस विद्यालय को और इस संस्था को देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई। मैं इसके पहले यहां कभी नही आया था और मुझे इसका पूरा पता नहीं था कि किस तरह से यहां काम चल रहा है। यहां आकर जो रिपोर्ट अभी श्रीमती सरला बहन ने कस्तूरबा समिति की तरफ से जो कुछ काम हो रहा है उसकी दी उसको सुनकर बड़ा संतोष हुआ।

कस्तूरबा एक ग्रामीण स्त्री थी जिनको आज के आधुनिक तरीके की शिक्षा कभी मिली नही थी। इस तरह से वह एक प्रकार से अशिक्षित थी और अक्षर-ज्ञान उनको बहुत ज्यादा नही था। मगर तो भी जो सच्ची शिक्षा होनी चाहिए वह उनके पास थी और उन्होंने सात समुद्र पार दक्षिण अफ्रिका मे माहत्मा गान्धी जी साथ जाकर जो कुछ वहा कारवाई की, उसमें पूरा हाथ बटाया और यह साबित कर दिया कि हमारे देश की स्त्रियां भी कही जा सकती है और क्या-क्या करामात दिखा सकती है। देश में लौटने पर भी जब तक वह जीवित रहीं महात्मा गान्धी के सभी कामों में साथ देती रही। इस प्रकार से उन्होंने एक आदर्श स्त्रियों के लिए अपने जीवन में ही कायम कर दिया और वह यह है कि किस तरह से सच्चरित्र रहकर स्त्री बलवती हो सकती है और किस तरह से देश तथा समाज की सेवा के लिए अपने को तैयार कर सकती है। कस्तूरबा सेवा समिति का यही ध्येय है कि इस तरह की स्त्रियां तैयार की जाय जो स्वयं सच्चरित्र हों, स्वयं योग्य हों, स्वय शरीर से बलिष्ठ हों और समाज की सेवा निर्भीकतापूर्वक और श्रद्धापूर्वक करती जायं।

हमारे देश में गावों की स्त्रियों की हालत शहरों की स्त्रियों की हालत से ज्यादा खराब रही है। मगर जब से अफ्रिका से लौटने के बाद गान्धी जी ने इस देश में काम शुरू किया, स्त्रियों को उन्होंने एक मरतबे बढ़ा दिया और इस तरीके से बढ़ाया कि उनके जिम्मे जवाबदेही का काम दिया गया। मै एक ऐसे प्रान्त का रहने वाला हूं जहां पर्दा प्रथा का बड़ा प्रकोप था और जहां अच्छे घरों की स्त्रियां घर से बाहर निकलती नहीं थीं और घरों के अन्दर पुरुषों से ही नहीं, स्त्रियों से

अहमदाबाद के समीप कोबा में श्री कस्तूरबा आश्रम में भाषण;

भी आपस में स्त्रियां पर्दा करती थीं। मैं एक उदाहरण देकर आपको बता देना चाहता हूं कि गान्धी जी के प्रेम में वहां स्त्रियों ने क्या काम किया।

1921 में महात्मा जी ने विदेशी कपड़े के बहिष्कार तथा मद्य के बहिष्कार का काम शुरू किया तो उन्होंने एक मौके पर कहा कि और सब काम तो पुरुष लोग करेंगे मगर शराबखोरी रोकने का काम और विदेशी कपड़े की बिक्री रोकने का काम में स्त्रियों के जिम्मे देता हूं अर्थात् जहां-जहां जरूरत हो दूकानों पर पहरा देकर स्त्रियाँ इस काम को रोकें। काम स्त्रियों ने किया। इसमें खतरा था क्योंकि जहां दूकानों पर पहरा लगाया जाय वहां कुछ लोग उद्दंड होकर स्त्रियों के साथ बुरा बर्ताव भी कर सकते थे और शायद कही-कही हुआ भी। मगर महात्मा गान्धी की इस घोषणा से इतना बड़ा असर सारे देश की स्त्रियों पर पड़ा कि वे निर्भय होकर इस काम में लग गयी। पटने शहर में एक किस्सा हुआ उसका उदाहरण देकर मैं आपको बतलाना चाहता हूं। जैसा मै ने कहा, वहां पर्दा जोरों पर था। मगर वहां स्त्रियां बाहर आयीं और महात्मा गान्धी के कहने के मुताबिक दूकानों पर जाकर पहरा लगाया। विदेशी कपड़े की जितनी दूकानें थीं उनमें जो कपड़ा था उसकी गांठ बंधावाकर दूकान से निकालकर गोदाम में रखवा देना उनके जिम्मे था। इस सम्बन्ध में मुझे एक किस्सा याद आता है। उन घरों की स्त्रियां जो कभी बाहर नहीं निकली थी घर से निकल कर दूकानों पर पहरा देने लगी। उनमें एक लड़की हाल में ही शादी होकर आयी थी। अभी वह अपने घर को भी ठीक से नही पहचानती थी और न घर से बाहर निकली थी। वह अपने आप घर पहुंच भी नहीं सकती थी। ऐसा उसका हाल था। हमारे यहां स्त्रीयां अपने पति का नाम नहीं लेती हैं। स्त्री पढ़ी-लिखी हो तो नाम नहीं लेकर लिखकर बता देती है। यह लड़की पढ़ी-लिखी भी नहीं थी और एक अच्छे घर की थी। उसको ऐसा उत्साह हुआ कि वह एक दूकान पर जाकर पहरे में खड़ी हुई। जो पहरे का काम करती थीं उन स्त्रियों को एक गाड़ी में बिठाकर दूकान पर पहुंचा दिया जाता था और जब पहरे का काम खतम हो जाता था उनको दूकानों से लेकर उनके घर पहुंचा दिया जाता था। एक दिन इत्तिफाक ऐसा हुआ कि वह लड़की एक दूकान पर खड़ी कर दी गयी पर वापस ले जानेवाला उसको घर पहुंचाना भूल गया। रात होने पर दूकानदार अपने घर दूकान बन्द करके चला गया पर वह दरवाजे पर अकेली खड़ी रही। यह बात सही है कि उस दूकान पर एक पैसे की बिक्री नहीं हुई और वह दूकानदार दूकान बन्द करके चला गया। मगर उस लड़की को पता नहीं था कि उसका घर कहां है और किस तरह से वह अपने

घर पहुंचे : वह चुपचाप खड़ी थी। जिनका इंतजाम था वह सज्जन अपनी स्त्री के साथ गाड़ी पर घूमते फिरते उस तरफ पहुंच गए तो उन्होंने देखा कि एक लड़की खड़ी है और दूकान बन्द है। जाकर पूछा तो उसने कहा कि कोई लेनेवाला नहीं आया। उन्होंने पूछा कि खुद क्यों नहीं चली गई ? तो उसने जवाब दिया कि उसको मालूम नहीं कि उसका घर किधर है। उन्होंने पूछा कि किस मुहल्ले में तुम्हारा घर है। तो वह भी वह नहीं जानती थी। पति का नाम पूछा तो वह बताना नहीं चाहती थी क्योंकि स्त्री अपने शौहर का नाम नही लेती। पति का नाम लिखने को उन्होने कहा तो वह लिखना भी नही जानती थी। बड़ी मुश्किल से पता लगाते-लगाते रात के 9 बजे वह घर पहुंची।

मैं ने यह इसलिए बताया कि महात्मा गान्धी जी की पुकार पर किस तरह से स्त्रियों में उत्साह आ गया था और किस तरह से वे निहत्थे जाकर दूकानों पर खड़ी होती थी। इसका फल यह हुआ कि दो-तीन दिनों के अन्दर पटना शहर में एक भी दूकान ऐसी नहीं रही जहां विदेशी कपड़ा बिकता हो। जितना विदेशी माल था उसको बांधकर दूकानदारों ने रख दिया और कांग्रेस के लोगों को बुलाकर गांठों पर मुहर लगा दी कि बिना उनकी आज्ञा के वे खोले नहीं। मैंने आपको बताया कि किस तरह से विदेशी कपड़े की बिक्री रोकने का काम स्त्रियों ने किया।

जब स्वतन्त्रता संग्राम का काम समाप्त हुआ और जब हमारे हाथों में संविधान बनाने का मौका आया तो बिना किसी के कहे ही स्त्रियों और पुरुषों को समान अधिकार दे दिया गया और आज स्त्रियों को वही हक है जो पुरुषों को है। इस तरीके से संविधान मे किसी किस्म का भेदभाव स्त्री और पुरुष में नहीं रखा गया। इतना काम तो हुआ मगर अभी नही कहा जा सकता कि सारे देश में सब स्त्रियां ऐसी हो गयी जिनको शिक्षित कहा जाय। अभी बहुत स्त्रियां अशिक्षित है। पुरुष भी अशिक्षित हैं पर स्त्रियां तायदाद में ज्यादा अशिक्षिता है। उनको तालीम देना, बताना, सिखाना और सब से अधिक उनको इस योग्य बनाना कि वे स्वतन्त्र रूप से सब काम कर सकें और निडर होकर जहां चाहें जा सकें यह काम बाकी है और कस्तूरबा की जो स्मारक निधि तैयार हुई उसने इस काम को अपने हाथ में लिया और सारे देश में यह काम चल रहा है। मुझे इस बात की खुशी हुई कि मैं यहां आकर देख सका। मै पहले यहां कभी नहीं आया था इसलिए यहां का काम देखकर मुझे और अधिक खुशी हुई।

मैंने यह भी देखा कि सब प्रकार से गान्धी जी के बताए रास्ते पर चलने का आप प्रयत्न कर रहे हैं। यहां पर गो सेवा का काम भी आपने प्रारम्भ किया है।

ग्रामजीवन में गोसेवा का ऊचा स्थान है। जब गाय है तो हमारी कृषि निभ सकती है। अगर बैल नहीं हो तो खेती नही। गाय नहीं हो तो बच्चों को दूध नहीं मिले। दोनों जरूरी है। जब तक उनका संवर्धन नही होता, उनकी तरक्की नहीं हो, उनकी तायदाद में तरक्की नही हो तब तक देश पूरी तरह से आगे नहीं बढ़ सकता। इसीलिए गो संवर्धन का काम उतना ही आवश्यक समझा जाता है जितना लोकशिक्षा का काम। इसीलिए आपने गो संवर्धन का काम अपने हाथ में लिया है और आज मुझे थोड़ा दिखला सके।

मै आप सब का बहुत ही आभारी हूं कि सबेरे-सबेरे आप सब ने दर्शन दिए और मुझे मौका दिया कि यहां का काम कुछ मै कुछ देख सका।

साबरमती में

आप लोग जिस काम में यहां लगे हुए हो वह बड़े महत्व का और जरूरी काम है। पूज्य महात्मा गान्धी अपने जीवनकाल में सोचते थे कि हाथ चर्खे में इतनी शक्ति आ जाय कि जो चलावे वह अपनी निर्वाह के लिए इस काम से पैदा कर सके और साथ ही कपड़ा भी जो इस सूत का बने वह मिल के बने कपड़े के मुकाबले मे किसी बात में कम नहीं हो। मैंने सुना कि यहां जो प्रयोग किया गया है उस प्रयोग के फलस्वरूप यहां पर जितना सूत बापू चाहते थे कि काता जा सके उतना काता जा रहा है और बापू जितना चाहते थे प्रयोग से इतना प्रमाणित हो चुका है कि उतना सूत निकल सकता है। अब काम बाकी यह है कि इस प्रकार का चर्खा देशमें काफी घरों में चालू हो जाए जिसमें जो आशा इससे कपड़े की, की जाती थी वह भी तैयार हो जाय। इसमे कुछ समय लगेगा क्योंकि यह अभी प्रयोग की अवस्था मे ही है। आप लोग जिस काम में लगे हुए है आप समझे कि वह देश का बड़ा काम है।

इस वक्त जहां तक मै देखता हूं खादी बहुत कठिन समय से गुजर रही है क्योंकि खादी की तरफ ध्यान कुछ कम हो रहा है और इसका कारण जो हमेशा रहता था वही कुछ विशेष रूप से कारगर है। वह कारण यह है कि आज चाहे हम कितना भी परिश्रम करें मगर जो खादी तैयार हो सकती है वह मिल के कपड़े के मुकाबले मे महंगी पड़ती है। इस चीज पर बापू ने नही विचार किया था ऐसी बात नही है। उन्होंने शुरू मे ही कहा था कि दाम मे मिल के कपड़े से खादी का मुकाबला करना चाहे तो वह मुश्किल है। मगर खादी के साथ जो भावना है उसको ध्यान में रखा जाय तो उसका दाम अधिक नही मालूम पड़ेगा। आज वह भावना कम होती जा रही है। इसीलिए खादी महंगी मालूम पड़ती है। जबसे स्वराज्य हुआ खादी की उत्पत्ति कई गुना बढ़ गयी है और बढ़ती जा रही है और जो पंचवर्षीय योजना बनी है उसमे उसके लिए काफी पैसे का प्रबन्ध कर दिया गया है। इसलिए इसका काम कम नहीं होने वाला है। वह चलने वाला है मगर मै तो यह चाहूंगा कि उस भावना को भी हम जागृत रखें और साथ ही साथ दाम को भी जहां तक कम कर सकें करने की तरफ ध्यान दे तभी खादी स्थायी रूप से टिक सकेगी। मगर दाम की कठिनाई पहले भी रही है और आगे भी रहेगी और उसका रहना एक प्रकार से स्वाभाविक है। यहां जो शोध का काम आप

अम्बर चर्खा केन्द्र में भाषण; साबरमती, 17 दिसम्बर, 1960

कर रहे हैं उसका भी जो उद्देश्य है वह यही है कि कम से कम दाम में अच्छी से अच्छी खादी हम कहां तक तैयार कर सकते है । अब जहाँ तक समय बचाने का सवाल है एक प्रकार से उस सम्बन्ध में प्रयोग सफल हुआ है और जितना आप 8 घंटे में पैदा करना चाहते थे वह आप कर सकेंगे, शायद कुछ ज्यादा ही कर सकेंगे। अब चर्खे का प्रचार करने का जो काम है वह बड़ा काम है। उसके लिए बड़े संगठन की जरूरत है इसको पैसे की कभी नही है और काम करने वाले भी लग गए हैं। हां अनुभव की कमी अभी भी है। जहां तक जो कुछ अभी हुआ है उसमें अभी खादी के लोग ही आए है, सभी दूसरे प्रकार के जैसे इन्जीनियरिंग सीखे लोग बहुत कम आए है। जो काम अभी तक हुआ है वह सराहनीय हुआ है और मै इसके लिए खास करके कृष्णदास भाई को बधाई देना चाहता हूं क्योंकि उनकी तपस्या से ही यह हो पाया है। एक तरह से नहीं, कई तरह से लगे रहकर इस काम को उन्होंने पूरा किया है। मुझसे वह छोटे हैं इसलिए मेरा उनको आशीर्वाद भी है और मेरी बधाई भी है।

आश्रमवासियों के सम्मुख भाषण

भाइयो और बहनों,

मैं जब कभी अहमदाबाद की तरफ आता हूं तो एक बार चन्द मिनटों के लिए ही सही, मैं यहां जरूर आता हूं और वह इसलिए नही कि यहां आकर आपको कुछ उपदेश करूं बल्कि इसलिए कि यहां के वातावरण में जो कुछ भी अभी भी मौजूद है उससे प्रेरणा ले सकू और मुझे इस बात की हमेशा खुशी होती है कि अभी भी आप उसी तरीके से काम चला रहे है जिस तरीके से पूज्य बापू चाहते थे कि काम चलाया जाय। मै आशा रखता हूं कि यह जो स्मारक है इस स्मारक को आप कायम रखेंगे जिसमें लोग यहा आकर गान्धी जी के जीवन का दर्शन पा सके और जहा के लोगों को देखकर, जहां के लोगों से मिलकर, जहां की स्त्रियो और बच्चों से मिलकर लोग प्रेरणा लेकर वापस जायं जिसमें दूसरी जगहो पर भी ऐसा वातावरण पैदा हो ।

मै और विशेष नही कहकर इतना ही निवेदन करूंगा कि आप सब मिलकर मुझे प्रेरणा दे, आशीर्वाद दे कि बापू की जो इच्छा थी उसे मै पूरा कर सकू और अगर मुझसे कोई सेवा हो सकती हो तो मै दे सकू ।

आश्रमवासियों के सम्मुख भाषण, साबरमती; 17 दिसम्बर, 1960

अहमदाबाद की दरगाह शरीफ में

हज़रात,

यह मुझे मौका मिला कि मै दरगाह शरीफ मे आकर चन्द लमहे यहां बिता सका इससे मुझे खुशी है। हिन्दुस्तान बहुत बड़ा मुल्क है। मुतफ़र्रिक जमातें इस मुल्क में रहती है, यहां मुतफ़र्रिक जबानें बोली जाती हैं, मुतफ़र्रिक रस्म रिवाजें यहां है। इन सब मुतफ़र्रिक चीजों के रहते हुए हिन्दुस्तान एक मुल्क है और ये मुतफ़र्रिक चीजें गोया अगल-अलग मणियां है जिनको मिलाकर एक खूबसूरत माला तैयार करके हिन्दुस्तान के गले में कुदरत ने पहना रखी है। हमारे लिए बड़ी खुशी की बात है कि आप लोगों से जो मुल्क की खिदमत में, इन्सान की खिदमत में अपना वक्त लगाते आए है मुलाकात हो सकी। मुझे खुशी है कि मैं यहां हाजिर हो सका। जब शफुद्दिन साहब का दावत आया तो मैंने खुशी से उसे मंजूर किया। मैं यहां आकर बहुत खुश हुआ और मैं आप सबको शुक्रिया अदा करता हूं कि आपने मुझे इसका मौका दिया।

दरगाह शरीफ, अहमदाबाद में भाषण; 17 दिसम्बर, 1960

भोंसला वेदशास्त्र महाविद्यालय में

इस महाविद्यालय के प्राचार्य महोदय तथा व्यवस्थापकों का मै आभारी हूं कि उन्होंने महाविद्यालय के अमृत महोत्सव के अवसर पर मुझे इस उत्सव के लिए निमन्त्रित किया। इस भाव को मैं औपचारिक रूप से ही प्रकट नहीं कर रहा हूं बल्कि वास्तव में विद्वज्जनों के दर्शन करना और उनके कार्य क्लाप से परिचित हो सकने के सुअवसर को मैं अपना सौभाग्य मानता हूं। मुझ जैसे लोगों के लिए जिनके हृदय मे संस्कृत वांगमय और धर्मशास्त्रों के प्रति गहरी श्रद्धा है किन्तु जो अन्य कार्यों मे व्यस्त रहने के कारण स्वयं इस साहित्य का अध्ययन करने में असमर्थ रहते हैं, यदा कदा आप जैसे विद्यानुरागी पंडितों का दर्शन महत्व का विषय है।

आपके विद्यालय की गणना भारत के पुराने संस्कृत के विद्यालयों में होती है। लगभग 80 वर्षो से आप संस्कृत के ही नहीं बल्कि वेदवेदांगों के अध्ययन तथा पठन-पाठन के द्वारा इस देश की विद्या तथा संस्कृति-सम्बन्धी परम्परा को जीवित रख रहे है। महाविद्यालय के संस्थापकों, विशेषकर अध्यापकों ने इस कार्य को कितनी लगन तथा त्याग से किया है, यह आपकी सस्था के इतिहास से पता लगता है। यही नही, आपने इस महत्वपूर्ण कार्य को प्रायः प्रतिकूल परिस्थितियो मे और उत्साहभंग करने वाले वातावरण के बावजूद सम्पन्न किया। अंग्रेजी सरकार के समय में संस्कृत तथा शास्त्रों के अध्ययन के प्रति सरकार का रुख यदि विरोध का नही था तो बहुत उत्साहवर्धक भी नही था। चाहे प्रत्यक्ष रूप से संस्कृत के अध्ययन और पठन-पाठन के लिए अभी बहुत न किया जा सका, परन्तु यह निर्विवाद है कि स्वाधीनता के साथ देश में जिस नवचेतना का संचार हुआ है उसी के फलस्वरूप संस्कृत भाषा तथा साहित्य की स्थिति पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। इन कुछ ही वर्षों में दो संस्कृत विश्वविद्यालयों की स्थापना देश में हो चुकी है। विश्व संस्कृत परिषद के प्रयत्नों से भी संस्कृत के प्रचार तथा पाठशालाओं में पाठ्यक्रम के नियमन की दिशा में ठोस कार्य हुआ है।

भारत की सांस्कृतिक एकता को हृदयंगम करने के लिए और आधुनिक भारतीय भाषाओं को समृद्ध तथा एक सूत्र में बद्ध करने के लिए संस्कृत भाषा

भौंसला वेदशास्त्र महाविद्यालय के अमृत महोत्सव के अवसर पर भाषण; नागपुर, 18 दिसम्बर, 1960

तथा साहित्य का जो स्थान है वह हमारे इतिहास का एक स्वतः सिद्ध तथ्य है। द्रविड़ परिवार की भाषाओं को छोड़कर शेष सभी भाषाओं का उसी से उद्‌गम हुआ है और उसी का साहित्य आज भी उनको ही नहीं द्रविड़ परिवार की भाषाओं को भी प्रेरित करता है। दक्षिण की भाषाओं पर भी यह प्रभाव कम नही पड़ा है। इसके अतिरिक्त, भारतीय विचारधारा, चिरसंचित परम्परा और संस्कृति के कलेवर के निर्माण में जितना योगदान संस्कृत का है उतना और किसी एक वस्तु का नही हुआ। इसलिए चाहे हम जीवन के ठोस व्यावहारिक पहलू से देखें अथवा भावात्मक दृष्टिकोण से, संस्कृति के बिना भारतीय इतिहास, साहित्य तथा चिन्तन की कल्पना करना कठिन है : इसलिए मैं समझता हूं कि जिन लोगों ने त्याग के व्रत का पालन करते हुए निस्वार्थ भाव से संस्कृत के अध्ययन की परिपाटी को बनाए रखा है, वे हमारी सांस्कृतिक विरासत के सरक्षक है और इसके कोषाध्यक्ष के समान हैं ; मेरा नम्र निवेदन है कि इसी श्रेणी में भोंसला वेदशास्त्र महाविद्यालय की गणना होनी चाहिए। आपके प्रयत्नों तथा सफलताओं पर मैं आप सब का अभिनन्दन करता हूं और अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

मरा विश्वास है कि आधुनिक काल की आवश्यकताओं के प्रकाश में आपने सभी श्रेणियों के पाठ्यक्रम तथा शिक्षाप्रणाली पर निश्चित ही पुर्नविचार किया होगा, क्योंकि सभी कार्य समयानुसार और परिस्थितियो के अनुकूल करने होते हैं। मुझे इसमें सदेह नही कि संस्कृत का अध्ययन अब दिनोंदिन लोकप्रिय होता जायगा। इस कारण आपके महाविद्यालय पर तथा ऐसी ही अन्य संस्थाओं पर विशेषदायित्व आता है। संस्कृत की ज्ञान-सम्बन्धी परम्परा को बनाए रखना और इस अपेक्षित लोकप्रियता को संतुष्ट करना आप ही लोगों का काम है। आप पंडितगण इस राष्ट्रीय दायित्व को सुचारू रूप से निभाते रहे और देश के साहित्यिक तथा संस्कृत भंडार को बराबर भरपूर करते रहें, यही मेरी आशा तथा कामना है।

आपके महाविद्यालय के अमृत महोत्सव के अवसर पर मैं संचालकों, छात्रों तथा अध्यापकगण को बधाई देता हूं और एक बार फिर आपके निमन्त्रण के लिए तथा संस्कृत के महत्व के सम्बन्ध में मुझे कुछ कहने का यह अवसर देने के लिए आप सब के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूं।

रुड़की नगरपालिका द्वारा सम्मान

राज्यपाल महोदय, नगरपालिका के अध्यक्ष एवं सदस्यगण, बहनों तथा भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आज जब मैं आपके इस शहर में आया तो सबसे पहले आप लोगों से मिलने का यह सुअवसर मिला। रुड़की में पहले भी आ चुका हूं और यहां की प्राकृतिक शोभा पहले भी देख चुका हूं। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि हिन्दुस्तान मे मशहूर जगहों में छोटी जगह होते हुए भी यह एक बहुत मशहूर जगह है और आज ही नहीं, बल्कि बहुत जमाने से जब यहां इन्जीनियरिंग कालेज कायम हुआ सारे देश भर के लोग उस इन्जीनियरिंग कालेज में पढ़ने के लिए आने लगे और यहां इन्जीनियरिंग कालेज से निकल कर सिर्फ उत्तर प्रदेश में हो नही बल्कि भारत के दूसरे हिस्सों में वे जाकर रहने और काम करने लगे आपके शहर की लोग जानने लगे। अब एक यूनिवर्सिटी भी कायम हो गई है जहा अभी मै जा रहा हूं।

देश इस वक्त एक प्रकार का से जरा मुश्किल रास्ते से गुजर रहा है। वह खास कर हिन्दुस्तान के लिए ही नहीं है बल्कि आज दुनिया मे एक ऐसी आवहवा फैल रही है जिसका असर इस पर भी होना स्वाभाविक है। हम इस देश के रहनेवाले इतना ही करे कि हम अपने स्थान पर ठीक तरह से रहें और अपने देश में शान्ति बनाए रखे और एक-दूसरे के साथ सद्भावना बनाये रखें और इस देश की तरक्की मे लगे रहे तो मै समझता हू कि यह सिर्फ इसी देस के लिए नही बल्कि सारी दुनिया के लिए एक बडी खिदमत होगी क्योंकि इस दुनिया में हम एक ऊंचा स्थान रखते हैं, इसलिए नहीं कि हम दौलतवन्द है बल्कि इस माने मे कि हमारी तायदाद बहुत बड़ी है। यहां पर हम जो कुछ सोचते हैं या करते हैं उसका असर औरों पर पडे बिना रह नही सकता। इसलिए यह जरूरी है कि हम इस देश में एक मिसाल रखे। मुतफर्रिक मजहब लोग, अलग-अलग जबान बोलनेवाले, अलग-अलग रस्म-रिवाज के माननेवाले लोग एक साथ मिलजुल कर खुशी से रह सकत है और एक-दूसरे की मदद कर सकते हैं। यह मिसाल सारे हिन्दुस्तान में कायम कर दें तो दुनिया के लिए यह एक बड़ो बात होती है कि इस मुल्क में एकमत है। यहां जबानों की

नगरपालिका, रुड़की द्वारा दिए गए मानपत्र के उत्तर में भाषण; 3 जनवरी, 1961

तायदाद काफी है । यदि सब चीजों पर ध्यान दिया जाय तो एक प्रकार से हिन्दुस्तान सारी दुनिया का एक छोटा नमूना है और हम अपनी जिन्दगी को एक नमूना बना सकें तो मुल्क के लिए और दुनिया के लिए उससे बढ़कर दूसरी और कोई चीज नही हो सकती ।

हम इसके लिए तैयार रहें कि जो इतना बडा मुल्क हमको मिला है इस मुल्क की हम हिफाजत करे, उसको सुरक्षित करे और यह देखे कि जितनी एकता होनी चाहिए उसमें किसी प्रकार का खलल नही आने पावे । हमारे लिए सबसे जरूरी चीज यही है कि हम अपनी एकता बनाए रखे और दुनिया के लोगो के लिए मिसाल कायम रखे, जो मुल्क स्वतन्त्र होकर एक सविधान के अन्दर, एक राज्य के अन्दर हमें मिला है उसको हमेशा के लिए सुरक्षित और कायम रखें ।

मै आप सब भाइओं और बहनों का बहुत शुक्रगुजार हूं कि आपने मुझे मौका दिया कि मै आपसे चन्द बाते कर सका । मै आप बहनों और भाइयों का ज्यादा वक्त नहीं ले सकता । मै आपको धन्यवाद देना चाहता हूं और मेरी ख्वाहिश है कि आपका यह शहर दिन प्रति दिन तरक्की करता जाय और जो कारखाने यहां कायम होते हों उनकी तरक्की भी दिन प्रति दिन होती जाय जिसमें आपका यह शहर सिर्फ यूनिवर्सिटी के लिए ही मशहूर न रहे ।

आपने जो मुझे भेंट दी उसके लिए भी मै बहुत शुक्रिया अदा करता हूं ।

रघुनाथ गर्ल्स कालेज मेरठ में

यह मेरे लिए सन्तोष और हर्ष का विषय है कि आपके निमन्त्रण पर मैं यहां आ सका और बालिकाओ की इस उन्नत संस्था को देख सका। तीस-बत्तीस वर्ष के समय में इस संस्था ने जो उन्नति की है वह वास्तव में असाधारण और प्रेरणादायक है। सम्भवत: इस अवधि में मेरठ नगर की जनसंख्या में भी बराबर वृद्धि होती रही है, किन्तु मैं समझता हूं कि रघुनाथ कालेज ने जो प्रगति की है उसका अनुपात उस वृद्धि से कही बढ़कर है। इसका श्रेय इस संस्था के संचालकों तथा व्यवस्थापको को है और इसके साथ ही यहां की अध्यापिकाओं और छात्राओं को भी। इस अवसर पर मै इन सभी को बधाई देना चाहूंगा।

यह खुशी की बात है कि जिस वातावरण में आपने शिक्षण का यह कार्य आरम्भ किया है और जिससे आप सदा प्रेरणा ग्रहण करते है उसका प्रमुख लक्षण उच्च आदर्श हैं—ऐसे आदर्श जो भारतीय परम्परा के अनुकूल है और जो व्यावहारिक जीवन के भी अनुरूप है। मेरी यह धारणा है कि बच्चों तथा बालक-बालिकाओं के शिक्षण मे जो स्थान अक्षरज्ञान तथा विद्याग्रहण करने का है वही स्थान समुचित वातावरण में आचरण तथा व्यक्तित्व के निर्माण के लिए परम्परागत उच्च आदर्शो को ग्रहण करने का है। साधारणत: शिक्षा का उद्देश्य यह समझा जाता है कि छात्र अथवा छात्रा में पढ़ने-लिखने की क्षमता पैदा हो जाय और वह पुस्तकों में उपार्जित ज्ञान को ग्रहण कर सके। किन्तु मैं समझता हूं शिक्षा की यह एकांगी परिभाषा है। सच्ची शिक्षा जहां हमें बाहय जगत को जानने और समझने के साधन उपलब्ध करती है वहां उसे मानव के आन्तरिक विकास का मार्ग भी प्रशस्त करना चाहिए। मानव अपनी अन्तर्हित शक्तियों को जागृत कर सके और तज्जन्य चेतना को निजी कल्याण के लिए तथा समाज के हित में लगा सके, यही वास्तविक शिक्षा का ध्येय होना चाहिए। प्राचीन भारत में ही नहीं, कालान्तर मे सभी उन्नत देशों में विद्योपार्जन का यही ध्येय रहा है। हमारे धर्मशास्त्रों और पुरातन साहित्य में विद्या को भौतिक उन्नति तथा आध्यात्मिक प्रगति का अनिवार्य साधन माना गया है। "विद्या समो नास्ति शरीर भूषणं" यह उक्ति उस विचारधारा का निष्कर्ष है। यह ठीक है कि जीविकोपार्जन के लिए और संसार में सफल तथा व्यवहारशील व्यक्ति के रूप में आचरण करने के लिए भी शिक्षा की

रघुनाथ गर्ल्स कालेज, मेरठ के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर भाषण; मेरठ, 3 जनवरी, 1961

उपादेयता कम नही, किन्तु यह लक्ष्य अधिकतर व्यक्तिगत है, जब कि शिक्षा का अभिप्राय मानव को समाज का उपयुक्त सदस्य बनाना भी है।

इसलिए शिक्षा ग्रहण करने के लिए केवल अच्छे भवन और पुस्तकों की ही आवश्यकता नहीं, उसके लिए अच्छे अध्यापकों और अध्यापिकाओं तथा अनुकूल वातावरण की भी उतनी ही आवश्यकता है। ऐसी परिस्थितियों में ही विद्यार्थी उचित अध्ययन तथा अनुशीलन कर सकता है और उन उच्च आदर्शो को आत्मसात कर सकता है जिनके बिना समस्त अध्ययन तथा अध्यापन अधूरा रहता है। यदि मै यह कहूं कि यह बात बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष रूप से लागू होती है तो इसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि बालकों के लिए यह कम आवश्यक है। बालिकाओं अथवा महिलाओं का समाज में एक विशिष्ट स्थान है। उस स्थान की, चाहे वह घर हो अथवा बाहर, कुछ सीमाएं है जिन्हें हम विशेषताएं भी कह सकते है। ये विशषताएं ही बहुत हद तक घर मे और समाज में महिलाओं के जीवन का निरूपण करती है। इन विशेषताओं को समझना और इनके अनुरूप अपने जीवन को ढाल सकना शिक्षा द्वारा ही सम्भव है।

जो कुछ भी आपकी संस्था के सम्बन्ध में मै जान सका हूं उससे मेरा यह विश्वास होता है कि यहां छात्राओं को बाहय जगत का ज्ञान प्राप्त करनेकी सुविधाएं ही उपलब्ध नही बल्कि अनुकूल वातावरण मे आत्मविकास की सुविधाये भी प्राप्त है। मुझे पूर्ण आशा है कि जो छात्राएं यहा से शिक्षा प्राप्त करके निकलेंगी वे पठन-पाठन के साथ-साथ जीवन के उच्च आदर्शो से भी ओत-प्रोत होंगी।

मुझे खुशी है कि रघुनाथ गर्ल्स कालेज दिनों दिन उन्नति के पथ पर अग्रसर है और छात्राओं की सुख-सुविधा के लिए जो कुछ भी किया जाना चाहिए इस संस्था के व्यवस्थापक लोग वह कर रहे है। आपकी विस्तार-सम्बन्धी योजनाएं स्तुत्य है और मेरी यह कामना है कि उन्हे कार्यरूप देने में आप सफल हों। इस समय शिक्षा के विस्तार का प्रश्न राष्ट्र के सामने एक जटिल समस्या है। इस समस्या को हल करने की दिशा में प्रत्येक प्रयत्न, चाहे वह बड़ा हो या छोटा, बहुत मूल्यवान है। इस दृष्झि से भी आप बधाई तथा आभार के पात्र हैं।

इस दीक्षान्त समारोह में जिन छात्राओं को उपाधिया मिली है मै उन्हें अपनी मंगलकामना तथा आशीर्बाद देता हूं और यह आशा करता हूं कि जिन उच्च विचारों तथा आदर्शो से वे अपने विद्यार्थी जीवन में प्रभावति हुई हैं उन्हें अपने भावी जीवन में भी उतारने में वे सफल होंगी।

आगरा की बलवंत विद्यापीठ की हीरक जयन्ती

आज बलवन्त विद्यापीठ की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर यहां आ सकने की मुझे बड़ी खुशी हुई है। यह हर्ष की बात है कि 1885 में एक छोटे से छात्रावास के रूप में आरम्भ होने वाली यह संस्था आज बढ़ कर एक विशाल विद्यापीठ बन गई है जिसके विभिन्न विभागों में तीन हजार से ऊपर छात्र पढ़ रहे है और जिसमें ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में उच्चतम शिक्षा और अनुसन्धान की सुविधाएं प्राप्त हैं।

इस अवसर पर हमें इस संस्था के आदि संस्थापकों का, स्वर्गीय राजा बलवन्त सिंह जी का, जिनका महान दान आज भी बलवन्त विद्यापीठ का मुख्य आधार बना हुआ है, तथा अन्य महानुभावों का जिन्होंने इस संस्था के विकास में योगदान दिया है, कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करना चाहिए। हमें हर्ष है कि उनके स्वप्न साकार हो सके और हमारी कामना है कि इसी प्रकार वर्तमान पीढ़ी की आशाए भी पूर्ण हों।

मुझे आपकी विद्यापीठ की पिछले कुछ सालों की गतिविधियों के बारे मे जानकर विशेष खुशी हुई है। आपने शिक्षा प्रसार, रचनात्मक कार्य और ग्रामीण जनता की सेवा, इन तीनों आदर्शों में जिस सफलता के साथ समन्वय स्थापित किया है वह मै प्रशंसनीय समझता हूं। यह ठीक है कि शिक्षा हर स्थिति मे और प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है, किन्तु वह शिक्षा जो अधिकतर बड़े-बड़े शहरों और नगरो तक ही सीमित रहे और जिसके आलोक से हमारे ग्राम जिनमें अब भी 80 प्रतिशत लोग बसते है, प्राय: वंचित रहे, उससे कोई भी कैसे सन्तुष्ट हो सकता है। दुर्भाग्य से गत 100 वर्षों से अधिक से शिक्षा के क्षेत्र में जो कुछ किया गया है उसका यही इतिहास है। इसलिए सत्ता भारतीय जन-नायकों के हाथ मे आते ही सब से पहले जिन बातो पर विचार किया गया उसमें शिक्षा का स्वरूप भी शामिल है। शिक्षा सम्बन्धी नीति मे जो संशोधन किए गए उसी का यह फल है कि ग्रामीण जनता की आवश्यकता पर भी ध्यान दिया जा सका। इस समय इस सम्बन्ध में कहीं भी दो मत नही कि नए शिक्षण केन्द्रों का झुकाव जहां तक हो सके देहातों की तरफ होना चाहिए। यही कारण है कि अब हम देहाती विश्वविद्यालयों की स्थापना की बात भी सुन रहे है और ऐसी

बलवन्त विद्यापीठ की हीरक जयन्ती के अवसर पर भाषण; आगरा, 17 जनवरी, 1961

कुछ संस्थाएं स्थापित भी हो चुकी हैं। ऐसी संस्थाओं में ही आपके विद्यापीठ की गणना होनी चाहिए। आपने शिक्षा के उच्च आदर्शों को सामने रखते हुए उसके व्यावहारिक पहलू की अवहेलना नहीं की है, और यही कारण है कि इस देहाती क्षेत्र में चलने वाली सभी गतिविधियों को इस विद्यापीठ से लाभ पहुंचा है।

वास्तव में सच्ची शिक्षा की कसौटी उसकी व्यावहारिकता है। वह शिक्षा जो विद्यार्थियों को उस वातावरण से विमुख बना दे जिसमे उनका जन्म और भरण-पोषण हुआ है और जो उन्हें सफेद कपड़े पहनने और दफ्तरों मे काम करने के अतिरिक्त और कुछ भी करने की प्रेरणा न दे सके उसके आदर्शों और दृष्टिकोण मे बहुत कुछ हेरफेर की जरूरत है।

उससे जहां शिक्षा सम्बन्धी सुविधाओ का दुरुपयोग होता है वहा शिक्षित वर्ग में बेकारी का दृश्य भी देखने को मिलता है। सच्ची शिक्षा वह है जो अधिकांश लोगों को जिस काम में वे लगें, अधिक दक्षता तथा सफलता से करनें और नई बातो को सीखने की प्रेरणा दें। मेरे कहने का यह अभिप्राय नही कि शिक्षित लोग किसी नए काम की ओर उन्मुख ही न हों। कुछ लोग तो ऐसे अवश्य होंगे जिन्हें अपने प्रशिक्षण के अनुसार बाहर काम खोजना होगा, किन्तु जो लोग ऐसा नहीं कर सकते हों, या जो देहातों में ही बने रहना आवश्यक समझते हों उन्हें अपने पूर्वजों के काम काज को अधिक क्षमता के साथ करने की स्फूर्ति शिक्षा द्वारा मिलनी चाहिए।

जब तक इस विचारधारा को भारत की जनता और सरकार, विशेष कर शिक्षा विभाग द्वारा आत्मसात न किया जायगा, देश से निरक्षरता का निराकरण एक समस्या बनी रहेगी। यही नही, हमारे देहातो की सुधार सम्बन्धी योजनाओं की सफलता बराबर सन्देह का विषय बनी रहेगी। हमारे ग्राम कैसे आकर्षक बनें, उनमें रहन-सहन की आधुनिक सुविधाएं किस प्रकार लगायी जाएं और ग्रामीण जनता के जीवन स्तर को किस प्रकार उठाया जाय, मै समझता हूं इन सब समस्याओं का सम्बन्ध बहुत हद तक सार्वजनिक शिक्षा से है। इस कार्यक्रम की सफलता देहाती जनता के सफल शिक्षा प्रसार पर निर्भर करेगी।

यह हर्ष का विषय है कि पिछले दस-बारह वर्षो मे शिक्षा के सम्बन्ध में देश के सभी भागों में अपूर्व उत्साह उमड़ा है। सौभाग्य से हमारे देहात भी इस उत्साह से अछूते नहीं रहे। ग्रामीण लोगों में शिक्षा सम्बन्धी सुविधाओं के लिए उतनी ही उत्सुकता है जितनी नगरों मे रहने वाले लोगों में, और जहां-जहां

देहातों में ये सुविधाएं उपलब्ध हैं वहां की संस्थाएं शहरी शिक्षण संस्थाओं की अपेक्षा कम लोकप्रिय नहीं । आपका विद्यापीठ इस बात का जीता-जागता प्रमाण है । मैं इस अवसर पर इस विद्यापीठ के सभी अध्यापकों तथा छात्रों को उनकी सफलता पर बधाई देना चाहूंगा । मेरी यह कामना है कि यह विद्यापीठ दिनोंदिन उन्नति करे और इसी प्रकार की संस्थाएं भारत के प्रत्येक जिले में फलती-फूलती दिखाई दें । इसी मे हमारे देश के जनसाधारण का कल्याण है और निःसंदेह यही हमारे राष्ट्र की उन्नति का प्रतीक होगा ।

आपने मुझे यहां आमन्त्रित किया और देहाती शिक्षा के सम्बन्ध मे कुछ कहने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं ।

क० मु० भाषाविज्ञान विद्यापीठ आगरा में भाषण

मुझे इस विद्यापीठ मे आकर और भाषाविज्ञान के इस आयोजन में सम्मिलित होकर बड़ी प्रसन्नता हुई है, क्योंकि इससे मुझे भारतीय भाषाविज्ञान के व्यापक स्वरूप को एक ही स्थान पर देख सकने का अवसर प्राप्त हुआ है। साथ ही विद्यापीठ के कार्यों और उपलब्धियों की झांकी भी मुझे देखने को मिली है।

भाषाविज्ञान भारत के लिए सर्वथा नया विषय नही है। यद्यपि ज्ञान की एक स्वतन्त्र शाखा के रूप मे इसके अध्ययन-अनुशीलन नें इधर यूरोप और अमरीका अग्रणी हो रहे है, फिर भी इस क्षेत्र में हमारे देश के पाणिनि और पतंजलि जैसे विद्वानो ने बहुमूल्य कार्य ही नही किया बल्कि उच्च आदर्शों की स्थापना भी की है। वर्तमान युग में भी पश्चिमी देशों मे भाषा-विज्ञान सम्बन्धी अनुसन्धान को संस्कृत के अध्ययन से प्रेरणा मिली है। यह बडे सन्तोष की बात है कि भारत इस दिशा मे फिर जागरूक हुआ है और अब हमारे यहां भी भाषाविज्ञान के स्नातकोत्तर अध्ययन की व्यवस्था की गई है। इस विषय मे शोध के लिए अभी बड़ी गुजाइश है और मुझे आशा है कि भारत इस युग मे भी पूर्ववत भाषा-विज्ञान-विषयक ज्ञान के संवर्धन मे पर्याप्त योगदान दे सकेगा। इसके व्यावहारिक उपयोग का कुछ उल्लेख अभी किया गया है। वास्तव मे देश के सभी राज्यो के विद्यार्थियो और प्राध्यापकों को इस विषय के विविध अगों के अध्ययन-अध्यापन और अनुसन्धान के लिए देश के कोने-कोने से लाकर एक ही स्थान पर एकत्र करके, एक ही कुटुम्ब के सदस्यो की भांति ज्ञान की उपासना मे निरत करने वाले ऐसे सत्रों का विशेष महत्व है। मेरी यह कामना है कि आप विद्वज्जनों के लिए सम्मिलित सत्प्रयास भाषाविज्ञान तथा भाषाओ के अध्ययन को अधिकाधिक सफल, सार्थक और समुन्नत बनाते रहें।

मुझे यह देखकर खुशी हुई कि आपका यह सत्र जिस विद्यापीठ में आयोजित हुआ है उसमें पहले से ही आगरा विश्वविद्यालय के तत्वावधान मे देशी-विदेशी भाषाओं का एक संगम-तीर्थ स्थापित है, जहा नए आदर्शो और नई प्रणालियो का प्रवर्तन किया जा रहा है। जब मुझे मालूम हुआ कि यहां हमारे देश की विविध भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था की गई है तब मैंने अनुभव किया कि यह सच्चे अर्थों मे हिन्दी का विद्यापीठ है और उसका नाम कितना सार्थक

कन्हैयालाल मुशी हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ (आगरा विश्वविद्यालय) में भाषण; आगरा, 17 जनवरी, 1961

है । हिन्दी अपने नाम का औचित्य सिद्ध करती हुई समस्त "हिन्द" या भारत की भाषा तभी कहला सकती है जब वह भारत की अन्य भाषाओं को इसी भांति अपना ले जिस भांति आपके विद्यापीठ में चेष्टा की गई है । प्रत्येक हिन्दी भाषी का यह कर्तव्य है कि वह देश की हिन्दीतर भाषाओं को समस्त भारतीय साहित्य की मूल्यवान सम्पत्ति समझे, उनका अध्ययन और आराधन करे । तभी हमारे अहिन्दी भाषी भाई हिन्दी को ममत्व की दृष्टि से देख सकते है और तभी हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलाने, उसे अधिक समृद्ध और व्यापक बनाने के लिए हिन्दीवालों की भाति अन्य भाषा-भाषी लोग इसी प्रकार पूर्ण सहयोग दे सकते हैं ।

अभी आपके इस विद्यापीठ में विविध भारतीय भाषाओं की पारिभाषिक शब्दावली के तुलनात्मक अध्ययन पर जो खोज चल रही है, उससे मै समझता हूं सभी भारतीय भाषाएं समान रूप से लाभान्वित होगी । शब्दों की यह एकता अथवा समरूपता हमारे देश के साहित्यिक और सांस्कृतिक सादृश्य की झलक दिखाती है । इस प्रकार के शोधकार्य समान तत्वों की खोज करके हमारे राष्ट्रीय साहित्य को एक सूत्र में बांध सकते है और विभिन्न भाषाओं को एक-दूसरे के और अधिक निकट लाने मे सफल हो सकते है ।

हिन्दी विद्यापीठ इस दिशा में प्रवृत्त है और योजनाबद्ध भावात्मक समन्वय का कार्यक्रम क्रियान्वित कर रहा है, यह प्रसन्नता की बात है । भाषाविज्ञान के इस सत्र से और ऐसे ही अन्य सत्रों से भारत के प्रबुद्ध मनीषियो को एक स्थान पर बैठकर विचार-विमर्श करने तथा समस्याओं के समाधान खोजने का अवसर मिलता है, इसलिए इनका स्वागत होना चाहिए । जो प्रशिक्षण आप विद्यार्थियों को दे रहे है, उसका भी अपना महत्व है । इससे सही निर्विकार दृष्टि का विकास होता है और अन्य बातों से ध्यान हटाकर विद्योपासना में लीन होने की प्रेरणा मिलती है ।

इस विद्यापीठ की ध्वनी-विज्ञान सम्बन्धी प्रयोगशाला को देखकर और इस दिशा मे आप जो प्रयत्न कर रहे है उन्हें जानकर मुझे विशेष प्रसन्नता हुई। उच्चारण भाषा का अविभाज्य अंग है और उच्चारण में समानता अथवा एकरूपता ऐसा आदर्श है जिसके औचित्य के सम्बन्ध मे मुझे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं । मैं आशा करता हूं कि आपके प्रयोगों और अनुसन्धानों के फलस्वरूप भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिन्दी के उच्चारण के सुधार और ज्ञान-वृद्धि में सहायता मिलेगी ।

यहा स्व० पंडित पद्मसिह शर्मा की कृतियों के संग्रह को देख कर भी मुझे बहुत खुशी हुई। शर्मा जी से मेरा परिचय बहुत पुराना था और अपने हिन्दी पठन-पाठन में आरम्भ काल में मुझे उनसे बड़ी प्रेरणा मिली थी। उन्हीं के कारण मैंने हिन्दी मे लेख इत्यादि लिखने भी आरम्भ किए, इसलिए एक प्रकार से मेरे हृदय मे उनका आदर शिक्षण के रूप में भी है। उनकी विचारपूर्ण और मुहावरेदार गद्य-शैली से मैंने बहुत कुछ सीखा है। हिन्दी साहित्य मे उनका स्थान ऊंचा है और उनके कई ग्रन्थ ऐसे है जो आज जनता के लिए अनुपलब्ध है। मै आशा करूंगा कि उनके इस साहित्य संग्रह से सबको लाभ होगा और शोधकार्य में भी यह ग्रन्थ सहायक होंगे।

अपने स्थापना काल के बाद कुछ वर्षो में ही इस विद्यापीठ ने जो कार्य किया है वह प्रशंसनीय है और उससे साहित्यिकों को बहुत सी आशाएं होने लगी हैं। मेरा यह विश्वास है कि आपके प्रयत्नों से जहां भाषा तथा साहित्य को लाभ पहुंचेगा वहां ये आशाएं भी पूर्ण होंगी। इस विद्यापीठ की स्थापना का श्रेय जहां उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी को है, वहां इसके सफल संचालन और इसकी उत्तरोत्तर उन्नति का श्रेय आगरा विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति श्री कालकाप्रसाद भटनागर को भी है। विद्यापीठ की ओर से उन्हे अभी जो अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया है, उस पर मै श्री भटनागर को बधाई देता हूं। मेरी यह आशा है कि वर्तमान उपकुलपति डा० माथुर इस कार्य को और भी आगे बढ़ाएंगे। मै विद्यापीठ के निर्देशक डा० विश्वनाथ प्रसाद को भी बधाई देता हूं जिन्होने अपने अनथक परिश्रम से इस कार्य को स्थायित्व प्रदान किया है। यहां के अन्य प्राध्यापकों और विद्यार्थियों को भी मै बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि इस विद्यापीठ में अध्ययन करने के पश्चात् नए विषयों की सहायता से अपने प्राप्त किए हुए ज्ञान के बल पर यहां के विद्यार्थी हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा के साथ-साथ आत्मनिर्भर भी हो सकेंगे और हिन्दी साहित्य के प्रसार व अभिवृद्धि में एक विशेष स्थान प्राप्त कर सकेंगे।

मुझे इस विद्यापीठ में आने का सुयोग मिला और हिन्दी के लिए यहां की अनेक विध गतिविधियों को मैं देख सका, इसके लिए मैं आप सब का आभारी हूं। सब भाषाओं के समन्वय से हिन्दी की उन्नति मैं अवश्य ही सहायता मिलेगी और इस समन्वयात्मक नीति से जिसका दर्शन मैंने यहां किया, अहिन्दी भाषी लोगोंको विशेष प्रेरणा मिलेगी, यह मेरा विश्वास है। इसी में सारे भारत की एकता

का आदर्श भी हम देख सकते हैं और स्थापित कर सकते हैं। आपके प्रयत्न सफल हों और आपका विद्यापीठ उत्तरोत्तर उन्नति करे यही मेरी आशा और प्रार्थना है। आप सबको मैं फिर से यह अवसर प्रदान करने के लिए धन्यवाद देता हूं।

स्वागत भाषण

महामहिष्मती और राजकुलमान्य श्रीमन्त,

भारतीय जनता, भारत-सरकार और अपनी तरफ से आप का स्वागत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। राजकुलमान्य, ड्यूक आफ एडिनबरा का भी वैसा ही हार्दिक सत्कार करते हुए मुझे बेहद खुशी है। राजकुमार ड्यूक हमारे लिए अजनबी नहीं है, दो साल हुए हमें इनका स्वागत करने का सौभाग्य हुआ था। हमें आशा है कि इस दौरे के दौरान में हमारे प्राचीन देश के बारे में आप अवश्य कुछ न कुछ जान सकेंगी। इतना ही नही, जिस लोकतंत्री, समृद्ध, नव-भारत का निर्माण करने में हम जुटे हुए है, उसकी झलक भी आपको मिल सकेगी, ऐसी हमे आशा है।

यूनाइटेड किंगडम और भारत के बीच दो सौ वर्षों तक घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। इस दीर्घकालीन सम्बन्ध ने हमारे मानस और हमारी संस्थाओं पर स्थायी असर छोडा है। अपने भारत प्रवास के समय शायद आपको इसके कई लक्षण मिलेगे और हमे उम्मीद है कि आप यहां घर जैसा ही महसूस करेंगी। राष्ट्रमंडल के सदस्य होने के नाते भारत और यूनाइटेड किंगडम के कई सामान्य ध्येय है, जिनमें सब से मुख्य शायद हम दोनों की अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना और शान्ति में आस्था है।

संसार के सब से पुराने लोकतन्त्र की प्रमुख होने के नाते ही नही, राष्ट्रमंडल की अध्यक्षा होने के नाते भी हम आपका स्वागत करते है। मुझे पूर्ण आशा है कि आप की इस भारत यात्रा द्वारा हमारे दोनो देशों के बीच चले आ रहे दोस्ती के सम्बन्ध और भी पक्के होंगे।

महामहिष्मती और राजकुलमान्य, मै आपका एक बार फिर दिल से स्वागत करता हूं।

हवाई अड्डे (पालम) पर स्वागत भाषण; 21 जनवरी, 1961

सांध्य भोज के अवसर पर भाषण

महामहिष्मती, राजकुलमान्य श्रीमन्त, सर्वमहामहिम, देवियो और सज्जनों,

महामहिष्मती और राजकुलमान्य, आप के इस देश मे आगमन के अवसर पर क्या मै भारतीय जनता, भारत सरकार और अपनी तरफ से आपका हार्दिक स्वागत कर सकता हूं ? आज से ठीक दो साल पहले राजकुलमान्य यहां पधारे थे, और आज बसन्त पचमी के शुभ दिन को बसन्त ऋतु का अग्रदूत माना जाता है, हमें एक महान राष्ट्र की महारानी और राष्ट्रमंडल की अध्यक्षा की हैसियत से महा-महिष्मती का हार्दिक स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है ।

यूनाइटेड किगडम के राष्ट्राध्यक्ष की यहा यह पहली यात्रा नही है । आज से ठीक ५० साल पहले आपके पितामह दिल्ली पधारे थे । पर उन दिनों स्थिति एकदम भिन्न थी । हम भूले नही कि आप के लोकप्रिय पिता के शासनकाल में ही हम स्वतन्त्र हुए । निश्चय ही मै अपनी ही नही बल्कि सब की तरफ से कह सकता हूं कि हम लोग उस दिन की प्रतीक्षा मे रहे है जब अपनी जनता और सरकार की ओर से इस देश की भूमि पर हम आपका स्वागत कर सके ।

सन् 1947 की घटनाओ ने हमारे दोनों देशो का रिश्ता बदल दिया है और भारतीयों तथा अंग्रेजों ने इस दीर्घकालीन सम्बन्ध की खुशगवार यादो को ही जीवित रखना उचित समझा है ।

घटनाओ को अनुकूल बनाकर ऐसा सुन्दर परिणाम प्राप्त करने में तथा अपने पूर्व-शासको से विग्रह के स्थान पर मैत्री का नाता जोडने मे जहा हमारे नेता और पथप्रदर्शक महात्मा गाधी का हाथ था वहा इसका कारण यह भी था कि अंग्रेजो ने बड़ी खूबसूरती और सच्चाई के साथ और ठीक समय पर भारतीयो के हाथ में राज सौप दिया ।

सन् 1947 से पहले भी जब गाधीजी स्वातन्त्र्य संग्राम का नेतृत्व कर रहे थे, उनके हृदय में कटुता और द्वेष का लेशमात्र भी न था । तभी तो यह महान परिवर्तन सम्भव हुआ । इस अवसर पर आज मै फिर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहूंगा ।

यूनाइटेड किगडम के साथ भारत के जो सम्बन्ध रहे है वे हमारे पिछले दो सौ साल के इतिहास का आवश्यक अंग है, और कई दिशाओं में अंग्रेजी सम्पर्क का हमारे

सांध्य भोज; के अवसर पर भाषण; 21 जनवरी, 1961

देश पर स्थाई प्रभाव पडा है। महात्मा गांधी ने हमें सिखाया कि राष्ट्रीयता संकुचित भावना मात्र बन कर ही न रह जानी चाहिए। इसी आदर्श से प्रेरित हो कर हमने अपने सम्बन्धो को और भी संवारा और निखारा है। अंग्रेजी भाषा और साहित्य का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है, और अंग्रेजी परम्परा ने हमारी विचार-धारा को किसी हद तक रंगा और प्रभावित किया है। आंग्ल-विधि-शास्त्र की छाप आज भी हमारे कानून-कायदों पर देखी जा सकती है। सब से बढ़कर, अपने देश की परिस्थितियों के अनुसार, अपनी राजनीति और शासन में हमने अंग्रेजी पद्धति अपनाई है। महामहिष्मती, मैं विश्वास से कह सकता हूं कि इस दौरे के दौरान में आप कई तरह से यहां घर जैसा महसूस करेंगी।

जिस सद्भावनापूर्ण वातावरण में सन् 1947 मे सत्ता का हस्तांतरण हुआ, उस का सब से चमत्कारी परिणाम यह है कि राष्ट्रमडण्ल का इस सुन्दर ढंग से विकास हुआ कि अपनी-अपनी सार्वभौम सत्ता को अक्षुण्ण रखते हुए भी हमारे दोनों देश इसके सदस्य बने रह सके। सामान्य मामलों पर विचार-विमर्श करने वाले बहुजातीय संगठन की हैसियत से ही राष्ट्रमण्डल ने प्रमुखता प्राप्त की। इसी रूप में राष्ट्रमण्डल सदस्य-राष्ट्रों के सम्बन्ध सुदृढ़ बनाने में समर्थ हुआ, और यदि मैं यह कहने का साहस करूं कि संसार के सामने राष्ट्रमण्डल ने एक मिसाल कायम की है, तो अनुचित न होगी। यह शायद आज संसार की परस्पर-निर्भरता का सबसे उपयुक्त और अत्यन्त प्रभावकारी संगठित रूप है। हम सब का एक ही दृष्टिकोण नही है, और न हमें अपने मतभेदों को कम करके दिखाने की आवश्यकता है। राष्ट्रमण्डल के सदस्यो पर किसी प्रकार का दबाव नहीं, बल्कि यह एक ऐसी घनिष्ठता कायम करता है, जो केवल राजनयिक औपचारिकता के बस की बात नहीं है। यह बड़ी बात है कि आजकल की इस शोरगुल की दुनिया में हम अपने मतभेद दोस्ताना और गैररस्मी तौर पर ज़ाहिर कर लेते हैं। समानता के आदर्श पर आधारित यह राष्ट्रमण्डल परस्पर लाभकारी ही सिद्ध हो रहा है।

महामहिष्मती, इस यात्रा में जहां आपको हमारी प्राचीनता की झांकी मिलेगी, वहां आप हमारे उस महान् प्रयास का भी अन्दाज़ लगा सकेंगी, जो हम देश को समृद्ध बनाने के लिए कर रहे हैं। सचमुच यह एक बड़ा काम है। हम यूनाइटेड किंगडम और राष्ट्रमण्डलीय देशों की, जिनकी आप अध्यक्षा हैं, जनता और सरकारों के कृतज्ञ है, जो हमें उदारता से सहायता दे रही हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी सहायता के लिए हम यूनाइटेड किंगडम की खास तौर से सराहना

करते है। इस क्षेत्र में यूनाइटेड किंगडम की गणना संसार के नेताओं में है। दूसरी दिलचस्प जगहों के साथ-साथ, आप दुर्गापुर भी पधारेंगी। दुर्गापुर का लोहे-इस्पात का कारखाना बराबर बढ़ते हुए भारत-ब्रिटिश सहयोग का सुन्दर प्रतीक है।

महामहिष्मती, मै निश्चय से कह सकता हूं कि आपकी इस यात्रा से यूनाइटेड किंगडम और भारत की दोस्ती और भी फले-फूलेगी। मै आपको विश्वास दिलाता हूं कि भारत के लोग अंग्रेज़ों को दोस्ती की नज़र से देखते है, और उनकी हार्दिक कामना है कि आप बरसों तक खुश और निरापद रहे और इस उच्चपद को शोभित करती रहे।

सर्वमहामहिम, देवियो और सज्जनों, आइए अब हम सब राष्ट्रमण्डल की अध्यक्षा महारानी ऐलिज़ाबेथ, और राजकुलमान्य श्रीमन्त के स्वास्थ्य और कल्याण के लिए अपनी शुभ कामनाएं प्रकट करें।

प्रवासी भारतीयों के प्रति संदेश

आज इस राष्ट्रीय पर्व के अवसर पर स्वभावतः हमारा ध्यान आप सब लोगों की तरफ जाता है जो इस समय हमारे बीच नही है ।

मै पहले आपसे अपने देश की स्थिति के सम्बन्ध मे कुछ कहना चाहूंगा । शायद आप लोगों को मालूम है कि हम इस समय अपनी दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्तिम चरण में है और शीघ्र ही तीसरी योजना को हाथ में लेने जा रहे हैं । पहली दो योजनाओं को कार्यरूप देने के सम्बन्ध में जो हमे अनुभव है वह बहुत उत्प्रेरक है । राष्ट्रीय विकास के बहुत से क्षेत्रो मे, खासकर, बड़ी जल-विद्युत योजनाओं, सामुदायिक विकास, लोहा तथा इस्पात जैसे मौलिक उद्योगों, छोटे घरेलू धन्धों की स्थापना की दिशा में हम बहुत कुछ आगे बढ़े है । चाहे कुछ भी कठिनाइया हमारे रास्ते में आयें, हम अपने रचनात्मक कार्य को पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्प है । मुझे विश्वास है कि जब कभी भी आपका अब भारत आना होगा आपको यहां कई एक सुखद आश्चर्य देखने को मिलेंगें ।

संसार की आज जैसी स्थिति है उसमें, सम्भव है, आपमे से बहुतो को यदाकदा अपने आपको परिस्थितियों के अनुकूल करना पड़ता है । मुझे इसमें जरा भी शक नहीं कि ऐसी स्थिति में आपका व्यवहार सदा उचित होगा । जिस देश में आप रह रहे है उसका हित आपके विचारों में सर्वप्रथम रहना चाहिये । इसके अतिरिक्त, यह भी न भूलिये कि प्रत्येक भारतीय प्रवासी एक गैरसरकारी राजदूत के समान है और उसके व्यवहार से ही विदेशों के लोग भारत के सम्बन्ध में अपना मत निर्धारित करते है ।

अब मै आप सब प्रवासी भाइयो और बहनों का ग्यारहवें गणतन्त्र दिवस के शुभ अवसर पर अभिनन्दन करता हूं । यह नव वर्ष, जो आज आरम्भ हो रहा है, हम सब के लिये सुखद और कल्याणकारी हो, यही मेरी कामना है ।

जयहिन्द

प्रवासी भारतीयों के लिये संदेश; 25 जनवरी, 1961

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर भाषण

कल हमारा गणतन्त्र बारहवें वर्ष में प्रवेश करने जा रहा है, और इस अवसर पर मेरा हृदय हर्ष और आशा से ओतप्रोत है। इसमें शक नहीं कि हमारा गणतन्त्र अभी नन्हा सा है, किन्तु हमारा राष्ट्र प्राचीन है। 1950 में सर्वाधिकार सम्पन्न प्रजातन्त्रात्मक भारतीय गणराज्य की स्थापना निःसन्देह बहुत महत्वपूर्ण घटना है, जो उत्तर और पूर्व में हिमालय से लेकर दक्षिण और पश्चिम में समुद्र तट के बीच स्थित हमारी मातृभूमि के हजारों वर्ष पुराने इतिहास में आधुनिक नवयुग के उदय का प्रतीक है।

भारत के इतिहास में ये 11 वर्ष एक क्षण भर के समान है, किन्तु हमारे लिये इस काल का बहुत महत्व है। भारत के इतिहास में यह वह वेला है जब हम अपने देश मे प्रजातन्त्रात्मक राज्य की सुदृढ़ नींव रख रहे है, जिसके मौलिक सिद्धान्त मानवीय गौरव और व्यक्तिगत स्वाधीनता है और जिसमें दरिद्रता तथा अज्ञानता के लिए कोई स्थान नहीं। जिस कल्याण राज्य की हम कल्पना करते है उसमें प्रत्येक नागरिक के लिये, किसी भी भेद-भाव के बिना, सम्मानपूर्ण जीवनयापन और पूर्ण विकास का अवसर उपलब्ध होगा।

यही ध्येय हमारी सारी योजनाओ का अभीष्ट है। जो काम हम आज कर रहे हैं और स्वाधीनता के समय से करते आये है, उसी पर हमारा भविष्य निर्भर करेगा। इसलिये हमें अपने भौतिक और आध्यात्मिक सभी साधनों को जुटाना होगा। यह हम तभी कर सकेंगे जब हमारे प्रयत्नों का आधार जनहित और एकता की भावना होगी। इसी प्रकार हम अपने प्रयासों को सफल बना सकते है। यदि हमें इस बात पर गर्व है कि उस समय जब संसार के बहुत से देश पाषाण युग से होकर गुजर रह थ, हमारा देश सभ्यता के शिखर पर पहुंच चुका था, तो हमें अपने आपसे यह भी पूछना चाहिये कि आज जब भूतपूर्व पिछड़े हुए देश परिश्रम और अध्यवसाय के बल पर आगे बढ चुके है, हम ऐसी पिछड़ी स्थिति में क्यों है? हमारे इतिहास का सबसे अन्धकारपूर्ण समय वह रहा है जब लोगों ने अनुपात की भावना को खो दिया और जब वे गौण और छोटी बातों को अत्यधिक महत्व देने लगे और राष्ट्र तथा देश की मांगों की उपेक्षा करने लगे। हमें इस सबक को, जो इतिहास

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर ब्राडकास्ट भाषण; नई दिल्ली, 25 जनवरी, 1961

सिखाता है, भूलना नहीं चाहिये और इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिये कि आज या भविष्य में कभी भी उन तत्वो को फिर से सिर उठाने का अवसर न मिलने पाये जिनके कारण हमारा अध.पतन हुआ ।

इस वर्ष हम लोग तीसरी पंचवर्षीय योजना चालू करने जा रहे हैं । पिछले बारह वर्षो मे हमने बहुत कुछ प्राप्त किया है, किन्तु स्वतन्त्रता को आर्थिक विकास मे बदलने के लिये अभी हमें लम्बा सफर तय करना है ।

हम भारतवासियों के सामने बहुत सी आन्तरिक और बाह्य समस्यायें है । हमें इन बाधाओं को अपने राष्ट्र के सकल्प के लिये चुनौती समझना चाहिए और आज शुभ दिन प्रति वर्ष हमें भारत के जनसाधारण के लिये और संसार मे शान्ति, सद्भावना और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध के हमारे परम्परागत आदर्श की प्राप्ति के लिये, फिर से समर्पण की शपथ लेनी चाहिये ।

एशिया और अफ्रीका के भूखडों मे जागरण की लहर के साथ तथा ससार की आज जैसी स्थिति है उसके फलस्वरूप, तीव्रगति से बदलती हुई परिस्थितियों में मानव को दूरदर्शिता और सामजस्य की आवश्यकता है । यदि जीवन स्वयं एक साहस और चुनौती है तो इस अणु युग मे, तज्जनय भीषणता और शक्तियो के बीच रहना, और भी अधिक साहस की बात है । यदि मनुष्य को अपने ही पैदा किये हुए इस सकट से बचना है तो उसे अपने पुराने विचारों को बदलना होगा । मानव समाज के लिये नये आदर्श, नवमूल्यांकन और विश्व-बन्धुत्व की भावना मे दृढ़ विश्वास आज के युग की मांग है । आकाश-यात्रा के इस युग मे व्यक्तिगत, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय चिन्तन और व्यवहार की पुरानी परिपाटी को संशोधित करना होगा अथवा उसमें पूर्ण परिवर्तन करना होगा ।

यह काम बहुत बड़ा है, किन्तु हमारा राष्ट्रीय सकल्प इससे भी बड़ा हो सकता है, हमें लोगों में एकता, देश प्रेम और सहयोग की भावना पैदा करनी है । क्या हम आज ऐसे भारत के भव्य नवनिर्माण मे नही लगे हैं, जो शान्ति, प्रगति, स्वातन्त्र्य और मानव मात्र के लिये सुख और कल्याण का प्रबल समर्थक बन सके ? देश सेवा का व्रत, अखिल भारतीय दृष्टिकोण और अपने दायित्व के प्रति जागरूकता, आज हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है । हम अब तक जो कुछ प्राप्त कर सके हैं उससे प्रेरणा लें, और पुरानी गलतियों से सबक सीखते हुए, उस महान कार्य मे लग जाये जो हमारी राह देख

रहा है । हर व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि अन्तिम सफलता के प्राप्त करने में उसके योगदान का बड़ा मूल्य है ।

मैं अपने सभी देशवासियों के लिये अधिक सुखी और सम्पन्न जीवन की कामना करता हूं ।

जयहिन्द

महात्मा गांधी संग्रहालय भवन के उद्घाटन के अवसर पर भाषण

यह खुशी की बात है कि दिल्ली संग्रहालय का भवन बनकर तैयार हो गया है, इसमें रखने के लिए गांधी जी के लेख और पत्र आदि तो हमारे पास बहुत हैं, किन्तु शायद उनके जीवन से सम्बन्ध रखने वाली चीजों की संख्या बहुत अधिक नहीं। गांधी जी की दिनचर्या और उनका अपना स्वभाव कुछ ऐसे थे कि वे कम से कम चीजो से अपना काम चलाना अच्छा समझते थे, लेकिन अपनी हर छोटी से छोटी चीज से उन्हे बहुत प्यार था। मुझे याद है एक बार वह पेंसिल जिस सें वे लिखा करते थे गुम हो गई। महीनो के इस्तेमाल से पेंसिल घिसते घिसते बहुत छोटी उंगली जितनी रह गई थी, पर उसके खोए जाने से उन्हे बहुत दु:ख हुआ। इसी तरह एक बार लकडी की वह तख्ती जिस पर कागज रख कर वे लिखा करते थे संयोग से टूट गई। किसी ने उन्हें दूसरी तख्ती ले लेने के लिए कहा, किन्तु गांधी जी नहीं माने, उन्होने कहा जिस चीज को मैं इतने दिनों से इस्तेमाल कर रहा हूं उससे प्यार हो जाना स्वाभाविक है और उसे मैं सहसा कैसे छोड दू। इसलिए, हो सकता है हमे बहुत सी ऐसी चीजे न मिल सके जिनका गांधी जी के जीवन के साथ सम्बन्ध रहा हो। परन्तु हर चीज के प्रति गांधी जी की भावना के देखते हुए जो छोटी से छोटी और साधारण से साधारण चीज भी हम मिली है उसका असाधारण मूल्य समझना चाहिए।

इस तरह के संग्रहालय देश के कई बड़े बड़े स्थानों पर खोले जा रहे है जिनमें दिल्ली भी एक है। दिल्ली देश की राजधानी है और यहा देश के सभी भागों से लोग आते जाते रहते है। हमारे हिन्दुस्तानी भाई ही नहीं, यहां विदेशों से आने वाले लोगों की संख्या भी काफी बड़ी है। और फिर आप जानते हैं कि दिल्ली में अधिकतर काम बड़े पैमाने पर किए जाते है। इसलिए यह आवश्यक था कि महात्मा गांधी की स्मृति में जो संग्रहालय दिल्ली में स्थापित किया जाए वह इस विशाल देश की राजधानी के अनुरूप हो और संग्रहीत सामग्री तथा प्रदर्शन की आधुनिक कला की आवश्यकताओं को पूरा करने के योग्य भी हों। मैं समझता हूं यह भवन जिसका उद्घाटन करने का सौभाग्य आपकी कृपा से मुझे मिला है, हमारी इन जरूरतों को पूरा कर सकेगा।

महात्मा गांधी संग्रहालय, दिल्ली के भवन के उद्घाटन के अवसर पर भाषण; 31 जनवरी 1961

महात्मा गांधी के सार्वजनिक जीवन और उनके व्यक्तित्व के बारे में इन 10-12 वर्षों में काफी साहित्य प्रकाशित हुआ है और बहुत कुछ अभी भी लिखा जा रहा है। किन्तु प्रकाशित साहित्य ही उनकी स्मृति को बनाए रखने और उस प्रेरणा की जोत को जगाए रखने के लिए काफी नही जो स्वाधीनता की लड़ाई के समय और उसके बाद भी देश के लिए सब से बडा सहारा रही है। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम उन सब चीजों को टीक तौर से एक स्थान पर एकत्रित करें जिनका किसी भी समय और किसी भी रूप में गांधी जी से सम्बन्ध रहा हो। यही कारण है कि गाधी स्मारक निधि ने गाधी संग्रहालय स्थापित करने की योजना को हाथ मे लिया। किसी भी महापुरुष के विचार जानने का सब से उत्तम साधन उसकी वाणी को जान लेना है, और वाणी का परिधान प्रायः शब्द होते हैं। किन्तु किसी की याद को जीवित रखने के लिए और उस याद को प्रेरणा का स्रोत बनाए रखने के लिए ऐसे सग्रहालय जरूरी समझे जाते हैं। हमारे देश के निवासी और बाहर से आने वाले लोग इन सब वस्तुओं को देखेंगे। इनके इतिहास को समझने का यत्न करेंगे और इस प्रकार उनके दिलो में जहां गाधी जी की याद हरी होगी, वहा वे उनके भाव और विचारों के समीप जाने का भी यत्न करेंगे। मनोविज्ञान की दृष्टि से भी संग्रहालय शिक्षा का उत्तम साधन है। और जब इन सब वस्तुओं को श्रद्धा और आदर की भावना से देखा जाएगा तो निःसदेह इनमे से प्रत्येक वस्तु गाधी जी के किसी न किसी पहलू के प्रतीक के रूप में दिखलाई देगी। ऐसे संग्रहालय की यही सब से बड़ी उपादेयता है कि ये दर्शकों और सग्रहीत सामग्री के पीछे निहित महान व्यक्तित्व के बीच निकटता का सम्बन्ध स्थापित कर देते है। सामीप्य के ऐसे वातावरण मे ही विचारों का संचार होना और प्रेरणा ग्रहण करना संभव है।

विदेशों में महान विभूतियों की स्मृति में स्थापित किए गए कुछ संग्रहालयो को देखने का मुझे अवसर मिला है। मास्को में लेनिन और टालस्टाय की स्मृति में जो संग्रहालय बनाए गए है वे देखने से ही सम्बन्ध रखते हैं। मुझे याद है टालस्टाय के कपडों, उनके हाथ से लिखे कागजों और उनकी अनेक चीजों को देखकर मै कितना प्रभावित हुआ था। मुझे ऐसा लगा मानों मै टालस्टाय का साक्षात्कार कर रहा हूं। संग्रहालयों की सफलता और उपादेयता का यही सब से बड़ा प्रमाण है, और यही इनकी स्थापना का आधार है।

महात्मा गांधी के जीवन से शिक्षा लेने की दिशा में और उनकी स्मृति को बनाए रखने के लिए हम जो कुछ भी करें वह थोड़ा है। इस सग्रहालय और

दूसरे शहरो मे स्थापित ऐसी ही संस्थाओ से हमें बहुत आशायें हैं। हमारा यह सर्वप्रथम कर्तव्य है कि हम इन संग्रहालयों को इतना सजीव और आकर्षक बनायें कि लोग इनकी ओर आकर्षित हों, और इन्हें देख कर प्रभावित हुए बिना न रह सकें।

हमे यह नही भूलना चाहिए कि स्वाधीन भारत की सब से बड़ी निधि महात्मा गाधी की विचारधारा है। कम से कम नैतिक, राजनैतिक, और सामाजिक क्षेत्र मे हमारी सफलता का मापदण्ड उस महान नेता के प्रति हमारी स्मृति और श्रद्धा ही रहेगी। महात्मा गांधी स्वाधीन भारत के राष्ट्रपति हैं और जब तक आधुनिक भारत का इतिहास जीवित रहेगा आने वाली पीढ़ियां सदा उन्हें इसी आदरसूचक नाम से पुकारती रहेगी। हम में से अधिकाश लोग ऐसे हैं जिन्हों ने गाधी जी को देखा है और बहुतेरों ने उनके नेतृत्व में कुछ सार्वजनिक काम किए है। यह हमारा सौभाग्य था। किन्तु कुछ सालो बाद ही ऐसे लोग आएंगे जो गाधी जी के सम्बन्ध मे केवल उनकी कृतियों, उनके लेखों और इस प्रकार के सग्रहालयो से ही जान सकेंगे। हम नही चाहते कि आने वाली किसी पीढी को मानसिक रूप में गाधी जी के निकट आने मे किसी प्रकार की कठिनाई हो। यही कारण है कि गांधी स्मारक निधि, गांधीजी की स्मृति के बनाए रखने के लिए एक योजना के अनुसार यत्न करती आ रही है। इस प्रकार के सग्रहालयों की स्थापना उसी योजना का एक महत्वपूर्ण अंग है। मुझे आशा है कि दिल्ली का गाधी संग्रहालय शिक्षा और प्रचार का एक सफल और लोकप्रिय केन्द्र सिद्ध होगा। मै इस अवसर पर गांधी स्मारक निधि के पदाधिकारियों तथा सदस्यो को उनकी तत्परता के लिए बधाई देता हूं और यह आशा करता हूं कि वे यथाशीघ्र अपनी सभी योजनाओं को कार्य रूप देने में सफल होंगे।

संसद के समक्ष अभिभाषण

संसद् के सदस्यगण,

संसद् के नए सत्र जा भार सभालने क समय मैं आपका स्वागत करता हूं।

2. पिछला वर्ष हमारे लिए आन्तरिक और बाहरी दबाव व कठिनाइयों का वर्ष रहा है। मेरी सरकार ने अपनी आधारभूत नीति के सिद्धान्तों पर दृढ रहते हुए और भविष्य मे विश्वास रखते हुए बड़े परिश्रम के साथ सब समस्याओं का सामना किया है। यद्यपि अभी बहुत सी जटिल समस्याओं का सुलझाया जाना बाकी रहता है अथवा उनका समाधान हो रहा है, देश मे तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में स्थिति मे सुधार के लक्षण दिखाई पड रहे हैं जिनमे सफलता की कुछ आशा बंधती है।

3. हमारे राष्ट्र को सर्वाधिकार-सम्पन्न भूमि पर आक्रमण तथा हमारी सीमा के अतिक्रमण की समस्याये अभी नही सुलझ पाई, किन्तु मेरी सरकार का उन समस्याओ तथा उन से सम्बन्धित समस्त उलझनो के प्रति जागरूक है। रक्षा सम्बन्धी व्यवस्था की ओर वह निरन्तर ध्यान दे रही है और साथ ही सचार के साधनों द्वारा सम्पर्क स्थापित करके उन स्थानों का विकास कर रही है।

4. लागूज मे चीन ने जो सैनिक चौकी स्थापित की थी, यद्यपि उसे उसने वहा से हटा लिया है और भारतीय क्षेत्र का और अधिक उल्लंघन करने की चेष्टा उसने नही की, किन्तु तो भी उसका दुराग्रह जारी है। हमारी सीमा के उस पार हमारे प्रति जो वैर-भाव जारी है उसे ध्यान मे रखते हुए मेरी सरकार प्रतिरक्षा व्यवस्था बनाए रखने मे निरन्तर प्रयत्नशील है। फिर भी मेरी सरकार उन सिद्धान्तों पर दृढ रहेगी जिन्हें हमारा देश दूसरे देशों के साथ अपने सम्बन्धों के लिए आधारभूत मानता है। मेरी सरकार चीन के एकतरफा निर्णयों अथवा कार्रवाई के परिणामों को स्वीकार नहीं कर सकती।

5. इस शान्तिपूर्ण किन्तु दृढ़ नीति और रक्षा की तैयारी को जिसमे उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है, हमारे लोगों का समर्थन प्राप्त है और इसका विश्व-मत पर गहरा प्रभाव पड़ा है। हमारा यह दृढ़ मत है कि भारत और चीन के बीच की सीमायें चिरकाल से संधियों, रीति-रिवाजों तथा व्यवहार

द्वारा भली प्रकार निश्चित रही है। मेरी सरकार को आशा है कि चीन वर्तमान अनिच्छा अथवा दुराग्रह के बावजूद शीघ्र ही उन सीमाओं के बारे में, जो हमारे और उसके बीच सांझी हैं, हमारे देश के साथ संतोषजनक समझौता करने के लिए तैयार हो जाएगा। अपने महान पड़ौसी के साथ हमारे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध, जिन्हें उन्नत करने के लिए मेरी सरकार सदा उत्सुक रही है, तभी ऐसी वास्तविकता का रूप धारण कर सकते है जो स्थिर रहे और जिससे हम दोनों देशों की भलाई हो और एशिया तथा विश्व की स्थिति मे स्थिरता आये।

6. मेरे प्रधान मत्री और चीन के प्रधान मंत्री के बीच नई दिल्ली में गत अप्रैल में किए गए और बातचीत के अन्त मे संयुक्त विज्ञप्ति द्वारा घोषित हुए समझौते के अनुसार, दोनों देशों की सरकारों द्वारा मनोनीत अधिकारी नई दिल्ली, पेकिंग और रंगून मे बातचीत करते रहे है। यह बातचीत अब समाप्त हो चुकी है। मेरी सरकार को अधिकारियो ने जो रिपोर्ट दी है वह ससद के सामने रखी जाएगी।

7. अफ्रीकी भूखंड में बहुत से देशों का स्वाधीन राष्ट्रों के रूप मे उदय और सयुक्त राष्ट्र संघ में पूर्ण सदस्यों के रूप मे उनके प्रवेश का मेरी सरकार स्वागत करती है। अफ्रीका में जाग्रति की लहर और कई सर्वाधिकार सम्पन्न गणराज्यों का उदय हमारे लिये हर्ष का विषय है। इन राष्ट्रों द्वारा तटस्थ रहने और शीत युद्ध के संघर्ष से अलग रहने की घोषणा का हम खास तौर से स्वागत करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में मेरी सरकार ने जिस नीति का बराबर अनुसरण किया है, यह घोषणा, वास्तविकता के आधार पर, उस नीति का निष्पक्ष समर्थन है।

8. कांगो की स्थिति से मेरी सरकार बराबर चिन्तित है। हाल मे आज़ाद हुए इस देश को स्वतन्त्रता और एकता, अफ्रीकी भूखंड की उन्नति और विकास, अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने के साधन के रूप में संयुक्त राष्ट्र की क्षमता तथा प्रतिष्ठा और दुर्बल राष्ट्रों की शक्तिशाली राष्ट्रों के आक्रमण से सुरक्षा, इन सब प्रश्नों का कांगो की स्थिति से सम्बन्ध है। बेल्जियम के शस्त्रास्त्र और उसके सैनिक और अर्द्धसैनिक नागरिकों का दबाव और संयुक्त राष्ट्र के निश्चित निर्णयों के विरोध में कांगो में कुछ प्रतिस्पर्धी दलों को बेल्जियम द्वारा सहायता, कांगो की स्थिति में उलझनों के यही प्रमुख कारण हैं।

9. मेरी सरकार बराबर उस नीति का अनुसरण करती रहेगी जिनका आधार संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों में हमारी आस्था और कांगो के लोगों को उसकी नवोदित स्वाधीनता भोगते हुए देखने की हमारी उत्कट इच्छा है। इस उद्देश्य से मेरी सरकार बेल्जियनों के हटाए जाने और राजनीतिज्ञों की, विशेषकर उनकी जिन्हें संसदीय अधिकार प्राप्त हैं, कारावास से रिहाई, परस्पर-विरोधी और सशस्त्र दलों के तटस्थीकरण, वहां की पार्लमेंट के संयोजन और संवैधानिक सत्ता के पुनःस्थापन पर बराबर जोर देती रही है।

10. इधर हमारे देश के निकट लाओस मे भी स्थिति ऐसी बन गई है जिससे भारी चिन्ता होने लगी है। इस स्थिति मे और अधिक बिगाड़ न होने पावे, इस दृष्टि से, मेरी सरकार संबद्ध राष्ट्रों की सहमति से अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन को फिर से कार्यारूढ़ करने की दिशा में भरसक प्रयत्न कर रही है। वहां संघर्ष के विस्तार के, एशिया और समस्त विश्व मे, भीषण परिणाम हो सकते हैं और ऐसी घटना की रोकथाम करने की मेरी सरकार की नीति है।

11. गोआ अभी भी पुर्तगाल के उपनिवेशवादी अधिकार मे है। मेरी सरकार भारत के इस भाग की जहां अभी भी जीर्ण उपनिवेशवाद का बोलवाला है, शांतिपूर्ण आजादी के लिये वचनवद्ध है।

12. भारत के पड़ौसी राज्यों और अन्य देशों के साथ हमारे शांतिपूर्ण सम्बन्ध बराबर बने हैं। मेरी सरकार अपनी शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व और पड़ौसी सद्भाव की नीति पर दृढ़ रहते हुए किसी भी देश के साथ सैनिक-सन्धियों में उलझे बिना इन सम्बन्धों को प्रोत्साहित करने के पक्ष में हैं।

13. सद्भावना बढ़ाने के हेतु दूसरे देशों के साथ यात्राओं का विनिमय किया गया। सोवियत संघ के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के प्रत्युत्तर में मैंने रूस की यात्रा की। वहां के राष्ट्रपति, उनकी सरकार और वहां की जनता ने जो मेरा हार्दिक स्वागत किया उसके लिये मैं आभारी हूं। हमारे उप-राष्ट्रपति ने अमेरिका के यूनाइटेड स्टेट्स और फ्रांस की यात्रायें कीं।

14. हमारे प्रधान मंत्री ने संयुक्त अरब गणराज्य, लेबनान, टर्की और पाकिस्तान की यात्राएं कीं। अन्य मंत्रीगण और भारत सरकार के कुछ विशेष प्रतिनिधि मंडल आपसी सद्भावना बढ़ाने के लिए अथवा विशेष उद्देश्य को लेकर विविध देशों की यात्रा पर गए। इन देशों में सिलोन, मेक्सिको, पश्चिमी तथा

पूर्वी यूरोप के देश, इथोपिया, नाइजीरिया, घाना और मगोलिया लोग गणराज्य शामिल है ।

15. गत वर्ष उरुग्वे, पेरागवे, कांगो और मलागासी गणराज्यों के साथ हमारे राजनयिक सम्बन्ध स्थापित हुए ।

16. मेरी सरकार ने एक स्वाधीन स्वतन्त्र गणराज्य के रूप मे साइप्रस के उदय का जहां एक दीर्घकालीन उपनिवेशवादी सत्ता का अन्त हुआ, स्वागत किया है ।

17. महिष्मती महारानी एलिजाबेथ द्वितीय और एडिनबरा के ड्यूक राजकुलमान्य प्रिंस फिलिप ने भारत आने के लिए मेरे निमंत्रण को कृपापूर्वक स्वीकार किया । उन्हें अपने बीच पाकर हमे खुशी होती है और वे मेरे ही नहीं, मेरी सरकार और हमारी जनता के भी सम्मानित अतिथि है ।

18. हमे जापान के सम्राट के प्रतिनिधित्व-रूप आये हुए राजकुलमान्य राजकुमार और राजकुमारी, रूस के प्रधान मत्री श्री ख्रुश्चेव, नेपाल के महामहिम सम्राट, सयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति नासर, इंडोनेसिया के राष्ट्रपति सुकार्णो, गिनी के राष्ट्रपति सकू तूर, जर्मन संघीय गणतंत्र के भूतपूर्व राष्ट्रपति प्रोफेसर थ्योडोर हैस, फिलीपीन्स के उपराष्ट्रपति मकापगल और चीन, बर्मा, पोलैंड, नैपाल तथा सिलोन के प्रधान मंत्रियों का स्वागत करके बड़ी खुशी हुई । भूटान और सिक्किम के महामहिम महाराजा का आपने सम्मानित अतिथि के रूप मे स्वागत करके भी हमे बड़ी प्रसन्नता हुई है । इन सब विशेष सम्माननीय मेहमानों की भारत यात्रा हमारे लिए बड़े गौरव की बात है ।

19. आज संसार के सामने सब से प्रमुख बात नि:शस्त्रीकरण की है । हर अवसर पर, विशेष कर संयुक्त राष्ट्रसंघ में, इस विषय में राष्ट्रों के बीच, खास कर बड़ी शक्तियों के बीच, समझौते के लिए आधार के निर्माण में मेरी सरकार प्रयत्नशील रही है । इसके लिए मेरी सरकार ने संयुक्त राष्ट्र की साधारण परिषद् में कुछ प्रस्ताव रखे हैं, जिनका उद्देश्य यह है कि नि:शस्त्रीकरण की बातचीत का निश्चित आधार यह होना चाहिये कि देशों के बीच आपसी झगड़ों के निपटारे के लिए युद्ध को साधन न माना जाय और उसे गैरकानूनी करार दिया जाय ।

20. हमें खेद है कि हमारी कोशिशों के बावजूद दक्षिण अफ्रीका की सरकार मल भारतीय नागरिकों के विरुद्ध भेद-भाव करने और जातीय भेद-भाव के

आधार पर अपने समाज का संगठन करने मे लगी है। मानवीय गौरव की अवहेलना, मानव के अधिकारों के उल्लघन और पृथक्करण की इस नीति के अनुसरण से समस्त संसार को गहरा धक्का लगा है।

21. राज्यों की सरकारो के सहयोग से योजना आयोग तीसरी पंचवर्षीय योजना की रूपरेखा तैयार कर चुका है और यह रूपरेखा सिद्धान्त रूप से राष्ट्रीय विकास परिषद् द्वारा अनुमोदित की जा चुकी है। जैसे ही रिपोर्ट का प्रारूप तैयार होगा उसे राष्ट्रीय विकास परिषद् के सामने और उसके बाद ससद् के सामने रखा जायगा।

22. 1952-53 के मूल्यों के आधार पर अनुमान है कि 1959-60 की राष्ट्रीय आय 12,210 करोड़ होगी, जबकि 1955-56 मे यह आय 10,920 करोड़ थी। आय मे वार्षिक वृद्धि इतनी रफतार से नही हुई जितनी हम आशा करते थे। 1957-58 और 1959-60 में खेती को जो भारी नुकसान पहुंचा, वही इसका कारण था। हमे आशा है कि इस साल की फसलें अच्छी हैं और औद्योगिक उत्पादन भी तेजी से बढ़ रहा है।

23. पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष मूल्यो के स्तर करीब 6 प्रतिशत ऊपर गये हैं। इसे रोकने के लिये सरकार ने जो उपाय अपनाये है उनसे कुछ रोकथाम हुई है और कही कही, जैसे कपड़े के मामले मे, सरकारी कार्यवाही के कारण मूल्यों में कमी होने लगी है। विदेशी मुद्रा के संचय में कमी के कारण हमें जिन कठनाइयों का सामना करना पड़ रहा है उनके बावजूद खेती और उद्योग दोनों की स्थिति आशाजनक है।

24. पंचायती राज अथवा ग्राम लोकतन्त्र ने तीव्रगति से प्रगति की है। मेरी सरकार को आशा है कि 1961 के समाप्त होने से पहले पंचायती राज सम्बन्धी संस्थायें सभी राज्यो में स्थापित हो चुकेंगी। इन संस्थाओं के सुचारु संचालन और सहायता के लिये गैरसरकारी कर्मचारियों की ट्रेनिंग का विस्तृत कार्यक्रम आरम्भ हो चुका है। सर्विस सहकारी समितियों के सदस्यों की संख्या में लगभग 1 करोड़ 80 लाख की वृद्धि हुई है। आशा है कि ये समितियां 190 करोड़ रुपये तक लोगों को ऋण के रूप में दे सकेंगी।

25. 1960-61 में फिर कृषि-उत्पादन में निश्चित उन्नति हुई है। अन्दाजा है कि 1960-61 की खरीफ फसल में अनाज का उत्पादन पहले वर्ष की अपेक्षा

20 लाख टन अधिक होगा। आशा है कि वह 1958-59 की अपेक्षा भी अधिक होगा। उस वर्ष का उत्पादन अधिकतम था। रबी की फसल की स्थिति भी आशाजनक है। सब मिलाकर, आशा है कृषि-उत्पादन की दृष्टि से 1961 हमारे बहुत अनुकूल पड़ेगा। देश मे उत्पादन मे वृद्धि के कारण और मेरी सरकार ने गल्ला संचित करने की दिशा मे जो ठोस कदम उठाये है उनके फलस्वरूप, अनाज के भाव पहले ही गिरने शुरू हो गये हैं। दूसरी पंचवर्षीय योजना के अनुसार सिचाई की छोटी योजनाओं और बीज-उत्पादन के लिए फार्मो की स्थापना के कार्यक्रम पर जल्द ही पूरी तरह अमल होने की आशा है। भरपूर जुताई को देश भर में और कुछ चुने हुए क्षेत्रों मे प्रोत्साहन दिया जा रहा है। तीसरी पंचवर्षीय योजना मे खेती के विकास को विशेष प्राथमिकता दी जा रही है, जिससे कि राष्ट्र के आर्थिक विकास का आधार दृढ़ हो सके। हमारा लक्ष्य अनाज के मामले मे आत्मभरित होना और दूसरे कृषि-उत्पादनो को यथोचित प्रोत्साहन देना है।

26. किन्ही दिशाओं में औद्योगिक उत्पादन प्रत्यक्ष रूप से बढ़ा है। 1960 के पहले दस महीनों मे उत्पादन की सूची 167 थी जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में वह 149 थी। सार्वजनिक क्षेत्र में आने वाले तीन इस्पात के कारखाने लगभग पूरी तरह से बनकर तैयार हो चुके है, और अब उत्तरोत्तर बढती हुई मात्रा में उत्पादन कर रहे हैं। औद्योगिक मशीनरी और मशीनी औजारों के निर्माण में भी सतोषजनक प्रगति हुई है। खनिज तेल के नये साधनों का पता लगा है। खासकर गुजरात मे अंकलेश्वर मे और आसाम मे सिबसागर मे। आशा है कि परीक्षण के रूप में तेल का उत्पादन इस वर्ष शुरू हो जायगा। तेल साफ करने के दो कारखानों पर काम चालू है और तीसरा कारखाना स्थापति होने जा रहा है।

27. कनाडा-भारत रीऐक्टर जो हाल ही मे चालू हुआ है, हमारा तीसरा रिऐक्टर है। इसके उद्घाटन से उद्योगों, चिकित्सा और खेती सम्बन्धी कामों में अणुशक्ति के उपयोग की संभावना बढ़ी है।

28. बहु-उद्देश्यीय नदी-घाटी योजनाओं में चम्बल नदी योजना, गांधी सागर बांध और कोटा बराज का उद्घाटन हो चुका है और भाखड़ा में 90 हजार किलोवाट बिजली की 5 इकाइयों में से दो खोली जा चुकी हैं। बाकी तीन भी आगामी कुछ महीनों में ही खुल सकेंगी, इस बात की पूरी सम्भावना है।

29. सरकारी कर्मचरियों की हाल में होनेवाली खेदजनक हड़ताल को छोड़कर, कामगर सम्बन्धों में सुधार हुआ है। अनुशासन नियमावली के लागू करने का अच्छा असर पड़ा है और नागे के दिनों की संख्या में काफी कमी हुई है। सरकारी मजदूर बीमा योजना का विस्तार कर उसके अन्तर्गत 15.8 लाख और कामगरों को शामिल कर लिया गया है। सूती कपड़ा, सीमेंट और चीनी जैसे प्रमुख उद्योगों की देखभाल त्रिदलीय वेज बोर्ड पहले ही कर चुका है और अब जूट उद्योग और चाय के बगीचों के लिए ऐसे बोर्डों की नियुक्ति कर दी गई है। कुछ औद्योगिक इकाइयों में प्रबन्धकार्य मे मजदूरों की शमूलियत की प्रयोगात्मक योजना लागू की गई है।

30. प्रशासन में हिन्दी को स्थान देने की दिशा में उन्नति हुई है। हिन्दी के विकास और प्रचार के सम्बन्ध में सरकारी निर्णयो को कार्य रूप देने के लिये एक केन्द्रीय हिन्दी विभाग की स्थापना की गई है।

31. जैसा कि संसद् सदस्य जानते है, गत जुलाई में नागा नेताओं से बातचीत के फलस्वरूप मेरी सरकार ने भारतीय संघ के अन्तर्गत नागालैण्ड नामक पृथक राज्य के गठन का निश्चय किया था। इस दिशा में पहले कदम के रूप में मैंने एक अधिनियम जारी किया है, जिसके अनुसार संक्रान्ति काल की अवधि में नागालैण्ड के प्रशासन में राज्यपाल को सहायता तथा परामर्श देने के लिये प्रतिनिधियों की अन्तरिम परिषद् निर्वाचित की गई है। मेरी सरकार उन विरोधी तत्वों को दबाने के लिए कृत्संकल्प है जो वहां के लोगों के लिए कठिनाइयाँ और कष्ट पैदा कर रहे है।

32. 1961-62 वित्तीय वर्ष के लिए भारत सरकार के आय-व्यय के अनुमानित आंकड़े यथापूर्व आपके सामने रखे जायेंगे।

33. संसद् के पिछले सत्र के बाद दो अधिनियम, "दी यू० पी० शुगरकेन सेस (वेलिडेशन) आर्डिनेन्स" और "दी बैंकिंग कम्पनीज़ (अमेण्डमेन्ट) आर्डिनेन्स" जारी किए गए हैं।

34. संसद् के सदस्यगण, गत वर्ष जब मैंने आपके समक्ष भाषण दिया था उस समय से आपके दोनों सदनों ने 67 विधेयक पारित किए हैं। 16 विधेयक पिछले सत्र से आपके सामने विचाराधीन हैं। उन्हे पारित करने की दिशा में मेरी सरकार इस सत्र में कदम उठायेगी।

35. दहेज उन्मूलन विधेयक पर दोनों सदनों में कुछ मतभेद हैं। इस विधेयक पर विचार करने के लिए मेरी सरकार संसद् का संयुक्त सत्र बुलाने की दिशा में उचित कार्यवाही करेगी।

36. मेरी सरकार अन्य विधेयकों के अतिरिक्त निम्न विधेयक आपके विचाराधीन प्रस्तुत करेगी—

1. दी इन्कम-टेक्स (अमेण्डमेण्ट) बिल।
2. दी एक्सट्राडीशन बिल।
3. दी इण्डियन पेटेन्ट्स एण्ड डिज़ाइन्स बिल।
4. दी इसेंशियल कमोडटीज़ (अमेंडमेंट) बिल।
5. दी शुगर एक्सपोर्ट प्रोमोशन (अमेंडमेंट) बिल।
6. दी नारकोटिक्स बिल।
7. दी अप्रेंटिसशिप ट्रेनिंग बिल।
8. दी हिमाचल प्रदेश एबोलिशन ओफ बिग लैंडेड एस्टेट्स एण्ड लैण्ड रिफार्म्स (अमेंडमेंट) बिल।

37. संसद् के सदस्यगण, मैंने गत वर्ष की प्रमुख घटनाओं और सफलताओं की ओर आपका ध्यान आकृष्ट किया है। आगामी वर्ष में अपनी सरकार के कार्यक्रम की तरफ भी मैंने आपका ध्यान खीचा है। हम सब के सामने जो महान् कार्य और जिम्मेदारियां है उनकी ओर भी मैंने संकेत किया है। मुझे इसमें संदेह नहीं कि इन सब कामों पर आप ध्यानपूर्वक विचार करेंगे। मेरा विश्वास है कि हमारे आर्थिक आयोजन, हमारी प्रतिरक्षा, विश्वशान्ति और पराधीन राष्ट्रों की संघर्ष सम्बन्धी बहुत-सी समस्याओं को सुलझाने के लिये और हमारे देशवासियों को आश्वस्त करने के लिये मेरी सरकार को आपका विवेक, सतर्कता और सहयोग उपलब्ध होगा। हमारे देश के साधन और राष्ट्र के लोगों की योग्यता, प्रगति तथा राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के उन ऐतिहासिक और महान् कामों में संलग्न हैं, जिनका दायित्व हम पर आता है।

38. मेरी सरकार बराबर ऐसी एक योजना को चलाने और प्रोत्साहित करने का प्रयत्न करती रहेगी जिससे कि उसके नीति सम्बन्धी निर्णयों के निर्माण और इन पर अमल के बीच कम-से-कम समय लगे। हमारा उद्देश्य यह है कि हमारे प्रजातन्त्र में और उसके विकासोन्मुख महान आर्थिक और सामाजिक

कार्यक्रम में प्रत्येक स्तर पर जनसाधारण भाग ले सकें। यदि हमें एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में गौरव और सफल प्रयत्न की भावना के साथ जीवित रहना है तो यह हमारे लिये आवश्यक है। राष्ट्र की समस्त जनता के सामाजिक कल्याण की एकसूत्रता, जनतन्त्रात्मक और समाजवादमूलक समाज के संगठन की ओर ऐसी प्रगति जिस में परिवर्तन सामयिक हो और उन्नति आत्मचालित हो—हमारा लक्ष्य है, जिस को हमें शान्तिपूर्वक और लोगों की सहमति से प्राप्त करना है।

39. संसद् के सदस्यगण, अब मैं आपको नये सत्र का काम सौंपता हूं और आपकी सफलता की कामना करता हूं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि सन्मति सहिष्णुता और सामूहिक प्रयत्न की भावना आपका पथ-प्रदर्शन करेगी। आपके प्रयत्न पूर्ण सफल हों, और हमारे देश तथा उसके जनगण और विश्व के लिए, जिनकी सेवा के लिये हम दृढ़ प्रतिज्ञ हैं, उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो, यही मेरी कामना है।

कस्तूरबा पुण्यतिथि पर ब्राडकास्ट भाषण

आज कस्तूरबा की पुण्यतिथि है। 22 फरवरी 1944 को उन्होंने आगा खां महल में अन्तिम सांस लिया और देश की स्वाधीनता के मार्ग पर बापू के पीछे-पीछे चलते हुए भी वे बलिदान की वेदी पर चढ़ने के लिये बापू से आगे बढ़ गयीं। बा के स्मरण के साथ बापू के सहवास के वे दिन याद हो आते हैं, जब बापू के कठिन कार्य में लगे रहने पर भी और अनेक कठिनाइयों के बावजूद भी हम सब को बा का प्यार और वात्सल्य मिलता। उनके पास रहकर हम अपनी सब तकलीफें भूल जाते थे। हम सभी एक परिवार की तरह रहते थे और बा हम सब पर बच्चों की सी ही ममता रखती थीं। अपने हाथ से बना कर खाना खिलातीं, हमारे दुःख-सुख का खयाल रखती थीं। इसलिये आज भी उनकी याद करके दिल भर आता है।

बा भारतीय स्त्री के आदर्श की प्रतिमूर्ति थी। बापू के साथ रहकर उन्होंने अपने सुख की कभी परवाह नही की, वे सदा उनके ही सुख में सुख मान कर चलतीं और सभी तकलीफें हंस कर बर्दाश्त करतीं। सेवा का वे प्रतीक थीं। त्याग और सेवा ही उनके सरल और सादे जीवन के उज्जवल आभूषण थे। उन्होंने अपनी प्रेममय सेवा और आदर्श त्याग से बापू को ही नहीं जीता उनके आसपास के सभी कार्यकर्त्ताओं को ही नही बल्कि जनसाधारण को भी जीत लिया था। और इसलिये वे सारे हो देश के लिये बा बन गयी।

यह उचित ही था कि देश उनका ऐसा स्मारक बनाता जो उनके नाम के अनुरूप हो। इसलिये बा की मृत्यु के बाद उनकी स्मृति मे कस्तूरबा-गांधी राष्ट्रीय स्मारक की स्थापना हुई। इस ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य हिन्दुस्तान के देहातों में स्त्रियों तथा बच्चों की सेवा करना है। आज कई बरसों से यह ट्रस्ट गांवों में कार्य कर रहा है और इससे निश्चय ही गांवों मे एक नया जीवन आया है। स्त्रियों की स्थिति में काफी सुधार हुआ है और आज अनेक ग्रामीण-सेविकाएं इस ट्रस्ट ने तैयार कर दी हैं, जो सारे देश में कार्य कर रही हैं। गांवों में शिक्षा के विस्तार के लिये भी कस्तूरबा ट्रस्ट ने काफी कार्य किया है। शिक्षा, ग्रामोद्योग, सफाई और स्वास्थ्य के अनेक केन्द्र गांवों में खोले गये है जो आज ग्रामीण जनता की सेवा कर रह हैं। सबसे खुशी की बात तो यह है कि यह सारा कार्य स्त्रियों के द्वारा ही होता है। ये बहनें कस्तूरबा के जीवन से प्रेरणा

ब्राडकास्ट भाषण; 22 फरवरी, 1961

पाती हैं और मुझे आशा है कि कस्तूरबा का आदर्श सदा उनक सामने रहगा। मै उन सब बहनों को जो इस कार्य में लगी हैं आज बधाई और अपनी शुभ-कामनाएं देना चाहता हूं कि वे बा की स्मृति में देश की भलाई का बड़ा अच्छा कार्य कर रही है।

मुझे विश्वास है कि इस कार्य में दिनों-दिन अवश्य तरक्की होगी। यह वास्तव में बुनियादी काम है। यदि हमारे देश के गाव सुधर गये तो समझो देश का भविष्य सुन्दर हो गया। और इस कार्य में लगी बहनों को बा के उदा-हरण से हमेशा प्रेरणा मिलती रहेगी इसमें भी मुझे शक नही। मैं आज के दिन उस महान् देवी की ममतामूर्ति बा को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता हूं।

मराठी नाट्य परिषद् के 43वें वार्षिकोत्सव पर भाषण

मराठी नाट्य परिषद् के कृपापूर्ण ग्रामन्त्रण पर मैं इस आयोजन में भाग ले सका, इस बात की मुझे बहुत खुशी है। भारतीय संस्कृति तथा साहित्य के विकास में आरम्भ से ही नाटक का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। साहित्य सवियों, कलाकारों, और मनीषियों ने भावाभिव्यक्ति और अपनी कल्पनाओं को जनसाधारण तक पहुंचाने के लिये जिन माध्यमों का आश्रय लिया, नाटक उनमें सर्वप्रथम नहीं तो अग्रणी अवश्य है। प्राचीनकाल मे जब कला प्रदर्शन के साधन आधुनिक समय की अपेक्षा बहुत सीमित थे, जब न चित्रपट थे, न रेडियो, उस समय रंगमंच का विशेष महत्त्व होना स्वाभाविक ही था। धार्मिक विचारों तथा सामाजिक और सार्वजनिक परम्पराओं के प्रचार और प्रसार का सहज माध्यम नाटक ही था।

साहित्य के दूसरे अंग, जैसे काव्य, कथा आदि भी चाहे लोकप्रिय रहे हो, किन्तु नाटक की तुलना में उनके प्रशसंकों की संख्या कही सीमित मानी जाती थी। नाटक लिखित रूप मे विद्वज्जनों के अध्ययन का विषय था और अभिनय की दृष्टि से जनसाधारण की उसमें रुचि रहती थी। साहित्य का यह विकासक्रम् हमारे देश में ही नही, प्राय: सभी देशों में इसी प्रकार चला है। प्राचीन रोम, यूनान आदि में नाटक के द्वारा ही साधारण लोग साहित्य की ओर उन्मुख होते थे और सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को हृदयंगम करते थे। रोम की इस प्रथा को ही ईसाई मत के उदय के पश्चात् यूरोप के उदीयमान राष्ट्रों ने ग्रहण किया और ईसा के जन्म, त्याग और धार्मिक सिद्धान्तों के प्रचारार्थ रंगमंच का व्यापक उपयोग किया जाने लगा। आज भी उन पुराने धार्मिक नाटकों की प्रथा किन्ही पाश्चात्य देशों मे विद्यमान है और क्रिसमस आदि त्योहारों के अवसर पर उनका अभिनय होता है।

संस्कृत और हमारी प्राकृत भाषाओं का नाटक साहित्य विकसित होने के साथ-साथ विपुल भी है। प्राचीन नाटक साहित्य में हमें अपने देश के तत्कालीन जीवन, उस समय की धार्मिक और सांस्कृतिक विचारधारा और विभिन्न वर्गों के रहन-सहन की झाकी मिलती है। दुर्भाग्यवश हमारे देश के लेखकों और विद्वानों

मराठी नाट्य परिषद् क 43वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर भाषण, 25 मार्च, 1961

ने इतिहास लिखने की परम्परा की सर्वथा अवहेलना की है। इसलिए इन नाटकों में विद्यमान ऐतिहासिक तत्व विशेष मूल्यवान हैं।

महाराष्ट्र की नाट्य परम्परा कई सौ वर्ष पुरानी है। यद्यपि मूलरूप से इसकी प्रेरणा का आधार संस्कृत नाटक तथा साहित्य ही है, किन्तु मराठी नाटकों का विकास देश तथा काल सम्बन्धी परिस्थितियों से प्रभावित हुआ है और उन्हीं के अनुरूप कालान्तर मे उसका विकास भी हुआ है। धर्म और संस्कृति की परिधि से निकल कर अन्य भाषाओं के नाटकों की भाति मराठी नाटककार सामाजिक विषयों का प्रतिपादन करने लगे। महाराष्ट्र के सन्तों की वाणी तथा उनकी जीवनियां और इसी प्रकार मराठा वीरों के कारनामें जिनमें सर्वप्रथम शिवाजी महाराज का प्रेरणादायक व्यक्तित्व तथा वीरता से ओतप्रोत जीवनी है—इन सब घटनाओं से मराठी नाटककार पूर्णरूप से प्रभावित हुए हैं। यह स्वाभाविक था कि अठारहवी और उन्नीसवी शताब्दियों के नाटकों की वस्तुकथा अधिकतर इन्ही घटनाओं से ली जाए। मराठी साहित्य के आधुनिक कालीन नाटक अधिकतर सामाजिक और राजनैतिक विषयों को लेकर लिखे गये हैं। यही कारण है कि रंगमंच पर उनका अभिनय उत्तरोत्तर लोकप्रिय होता गया है। इस दिशा मे मराठी नाट्य परिषद् का योगदान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण रहा है। परिषद् की स्थापना से पहले भी मराठी रंगमंच को अनेक संस्थाओं तथा प्रभावशाली व्यक्तियों का संरक्षण प्राप्त रहा। यही कारण है कि यह प्रथा पूर्णरूप से परिपुष्ट हो सकी है और मराठी नाट्य परिषद् के हाथों में नाटक मनोरंजन और प्रचार का एक उत्तम साधन बन गया।

आज हमारा देश राजनैतिक बन्धनों से मुक्त हो एक स्वतन्त्र गणराज्य का रूप धारण कर चुका है। देश की राजनैतिक उन्नति और आर्थिक विकास के हेतु सरकार अनेक योजनाएं चालू कर रही है और इनसे लाभ भी पहुंचा है और बहुत कुछ पहुचने की शीघ्र ही आशा है। किन्तु भौतिक उन्नति तभी टिकाऊ हो सकती है जब उसी अनुपात से हम सामाजिक उन्नति भी कर सकें, सामाजिक उन्नति ऐसी चीज नही जो आवश्यक रूप से किसी लिखित योजना के अनुसार अथवा सरकारी आदेशों के फलस्वरूप की जा सके। भारतीय समाज की रूपरेखा का आधार जितना प्राचीन है उतना ही ठोस भी है। इस दृढ़ता के कारण अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हमारा समाज छिन्नभिन्न होने से बच सका है। किन्तु आज] प्रतिकूल परिस्थितियों का हमें भय नहीं। आधुनिक काल की मांग तो यह है कि हम भारतीय समाज को वर्तमान युग की आवश्यकताओं

के अनुरूप बनायें और पुरानी अच्छी बातों को सुरक्षित रखते हुए अपने समाज में उन नवीन गुणों को रोपित करें जिनका अभाव आज खटकता है। इस अभाव की पूर्ति करने का रंगमंच उपयोगी माध्यम हो सकता है। रंगमंच और चित्रपट दोनों प्रचार के ऐसे उपयोगी और प्रभावोत्पादक माध्यम है कि समाज सुधार के कार्य में इनसे बहुत सहायता मिल सकती है। मेरा विश्वास है कि मराठी भाषा के साहित्यिक विशेषकर नाटककार इस बात का विशेष ध्यान रखेंगे, जिससे कि मराठी रगमंच सुशिक्षा और समाज सुधार की दिशा में अपनी उन्नत स्थिति तथा व्यापक लोकप्रियता के अनुरूप योग-दान दे सके।

इस अवसर पर मै मराठी साहित्यिको, तथा मराठी नाट्य परिषद् के पदाधिकारियों और कर्मचारियो का अभिनन्दन करता हू और उनकी सफलता की कामना करता हू।

महावीर जयन्ती के अवसर पर भाषण

मुझे इस बात की खुशी है कि महावीर जयन्ती समारोह में मै भाग ले सका हूं और इसके लिए मै इस सभा के संयोजकों का आभारी हूं। महावीर जयन्ती दिल्ली में और इस देश के अनेक नगरों में प्रतिवर्ष मनाई जातो है। इस अवसर पर परम्परा के अनुसार महावीर स्वामी की जोवनी और उनकी शिक्षा तथा दिव्य सदेश के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा जाता है। व्यक्तिगत रूप से वे इतने महान् थे कि मै समझता हूं समय के साथ उनके व्यक्तित्व की महानता बढ़ती ही जा रही है। उन्होंने जिन सिद्धान्तो का ढ़ाई हजार वर्ष हुए प्रतिपादन किया था, उनका महत्त्व भी दिनोदिन बढता हुआ जान पड़ रहा है।

संसार के घटनाचक्र की चाहे जैमी भी गति रही हो और मानव का विकास चाहे किसी भी दिशा मे हुआ हो, किन्तु अहिसा, आत्मसयम, अनुशासन और विनय की जितनी आवश्यकता आज के समाज को है उतनी सम्भवत: पहले कभी नही रही होगी। ज्यो-ज्यो मानव का विवेक बढता जा रहा है, बुद्धि प्रखर होती जा रही है और प्रकृति की ज्ञान-सम्बन्धी सीमाये अधिकाधिक विस्तृत होतो जा रही हैं, इन गुणों की वांछनीयता, और इन आदेशों की अलौकिकता अधिकाधिक प्रकाश में आ रही है। विवेकशील मानव इन सिद्धान्तों की अधिक कद्र करने लगा है, और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में एक नवीन दृष्टिकोण से इनकी उपादेयता को देखने लगा है।

एक समय था जब, व्यवहार में, धार्मिक मान्यताये और लोकाचार दो पृथक क्षेत्र समझे जाते थे, यद्यपि सिद्धान्त रूप से चाहे वे अलग-अलग न रहे हों। आज के मानव को न तो धर्मभीरू कहा जा सकता है, और न धर्मान्ध, किन्तु फिर भी उन मान्यताओं के तत्व की शिक्षा जहा पहले केवल ऊंचे विचारकों और दार्शनिकों तक ही सीमित रहती थी, वहां अब उस तत्व का जीवन से सीधा सम्बन्ध स्थापित होने के कारण उस में साधारण तक की दिलचस्पी होती जा रही है। इस दृष्टि से आजका मानव परोक्षरूप से धार्मिक अथवा आध्यात्मिक सिद्धान्तों के बरबस निकट आ गया है। सदियों तक भौतिकवाद के मार्ग का अनुसरण करने के बाद उसे अपनी साधन-सम्पन्नता और क्षमता में कुछ अभावों का आभास होने लगा है जिनकी पूर्ति अध्यात्मवाद ही कर सकता है। इस अभाव की पूर्ति की खोज मानव को

महावीर जयन्ती के अवसर पर भाषण; नई दिल्ली, 30 मार्च, 1961

फिर प्राचीन तत्वदर्शियों और महान् विभूतियों की ओर ले जा रही है। ऐसी विभूतियों में भगवान महावीर का स्थान अग्रणी है। कठोर तपश्चर्या और चिन्तन के बाद वे जिन परिणामों पर पहुंचे उन्हें हर युग में ही मान्यता मिली, किन्तु आज उनकी सच्चाई हमें एक नवीन आलोक के रूप में दिखाई दे रही है। विवेकशील लोग यह समझने लगे है कि अहिंसा और शान्तिपूर्ण सहयोग अथवा पारस्परिक युद्ध से दूर रहने मे ही मानव जाति का कल्याण है। विज्ञान की आशातीत प्रगति और मानव द्वारा प्रकृति के अनेक रहस्यों का उद्‌घाटन इस महान् सत्य से हमें दूर ले जाने की बजाए कहीं अधिक निकट ले आया है। इसलिए शान्ति और अहिंसा की चर्चा अब केवल उस देश में हो नहीं होती जहां महावीर स्वामी ने जन्म लिया और अपने सिद्धान्तों का प्रचार किया, बल्कि वह आज समस्त संसार के विवेचन का विषय बन चुकी है।

महावीर जयन्ती के शुभ अवसर पर जहा हम इस महान् पुण्य आत्मा के प्रति सादर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और उनकी शिक्षा की दिव्यता को स्वीकार करते हैं, वहा यह प्रश्न भी उठना स्वाभाविक है कि उनके सदेश को हमने अपने जोवन में कहा तक उतारा है। 2000 वर्ष से अधिक हुए महावीर स्वामी और गौतम बुद्ध ने मानव जाति को अहिसा के मार्ग पर चलने का संदेश दिया था। यह सच है कि इस देश में ही नही बल्कि विदेशों में भी लाखों-करोड़ों व्यक्तियों के विचारों, उनकी आस्थाओ तथा उनके विश्वासो पर इन विभूतियों की शिक्षा का प्रभाव पड़ा है। किन्तु क्या हम यह कह सकते हैं कि मानव जाति ने व्यावहारिक जीवन में अहिंसा को इतना अपनाया है कि वह हिंसा, पारस्परिक युद्धों अथवा द्वेष भाव से ऊपर उठ सको है ? क्या यह सच नहीं है कि संसार में यदा-कदा महापुरुषों का अवतरण और उनकी अहिसा-मूलक विचारधारा के बावजूद युद्ध और बलप्रयोग का बहिष्कार नहीं किया जा सका है। इस दृष्टि से आज का मानव एक हजार वर्ष के मानव की तुलना में कितना आगे बड़ा है, यह विचारणीय विषय है। हो सकता है कि हम इस दुखद परिणाम पर पहुंचें कि भौतिक सम्पन्नता, शिक्षा और विज्ञान की दृष्टि से आधुनिक जगत ने चाहे कितनी ही उन्नति क्यों न की हो, किन्तु अहिंसा को सच्चे अर्थो में अपने जोवन में अपनाने की दिशा में वह आज भी लगभग उसी स्थान पर है जिस पर उसके पूर्वज थे। अब समय आ गया है कि स्पष्टरूप से और निःसंकोच भाव से इस स्थिति पर विचार किया जाए, और यह पता लगाने का यत्न किया जाए कि सहिष्णुता, सद्‌भाव और अहिंसा में मानव की आस्था अभी तक इतनी गहरी क्यों नहीं हो

पाई जिससे वह द्वेष और पशुबल के प्रयोग की लालसा से ऊपर उठ सके । यह प्रश्न इतना सारगर्भित है कि इसमें सभी धर्मावलम्बियों की दिलचस्पी होनी चाहिए । आप लोगों पर, जिन्होंने महावीर स्वामी के सिद्धान्तों का विशेष अध्ययन किया है, और जीवन में उनका अनुसरण भी किया है, यह जिम्मेदारी विशेषरूप से आती है कि आप स्थिति पर विचार करें और सोचें कि किस प्रकार उस शिक्षा तथा उसके प्रचार को अधिक व्यापकरूप दिया जाए । मैं समझता हूं इससे बढ़कर भगवान महावीर के प्रति कोई श्रद्धांजलि नहीं हो सकती ।

मुझे खुशी है कि आप लोग प्रति वर्ष महावीर जयन्ती के अवसर पर इस समारोह का आयोजन करते है और महावीर स्वामी के दिव्य संदेश का स्मरण कराते हैं । उस संदेश का स्मरण भी शुभ और कल्याणकारी है । हम सब का यह प्रयत्न होना चाहिए कि इस शिक्षा से हम ऐसी प्रेरणा ले जो विश्वास और कर्म के बीच दिखाई देनेवाली खाई को पाट सके ।

नया निशान प्रदान करते समय भाषण

जनरल थिमैय्या, कर्नल कपूर, चौथी बटालियन के अफसरो, जे० सी० ओ० एन० सी० ओ० और जवानो,

आपके बटालियन को नया निशान प्रदान करने के लिए यहां आना मैं बहुत गौरव की बात मानता हूं। आज के समारोह की बड़ी विशेषता यह है कि इस वर्ष आप अपनी शानदार सेवा के 173 वर्ष पूरे कर रहे हैं। आपका इतिहास पुराना और गौरवपूर्ण है। आपकी बटेलियन ने संसार के सभी भागों बर्मा, चीन, अफगानिस्तान, फिलिस्तीन, मेसोपोटामिया, पर्शिया, सिलोन और पूर्व अफ्रीका में योग्यता के साथ सेवा की है। मुझे यह कहने की आवश्यकता नहीं कि "रसल का शेर" जो आपको भेंट के रूप में मिला है, आपकी रेजीमेंट के साहसपूर्ण कार्य का अक्षय प्रमाण है। इसलिये यह उपयुक्त ही है कि आपकी भूत और वर्तमान परम्पराओं की कड़ी के रूप से मैं आज यह नया निशान आप को प्रदान करूं।

इन निशानों पर उन लड़ाइयों के नाम हैं जो आपकी बटालियन कई क्षेत्रों में योग्यतापूर्वक लड़ी है। ये आपकी रेजीमेन्ट द्वारा साहस और त्यागपूर्वक अपने कर्तव्यपालन के निमित मिले सम्मान हैं। मेरा विश्वास है कि जो प्रेरणा आपकी रेजीमेन्ट को अभी तक आगे बढ़ाती रही और जिसके कारण आपकी रेजीमेन्ट ने कठिन कसौटियों को पार किया और पिछले दो महायुद्धों तथा जम्मू काश्मीर लड़ाई के भयंकर वर्षों को हिम्मत से बिताया, वही प्रेरणा आज भी नौजवान सैनिकों को प्रेरित करेगी। मैं दो शब्द और कहना चाहूंगा। आपकी बहादुरी के काम चाहे उनका सम्बन्ध हाल ही में गाजा के शान्ति मिशन या जम्मू और कश्मीर में आपके काम से हो या इस सदी के आरम्भ में विदेशों में होनेवाली लड़ाइयों से हो, उस प्रेरणा देनेवाली परम्परा के सभी गुण उस में मौजूद हैं। अफसर और जवान आते-जाते रहते हैं जिस तरह सेवा की परिस्थितियां और टुकड़ियों के नाम बदलते रहते हैं, किन्तु साहस के कारनामे और टुकड़ी की हिम्मत की कहानी हमेशा जीवित रहती है।

हिन्दुस्तान की आजादी के कारण कर्तव्यपरायणता और देशभक्ति की भावना का महत्त्व अब और अधिक हो गया है। इन गुणों से न केवल

चौथी बटालियन (कुमाऊं रेजिमेंट) को नया निशान प्रदान करने के समय भाषण; रानीखेत, 8 अप्रैल, 1961

बहादुरी की याद सदा हरी रहती है, बल्कि यह ऐसे प्रेरक विचारों को भी जन्म देते हैं, जिनसे बहादुरी के काम सम्भव होते है ।

आजकल जो दुनिया की हालत है और देश-विदेश के हालात में जो नये ढंग दिखाई दे रहे हैं, आपका पिछला कार्य उसके अनुरूप ही है । हमारी सेना पर पहले की तरह ही राष्ट्र की सीमा की सुरक्षा का भार है और हमेशा रहेगा, किन्तु अब बदलती हुई परिस्थितियों में शांति बनाये रखने का काम भी उन पर आ गया है । आप गाज़ा मे शांति बनाये रखने का काम भी उन पर आ गया है । आप गाज़ा में शान्ति स्थापना के लिये रहे इसलिये जो बात मैं कहना चाहता हूं आप अच्छी तरह समझ रहे होंगे ।

मेरा यह कहना असगंत न होगा कि आज हमारे बीच आपके रेजीमेन्ट के कर्नल, जनरल थिमैय्या है । वे आपकी बटालियन के पहले हिन्दुस्तानी कमांडिग अफसर थे, जिनके प्रयत्नों के फलस्वरूप गत युद्ध मे आपने कई सम्मान प्राप्त किये । वे जल्दी ही अवकाश ग्रहण कर रहे है और इसलिये मैं उन्हें तथा उनके परिवार को अपनी शुभकामनायें देता हू ।

मैं इस अवसर पर आप सब को आपकी बहादुरी के कारनामों और आप की सफलताओं पर बधाई देना चाहता हूं । और कुमाऊं रेजीमेन्ट की चौथी बटालियन के सब अफसरों तथा जवानों के प्रति अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रकट करता हूं । मैं यही चाहता हूं आपको और अधिक सफलता और सम्मान प्राप्त हो तथा आप वीरता की अपनी महान् परम्परा को बनाए रक्खें ।

सार्वजनिक भाषण

माननीय राज्यपाल महोदय, बहनों तथा भाइयो,

जैसा आपको मालूम है, मैं यहां एक अन्य समारोह में शरीक होने के लिये कल संध्या को पहुंचा और आज सवेरे उस समारोह में भाग लेकर मुझे अत्यन्त खुशी हुई और उस वक्त मुझे आप सब बहनो और भाइयों को देखकर और भी खुशी हो रही है ।

आप एक ऐसे अंचल के रहनेवाले है जो भारतवर्ष का हमेशा से माथा रहा है । हिमालय आज से नहीं, जब से इतिहास है या यह कहें कि उससे भी बहुत पहले से हमारे इस देश को सुरक्षित रखता आया है । हिमालय में हमारे ऋषि तपस्वी आकर अपनी तपस्या और साधना से जो कुछ यहां कर गये है और मनुष्य-मात्र को दे गये है वह हमेशा कायम रहेगा । ऐसे अंचल मे आज अपने को पाकर मैं अपने को धन्य मानता हू ।

आप इस बात को अच्छी तरह से याद रखें कि भारतवर्ष बहुत बड़ा देश है जिसके एक सिरे पर हिमालय है और तीन तरफ समुद्र है । इस इतने बड़े देश में मनुष्य गणना के अनुसार 44, 45 करोड़ मनुष्य बसते है और इसमें भिन्न-भिन्न भाषाएं बोली जाती है, भिन्न-भिन्न धर्मो के अनुयायी बसते हैं, और रहन-सहन, खान-पान और पोशाक अलग-अलग एक हिस्से से दूसरे हिस्से में देखने को मिलते है । मगर इतनी विभिन्नता होते हुए भी यह सारा देश एक है और हिमालय से समुद्र पर्यन्त ईश्वर ने इसको एक बनाया और मनुष्य ने भी इसको एक ही माना है । आज भी हम इसको एक मानते है । मगर कभी-कभी हमारे दुर्भाग्य से ऐसा देखने में आता है कि छोटी-मोटी बातो को लेकर इस महान् उद्देश्य को हम भूल जाते है और कुछ ऐसा कह और कर बैठते है जिससे इस एकता में खतरा पहुंचने का भय हो जाता है । मै चाहूंगा कि आप यहां से सारे देश को यह संदेश दिया करें कि जिस तरह से गंगा, यमुना, सरयू यहां से बहकर नीचे की तरफ जाती है और सभी जगहों को प्लावित करती है, जरखेज बनाती हैं उसी तरह से भारतवर्ष की एकता का संदेश यहां से निकलेगा और सारे देश तक पहुंचेगा और फैलेगा ।

आपने सुना कि सैनिक समारोह में भाग लेने के लिये मै यहां आया हूं । हमारी सेना इस एकता को अच्छी तरह से पहचानती है और देश की रक्षा के साथ-

---

एक सार्वजनिक सभा में भाषण; रानीखेत, 8 अप्रैल, 1961

साथ इस एकता को अपने दिन-प्रति-दिन के व्यवहार में देखा करती है और मैं चाहूंगा कि यह स्थान एक सैनिक केन्द्र होने के कारण आपको मौका देता है कि आप देश के दूसरे भागों के लोगों को जानें और उनके प्रति मित्रता का भाव दिखावें ।

आज तक उत्तर में हिमालय अलंघनीय माना जाता रहा है और उत्तर से देश पर खतरे का भय नही था । अब हिमालय को पार करना उतना कठिन नहीं रह गया । इसलिये अपन को आप इस योग्य बनावें और तैयार रखें कि आप इस देश की रक्षा आप ठीक तरह से कर सकें ।

इसकी जरूरत भी है कि इस देश के निवासी इस बात को समझें कि अब हम स्वतन्त्र हो गये हैं और स्वतन्त्र होने के बाद से बहुत काम अपने देश के अन्दर अपनी भलाई के लिये, अपनी उन्नति के लिए हाथ में लिये गय है। पर उन्नति के काम तभी हो सकते हैं जब देश के अन्दर शान्ति रहे और देश सुरक्षित रहे। य दोनों चीजें हरेक भारतवासी को देखना चाहिये और दोनों के लिये अपने को और सब को तैयार रखना चाहिये । आप यह समझें कि आप का इलाका भी भारत का ही भाग है और देश की उन्नति का अर्थ है आपकी भी उन्नति । स्वतन्त्रता के साथ जो जवाबदेही हमारे सिर पर आती है वह यह है कि देश के अन्दर शान्ति रखने की जबावदेही और हमेशा के लिये सभी प्रकार के परिश्रम और बलिदान देने की ज़रूरत । खासकरके आप एक ऐसे इलाके में बसते हैं जिसकी सीमा विदेश के साथ लगती है । इसलिये आप पर जिम्मेदारी आ जाती है कि आप इसकी रक्षा-भार अच्छी तरह से समझें और संभालें । मैं पूरा विश्वास रखता हूं कि हिमालय के अंचल में जितने भाई-बहन रहते हैं सब के सब भारतवर्ष को अपना देश मानते हैं और इसके लिय जो कुछ मांग की जायेगी हमेशा देंगे ।

इस वक्त देश में कई प्रकार की योजनाएं चल रही हैं जिनका उद्देश्य यही है कि लोगों में जहां ग़रीबी फैली हुई है व कम हो, जहां बीमारी फैली हुई है उसको रोका जाए, जहां लोग निरक्षर हैं वहां उनको साक्षर बनाया जाए । इन सब चीजों के लिये बड़ी-बड़ी योजनाएं बनी हैं । मगर सभी योजनाओं को जनसाधारण का सहयोग ज़रूरी है । गवर्नमेंट की तरफ से सब कुछ किया जा रहा है । लेकिन जब तक जनता की मदद और सहयोग नही मिलेगा तब तक कामयाबी नहीं मिल सकती है । इसलिये इसमें एक पंथ दो काज हैं । ऐसे काम में हाथ बटाकर आप अपनी भलाई तो करते ही हैं, आप सारे देश की भलाई करते हैं । मैं

चाहूंगा कि इस प्रकार का काम ग्रापके इलाके में जहां होता हो उसमें ग्राप शरीक हों, मदद करें ग्रौर जो कुछ ग्रापसे कहा जाये उसको पूरा करने में मदद दें।

मैं ग्राप सब बहनों ग्रौर भाइयों को धन्यवाद देता हूं कि ग्रापने ग्रपने-ग्रपने स्थानों से ग्राकर मेरा ग्रादर ग्रौर सम्मान किया। मै ग्रापको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि यद्यपि मै यहां थोड़ी ही देर के लिये ग्राया हूं, मैं ग्रापके इलाके को हमेशा याद रखने की कोशिश करता रहूंगा ग्रौर मुझ से जो कुछ हो सके वह सेवा देने के लिये तैयार रहूंगा। जय भारत !

गुरुकुल कांगड़ी में भाषण

भाइयो तथा बहनों,

मैं कांगड़ी के गुरुकुल में पहले भी आ चुका हूं और आज तो रास्ते में चलते-चलते थोड़ी देर के लिये यहां पहुंच गया हूं। यह आपकी कृपा है कि आपने इतने थोड़े समय में भी मेरा आदर और सम्मान बढ़ाया और मानपत्र दिया।

जैसा आपने अपने मानपत्र में ही कहा है, एक सुन्दर आदर्श और उद्देश्य को लेकर आपकी यह संस्था बहुत दिनों से चलती आ रही है, और आज भारतवर्ष के लिये ही नही, औरो के लिये भी ऐसा समय आ गया है जब शिक्षा पद्धति और सारे समाज की शृंखला के सम्बन्ध में हमको बहुत कुछ विचार करने की जरूरत हो गयी है।

इस विज्ञान के युग में जब विज्ञान की प्रगति इतनी तेज है और जब उससे निकले हुए यन्त्र इतने बड़े समूह में और इतने प्रकार के पैदा हो रहे हैं तो मनुष्य को स्वयं शक्ति पर आश्चर्य होता है और मैं समझता हूं कि समझदार लोगों को भय भी होता है क्योंकि इस वक्त अगर देखा जाय तो विज्ञान की प्रगति इतनी दूर तक पहुंच गयी है कि इस दुनियां में कठिन से कठिन दुस्तर से दुस्तर स्थान तक पहुंचना कोई बात ही नहीं रह गयी है, दूसरे नक्षत्रों और ग्रहों में भी जाने की बात सोची जाने लग गई है और इसके लिये दिन प्रति दिन यन्त्र उत्पन्न हो रहे हैं। और खोज की जा रही है कि लोग पृथ्वी से वहां पहुंचकर रह सकते हैं या नहीं। यह एक तरफ और दूसरी तरफ संहार के साधन आहिस्ता आहिस्ता मनुष्य के हाथ मे आ गये हैं जो ऐसे हैं कि कही इन शस्त्रों से युद्ध छिड़ा तो कोई कह नहीं सकता कि कोई देश बचा रह सकता है या मानव भी बचा रहेगा या नही। उसमें इतनी शक्ति है। तो यह विचार करने की बात हो जाती है कि क्या हम ऐसे शस्त्रों को पाकर धनी हुए हैं या अपने नाश का कारण बन गये हैं; विज्ञान विद्या है। विद्या में दोष नही है। किस प्रकार से उस विद्या का उपयोग किया जाय, वह कैसे काम में लगायी जा सकती है यह दोषपूर्ण हो सकता है। जहां तक तरफ पुनियां में छिपे से छिपे, गूढ़ से गूढ़ जो तत्व हो सकते हैं उनको जानने की शक्ति प्राप्त हो रही है, कि किस तरह से मृत्यु पर विजय आदमी पा सकता है इसमें प्रगति हो रही है तो दूसरी तरफ सामूहिक रूप से सब के सब का एक साथ संहार हो सकता है। इसकी तरफ हमारी शक्ति बढ़ रही है। तो प्रश्न यह है कि क्या मनुष्य इतनी शक्ति

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में भाषण; हरिद्वार, 10 अप्रैल, 1961

प्राप्त करके अपने ऊपर काबू पा रहा है या नही कि उसका ठीक तरह से उपयोग करे। लोगों का विचार तो हो रहा है मगर अभी तक यह कहना मुश्किल है कि मनुष्य इतना समझदार हो गया है कि वह अपने विनाश को समझ सके, देख सके और अगर देख लिया हो तो क्या कुछ उपाय भी अभी तक उसने किया है।

यह हमारे देश की प्रथा रही है और हमारा यह गौरव रहा है कि जहा एक तरफ हम हर तरह की उन्नति चाहत थे, करते थे और यह भी मानी हुई बात है कि एक समय था जब भारतवर्ष किसी विषय में किसी भी दूसरे देश से पीछे नहीं था, बहुत बातों में सब से आगे बढ़ा हुआ था, समृद्ध था, धनी था और जो कुछ भी उस वक्त तक विज्ञान का ज्ञान हासिल हुआ था सब में वह आगे था। मगर साथ ही साथ वह भी हमें ख्याल था कि मनुष्य सारी दुनिया पर काबू कर ले मगर अपने ऊपर काबू नहीं कर पावे तो वह दुनिया के लिये अभिशाप बन सकता है।

तो हम तो यह हमेशा से जानते आये हैं और प्राचीन काल से इस चीज को हमारे पूर्वज, हमारे ऋषि मुनि समझते थे और इसी वजह से जो गुरुकुल की परम्परा थी वह ऐसी बनी हुई थी जिसमें राजा के लड़के या ऐसे ऋषि के लड़के भी जिनको घर में खाने के लिए कुछ नहीं था एक साथ पढ़ते थे, सीखते थे। जो वैभव, ऐश्वर्य मनुष्य प्राप्त कर सकता था उसको प्राप्त करने की मनाही नहीं थी मगर साथ ही साथ शिक्षा ऐसी मिलती थी कि वैभवशाली और गरीब एक साथ रह सकते थे और सीख सकते थे। आज इसकी जरूरत है। इसीलिए मैं गुरुकुल की प्रथा को महत्व देता हूं और आज से ही नहीं आपके इस गुरुकुल में जहां तक स्मरण आता है शायद 40 वर्ष हुए होंगे जब मैं पहले पहल आया था उस वक्त से मेरी श्रद्धा रही है और वह श्रद्धा मैं समझता हूं अपनी जगह पर बहुत ही ठीक रही है और उसकी आवश्यकता और भी अधिक महसूस करने लग गया हूं। हमारी प्राचीन प्रथा और नवीन प्रथा को मिलाकर शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाना है। यह जानकर मुझे खुशी हुई कि आपके गुरुकुल में इस सुन्दर सम्मिश्रण का जन्म हो रहा है और इसका फल सुन्दर होना चाहिये। एक तरफ भौतिक उन्नति और दूसरी तरफ एक मानव की शक्ति की अभिवृद्धि। ये दोनों चीजें साथ साथ होंगी तभी ठीक चलेगा।

मैं और विशेष नहीं कह सकता हूं। सिर्फ यह कहूंगा कि आप अपने काम में दत्तचित्त रहें और निरुत्साह नहीं हों और हमेशा अपने उद्देश्य को सामने रखकर

आपको चाहे प्रोत्साहन मिले या नहीं मिले, अगर बाधा भी आवें तो अपने उद्देश्य से विचलित न हों और आगे बढ़ते जायं, आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों कभी समय आयगा जब यह पद्धति सर्वमान्य होगी और सारे देश के लिये उपलब्ध हो सकगी। मैं चाहता हूं कि आपके ऐसे सच्चे देशभक्त निकलें जो हमारी प्राचीनतम संस्थाओं पर ख्याल दें, उनको कायम रखें और साथ ही साथ जो नवीन से नवीन आविष्कार हो रहे हैं उनसे भी परिचय प्राप्त कर लें, उनको भी काम में लगायें और अपना काम निकाल सकें। यह जब होगा तभी हर तरफ ख्याल होगा और मै आशा करता हूं कि आप इस चीज के शास्त्रकार है और इस काम को कर रहे है।

मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मेरा सम्मान किया।

हरिद्वार नगर पालिका द्वारा दिया गये मानपत्र का उत्तर

नगरपालिका के अध्यक्ष महोदय, सदस्यगण, देवियो और सज्जनो,

आपने जो मानपत्र देकर मरा सम्मान बढ़ाया है उसके लिए मै आपका आभार मानता हूं। आपने उस मानपत्र में ही कहा है कि मै कई बार इस शहर में आ चुका हूं और यहां पर सभाओं में भी कुछ न कुछ कह चुका हूं। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि पिछले कई वर्षों में आपकी नगरपालिका ने किन किन दिशाओं मे क्या उन्नति की है। आज से नही, चिरकाल मे आपकी पुरी उन पुरियों मे एक रही है जिनका दर्शन हमारे शास्त्रो मे प्राचीन काल से एक बड़े पुण्य का काम समझा जाता रहा है और आज भी आप उस परम्परा को आज के तरीके मे कायम रखने का प्रयत्न कर रहे है यह बड़ी प्रसन्नता की बात है। आज दर्शनार्थी यहां आते है और कुम्भ के अवसर पर लाखो की तायदाद में लोग यहा स्नान करने के लिए आते है। उन सब की देखभाल जिसमे वे अपना समय अच्छी तरह से यहा बिता सके उसका प्रबन्ध आपकी नगरपालिका को करना होता है। जैसा आपने बताया, मुझे बहुत संतोष हुआ कि आप इस दिशा में बहुत कुछ कर चुके हैं और आगे भी कुछ न कुछ करने वाले हैं।

भारतवर्ष आज हर तरह से उन्नति के पथ पर चलने का प्रयत्न कर रहा है और जो चीजें पहले हम अपने लिए अलभ्य नही तो दुर्लभ समझा करते थे वे भी सुलभ होती जा रही है। देश बहुत बडा है। देश मे बहुत प्रकार की विभिन्नता चली आ रही है और बहुतेरी कठिनाइयां है। बहुत दिनों के बाद हम स्वतन्त्र हुए है और देश को बनाने बिगाड़ने का भार हमारे ऊपर अब आ पड़ा है। इसलिये जो कुछ प्रयत्न इस दिशा में किया जा रहा है वह ऐसा होना चाहिए और ऐसा है जिसमें सब का सहयोग, सब की सहायता वांछनीय है और इसलिए सबसे इस बात को कहना सुनना तो है ही, आशा भी की जाती है कि सब लोगों का पूरा सहयोग और पूरी सहायता देश के उत्थान के काम में हमेशा मिलती रहेगी।

आज कई सदियों के बाद जब हम स्वतन्त्र हो गये हैं तो हमें दो तीन चीजें हमेशा याद रखनी चाहिए। सब से पहली चीज तो यह है कि यह स्वतन्त्रता एक बहुत ही अमूल्य वस्तु है जो बहुत दिनों के बाद हमको मिली है

हरिद्वार नगरपालिका द्वारा दिये गये मानपत्र के उत्तर में भाषण

जिसकी सुरक्षा का भार हमारे ऊपर है। स्वतन्त्र भारत को स्वतन्त्र रखना भारतीयों का ही काम है और चाहे देश के जिस हिस्से का भी कोई रहने वाला हो उसको सारे भारत को सुरक्षित रखने का भार उठाना चाहिए। सारे देश को एक मानकर चाहे हम किसी भी कोने में हों, चाहे कही भी रहते हों, कहीं भी हमारा कार्यक्षेत्र हो सारे देश को सुरक्षित रखने का भार हमारे ऊपर है यह भावना प्रत्येक के हृदय मे जागृत रहना चाहिए, तभी यह देश सुरक्षित रह सकता है।

हमारा इतिहास बताता है कि हमारे अनुभव कितने कटु रहे है और अपने अनुभव से हम इतना सीख ले कि फिर इस देश को हमेशा के लिए हम सुरक्षित रखेंगे, कभी परवश नही होने देंगे तो हमारा यह कटु अनुभव एक प्रकार से हमारे लिए आशीर्वाद ही हो जाएगा और अगर कही हमने गलती की और अपने दायित्व को हमने पूरी तरह मे नही ममझा तो फिर यह स्वतन्त्रता भी हमारे लिए खत्म हो जाएगी।

आप तो जानते हैं कि हमारे पूर्वजो ने समस्त भारत का नक्शा हमारे देश के सामने हमेशा रखा और हमेशा याद दिलाने के लिए उन दिनों मे भी एक प्रान्त मे दूमरे प्रान्त तक उत्तर से दखिन, दखिन मे उत्तर, पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व आने जाने मे बड़ी बड़ी कठिनाइया थी वहा उन्होंने तीर्थ स्थान मुकर्रर कर दिए जहां जाना एक प्रकार से अनिवार्य हो गया और इन यात्राओ से इम देश की एक सूत्रता इस प्रकार से लोगों के दिलों में अंकित हो जाती है कि वह कभी मिटने वाली नही होती।

इम प्रकार की एकता तो हमारे देश मे बराबर रही है मगर आज हमको एक विशेष एकता, राजनीतिक एकता, शासनिक एकता भी मिल गई है और यद्यपि भारतवर्ष हमेशा एक रहा है पर सारे भारत मे एक शासन नहीं था। इस देश के कई टुकड़े थे और अलग अलग शासक भी थे। आज ईश्वर की दया से सारे देश में एकछत्र राज्य है, उसमें एक शासन है जो कन्याकुमारी से हिमालय तक, बगाल की खाड़ी से अरब समुद्र तक सारे हिन्दुस्तान पर शासन कर रहा है और इतना ही नही, एक ही लोक सभा है जहां सारे देश के लिए कानून बनता है, जहाँ से सारे देश का शासन सूत्र संचालित होता रहता है और इस तरह से जहां सामाजिक दृष्टि से हमारी एकता प्राचीन काल से चली आ रही है, अब शासनिक स्वतन्त्रता भी हमको मिल गई है। ऐसी अवस्था में इसकी सुरक्षा अधिक आसान होना चाहिए और इसमें कोई शक नही है कि

जब तक हमारे दश के लोग अपने कर्तव्य को समझते रहेंगे, अपने कर्तव्य पर डटे रहेंगे, इस देश पर कोई हाथ नहीं उठा सकता है और न किसी की हिम्मत हो सकती है कि हमारे ऊपर फिर भी आक्रमण करे।

मगर यह होते हुए भी हमको हमेशा यह याद रखना है कि आपस में मतभेद हो सकते हैं, आपस में अनेक प्रकार की विभिन्नता हो सकती है। हम जानते है कि अलग अलग प्रान्त में अलग अलग भाषा समझी जाती है, विभिन्न धर्म के माननेवाले लोग इस देश में रहते है, रहन, सहन, तौर तरीका सभी बातो में देश में विभिन्नता पाई जाती है। मगर सारी विभिन्नता के अन्दर एकसूत्रता इस तरह से पिरोई हुई है जैसे एक माला में अनेक फूल को धागे से बांधकर रखते है। हमारा यह काम है कि माले के फूल एक दूसरे मे अलग नहीं होने चाहिए। चाहे भाषा की विभिन्नता के कारण हो, चाहे धर्म की विभिन्नता के कारण हो, जिस आदमी ने इस देश की धरती पर जन्म लिया, जो यहां की जलवायु से पलकर तैयार हुआ और मरने पर जिसकी अस्थि इस देश में गाड़ी जायगी वह तो एक दूसरे के भाई के समान है चाहे विभिन्नता कई प्रकार की उनमें देख ने में आवे। सारा समाज एक मनुष्य के समान है जिसके भिन्न-भिन्न अग होते है और भिन्न-भिन्न अंगों के भिन्न-भिन्न काम भी होते है। अलग-अलग जीवित रहते है, अपना काम अलग-अलग करते है। मगर तो भी जिस तरह से एक छोटा सा भी कांटा पैर में गड़ जाय तो सारा शरीर काप जाता है, उसी तरह से सारे देश भर के लोगों का हृदय एक दूसरे से बंधा है, कही भी किसी पर चोट पहुंचे तो उसका निवारण जो कुछ हो सकता है हो उसका उपाय करे।

यद्यपि स्वराज्य मिले 10,12 साल हो चुके है और इन 10, 12 वर्षों में देश की उन्नति के लिये बहुत काम किये गये है और किये जा रहे है मगर तो भी बहुत हम स्वराज्य से अपेक्षा रखते है। मगर एक ही दिन में सब कुछ करना सम्भव नहीं हो सकता है। मगर एक चीज ऐसी है जो सम्भव हो सकती है। उसके लिये समय की आवश्यकता नहीं है और हृदय में पैदा की जा सकती है और पैदा होनी चाहिये और मैं तो यह कहूंगा कि एक प्रकार से पैदा हुई है तभी हम इस देश को स्वतन्त्र कर पाये। वह भावना है। उस भावना को दृढ़ करना, उसको और भी मजबत बनाना, जबर्दस्त बनाना जिसमें वह किसी तरह से हिलने न पाये इसका उपाय करना हमारा कर्तव्य है।

हम देखते हैं कि दुर्भाग्यवश हमारे देश के अन्दर छोटी मोटी बातों को लेकर आपस में झगड़े हो जाया करते है और वे ऐसे होते हैं जिनका असर

दूर-दूर तक पहुंचता है। आप यह नहीं समझें कि कांटा चुभता है तो सारे शरीर को तकलीफ नहीं पहुंचती है। तकलीफ पहुंचती है और पहुंचनी ही चाहिये। मैं चाहूंगा कि कांटा होना ही नहीं चाहिये। अगर हमारे दुर्भाग्यवश हो भी जाय तो उसकी मरहम पट्टी के लिये सभी लोगों को सभी जगह तैयार रहना चाहिये कि उसका असर खत्म हो सके। तो आज जरूरत इस चीज की है कि हम में जो एकता की भावना है उसको दृढ़ करें। हम एक दूसरे की सेवा, अच्छा और सुन्दर बर्ताव करके उस भावना को दृढ़ कर सकते हैं। अगर कहीं कोई मतभेद भी हो जाय तो उस मतभेद को दूर करने का उपाय भी हम लोगों के हाथ में है। सब कुछ हम मिल-जुल कर कर सकते हैं और हमको करना चाहिये। मैं तो यह आशा करूंगा कि आप लोग जो तीर्थस्थान के रहने वाले हैं जहां भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न भागों से लोग बड़ी संख्या में आते है और जिनका सम्पर्क आपके साथ होता है, आप अपने कारबार को इस तरीके से चलावे, आपस का ऐसा सुन्दर और सभ्य व्यवहार रखें कि जो यहां आवें आप से यह सीखकर जायं कि किस तरह से भारतवर्ष में हम सब को रहना चाहिये और किस तरह से हम इस देश को समुन्नत बना सकते हैं।

गवर्नमेंट की तरफ से, राज्य शासन की ओर से पंचवर्षीय योजनाएं चालू की जा रही हैं। मै आपसे यही कहूंगा कि उनमें आप सब की सहायता की अपेक्षा है और जब तक आप पूरी तरह से उन सब योजनाओं को सफल बनाने में प्रयत्नशील नही होंगे तब तक पूरी सफलता उनमें हमको नहीं मिल सकती है। इसलिये जैसे आपने म्यूनिसिपैलिटी का सुन्दर काम किया है और आपने उसको उन्नत बनाया है उसी तरह से सारे देश के उत्थान के काम में आप लग जायें और देश को उन्नत करे। मै आप सब का हृदय से आभार मानता हूं और आशा करता हूं कि आप इस स्थान के गौरव को हमेशा बनाये रखेंगे जिसमें केवल यहां के ही लोग नही, लाखों की तायदाद में समय-समय पर आने वाले लोग यहां से कुछ सीखकर जाया करे। धन्यवाद !

गुरुकुल महाविद्यालय का दीक्षान्त समारोह

मुझे बहुत प्रसन्नता है कि आपके महाविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर मैं उपस्थित हो सका और इस 50 वर्ष से अधिक पुरानी शिक्षा संस्था के सम्बन्ध में कुछ जान सका। आपके महाविद्यालय की स्थापना इस शताब्दी के आरम्भ में उस समय हुई थी, जब आर्यसमाज तथा अन्य धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं के प्रचार के फलस्वरूप शिक्ष के क्षेत्र में देश भर में अपूर्व उत्साह उमड़ा था। केवल तीन-चार विद्यार्थियों से आरम्भ कर वह महाविद्यालय इतनी उन्नत और सुव्यवस्थित स्थिति को पहुंच गया है, इसकी कहानी बहुत उत्साहवर्द्धक है। इस प्रयास के पीछे महाविद्यालय के व्यवस्थापको तथा आचार्य जनों के त्याग और निःस्वार्थ सेवा की भावना के दर्शन होते हैं। एक भवन अथवा किसी स्थूल वस्तु के निर्माण में अधिकतर भौतिक साधनों की ही आवश्यकता होती है। किन्तु इस महाविद्यालय जैसी मानवीय संस्था के लिए साधनो के अतिरिक्त मानवीय गुणों तथा आदर्शो की प्रेरणा की भी उतनी ही जरूरत रहती है। सौभाग्य से आपको सच्चे समाज-सेवी और शिक्षाप्रेमी मिल सके जिनके सतत् प्रयत्नों से यह संस्था धीरे-धीरे, किन्तु सुदृढ़ नीव पर, खड़ी हो सकी। यदि इसका इतिहास उत्साहवर्धक है तो इसकी परम्परा गौरवपूर्ण है, क्योंकि शिक्षा के क्षेत्र में आपके संस्थापक जिन आदर्शों को लेकर अवतरित हुए उन्हें शाश्वत और सार्वभौम कहा जा सकता है।

हमारे देश मे शिक्षा की परम्परा उतनी ही प्राचीन है जितना हमारा इतिहास। यदि मै यह कहूं कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में प्राचीनकाल में हमारे देश ने असाधारण उन्नति की थी तो यह अतिरंजन न होगा। इसमें सदेह नहीं कि सभी सांस्कृतिक गतिविधियों के समान शिक्षा भी युग विशेष की आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुकूल ही होती है। इसलिये समय-समय पर उसमें परिवर्तन जरूरी ही नहीं अनिवार्य होते हैं। यह सब होते हुए भी शिक्षण की जिस पद्धति का विकास हमारे देश मे हुआ उसका आधार उच्च आदर्श और मानव का सर्वांगीण विकास था। गुरुकुल और ऐसे ही अन्य विद्यापीठों ने अधिकतर उन्हीं प्राचीन आदर्शों को आत्मसात करने का प्रयत्न किया है। मै यह स्वीकार करता हूं कि तथाकथित आधुनिकता से अधिक प्रभावित न होने के कारण इन संस्थाओं की

गुरुकुल महाविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर भाषण; ज्वालापुर (हरिद्वार), 10 अप्रैल 1961

आलोचना हो सकती है। किन्तु क्या यह भी सच नहीं कि प्राचीन शिक्षा पद्धति से एकदम अछूते रहने के कारण आधुनिक शिक्षण संस्थाओं में भी अनेक अभाव और दोष पाये जाते है। वास्तव मे जिस बात की हमें आवश्यकता है वह है समन्वय की भावना। हमें प्राचीन भारतीय और पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का पूर्ण अध्ययन कर अपने देश के लिये ऐसी प्रणाली का विकास करना चाहिये जो हमें अतीत से जोड़ रखने में सहायक हो और जिससे आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की धारा को भी हम अपने जीवन में अपना सकें।

शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त सभी देशों और राष्ट्रों के लिये एक हो सकते है, किन्तु अपनी-अपनी परिस्थिति और आवश्यकता के अनुसार उन में कुछ हेर फेर करने की आवश्यकता होती है। मै समझता हूं हमारा भी यही प्रयास होना चाहिये। आधुनिक शिक्षा पद्धति की आलोचना का लक्ष्य समन्वय के आधार पर उस मिली-जुली और सर्वांगीण शिक्षा पद्धति का विकास ही है जो हमें भारतीयता की भावना से वंचित किए बिना आधुनिक युग मे आविष्कार तथा विज्ञान की ओर अग्रसर कर सकें।

आपके महाविद्यालय से सम्बन्धित जहा अनेक समाजसेवी और शिक्षाप्रेमी सज्जन रहे है, वहां कई उच्चकोटि के साहित्यिक भी इस गुरुकुल में अध्यापन कार्य कर चुके है। इन साहित्य सेवियों में श्री पद्मसिह शर्मा और भीमसेन शर्मा के नाम अग्रणी है। उन्होंने अपनी लेखनी और प्रचार कार्य द्वारा हिन्दी साहित्य की बहुमूल्य सेवा की है। हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में आपके महाविद्यालय का योग-दान विशेषरूप से सराहनीय रहा है और यहां के स्नातको ने अहिन्दी भाषी क्षेत्रो मे, विशेषकर दक्षिण भारत में, राष्ट्रभाषा के पठन-पाठन मे बहुत रुचि ली है। निश्चय ही इन सब महानुभावों का शिक्षाप्रेम, साहित्य में उनकी अभिरुचि और हिन्दी प्रचार के लिए उनकी लगन इस महाविद्यालय की परम्परा के अग बन चुके है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह गौरवपूर्ण परम्परा यहा के छात्रगण, अध्यापकगण और महाविद्यालय से सम्बन्धित अन्य सब लोगों को प्रेरित करती रहेगी।

हमारे देश के सामने आज जो जटिल समस्यायें है उनमें निरक्षरता के उन्मूलन अथवा साक्षरता प्रसार का प्रश्न सब से आगे है। भौतिक साधनों के विकास और रचनात्मक नवनिर्माण द्वारा जिस सुनहले भविष्य के हम स्वप्न देखते हैं उसे जनसाधारण को साक्षर बना कर ही साकार किया जा सकता है। इस महान् कार्य में कोई भी संस्था अथवा समुदाय जो योगदान देता है वह देश के लिये मूल्यवान है। इसीलिए मै प्रायः सोचता हूं कि अपने तरीके से अपने सीमित साधनो

के बल पर हमारे राष्ट्रीय विद्यापीठों तथा गुरुकुलों ने इस दिशा में जो कार्य किया है, वह बहुत प्रशसनीय है। मै प्रायः यह भी सोचता हूं कि यदि हम गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रोत्साहन दें तो क्या शिक्षा प्रसार का कार्य, विशेषकर देहातों में, अधिक सुविधा और गति से सम्पन्न नहीं हो सकेगा ? गुरुकुल भारत के ग्रामीण वातावरण के अनुकूल है। उनमें देशज परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए और राष्ट्रीय आदर्शो से प्रेरणा ग्रहण करते हुए शिक्षा दी जाती है। क्या यह सम्भव नहीं कि ऐसी संस्थायें देश के विस्तृत भागो मे पाश्चात्य ढंग के विद्यालयों की अपेक्षा अधिक आसानी से जड़ें पकड़ सकें ? गुरुकुलों और पाश्चात्य ढंग के विद्यालयों में न किसी प्रकार की होड़ है और न प्रतिस्पर्द्धा। हमें दोनों की ही एक समान आवश्यकता है। जो काम हमारे सामने है वह इतना अधिक और इतना विशाल हैं कि निरक्षरता निवारण के लिये हमें सभी प्रकार की पद्धतियों से काम लेना चाहिये। और फिर व्यय का प्रश्न भी सामने आता है। जहां तक मुझे मालूम है गुरुकुल प्रणाली की शिक्षा कम व्यसाध्य है। इसलिये हमारी आज की स्थिति में यह पद्धति और भी अनुकूल पडती है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए गुरुकुल शिक्षा संस्थाओं की संख्या में अधिकाधिक वृद्धि होनी चाहिये और इस प्रकार देहाती क्षेत्र और ऐसे इलाके जहा शिक्षा की सुविधाये अनुपलब्ध या अपर्याप्त हैं इन सस्थाओ से लाभ उठा सकते है।

ये मेरे व्यक्तिगत विचार है, किन्तु हमारा केन्द्रीय शिक्षामन्त्रालय भी गुरुकुलों को हर सम्भव सहायता देने के पक्ष में है। गुरुकुलों को आर्थिक और अन्य प्रकारकी सहायता दने के सम्बन्ध में हमारी तीसरी पंचवर्षीय योजना में एक कार्यक्रम बनाया गया है। मुझे यह घोषणा करते हुए हर्ष हो रहा है कि उस कार्यक्रम के अनुसार भारत सरकार ने तीसरी पंचवर्पीय योजना की अवधि में आपके महाविद्यालय को स्वीकृत योजनाओं पर खर्च के लिए एक लाख रुपये का अनुदान देना स्वीकार किया है। मैनें जो कुछ यहां देखा है और आपकी भावी योजनाओं के सम्बन्ध में मैं जो कुछ जान सका हूं, उस से यह आशा बंधती है कि आपका महाविद्यालय साक्षरता और सद्विचार के प्रचार में और हिन्दी प्रसार तथा साहित्य सृजन के क्षेत्र में राष्ट्र की सेवा करता रहेगा।

आप लोगों के निमन्त्रण के लिये मैं आभारी हूं और इस अवसर पर महाविद्यालय के छात्रों, अध्यापकों, तथा व्यवस्थापकों को बधाई देता हूं। उन सब स्नातकों को, जिन्हें आज उपाधियां दी गई हैं, मै अपना आशीर्वाद और शुभकामनायें देता हूं।

गुरुकुल महाविद्यालय में दीक्षान्त भाषण के बाद कुछ बातें

अभी मै जो यहां व्याख्यान हुए उन को सुन रहा था तो मेरा एक पुराना विचार जाग उठा। 50 वर्ष हुए होंगे जब मेरा पहले पहल श्री नरदेव शास्त्री जी से परिचय हुआ और उसी वक्त उनके कारण एक मित्र से जो आपके भी घनिष्ठ मित्र थे मेरा परिचय हुआ। वह थे पंडित पद्म सिंह शर्मा। उनके जरिये से मैं यहा आया जिसका जिक्र किसी महानुभाव ने किया। मेरा उस वक्त गुरुकुल से उतना परिचय नहीं था जितना इन सज्जनों से था। मगर मुझे यह स्वीकार करने में प्रसन्नता होती है कि आप लोगों के ही उत्साह से मैं ने हिन्दी की तरफ ध्यान देना शुरू किया। बचपन मे मै ने फारसी पढ़ी, उसके बाद अंग्रेजी। संस्कृत पढ़ना मैं ने शुरू किया मगर छोड़ दिया और जब मै बी० ए० मे पहुंचा तो पहले पहल हिन्दी की तरफ ध्यान गया और मै समझता हूं कि उसके बाद आप लोगों का सम्पर्क मुझे मिला और तब मै ने हिन्दी मे लिखना शुरू किया और जैसा किसी ने कहा, मैं समझता हूं कि हिन्दी मे जो कुछ मैने लिखा है उसमें पहला लेख मेरा यहा छपा था और पंडित पद्म सिंह शर्मा की प्रेरणा से ही मै न वह लेख लिखा था। मैंने इसलिये इस बात को कह दिया कि जिसमे आप समझें कि मेरा सम्पर्क गुरुकुल से उस प्रकार का नही हुआ जैसा आप स्नातकों का है, जो यहाँ मे पढ़कर निकलते है। इन्होने एक प्रकार की शिक्षा पायी है और मै उम्मीद रखता हूं कि देश को उस शिक्षा से पूरा लाभ पहुंचेगा। मेरी दूसरे प्रकार की शिक्षा हुयी जिसके कारण मेरा हिन्दी की ओर ध्यान गया और जो कुछ हिन्दी मे लिखने का काम मै ने किया है वह कर सका। मैने सोचा कि यह ऐसा मौका है कि इसे कह देना अच्छा रहेगा, लोगों को प्रेरणा मिलेगी ऐसा कुछ इत्तिफाक होता है कि एक सम्पर्क हो जाता है और उसका फल भी हो जाता है। मेरा सम्पर्क आपकी सस्था के साथ हुआ और उसका फल बहुत अच्छा हुआ। अपने जीवन में जो लाभ मैने उठाया उसके अलावा एक फल यह हुआ कि कुछ हिन्दी की सेवा मुझ से हुयी। इसका मूल कारण आप ही हैं।

मै आप सब बहनों और भाइयों का आभार मानता हूं कि आपने मुझे मौका दिया कि मै चन्द शब्द कह सका।

गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर मे दीक्षान्त भाषण पढ़ने के पश्चात् कुछ बातें; 10 अप्रैल, 1961

सार्वजनिक सभा नाभा में भाषण

महामहिम राज्यपाल महोदय, मुख्य मंत्री जी, बहनों तथा भाइयो,

यह पहला ही मौका है जब मै आपके नाभा के इलाके मे पहुचा हूं और मुझे इस बात की खुशी है कि मै यहा आज आ सका और यहां के स्कूल के समारोह में भाग ले सका। साथ ही मुझे यह भी मौका मिला कि भाइयों और बहनों की इतनी बड़ी भीड़ मै देख सका और आपसे दो शब्द कहने का मुझे अवसर मिला।

अभी जैसा राज्यपाल भाई गाडगिल ने आपको बताया, हमारा देश एक प्रजातन्त्र देश है या ऐसा देश है जिसका राज काज लोगों की सहमति से चलता है और जैसा लोग चाहते है वैसे आदमियो को इस काम पर लगाते है और वह उनकी इच्छा के अनुसार काम करते है। इसलिये जो हमारा संविधान है, जो कायदा है उसमें इस बात को बनाया गया है कि हर पाच वर्ष पर चुनाव हुआ करेगा और उस चुनाव मे जो लोग बहुमत से चुने जायेंगे उन मे से ऐसे लोग चुन लिये जायेंगे जो मत्रीमडल बनायेगे और मन्त्री की हैसियत से देश का कारबार चलायेंगे। उस कायदे के मुताबिक दो चुनाव हुए है और दोनो में जो बडी तायदाद के लोग चुने गये वे वही लोग थे जो काग्रेस मे काम कर रहे थे और इस वजह से करीब-करीब सभी प्रातो मे और केन्द्रो मे काग्रेस दल के लोगों के मन्त्रिमंडल बनाया। फिर चुनाव होने वाला है। इसमें आप जैसा मुनासिब समझेंगे आप करेगे और वोट देगे। मै आपसे यही कहना चाहता हूं कि यह वोट देने का अधिकार एक बहुत ही कीमती अधिकार है जनता के हाथ मे है और इसके जरिये से वह अपनी सेवा पूरी करा सकती है। इस चीज में खास करके हमको इस पर ख्याल रखना है कि हमारा काम अच्छी तरह से शान्तिपूर्वक चलता रहे। जैसा अभी गवर्नर साहब ने फर्माया, इस मुल्क के आस पास और कई देश जहां इस प्रकार का काम शुरू किया गया। मगर किसी न किसी कारण से वहा इस सम्बन्ध में कुछ हेरफेर करना जरूरी हो गया और उनका काम ठीक उस रास्ते पर नही चल रहा है जिसका मामूली तौर पर, आम तौर पर प्रजातन्त्र कहा करते हैं। दूसरों से हमारा कोई खास मतलब नहीं है। मुझे तो इस बात की खुशी है कि हमारे देश में प्रजातन्त्र का काम जारी है और चल रहा है और हमें पूरा विश्वास है कि इस देश के लोग अपने

सार्वजनिक सभा नाभा मे भाषण 11 अप्रैल, 1961

उस हक को किसी तरह से खराब नहीं होने देगे और देश मे प्रजातन्त्र कायम रखेंगे और अपने चुने हुए नुमाइन्दों की मार्फत देश का कारबार चलाते रहेंगे ।

बात यह है कि हमारा देश बहुत दिनों के बाद स्वतन्त्र हुआ है और परतन्त्रता के जमाने में हममे बहुत बुराइयां आगयी हैं, उनको एक-एक करके हम दूर करने का प्रयत्न कर रहे है और सब से बडी चीज जो हमने हाथ में ली है वह यह है कि देश में जो गरीबी है और गरीबी की वजह से बीमारी है, अनपढ़पना है, इन सब चीजों को हमें जल्द से जल्द दूर करना है । इसीलिये योजनाएं बनायी जाती है और उन योजनाओं के मुताबिक गवर्नमेंट काम करती है और यह आशा रखती है कि उनको पूरा करने में देश के सभी लोग पूरी तरह से मदद देंगे, सहयोग करेंगे ।

मुझे इस बात की खुशी है कि इस मामले मे आपके पजाब का इलाका बहुत ही अच्छा काम करता है और योजना का जो भी काम हाथ में लिया गया और उठाया गया उनमे सब लोगो की सहायता ऐसी मिली कि वह काम ठीक तरह से पूरा किया जा सका । तो यह आपको बताने की जरूरत नही है कि इस तरह का जो आपने काम किया है उससे आपको तो लाभ हुआ ही है, सारे देश को भी लाभ हुआ है ।

मगर हमको एक बात को हमेशा याद रखना है । हम अपनी माली हालत को चाहे जितना भी सुधार ले मगर देश की स्वतन्त्रता, मुल्क की आजादी को सबसे ऊपर और सबसे अधिक हमको मानना चाहिये और सच पूछिये तो आजादी के बिना जो कुछ हम तरक्की करना चाहते है वह तरक्की भी हम नहीं कर सकेंगे । इसको इसलिये कहना जरूरी हो गया है कि यदि हम अपने पुराने इतिहास को देखें, जो पुराने इतिहास की परम्परा रही है उस पर विचार करे तो मालूम होगा कि हम कभी-कभी देश की एकता, देश की स्वतन्त्रता को भूल जाते है । यह देश बहुत बड़ा देश है जिसमें अनेकों भाषाएं बोली जाती हैं, उसमें बहुतेरे धर्म के मानने वाले लोग बसते है और जिसमें रहन सहन का तौर तरीका भी अलग-अलग है । तो इतने बड़े देश में जहां इतने लोग एक दूसरे से बहुत बातों में अलग हैं एक रहना आश्चर्य की बात जरूर है मगर ईश्वर ने इस देश को एक बनाया । हिमालय से लेकर समुद्र तक यह एक देश है जिसको बीच में कोई काटता नहीं, अलग नहीं कर सकता है और इसके साथ ही साथ ऐसे वक्त से जिसकी हमें कुछ याद नहीं है हम सारे देश को एक मानते आये है । आप दक्षिण से दक्षिण कन्याकुमारी में जाइये और उत्तर से उत्तर हिमालय में आप जायें । सारे देश के लोग एक दूसरे को पहचानते हैं और उसका तरीका हमारे पूर्वजों ने यह बताया था कि तीर्थ के नाम पर सब लोग

उत्तर, दखिन, पूरव, पश्चिम चारों तरफ जाया करें और लोग जाते हैं और एक दूसरे का परिचय प्राप्त करते हैं। और इसके अलावा एक ऐसी चीज भी रही है, एक ऐसी भावना रही है जो देश के सभी लोगों को एक रस्सी में बांधकर रखे हुयी है ।

तो यह देश इस तरीके से एक रहा है। मगर कुछ उसमें कमजोरी भी रही है और वह यही थी कि हम एक राज्य होकर नहीं थे। देश टुकड़े-टुकड़े में बंटा हुआ करता था और छोटे-छोटे टुकड़ों पर किसी न किसी टुकड़े का हमला हुआ करता था। मगर जबसे स्वराज्य हुआ है, ईश्वर की कृपा से और लोगों के उत्साह के कारण यह सारा देश आज राजकीय मामले में, सरकारी सल्तनत के काम में एक मुल्क हो गया है और एक ही जगह से सारे देश पर हुक्म चलता है एक ही जगह से कानून बनता है जो सारे देश पर लागू होता है और सब लोगों पर एक सी निगाह लेकर सबकी भलाई की बात सोची जाती है। जो चीज हमारी भावुकता से निकलती थी वह अब सरकारी तौर पर भी हमने पा ली है। हमारा काम है और इस देश के प्रत्येक रहने वाले का काम है कि और सभी चीजों को देश की एकता और हिफाजत के मुकाबले में कम समझें और जहां कही भी कोई ऐसी बात आवे जिससे देश की एकता में कुछ खलल आने का डर हो, कोई ऐसी बात पेश हो जिससे मुल्क की आजादी पर किसी किस्म का खतरा रहे तो वैसी हालत में और सब चीजों को भुलाकर सब चीजों को नजरअन्दाज करके देश की एकता और स्वतन्त्रता के लिये सबको तैयार रहना चाहिये। छोटी मोटी बातें होती हैं, होती रहती है और होती रहेंगी जिससे आपस में कुछ मतभेद हुआ करे। इन मतभेदों को भी दूर करने का रास्ता हमारे संविधान में है और लोगों की सभी जरूरी और वाजिब मांगें पूरी की जा सकती हैं। इसी में देश की भलाई है और हमारे संविधान की जड़ मजबूत हो सकती है ।

इसलिये मैं चाहूंगा, खास करके आपसे जो सरहद के निवासी हैं, कि आप देश को सबसे ऊपर समझें और देश की एकता और हिफाजत को बनाये रखने के लिये हर तरह की कुर्बानी और सेवा देने के लिये तैयार रहें। आज से नहीं, बहुत जमाने से देश की रक्षा का भार बहुत करके इन्हीं इलाकों पर आता रहा है और वह आज भी है और मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि इस जवाबदेही को पूरी तरह समझते हैं और जहां कहीं मौका होगा आप अपनी कार्रवाई से इस बात को साबित करेंगे कि पंजाब के लोग सबसे पहले हिन्दुस्तानी हैं उसके बाद और कुछ हैं। सबसे पहले हिन्दुस्तानी होने का अर्थ यह है कि जहां कहीं देश को जरूरत पड़े और

अपने खास इलाके की, अपने भाइयों और बहनों की जरूरत मुल्क की जरूरत से टकराये तो देश की जरूरत को इलाके की जरूरत से ज्यादा समझकर उसके लिये आप सब कुछ करेंगे ।

मैं जानता हूं कि आप पंजाब के लोगों में हिम्मत है, आप में कार्यकुशलता है, काम करने की शक्ति है । मुसीबत को आप ने हंसते-हंसते झेल लिया और फिर जैसे पहले थे वैसे तगड़े बन गये । यह देश के लिये बहुत भारी धन है और मैं चाहूंगा कि आप इस धन से हमेशा धनी रहें और सारे देश को धनी बनाये रहें। मैं चाहता हूं कि पंजाब के सभी लोग इस बात को कभी नही भूलें कि पंजाब हिन्दुस्तान का एक हिस्सा है और जब सारे का सारा हिन्दुस्तान सुरक्षित रहेगा तभी पंजाब सुरक्षित रहेगा । इसलिये आपकी सुरक्षा हिन्दुस्तान की सुरक्षा में है और आप उसके लिये जैसे हमेशा सब कुछ करते आये हैं आइन्दा भी करते रहेंगे ।

मैं जब से यहां पहुंचा हूं, मेरे साथ जो प्रम और आदर का भाव आप लोगों ने दिखलाया है उसके लिये मैं आप सबका हृदय से धन्यवाद करता हूं । मैं आशा करता हूं कि पंजाब से भारतवर्ष सुन्दर बना है इसका अनुभव आप करके अपना काम करते रहेंगे जिसमें देश पर किसी प्रकार से आपत्ति न आये ।

हंसराज महिला विद्यालय, जालन्धर में कुछ मिन्टों के लिए

मुझे बड़ी खुशी है कि चन्द मिनट के लिये भी मैं यहां आ सका और आप सब से मिल सका ।

आपका यह विद्यालय बहुत बड़ा काम कर रहा है और हमारी भावी संतान किस तरह बने इस काम के लिये आपको तैयार कर रहा है । आप केवल अपनी ही कर्तव्य अदा नही करें बल्कि आपके द्वारा देश में सबका कल्याण हो । मैं यह चाहूंगा कि जिस ऊंचे उद्देश्य के साथ, जिन भावनाओं को लेकर इस विद्यालय को जन्म दिया गया उन्हें अच्छी तरह से आप अपने सामने रखें और कोई भी ऐसी बात नही होने दे जिससे आपको स्वयं ग्लानि हो अथवा इस संस्था पर लगे । मैं आशा करता हूं कि जिस प्रकार की शिक्षा आप पा रही है वह लाभप्रद होगी और आप सबका कल्याण करेंगी ।

हंसराज महिला विद्यालय, जालन्धर में जब राष्ट्रपति जी कुछ मिनटों के लिये वहां पधारे थे, वहां की बालिकाओं से उन्होंने कहा था; 12 अप्रैल, 1961

लाला लाजपतराय अस्पताल के नये भवन का उद्घाटन

माननीय मुख्य मंत्रीजी, श्रद्धेय श्री बदरी दास जी, बहनो तथा भाइयो,

मैं इस अस्पताल में आज सबसे पहले आया हूं। इसका इतिहास जो आपने बताया उससे यह जाहिर है कि बहुत कठिनाइयों से गुजरता हुआ यह यहां तक पहुंचा है। इसको और भी आगे जाना आवश्यक है इसमें कोई शक नही। इसका नाम श्रद्धेय लाला जी की माता गुलाब देवी से जुटा हुआ है और इसलिये साथ-साथ यह लाला जी का और उनकी माता दोनो का एक प्रकार से स्मारक बन जाता है और बन गया है। इस संस्था को आज तक सब लोगों की सहायता मिलती रही है . . म्युनिसिपलिटी, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, गवर्नमेंट और जन साधारण और उससे यह यहां तक पहुंच सका है और मुझे विश्वास है कि जो आवश्यकता है वह जल्द से जल्द पूरी हो जायेगी और यह अस्पताल एक नामी अस्पताल होकर रह जायेगा। मैं पूरा इस बात का विश्वास रखता हूं कि जिस तन्देही और विश्वास के साथ इसको चलाया गया है और जिस तरह से इसकी दिन-प्रति-दिन तरक्की हुई है उससे यह आशा बंधती है कि आगे जो कुछ बाकी रह गया है वह भी जल्द पूरा हो जायेगा।

लाला जी और उनकी पूज्य माता के सम्बन्ध में मैं क्या कहूं। वह तो देश के एक ऐसे नागरिक हुए जिन्होंने देश का शिर ऊंचा किया और सिर्फ देश में ही नहीं, विदेशों में भी जाकर उन्होंने भारत का नाम ऊपर किया। जो लड़ाई देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ी गई उसमें ऐसे समय पर उन्होंने भाग लिया जब बहुत लोग आये नही थे और अन्त तक लड़ाई में जूझते रहे, उसी में उनका देहान्त हुआ यह आप सबको मालूम है। वह एक ऐसा इतिहास है जिससे हम सब को प्रेरणा मिलती आयी है और आइन्दे भी मिलती रहेगी। और विशेषकरके आजकल के नवयुवकों को जिन्होंने लाला जी को नही देखा, जिन्हें उनके दर्शन का सौभाग्य नही हुआ उनको यह स्मारक याद दिलायेगा और उनके जीवन के आदर्श से उनको प्रेरणा मिलती रहेगी।

मैं आशा करता हूं कि यह अस्पताल एक महान् व्यक्ति के नाम पर स्थापित किया गया है, इसका काम दिन-प्रति-दिन फूलेगा, फैलेगा और इतना कहकर आपसे निवेदन करूंगा कि जो मूर्ति अनावरण की विधि हो उसको पूरा कर लें और इस संस्था को चलाने में बराबर सहायता करें।

लाला लाजपतराय अस्पताल के नये भवन का उद्घाटन करते समय भाषण; जालन्धर, 12 अप्रैल, 1961

जालन्धर नगरपालिका द्वारा दिये गये मानपत्र का उत्तर

मुख्य मन्त्री सरदार प्रतापसिंह कैरों, नगरपालिका के अध्यक्ष महोदय, बहनो तथा भाइयो,

अभी आपने जो मानपत्र सुनाया उसका असर जो मेरे दिल पर हुआ है मैं बता देना चाहता हूं। इसने यह असर मेरे दिल पर पैदा किया कि पिछले 40, 42 वर्षों का इतिहास मेरी आंखों के सामने आकर खड़ा हो गया। मुझे वह दिन याद आगया जब हिन्दुस्तान ने एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक आवाज से स्वराज्य की मांग पहले-पहल पेश की थी और उसका कारण उस जमाने में यह हुआ था कि आपके इस पंजाब में एक भयंकर हत्याकांड ब्रिटिश सरकार की ओर से हुआ और उससे जो चिनगारी निकली उसने सारे भारतवर्ष में एक ऐसी आग लगा दी जो उस वक्त तक जलती रही जब तक हिन्दुस्तान को स्वराज्य नहीं मिला।

मैं देखता हूं कि यहां पर बहुतेरे नवजवान लोग हैं जिनमें बहुत ऐसे हैं जिन्होंने उन दिनों की आग अपनी आंखों नहीं देखी होगी और जो लोग इतने बूढ़े हो गये हैं जिन्होंने 40, 42 वर्षों की घटनाएं अपनी आंखों से देखी है उनको केवल याद दिला देना काफी है कि उस वक्त किस तरह से सारे देश में एकता की लहर उठी थी। उस वक्त हिन्दू और मुसलमान, सिख और ईसाई और चाहे जितने धर्म के अनुयायी बसते थे सबके सब एक:साथ मिलकर महात्मा गान्धी के पीछे चलकर समय की माग में शरीक हुए थे। और सिर्फ यही नहीं, लोगों ने सभाओं में, बड़ी-बड़ी जमातों में स्वराज्य के लिये अपनी ख्वाहिश जाहिर की और एक-साथ मिलजुल कर सबों ने कुर्बानी की और वह कुर्बानी ऐसी हुई कि जिसका मिसाल बहुत कम मिलता है। बिना हथियार उठाये एक-साथ सैकडों आदमी जिनमें हिन्दू, सिख और मुसलमान सब शरीक थे गोलियों का शिकार होना इस तरह का कम मिसाल देखने में आता है। वही कारण है कि असहयोग आन्दोलन खड़ा हुआ। वह इतना जबर्दश्त हुआ कि उसमें तरह-तरह की दिक्कतें पेश आने के बावजूद, तरह-तरह की रुकावटें रहने के बावजूद अन्त में पूरी क़ामयाबी हासिल करके ही शांत हुआ। यह इतिहास भारतवर्ष के लिये ही नहीं, सारे संसार भर के लिये एक महत्वपूर्ण इतिहास है क्योंकि संसार के इति-

---

नगरपालिका जालन्धर द्वारा दिये गये मानपत्र के जवाब में भाषण; 12 अप्रैल, 1961

ह्रास में यह पहला ही अवसर था जब एक जबर्दस्त ताकतवर सरकार के खिलाफ निहत्थे लोगों ने बिना हथियार उठाये स्वराज्य प्राप्त कर लिया और उसमें सच पूछिए तो भारतवर्ष के प्रत्येक कोने के लोगों ने, स्त्रियों ने, पुरुषों ने, बच्चों ने, बूढ़ों ने पूरी तरह भाग लिया और उसका यह नतीजा हुआ कि सबों के दिलों में स्वराज्य के लिए एक ऐसी जबर्दस्त लालसा पैदा हो गई थी कि जब तक हमने स्वराज्य प्राप्त नही किया तब तक हम बैठ नहीं सके।

जब यह इतिहास हमारे सामने आता है तो हमको यह भी सोचने की ज़रूरत हो जाती है कि जिस स्वराज्य को हमने इस तरह से प्राप्त किया है क्या उसका पूरा मकसद हासिल हो गया, क्या स्वराज्य से हम जो कुछ चाहते थे उसको हम पूरा कर पाये है या अभी भी बाकी है। बात तो यह है कि यह काम अनन्त है, इसका कभी अन्त नही हो सकता है क्योंकि किसी तरीके का, रास्ते का कभी अन्त नही होता, वह बढ़ता ही जाता है और इस देश के लोग स्वतन्त्र होकर और ज्यादा महसूस करने लग गए है कि उनमें कौन कहां है जिनकी तरक्की अभी बाकी है।

जब हम सारे देश का ध्यान करते है तो बावजूद इसके कि पिछले 10, 12 वर्षों मे बहुत तरक्की हुई है हम यह भी पाते है कि अभी भी देश में गरीबी काफी है, अभी भी अनपढ़ लोग बहुत है, अभी भी ऐसे लोग जो बीमारी के शिकार होते है और जिनके लिये पूरी दवा नही मिलती है बहुत है। अभी भी हमारे देश में जितना और देशों के लोग अपने खेत से, अपनी काश्तकारी से, अपने कारखाने में पैदा करते है उतना हम नही पैदा करते है। इन सब कमियों को पूरा करना स्वराज्य का काम है और इस समय जितने लोग गवर्नमेंट में काम कर रहे है सब इस देश का काम करते है और इस कमी को महसूस करते है कि इसको जल्द-से-जल्द दूर करें।

इसमें कोई शक नहीं कि काफी तरक्की हुई है और जो योजनाए बनी है उनका फल भी कुछ हद तक लोगों को मिल रहा है। मगर उसके साथ ही यह भी याद रखने की बात है कि किसी भी योजना का फल तुरन्त का तुरन्त नहीं मिलता है और उसका फल पाने में कुछ समय लगता है, बीज लगाते ही फल नहीं मिलता, खेत को बोते ही फसल नहीं तैयार होती। जो जितना बड़ा काम होता है उसमें उतना समय लगता है और उसके लिये इन्तजार करना होता है। तो अगर आज हम 16 आने स्वराज्य के जरिये हम नही प्राप्त कर पाये हैं तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। बल्कि जो तरक्की हुई है उससे हमारा उत्साह बढ़ना

चाहिये और जो कुछ बाकी है उसको प्राप्त करने में और जोरों से लोगों को लग जाना चाहिये ।

सबसे बड़ी चीज जो याद रखने की है वह यह है कि स्वराज्य हमने हासिल तो किया मगर उसको सुरक्षित रखने के लिये हमेशा काम हमको कुछ करना है क्योंकि वह कोई ऐसी चीज नही कि एक बार हासिल हो गई तो खुद व खुद बराबर के लिये हमारे पास रहेगी । उसको सुरक्षित रखने के लिये हमे दिन-प्रति-दिन कुछ करना चाहिये । मै समझता हू कि कोई भी कीमती चीज़ अगर वह कीमती सचमुच है तो उसकी हिफाजत ज़रूरी होती है और उसकी हिफाजत के लिए उसको हासिल करने में जितनी मेहनत करनी पड़ी उससे उसकी हिफाजत में कम मेहनत जरूरी नहीं होती, उसकी हिफाजत के लिये भी काफी मेहनत करनी पड़ती है यद्यपि वह मेहनत दूसरे किस्म की है । मै चाहता हूं कि सारे देश के लोग इस चीज़ को नही भूलें कि इस देश को बड़ी मेहनत से स्वतन्त्र बनाया गया है और इस स्वतन्त्रता को सबको मिलकर कायम रखना है । जिस तरह से सब लोगो ने मिलकर इसको हासिल किया उसी तरह से जब तक सब मिले रहेंगे तब तक इसको कायम रख सकेंगे ।

हमारे देश का इतिहास बहुत सुन्दर है । लेकिन इसमें अगर पीछे जाते है तो एक चीज़ बार-बार हमको देखने को मिलती है । आज तक हिन्दुस्तान ने जितनी लड़ाइयां की है उन लड़ाइयों मे से किसी में हिन्दुस्तानी किसी विदेशी से नही हारे । मगर दु:ख, शर्म और अफसोस की बात है कि जब कभी हिन्दुस्तानी हारे तो हिन्दुस्तानियों से हारे । जो हिन्दुस्तानी देश के लिये लड़े उनके खिलाफ दूसरे हिन्दुस्तानी लड़े विदेशियो से मिलकर और अपने भाइयो को हराकर दूसरे को सारा हिन्दुस्तान दे दिया । यह हमारा इतिहास बहुत ही दुखद इतिहास है, शर्मनाक इतिहास है मगर इतिहास है, इसको हम भूल नही सकते । इसको और भी याद रखना इसलिये जरूरी है कि अभी हम नहीं कह सकते कि हम पूरी तरह से खतरे से महफूज़ है । अभी खतरा हमारे सामने है और इसलिये जरूरी है कि इस एकता और स्वतन्त्रता को हमें अच्छी तरह से पुष्ट करना हमारा कर्तव्य है । यदि इस एकता में कमजोरी आयी चाहे जिस कारण से हो तो उसका असर हमारी स्वतन्त्रता पर पड़े बिना रह नहीं सकता ।

हमारी एकता ऐसी कमजोर नजर आती है कि छोटी-मोटी बातों पर ऐसे झगड़े हो जाते है जिनका असर हमारे लोगों पर पड़ता है चाहे वह भाषा को लेकर

हो चाहे वह धर्म या मजहब के नाम पर हो, चाहे वह सूबा के नाम पर हो। इन सब चीजों से आपस में फूट पैदा होती है जो एक-दूसरे से जुदाई पैदा करती है जिसका नतीजा यही हो सकता है कि हमारा स्वराज्य कमजोर हो। तो आज हिन्दुस्तान के लोगों के लिये सबसे ज़रूरी यही है कि वे समझें कि चाहे आपस में जितना भी मतभेद हो, मतभेद को कोई मिटा नहीं सकता है, वह रहा है और रहेगा मगर उसकी वजह से सारे देश को नहीं भूलें, देश की एकता को नहीं भूलें। आपस में मतभेद हो उससे बचना है, एक-दूसरे से मिलजुल कर उसको सुलझाना चाहिए। अगर हम देश की स्वतन्त्रता को अपनी आंखों के सामने रखेंगे तो कोई ऐसा सवाल नही हो सकता है जिसको हम सुलझा नहीं सकें। अगर इस चीज़ को हम सामने रखेंगे तो कठिन से कठिन समस्या को भी हम हल कर सकेंगे।

देश की स्वतन्त्रता को नजरअन्दाज कर दें और छोटी बातों मे पड़ने लग जायें तो उसका नतीजा इतना बुरा होगा कि उसका हम खयाल भी नही कर सकते। जब-जब मै हिन्दुस्तान के इस हिस्से मे आता हू तो पिछला इतिहास मेरी आखों के सामने आ जाता है और तब मै सोचता हू कि हिन्दुस्तान के इस हिस्से के लोग जिन्होने नुमाया काम स्वराज्य आन्दोलन के आरम्भ मे किया और उसमे बराबर योगदान देते रहे क्या उनसे हम यह आशा करें या नही करें कि अन्त तक वे एक होकर सारे देश की सुरक्षा और हिफाजत के लिये हमेशा कुर्बानी करने के लिये तैयार रहेगे। यह ईश्वर की देन है कि आप ऐसे मौके पर है जो एक तरह से सरहद है। जो सरहद पर बसते है उन पर ज्यादा जिम्मेदारी आ जाती है। मगर इस जिम्मेदारी के साथ उनका अपना तजुरबा और अनुभव ऐसा होता है कि वे जबर्दस्त हो जाते है। जो जितना मुशक्कत करता है वह उतना मजबूत होता है। इस तरह से सरहद के लोग बराबर दूसरे लोगों के साथ खटपट होने की वजह से हमेशा अपने को तैयार रखते है और यह एक प्रकार से उनके जिन्दगी का एक हिस्सा बन जाता है कि वे देश के लिये हमेशा जो कुछ करना हो करने के लिये तैयार रहै। हमको आशा है और पूरा विश्वास है कि आपके इस इलाके से कोई भी खतरा आगे नही बढ़ने पावेगा। अगर कोई खतरा आता हो तो उसको आप यहां ही इसके पहले ही रोक देगे और दूसरे लोगों को इसमें परिश्रम करने की ज़रूरत ही नही होगी। मै यह नही कहता कि दूसरे लोग तैयार नही रहे। दूसरों को भी तैयार रहना है। वे इस तरह से तैयार रहें कि आपके साथ हाथ बटावें। मगर आप ऐसे मौके पर है, इसीलिये आपसे निवेदन

है कि आप अपनी जबावदेही को समझें। मैं जानता हूं कि आप इसको समझते हैं और याद रखते हैं और आपसे जो मांग की गई है उसको आपने पूरा किया। उसी तरह से आप आइन्दे भी इस देश की आजादी को सबसे ऊपर रखकर अपनी सब समस्याओं को हल करेंगे और इस देश को आगे ले चलने में और स्वराज्य का काम जो बाकी रह गया है उसको पूरा करने में मदद करेंगे।

अभी देश हर तरह से आगे बढ़ने के प्रयत्न में है। पंचवर्षीय योजनाएं बनी है। दो पूरे हो चुके हैं। अब तीसरी पर काम शुरू हो रहा है और इन योजाओं से बहुत कुछ आशा की जाती है। मगर मैं यह कहना चाहता हू कि इन योज-नाओं को पूरा करने का काम भी आप लोगो का है। गवर्नमेंट अपनी ओर से रास्ता दिखला सकती है। रास्ते पर चलने और मकसद तक पहुचने का काम देश की जनता का है। जो कुछ गवर्नमेट कर रही है वह रास्ता दिखलाने का काम है और उस रास्ते पर चलने मे जो कुछ कठिनाई आ सकती है उससे जहां तक हो सकता है उसमे मदद करने का काम उसने हाथ में लिया है। मगर उस रास्ते पर चलकर मकसद तक पहुंचने का काम देश के लोगों का है और मै जानता हूं कि इस काम मे आप किसी से पीछे नही है, अगर कहे तो आप सबसे आगे है क्योंकि हम तजुरबे से जानते है।

अभी बहुत दिन नही हुए है जब स्वराज्य प्राप्ति के साथ-साथ मुसीबत भी हमारे देश पर आयी और उस मुसीबत मे लाखो लोग परेशान हुए और परेशान होकर घरबार छोड़कर, धन-दौलत बर्बाद कर उनको यहां आना पडा और दूसरी जगहों पर जाना पडा। मुझे वह दिन याद है जब जोरों से लोग पाकिस्तान से हिन्दुस्तान की ओर आ रहे थे। उस वक्त की मुसीबत जिन लोगो ने अपनी आंखों से देखी है वे ही इसको जान और समझ सकते है। मै गौरव के साथ कहना चाहता हूं कि मुझे यह देखकर खुशी है कि मुसीबत में पंजाब का एक आदमी भी ऐसा नहीं मिला जो किसी के सामने हाथ फैलाये और जो जहां पर है, ग़रीबी से ही सही, मुसीबत से ही सही, तकलीफ उठाकर ही सही मगर अपने पैरों पर खड़ा होकर चले और उसका ही नतीजा है कि 12 वर्षों के अन्दर लाखों लाख आदमी कहीं न कहीं बस गये हैं और जहां बस गये है वहां की रौनक बढ़ा रहे हैं। इस तरह से जहां-जहां पंजाबी जाते है चाहे वे खेती के काम में लग जाएं या किसी कारबार या उद्योग मे लगें, जिस काम में लगते है उसको खूबी से अंजाम देते हैं और अपने को सुखी बनाते है और आसपास के लोगों को सुखी बनाते हैं। यह एक ऐसा गुण जो आपका ही केवल नहीं है इस सारे देश के

लोगों का है और वही एक चीज़ है जिस पर इतना भरोसा करके हम आशा रखते हैं कि भारतवर्ष पर कोई भी मुसीबत नहीं आने देंगे और अपना देशप्रेम दिखलाते रहेंगे और इस देश को हमेशा स्वतन्त्र रखेंगे।

मैं आप सब बहनों और भाइयों का आभारी हूं। मैं जब से पंजाब में पहुंचा हूं, इतना प्रेम लोगों ने दिखलाया है और इतना उत्साह हमको मिला है कि उससे मेरी आशा और मेरा विश्वास दुगुना हो गया है और मैं इस विश्वास के साथ वापस जाऊंगा कि एक ऐसे सूबे को छोड़कर वापस जा रहा हूं जहां हम हर चीज़ की आशा रख सकते हैं और जहां हमारी सब आशाएं पूरी होंगी।

डी० ए० वी० कालेज, जालन्धर में भाषण

कई वर्षों से मेरे मित्र श्री मेहरचन्द महाजन का यह आग्रह था और मेरी अपनी भी उत्कट इच्छा थी कि मै इस महाविद्यालय में आऊं। आज वह अवसर पा और सब लोगों से मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई है। आपके शहर में आज मेरा 9 साल के बाद आना हुआ है। जब मै 1952 मे यहां आया था, उस समय यहां की हल-चल किसी और तरह की थी। देश के विभाजन के बाद जो उथल-पुथल हुई और जिसके कारण लाखो व्यक्तियों को अपने घर-बार छोड़ सीमा लांघ कर इस पार आना पड़ा, उन घटनाओ के फलस्वरूप जालन्धर के नागरिकों मे कुछ उद्विग्नता और व्यग्रता की झलक मिलती थी, जिसके बाहरी लक्षण यहा के गली-कूचों और वातावरण पर स्पष्ट दिखाई देते थे।

आज स्थिति बहुत कुछ बदली है। अनेक मुश्किलो के बावजूद पाकिस्तान से आनेवाले लोग किसी न किसी तरह फिर से आबाद हो गए है और यथापूर्व अपने-अपने कामो में लग गये है। कुछ वर्षो की कठिनाइयों के बाद वे लोग जो इस शहर मे आबसे है, जालन्धर को अपना घर समझने लगे है और स्वय जालन्धर ने अपने आप को उनके अनुकूल बना लिया है। इस सुखद समन्वय का सर्वप्रथम फल इस नगर के विस्तार के रूप मे हुआ है। विभाजन से पहले यहां की आबादी एक लाख से कुछ अधिक थी और इसी वर्ष जो जनगणना हुई है उसके अनुसार करीब तीन लाख हो गई है। यद्यपि साधारण रूप से देश की आबादी में वृद्धि एक चिन्ता का कारण है, किन्तु जालन्धर जैसे शहर का चहुंमुखी विस्तार, मै समझता हू, किसी को नही खटकेगा। जिन लोगों पर अधिकांश रूप से इस उन्नति और विस्तार की जिम्मेदारी आती है, वे अपने परिश्रम और अध्यवसाय के लिए प्रसिद्ध है। इस बात को देश के सभी लोग स्वीकर करते है। पाकिस्तान से आनेवाले शरणार्थियों ने, विशेषकर पंजाबियों ने महान विपत्ति के समय जिस हिम्मत और आत्मविश्वास का परिचय दिया है, वह चिर स्मरणीय रहेगा। इसके लिए मै इस राज्य के सब लोगों और यहां की सरकार को बधाई देता हू और उनकी सुख-समृद्धि की कामना करता हूं।

जालन्धर काफी समय से शिक्षा का केन्द्र रहा है। पहले भी यहां बालको तथा बालिकाओं के कई छोटे-बड़े विद्यालय थे, जिनमे कन्या महाविद्यालय का विशेष स्थान था और उसी के एक समारोह मे मै यहा आया था। अब विभाजन

डी० ए० वी० कालेज, जालन्धर में भाषण; 12 अप्रैल, 1961

के बाद उनमे और भी वृद्धि हो गई है। शिक्षण संस्थाओ की संख्या मे ही वृद्धि नहीं हुई बल्कि प्रत्येक संस्था के आकार और स्वरूप का भी विस्तार हुआ है। शिक्षा की दिशा मे यह वृद्धि साधारण तौर से देश के सभी भागों मे होनेवाली उन्नति के अनुरूप ही है। शहरो मे ही नहीं देहातो मे भी शिक्षण सस्थाओ का विस्तार होता जा रहा है, और शिक्षा के लिये लालायित लोगो की सख्या इतनी अधिक है कि स्कूलो, कालेजों और विश्वविद्यालयों आदि में सभी जगह प्रवेश पाना एक जटिल समस्या बन गई है। टैक्नीकल शिक्षण सस्थाओं का तो कहना ही क्या। यद्यपि उनकी सख्या मे सबसे अधिक वृद्धि हुई है, उनमें प्रवेश अधिक दुर्लभ है। इस विस्तार को देखकर जहा खुशी होती है वहा कई एक सवाल भी राष्ट्र सेवियो के मन मे उठते है। आधुनिक शिक्षा और उन उद्देश्यों की पूर्ति कहा तक हो रही है जिनको प्राप्त किये बिना हम अपने राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त नही कर सकते, अर्थात् किस हद तक यह शिक्षा लोगो मे नागरिकता और एकता की भावना तथा सदाचार का सचार कर पा रही है? दूसरे, व्यावहारिक जीवनयापन अथवा जीविका के सवाल को हल करने मे इस शिक्षा से कहा तक सहायता मिल रही है? इन दो प्रश्नो पर विचार किये बिना शिक्षा के बढ़ते हुए विस्तार के सम्बन्ध में कुछ कहना उचित नही होगा।

पहले नागरिकता और सदाचार के प्रश्न को लीजिए। एक समय था जब इस देश मे आधुनिक शिक्षा का ध्येय बहुत सीमित समझा जाता था। पढ़-लिख कर अच्छी नौकरी पा लेना या वकालत, डाक्टरी आदि कुछ पेशो के लिये तैयार होना ही काफी समझा जाता था। विद्यार्थी की अपनी व्यक्तिगत और पारिवारिक जरूरतों को पूरा करना ही मानों शिक्षा का प्रमुख ध्येय था। अब स्वतन्त्र भारत मे शिक्षा सम्बन्धी दृष्टिकोण बहुत व्यापक हो गया है। कोई भी ऐसी शिक्षा जो समाज कल्याण और राष्ट्रीय हित की भावना से प्रेरित नही होती, आज उपयोगी नही कही जा सकती। राष्ट्र और समाज के हित में ही व्यक्ति का हित भी निहित है। हिन्दुस्तान एक आजाद देश है। सदियों की गुलामी और पराधीनता के कारण जो परिस्थितिया और प्रवृतियां हमारे देश में पैदा हो गई थी, उनके उन्मूलन के लिये और नवीन प्रवृत्तियो को प्रोत्साहन देने के लिये इस समय सारा राष्ट्र प्रयत्नशील है। इस महान् कार्य में कामयाबी हासिल करने के लिए देश से गरीबी और अभाव को दूर करना जरूरी है। किन्तु हम अपने भौतिक साधनों का कितना ही अधिक विकास कर लें और लोगों का रहन-सहन ऊंचा करने की दिशा मे चाहे सभी आवश्यक प्रयत्न कर ले, पर यह काम निरक्षरता के अन्धकार को दूर किए बिना सम्भव नही। इस दृष्टि से देश का भविष्य सुरक्षित रखने के लिये

और नव जागरण की शक्तियो को आत्मसात करने के लिये शिक्षा सर्वप्रथम उपाय है। इस सम्बन्ध मे किसी के दो मत नही हो सकते। यही कारण है कि बड़ी-बड़ी निर्माण योजनाओ को हाथ में लेने के कारण साधनो की कमी के बावजूद केन्द्रीय और राज्यों की सरकारों द्वारा शिक्षा के प्रसार पर पूरा जोर दिया जा रहा है।

मै जानता हू कि शिक्षा की प्रणाली को लेकर बहुत-कुछ मतभेद और आलोचनात्मक बातें अक्सर सुनने मे आती है। आलोचना या मतभेद से घबराने की जरूरत नही और जहा तक मै समझता हू सरकार इसका स्वागत करती है। जाग्रत समाज मे आलोचना ही सुधार का आधार बन सकती है, और जिस मार्ग का अनुसरण करने का हमने निश्चय किया है उसमे, अर्थात् जनतन्त्रात्मक प्रणाली मे, रचनात्मक आलोचना का स्थान बहुत ऊंचा है। इसलिये प्रत्येक सामाजिक संगठन और हर नागरिक का यह कर्तव्य है कि शिक्षा प्रसार के क्षेत्र मे वह पूरा योगदान दे। अभी तक इस दिशा मे हम जो कुछ कर पाये है, उस पर हम सन्तोष नही कर सकते। यह मानना होगा कि हमारा देश बहुत बडा है और हमारी समस्यायें अनेक और बहुत पेचीदा है, किन्तु हम इनके सुलझाने का सकल्प कर चुके है। यथाशीघ्र हमें देश के प्रत्येक नागरिक को साक्षर बनाना है। इस काम मे चाहे जितनी बाधाएं या मुश्किले आये, हमे उन सब को पार करना होगा।

इस अवसर पर इसी सम्बन्ध मे मै कुछ और भी कहना चाहूंगा। जब भी कोई बड़ा काम हाथ में लिया जाता है उसमे कामयाबी हासिल करने के लिये जिन बातो की ज़रूरत है उनमे सब से बडी बात लोगो का स्वस्थ दृष्टिकोण है। विचार करने और चिन्तन की क्षमता हर व्यक्ति में होती है, किन्तु ठीक और संतुलित विचार ही स्वस्थ दृष्टिकोण को जन्म दे सकते है। इस बात को हर आदमी निजी जीवन के अनुभव मे समझ सकता है। जिस व्यक्ति के विचार सीमित अथवा संकुचित होंगे और जो भविष्य की आवश्यकताओ का अध्ययन किये बिना तात्कालिक समस्याओ मे ही उलझा रहेगा, उसका दृष्टिकोण व्यापक नही हो सकता। इसी प्रकार जो व्यक्ति तात्कालिक प्रश्नों की एकदम अवहेलना कर, दीर्घकालीन योजनाओं में ही व्यस्त रहता है वह भी अपने जीवन को सुखी नहीं बना सकता। स्वस्थ दृष्टिकोण का यह तकाजा है कि हर प्रश्न को और हर समस्या को उसके असली रूप में समझा जाए। कुछ बातें ऐसी हो सकती हैं जिनका सम्बन्ध केवल व्यक्ति से ही है। निश्चय ही कुछ ऐसी भी है जिनका सम्बन्ध केवल एक राज्य से या क्षेत्र से हो सकता है, किन्तु ऐसी भी अनेक

समस्यायें हैं जिन का सम्बन्ध सारे राष्ट्र से है और जिन्हें सुलझाने के लिये राष्ट्रीय दृष्टिकोण का होना जरूरी है। यदि कोई किसी राष्ट्रीय समस्या को क्षेत्रीय आधार पर सुलझाने की भूल करेगा तो उसका वही परिणाम होगा जो एक क्षेत्र अथवा सामाजिक ममस्या को व्यक्तिगत मामला समझ कोई उसे निजी सुविधा के अनुसार निबटाने का यत्न करे।

इस लिये आप लोगों से और आपके द्वारा पंजाब के लोगों से मेरा यह निवेदन है कि आप लोग मभी ममस्याओं को उचित दृष्टिकोण से आंकने और सुलझाने का प्रयत्न करें। पजाब के लोग अपन परिश्रम और हिम्मत के लिये प्रसिद्ध है। इन गुणो के कारण सारा देश आपकी सराहना करता है। दूसरे राज्यों की तरह आप की भी कुछ ममस्यायें हो सकती हैं। नि.संदेह उन्हें सुलझाना आपका कर्तव्य है और इस काम मे आपकी मदद करने की जिम्मेदारी देश भर के लोगों की है। मैं यही चाहूंगा कि आप इन समस्याओ के हल की खोज में राष्ट्रीय दृष्टिकोण का पूरा ध्यान रखें। देश की एकता और पारस्परिक सद्भाव पर आश्रित राष्ट्रीयता की भावना हमारी सर्वोपरि आवश्यकता है। यह भावना बनी रही और दृढ होती गई तो हमे किसी बात की कमी नही रहेगी, हमारी कोई समस्या अनसुलझी नही रहेगी। जो काम भी हम लोग करे, इस बात का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए कि इसमे एकता और राष्ट्रीयता की भावना को किसी तरह की भी ठेस न पहुचने पाए।

मुझे बहुत खुशी है कि दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज के इस समारोह मे मे शरीक हो मका और इम विशाल विद्यालय से सम्बन्धित व्यवस्थापिको, अध्यापको तथा छात्रो मे मिल सका। इम महाविद्यालय की गणना पंजाब के बडे ही नही बल्कि मबसे पुराने शिक्षा केन्द्रो मे होती है। इसकी स्थापना के पीछे एक बहुत बडी प्रेरणा और समाज सेवा की भावना थी। ला० लाजपतराय और महात्मा हंसराज जैसी महान विभूतियो के नाम इसके साथ जुड़े हुए है। इसलिए इसकी अपनी परम्परा है जिसकी ज्योति और प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से दिए जानेवाले पुस्तक-ज्ञान मे कही अधिक महत्वपूर्ण है। मै चाहता हूं कि यह परम्परा बराबर पुष्ट होती रहे और अधिक से अधिक लोग इससे लाभान्वित हों।

जिन सफल छात्रों को आज उपाधिया और पुरस्कार मिले है उन्हें मैं बधाई देता हूं और आशीर्वाद भी। मेरी यह कामना है कि यह संस्था दिनोंदिन उन्नत हो और शिक्षा प्रसार जैसे महत्वपूर्ण कार्य में बराबर योगदान देती रहे।

इंडियन ऐकेडमी आफ फाइन आर्ट्स के भवन का उद्घाटन

सरदार ठाकुर सिह जी, बहनो और भाइयो,

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि आज मै आपके इस समारोह मे शरीक हो सका। मै समझता हूं कि बहुत वर्षो से इस तरह का विचार हो रहा था कि मैं ऐसे मौके पर यहा आ जाऊ। इसलिये मेरी खुशी और भी दुगुनी हो गई है। भारत इस समय स्वतन्त्र हो गया है और स्वतन्त्रता के बाद इसकी चौमुखी उन्नति, हर तरह की तरक्की इसमे होनी चाहिए और जब तक हमारे देश की कला चाहे वह दस्तकारी की कला हो, इमारत बनाने की कला हो चाहे लिखने-पढ़ने की कला हो हर प्रकार की कला को हम उन्नत नही कर सकते तब तक हमारा काम अधूरा रह जायेगा। इसीलिये जहा एक तरफ बहुत सी योजनाए बनी है और हम इस बात के प्रयत्न में है कि देश के लोगो को अधिक सुखी और समृद्ध हम बनावे, साथ ही साथ हम इस प्रयत्न मे भी है कि हमारी चौमुखी उन्नति कला की दिशा मे भी हो। इसलिये गवर्नमेंट ने कई ऐकेडमी कायम कर लिये और उनका मुख्य उद्देश्य है कि इस प्रकार की कला को प्रोत्साहन दे और जिसमे कैसे उसकी तरक्की हो इसका प्रबन्ध किया जाए और इस सिलसिले मे मं समझता हूं कि अनेक स्थानो पर प्रदर्शनी भी होती है और साथ ही साथ इस तरह का प्रोत्साहन देने का आयोजन किया जाता है। उसी सिलसिले मे आपके यहा का यह सुन्दर और सुखद आयोजन भी है क्योकि इसी तरह से कला और दस्तकारी की आज तक तरक्की हुई है और आग काफी हो सकती है। इसीलिए आपकी ऐकेडमी ने यह काम आरम्भ किया है और आज से नही बल्कि जैसा आप ने कहा, 30, 32 वर्षो से यह काम चल रहा है। श्री ठाकुर सिह ने एक नई प्रणाली कायम कर ली है जो भारतवर्ष मे एक ऊंची प्रणाली गिनी जाती है और उससे कला का नाम ऊंचा ऊपर उठ रहा है। इस स्थान पर जो मन्दिर बना है उसमें कला की ऐसी चीजें रखनी चाहिए जिनको देखकर लोग समझ सकें कि हमारे देश की कला कितनी ऊंची और सुन्दर है। इसलिये वह काम बहुत सी सुन्दर और सच्चा है।

आपने कहा कि मकान बनाने का काम अभी पूरा नही हुआ है, अभी अधूरा है और काम होता जा रहा है। मै आशा करूंगा और मै चाहूंगा कि यह काम

इंडियन ऐकेडमी आफ फाइन आर्ट्स के भवन का उद्घाटन करते समय भाषण; अमृतसर, 13 अप्रेल, 1961

पूरा हो जाए और जल्द से जल्द पूरा हो जाए जिसमे कला को पूरा प्रोत्साहन मिले और सब लोग अपने-अपने स्थान पर प्रगति करें । मै गवर्नमेंट की और जनता की ओर से पूरी तरह से आपको विश्वास दिला सकता हूं कि उनकी सहायता आपको मिलेगी और मुझे आशा है कि जैसे आज तक आप का काम चलता रहा है और भी सुचारु रूप से चलता रहेगा और यह यादगार ऐसा बन जायेगा जिसके द्वारा कला का प्रचार होता रहेगा ।

जलियांवाला बाग में राष्ट्रीय स्मारक का उद्घाटन

श्री जवाहरलाल जी, राज्यपाल महोदय, मुख्य मंत्री सरदार प्रतापसिंह कैरों, सरदार गुरमुखसिंह मुसाफिर, बहनों तथा भाइयो,

मैं आज इस समारोह में भाग लेकर अपने को बडा भाग्यवान मानता हूं। इसका कारण यह है कि एक ऐसी चीज है जो हमारे सामने हमारे 42 वर्षों की करामातो की एक साथ याद दिलाता रहेगा और उसी तरह से हमारी आजादी के अहिंसात्मक युद्ध को हमारे सामने रखेगा। यह 42 वर्ष का किस्सा हिन्दुस्तान की आजादी हासिल करने का किस्सा है और उसके बाद आजादी पाने के बाद हम किस तरह से मुल्क को ऊंचा उठाने का प्रयत्न कर रहे है उसकी कहानी है। जब 1919 का इतिहास सामने आता है तो उस वक्त का पूरा इतिहास आखों के सामने आ जाता है। एक तरफ तो आप के पंजाब में जो जुर्म हुआ था उससे लोग परेशान थे। दूसरी तरफ लडाई मे मदद करने के बाद भी ब्रिटिश गवर्नमेंट ने यह मुनासिब समझा कि हिन्दुस्तान में काला कानून हमेशा के लिये जारी करे। तो लोग सोचने लगे कि ऐसी दशा मे क्या किया जाए। महात्मा गान्धी ने सोचा कि सिवाय इसके कि हम अहिंसात्मक रास्ते पर चलकर सरकार का सामना करें हमारे लिये दूसरा कोई रास्ता नही है। इस काम को उन्होंने उन्ही दिनों मे शुरू किया। उन्होने इस मुल्क में इस काम का आरम्भ किया और उन्होंने ईश्वर का नाम लेकर सारे देश के लोगो को इसे शुरू करने का आदेश दिया। सारे मुल्क के अन्दर बडी-बडी सभाए हुई और लोगो मे चेतना आयी जैसा देश के अन्दर पहले देखने में नही आता था। ब्रिटिश गवर्नमेंट घबड़ायी। उसी का नतीजा था कि 13 अप्रैल को जलियावाला बाग में निहत्थे लोगों पर गोलिया से वार किया गया और ढाई तीन सौ आदमी मरे और करीब 1200 आदमी उसमें घायल हुए। यदि ओ डायर के पास और भी गोलियां रहती तो वह शायद और भी लोगों की हत्या करता क्योंकि उसने इस बात को जाहिर किया और कहा कि हम चाहते थे कि सिर्फ यहा ही नहीं बल्कि चारों तरफ ऐसा आतंक फैला दें जिससे फिर यहा के लोगों को सिर उठाने की हिम्मत न पड़े। आप जानते है कि उसने यहां सिर्फ गोलिया चलाकर काम को खत्म नही

जलियांवाला बाग में राष्ट्रीय स्मारक का उदघाटन करते समय भाषण; 13 अप्रैल, 1961

किया। उसके बाद बहुत दिनों तक रौलैट एक्ट यहा पर और पंजाब के कई शहरों पर और कई स्थानों पर जारी रहा।

उस अत्याचार की खबर हिन्दुस्तान के और हिस्सों मे जल्द नही पहुची। बहुत दिनो के बाद जब आहिस्ते-आहिस्ते खबर पहुंची तो लोग सारे मुल्क के अन्दर ऐसे क्रोध मे आ गए, ऐसे गुस्से मे आ गए कि वे सोचने लगे कि किस तरह से इसका कोई उपाय किया जाए। महात्मा गान्धी ने उसी समय अपना रास्ता बताया। यहा पर जब अत्याचार खतम हो रहा था, तब पडित मोतीलाल नेहरू, पडित मदन मोहन मालवीय, देशबन्धु दास, एम० आर० जयकर तथा दूसरे सज्जनों ने मिलकर एक कमिटी के जरिये जो कुछ हुआ था उसकी जांच आरम्भ की। गवर्नमेंट की तरफ से भी एक कमिटी जाच कर रही थी और बहुत-सी बातें जो सरकारी कमिटी के द्वारा न मालूम हुयी इस कमिटी के जरिये से मालूम हो गईं और सारे देश मे क्रोध की आग लग गई। नतीजा यह हुआ कि एक अहिसात्मक आन्दोलन एक साल के बाद शुरू हुआ और उसी का नतीजा हुआ कि 26,27 वर्षो के बाद अहिंसात्मक युद्ध के द्वारा हमने 1947 मे स्वराज्य पाया और स्वतन्त्र होकर अपने देश का बहुत-सा काम हम चला रहे है और दो वर्षो के बाद 1950 मे प्रजातन्त्र राज्य कायम कर हम स्वतन्त्ररूप से देश का काम चला रहे है।

यह पुराना किस्सा है। जब से स्वराज्य हम ने पाया है हमने महसूस किया कि स्वराज्य पा लेना ही काफी नही है। उसके साथ-साथ यह जरूरी है कि लोगों के जीवन का स्तर ऊंचा हो, उनका धन-माल बढ़े, उनको शिक्षा की सुविधा हो, उनका बीमारी से बचने के लिये इलाज हो और दूसरे प्रकार से उनको सम्पन्न किया जाए और इसी सिलसिले मे पचवर्षीय योजनाएं कायम हो रही है। दो पूरी हो चुकी है और तीसरी पर अब काम शुरू हो रहा है। यह सब कुछ उसी प्रयत्न का एक असर है जो इस जगह पर जो हत्या काड हुआ था उसके बाद देश के लोगों ने आरम्भ कया था। अब हम स्वतन्त्र हो गए है तो यह वाजिब था कि इस स्थान पर एक ऐसा स्मारक बनाया जाए जो सब को इन चीजो की याद दिलाता रहे और इसीलिये यह स्मारक बनाया गया है।

मैं समझता हूं कि इस स्मारक को चन्द लोग ही देख सकेंगे। देश के 45 करोड़ लोगों में से बहुत थोड़े ही लोग यहां आएंगे और इस स्मारक को देखेगे। इतने बड़े देश में जहा इतने लोग बसते हैं सब के लिए इस स्मारक के दर्शन के लिये यहां आना गैरमुमकिन है। मगर हम इस स्मारक को अच्छी तरह से तभी तैयार

समझेंगे जब हम दो चीज़ों को अपने दिल मे बैठा ले। एक चीज तो यह है कि मुल्क की आजादी के लिये हमार देश के लोगों ने किस तरह से मिलजुल कर खून बहाया और आजादी मिल जाने के बाद उस आजादी की हिफाजत करना, उसको कायम रखना हम लोगों का उतना ही बडा फर्ज है जितना आजादी को हासिल करना था।

इसके लिये सबसे जरूरी और कारगर चीज यही है कि हम देश की एकता को बनाये रखें। हमारे आपस मे मतभेद हो सकते है। मगर इन सब आपसी छोटे-मोट झगडों को इस मुल्क की आजादी से नीचा स्थान देकर रखना चाहिये और देश की एकता जिस पर हमारी आजादी निर्भर है हमेशा बनाये रखने का प्रयत्न करना चाहिये। जिस तरह से हिन्दू, मुसलमान, सिख, इसाई, सब का खून इस स्थान पर बहा था उसी तरह से हम सब को एक-साथ मिलकर देश की उन्नति करने मे पसीना बहाना चाहिये और अगर दुर्भाग्यवश खून बहाने की जरूरत हो तो उसे बहाने के लिये तैयार रहना चाहिये। यदि हम इस चीज को याद रखेंगे, देश की एकता को सामने रखेगे और सब मिलजुल कर देश की आजादी के लिये तैयार रहेंगे तभी हम इस मुल्क के सच्चे रूप को समझेंगे और अपना और देश का और सब का कल्याण कर सकेंगे।

मुझे बडी खुशी है और मैं अपना सौभाग्य मानता हू कि आपने मुझे यह मौका दिया, मुझे यहा आमन्त्रित करके इस समारोह मे भाग लेने का मुझे मौका दिया। जय हिन्द।

राष्ट्रीय अनुशासन योजना के अवसर पर

मुझे खुशी है कि इस राष्ट्रीय अनुशासन योजना अर्थात् नेशनल डिसिप्लिन स्कीम के प्रधान संचालक श्री भोंसले के निमन्त्रण पर मै यहा आ सका और इस प्रशिक्षण केन्द्र को देख सका। इस योजना के अन्तर्गत जो ट्रेनिग दी जा रही है और जिस साधारण कार्यक्रम पर अमल किया जा रहा है, उसे देखकर इसकी उपयोगिता में कोई सदेह नही रह जाता। हमारा देश जितना बड़ा है, उतनी ही अधिक जटिल उसकी समस्यायें है। दूसरे देशो के बारे मे हम अक्सर सुनते है कि अमुक राष्ट्र के लोग बहुत अनुशासित है और इसके कारण उनका आचरण तथा दैनिक व्यवहार ऐसा है जिसे सभ्य समाज के अनुकूल कहा जा सकता है। इससे प्राय: लोग बाहर के देशो की अपने देश से तुलना करने लगते है। इस-लिए यह जरूरी है कि हम अपनी स्थिति को ठीक से समझे और यह जानने का यत्न करे कि भारतीय समाज को सुधारने की दिशा मे हम क्या कर रहे है और इस सम्बन्ध मे हमारी क्या योजनाये है। इन योजनाओ को कार्यरूप देने में हमारी क्या कठिनाइया है, हमारे क्या साधन है और क्या सीमाये है, यह जानना भी आवश्यक है।

जैसा मैने अभी कहा, हमारा देश बहुत बड़ा है और उसकी जनसंख्या 40 करोड से ऊपर है। उसमे कई राज्य और क्षेत्र है, जिनकी अलग-अलग भाषा, अलग-अलग रीति-रिवाज और रहन-सहन के स्तर भी बहुत हद तक अलग-अलग है। ऐसे समाज मे कोई भी सुधार सम्बन्धी योजना चलाना आसान काम नही है। किन्तु हमें यह काम करना है और सब प्रकार की कठिनाइयो पर पार पाकर हम इसे करके रहेगे। हम जानते है कि भौतिक साधनो के विकास द्वारा देश सम्पन्न हो सकता है, और सम्भव है वह गरीबी को भी दूर कर सके, परन्तु यह आवश्यक नही कि खाली आर्थिक उन्नति से वहा के लोगो की सामाजिक स्थिति में भी सुधार हो जाए। इसलिये हमारी यह धारणा है कि भारत के लोगों को उन्नत करना और यहां की सामाजिक स्थिति को सुधारने के लिये यत्न करना भी उतना ही आवश्यक है जितना नये उद्योगों को स्थापित करना और नदियों पर बांध का निर्माण करना। राष्ट्र का कोई भी हितैषी समाज-सुधार के प्रयास को गौण नही कह सकता और न ही इसकी अवहेलना कर सकता है। यही कारण है कि भारत के युवक वर्ग में अनुशासन की भावना का संचार करने की योजना

सरसिका (अलवर) में भाषण; 16 अप्रैल, 1961

को हम एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्र निर्माण का काम मानते है। छोटी उम्र के बच्चे और नौजवान जिनका सम्बन्ध इस नेशनल डिसिप्लिन स्कीम से है, सच्चे अर्थों में राष्ट्र की रीढ़ है। उनकी देखभाल करने और उनका स्वस्थ दृष्टिकोण बनाने का अर्थ भावी पीढ़ियों के लिये उन समस्याओ को सुलझाना अथवा उनमे कमी करना है जिनसे आजकल हमें जूझना पड़ रहा है।

यह कहने की आवश्यकता नही कि अनुशासन का मानव के शरीर और मन से घनिष्ट सम्बन्ध है। छोटी उम्र मे क्रियाशीलता द्वारा यदि बच्चों को अनुशासन की ओर प्रेरित किया जाये तो उस पर अच्छे संस्कार पड़ते है। कार्यक्रम के अनुसार काम में लगे रहने से उत्साह का जन्म होता है और युवकों के हृदय में आशा तथा प्रेरणा पल्लवित होती है। इसी प्रकार मानव में अनुशासन की नीव रखी जा सकती है। मै मानता हूं कि यह काम कठोर परिश्रम और अध्यवसाय मागता है, और चूकि इसमें न तड़क-भड़क है और न यह प्रदर्शनीय है, इसलिये इसकी ओर सभी आकर्षित भी नही हो पाते। कुछ भी हो, इसका महत्त्व बहुत अधिक है। इस योजना और ऐसी ही दूसरी बालोपयोगी योजनाओं की सफलता पर ही यह निर्भर करेगा कि भावी भारत के जन-गण मे अनुशासन और सद्-व्यवहार का संचार कहां तक हो पाता है। मुझे इस बात की विशेष खुशी है कि इस राष्ट्रीय अनुशासन योजना में शारीरिक व्यायाम पर ही जोर नही दिया जाता बल्कि मानसिक विकास की ओर भी उतना ही ध्यान दिया जाता है। वास्तव में बच्चों की शारीरिक और मानसिक क्रियायें बहुत कुछ मिली-जुली होती है, किन्तु फिर भी इन दोनों प्रवृत्तियों के विकास पर पूरा ध्यान देना बहुत ज़रूरी है।

देश के युवक वर्ग और नौजवानों के लिये और भी कई योजनाये है जिन पर आजकल अमल हो रहा है, जैसे स्काउटिंग, एन० सी० सी० और ए० सी० सी०। इन सभी दलों और आन्दोलनों का उद्देश्य बच्चों में अनुशासन की भावना का संचार करना ही है। ये सभी योजनायें बालक-बालिकाओं और युवक वर्ग से सम्बन्ध रखती हैं। इसलिये मैं चाहूंगा कि इन सभी योजनाओं का एकीकरण हो और उनके संचालन में एक सूत्रता लायी जाए। इससे जहां अधिकतम लाभ हो सकेगा, वहां दोहरे काम की आशंका भी नहीं रहेगी, और इस प्रकार अपव्यय भी नहीं होगा। मै नहीं जानता कि इन सब योजनाओं में इस समय आपसी सम्बन्ध है या नहीं और यदि है तो कहां तक है। किन्तु यह देखते हुए कि इन सभी योजनाओं का संचालन केन्द्रीय सरकार द्वारा होता है, इसके एकीकरण में कोई कठिनाई नहीं होनी

चाहिये । हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि इन योजनाओं का संचालन प्रभावोत्पादक रीति से हो और इससे अधिकाधिक लोगों को लाभ पहुंचे ।

मैंने आज यहां जो कुछ देखा उससे बहुत आशा बंधती है । इस अवसर पर मैं इस योजना के प्रवर्तक और प्रमुख संचालक श्री भोंसले को बधाई देता हूं । मुझे आशा है कि यह रचनात्मक कार्य जारी रहेगा और बराबर आगे बढ़ता रहेगा । खुशी की बात है कि 8 राज्य इस योजना मे शामिल हो चुके है और बाकी राज्यों में इसके कार्यक्रम का विस्तार होने की आशा है ।

एक शब्द मै प्रशिक्षक लोगो से भी कहना चाहूंगा जो यहा ट्रेनिग दे रहे है । आप लोग यह न भूलें कि जिस काम के लिये आप आज यहां आए है वह राष्ट्रीय महत्त्व का है और अपने-अपने राज्यों तथा संस्थाओं में जाकर इस योजना के विस्तार का भार आपने अपने ऊपर लिया है । वह एक बहुत बडी जिम्मेदारी है । इस जिम्मेदारी को निभाते हुए आप राष्ट्र के भविष्य और इस योजना के उद्देश्यों को सदा ध्यान में रखेंगे, ऐसी मेरी आशा है । मै श्री भोसले का आभारी हूं जिनके अनुरोध के कारण ही मुझे यहां आने और आप सब लोगो से मिलने का अवसर मिला है ।

सर्वोदय सम्मेलन में भाषण

श्री जयप्रकाश नारायण, श्री शंकरराव देव, बहनों और भाइयो,

मुझे इस बात की खुशी है कि मै आपके निमन्त्रण को स्वीकार कर सका और आज सम्मेलन के अन्तिम दिन यहा पहुंच सका । मेरे यहां आने मे कई प्रकार की कठिनाइया थी, जिनमे मेरी अनिच्छा भी है । इच्छा रखते हुए भी कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना था इसलिए मै पहले हिचक रहा था । पर भाई प्रभाकर के आग्रह को मै रोक नही सका और आखिर हाजिर हो सका । यहां आकर मै आप सब पर कोई अहसान नही करता । मै विशेषकर इसलिए आता हूं कि आपका परिचय फिर से हो जाए और उस परिचय से मै स्वय लाभान्वित होऊं ।

ऐसी सभा मे आकर मुझे पुरानी बाते याद आती है वह समय और दृश्य भी आंखों के सामने आ जाते है जिनको पूज्य महात्माजी के दिनो मे हम देखा करते थे । उस वक्त भी देश के सामने मुश्किले थी । मगर तो भी हम सब एक राय, एक मत होकर दृढ़ निश्चय के साथ बढ रहे थे । महात्माजी के नेतृत्व और उससे भी बढकर उनकी तपस्या मे हमारा विश्वास था और इसलिए उस रास्ते पर चलने मे हम नही हिचकते थे क्योंकि हम जानते थे कि उससे हम से कोई भूल नही होनेवाली है और अगर होगी तो महात्माजी उसे संभाल लेगे । आज महात्माजी नही है । पर जो कुछ महात्माजी ने कहा है, जो कुछ उन्होने लिखा है, जो उनके जीवन के सिद्धान्त रहे है, वे सब हमारी आखो के सामने मौजूद है । इतना ही नही है अभी तक कुछ ऐसे लोग मौजूद है जिन्होंने उनके साथ रह कर उनकी सेवा की और उनके बताए रास्ते पर चले और उनके पीछे-पीछे चल कर उन्होने देश की सेवा की ।

बहुत-से प्रश्न जो आज हमारे सामने आते है वे उस वक्त भी मौजूद थे । मगर हम उनको किसी न किसी तरह से हल करके चले और आज भी आशा रखते है कि जो अभी प्रश्न है उनका भी कोई हल निकालेगे ।

विकेन्द्रीकरण के प्रश्न को ही ले लीजिए । उसमे हमको बड़ी कठिनाइयां देखने मे आती है । जहा एक तरफ हम चाहते है कि विकेन्द्रीकरण हो दूसरी तरफ हम यह भी देख रहे है कि केन्द्रीकरण बड़े जोर से आगे बढता है । आप राजनीति को ही ले लीजिए । उसमें ही आपको बहुत सोचने को मसाला मिल

सर्वोदय सम्मेलन मे भाषण; चेब्रोल (आन्ध्र प्रदेश), 20 अप्रैल, 1961

जाएगा। इसमे कोई सन्देह नहीं है कि आज देश मे इस प्रकार की सत्ता चल रही है जो लोगों के मत से अपनी जगह पर पहुंच गई। पर इसमें भी मै यह देखता हूं कि जहां-तहां इस बात की कोशिश चलती रहती है कि सत्ता जनता के हाथ मे न रह कर व्यक्ति के हाथ मे आ जाए। मेरा इसमे किसी व्यक्ति-विशेष पर आक्षेप नही है। मै इस चीज़ को देख रहा हूं कि अब जनता पर विश्वास कम करके व्यक्ति पर लोग विश्वास बढ़ाते है। महात्मा गाधीजी के दिनो मे भी यह बात थी। मगर उस समय यह था, उस वक्त महात्मा गांधीजी पर लोगो का इतना विश्वास था कि सत्य और अहिसा को छोडकर और किसी चीज की ओर नही चलेगे। आज भी उसी तरह सत्ता हाथ मे आ जाए जिनमें सत्य और अहिसा कूट-कूट कर भरी हुयी हो तब तो कोई कठिनाई नही होगी। मगर इससे बचने का रास्ता यही है कि जो लोग चुनते है वे स्वयं जागृत हो जाए जिससे कि वे अपने चुने हुए लोगो को काबू में रख सके। आज सभी जगह कांग्रेसी लोगो के बीच में आपस मे जगहो के लिए तनाव और झगड़े जारी है। जो काग्रेस के बाहर है उनके साथ तो है ही। जब तक सत्ता हासिल करने की इच्छा से काम होता रहेगा, हम सच्चे रास्ते पर नही चल सकेगे। कहने के लिए हम कह सकते है कि हम सत्ता चाहते है ताकि हम सेवा कर सके। मगर यह कोई ऐसी सत्ता नही है, इसका फैसला हरेक आदमी खुद कर सकता है कि वह सत्ता सेवा के लिए चाहता है अथवा सेवा सत्ता के लिए। यह ठीक है कि सेवा की जाए मगर सत्ता के लिए नही, सत्ता भी ली जाए मगर सेवा करने के लिए। यदि इसी रूप से हमारे शासन का काम चलने लगे तो जिस प्रकार का स्वराज्य महात्माजी चाहते थे उसे हम प्राप्त कर लेगे यह तो सत्ता की बात हुई।

अब दूसरी चीज़ संपत्ति पैदा करने की ले लीजिए। उसमे विकेन्द्रीकरण चाहते है। मगर उसमे भी हम देखते है कि बहुत कुछ केन्द्रीकरण होता जा रहा है। और वह केन्द्रीकरण एक प्रकार से अनिवार्य-सा है क्योंकि हम जिस तरीके से पैदा करना चाहते है वह तरीका ऐसा है जिसमे केन्द्रीकरण के बिना वह काम नही हो सकता। और यदि हम अपने सामने वही आदर्श रखेंगे जो उन देशो के, जिन्होने बहुत जोरो से केन्द्रीकरण कर लिया है तो सिवाय उस रास्ते पर चलने का दूसरा रास्ता हम को नही मिल सकता। एक पुरानी कहावत है : काले घर मे रह कर आदमी काला हुए बिना नही रह सकता। अगर हम चाहते है कि खूब बडे-बडे कारखाने हो तो केन्द्रीकरण के बिना यह नही हो सकता। इसका थोडा-बहुत अन्दाज हमे लड़ाई के दिनो मे मिल गया। हम देखते है एक बडा कारखाना चाहिए एक से काम नही चलेगा, दो चाहिए।

इस तरह के विस्तार से काम चलता गया तो कई कारखानों को इकट्ठा कर एक कारखाना बनायेंगे। यहा तक समय आ सकता है जब सारे देश में एक कारखाना हो जाए। अब सवाल यह है कि हम उस रास्ते पर जाएं या दूसरे रास्ते पर। आज दुनिया मे बिल्कुल उलट कर अलग चलना चाहे तो वह भी बडा कठिन है। यहा पर ज़रूरत इस चीज़ की है कि हम किस तरह से विकेन्द्रीकरण और केन्द्रीकरण को साथ मिला कर चले। इसके लिए इस बात की ज़रूरत है कि सारे देश के अन्दर यह भावना हो जाए कि हम सब को मिलजुल कर रहना है और केवल केन्द्रीकरण को दृष्टि मे रखकर हमे नही चलना है और न केवल विकेन्द्रीकरण को दृष्टि मे रखकर। मिलजुल कर चलने की दिशा मे हम जहा तक काम कर सकते है वहा तक हमें करना है। इसलिए आपने जो यह काम अपने हाथ में लिया है उसमे कठिनाइया बहुत है मगर आपको उनका सामना करना है। मै एक चीज़ और कहना चाहता हू।

हम यह देखते है कि हमारे देश के अन्दर अहिसा की बातें यहां भी होती है और बाहर भी होती है। सच पूछिए तो महात्मा गाधीजी की सबसे बडी देन यह थी कि उन्होने भारतवर्ष को नही सारे संसार को यह देन दी थी। आज समय ऐसा आ गया है कि जब लोग एक प्रकार से जितनी साइन्स व टेक्नोलौजी के द्वारा हुई है उस प्रगति से ऊब कर फिर अहिसा की तरफ झुकने लग गए है। मनुष्य खाते-खाते कभी इतना ऊब जाता है कि उसे भूख नही लगती और वह बीमार भी पड़ जाता है और तब उसे भोजन छोडना पडता है। अगर बिल्कुल नहीं छोड़ सकता तो उसमें कमी करनी पड़ती है। ससार मे यदि हम हथियार बिल्कुल नही बन्द कर सकते तो आहिस्ता-आहिस्ता बन्द करना चाहिए। मगर अफसोस है कि कोई इस ओर हिम्मत करके आगे नही बढ़ता। जिसके पास बहुत शक्ति है उसको छोड़ने मे झिझक हो तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नही है। पर जिस के पास शक्ति है ही नहीं, हथियार बहुत कुछ है ही नही उसको छोड़ने मे ज्यादा दिक्कत नही होनी चाहिए। इसलिए हम को इस दृष्टिकोण से भी देखना चाहिए क्या हम दुनिया में केवल अहिंसा की बातें करके दुनिया को किस तरह से समझा सकते है। हम को उससे भी आगे बढ़ना चाहिए। ये सब बाते जो मैंने कही उनका कुछ-न-कुछ सम्बन्ध संस्थाओं व शासन के साथ होता है। पर जो सबसे मौलिक बात है वह हम सब जगह शान्ति चाहते है वह शान्ति कहां से मिल सकती है इस पर हमें विचार करना है। सारी अशान्ति का कारण मनुष्य के अन्दर जो उद्विग्नता है वही है। वह निरन्तर किसी चीज की खोज में रहता है।

जब तक मनुष्य अपनी इच्छाओं व लालसाओं को काबू मे नही रखेगा तब तक उसे शान्ति नहीं मिल सकती । जितना अधिक मनुष्य को मिलता है उससे भी अधिक उसकी लालच बढती है । इसलिए इस लोभ का सवरण परमावश्यक है और यह तभी हो सकता है जब मनुष्य अपने हृदय की इच्छाओं को शान्त करे । उत्पादन के केन्द्रीकरण का मौलिक कारण यही है । यदि मनुष्य अपने भोगों व साधनो को इच्छापूर्वक कम कर सके तो वह अधिक सुखी रह सकता है । इसका यह अर्थ नही है कि हम हमेशा गरीबी मे रहें । हमे अपनी मानसिक वृत्तियों को काबू मे रखना चाहिए । जब मनुष्य मानसिक वृत्तियों को काबू मे कर लेता है तो उसके पास बहुत-से साधनो के होते हुए भी वह गुलाम नही बनता और जिसने मानसिक वृत्ति को शान्त नही किया उसके पास चाहे जितनी चीज़े हों वह हमेशा दुखी रहता है और उसको शान्ति नहीं मिल सकती । इस भोग-लालसा के कारण ही दुनिया मे लड़ाइया होती है, व्यक्ति व्यक्ति के बीच, देश देश के बीच, । भोग की वस्तुओं को लेना कुछ मना नही है मगर उनको काबू में रखना है और उनको त्याग करके भोगना है । त्याग मे भोग है । अगर हम इस भावना से शक्ति और अधिकार अपने हाथ मे ले तो ठीक है । इसी भावना से यदि हम संपत्ति पावे तो वह भी ठीक है । मै चाहता हूं कि सर्वोदय का सर्वोत्तम व सर्वप्रथम प्रयत्न यह होना चाहिए कि वह इस भावना को जागृत और दृढ करे । चूकि मै जानता हूं कि आप इस रास्ते पर हमेशा चलेंगे, दिन-रात चिन्तन करते रहते है प्रचार करते है, यहा से कुछ सीख करके जाता हू ।

अभी हाल मे सन्त विनोबा बिहार गए थे । उन्होने वहा कई जगहो पर मेरा भी कुछ जिक्र किया था । जो कुछ उन्होने सुना है वह सही बात है और हो सकता है कि चन्द महीनों के बाद मुझे फुर्सत हो जाए और ऐसा होने पर मुझ मे जितनी शक्ति रहेगी, भाग-दौड तो नही कर सकता मगर एक जगह बैठकर, आप लोगों के साथ लगाऊंगा । विनोबा का मार्गदर्शन जब तक हम लोगों को मिलता रहेगा और जनता का सहयोग मिलता रहेगा तो यह काम ज़रूर आगे बढ़ता जाएगा, यही आपके प्रति मेरी शुभकामना है ।

सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर सार्वजनिक सभा

राज्यपाल महोदय, मुख्य मन्त्रीजी, बहनो तथा भाइयो,

यह पहला अवसर नही है जब मै आन्ध्र के किसी एक स्थान पर इतनी बड़ी सभा मे भाषण करने के लिए उपस्थित हुआ हू । अगर मै भूला नही हूं तो मै दखिन से दखिन के हिस्से से लेकर उत्तर से उत्तर के हिस्से तक बराबर मै आपके प्रान्त में फिरा हूं और मुझे वह बात याद है कि जब मै भाषण के सम्बन्ध मे पूछा करता था कि मै हिन्दी मे भाषण करूं या अग्रेजी मे और सभी भाइयो से उत्तर मिला करता था कि मै हिन्दी मे भाषण करूं । वह परम्परा आज तक आपने कायम रखी है इसकी मुझे बड़ी खुशी है ।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद से देश मे बहुत-सी नयी योजनाएं चल रही है और इस बात का प्रयत्न किया जा रहा है जिसमे लोगो के जीवन का स्तर ऊचा हो, उनकी समृद्धि बढ़े । इन योजनाओं मे सफलता मिल रही है और जो कुछ सफलता मिली है उसको थोड़ा-बहुत हम अपनी आखो से भी देख सकते है । पर इसमें विचारने की बात यह है कि इसमे आपका क्या हाथ हो । योजनाओं से केवल लाभ उठाना ही आपका काम नही है, उनमें आपको हाथ भी बटाना है । जब मै यह सोचता हू कि उन दिनो मे जब हमने स्वराज्य नही पाया था, किस तरह से कितनी हिम्मत के साथ सारे देश के लोगो ने बडे-बडे काम अपने हाथ मे लिए थे, उस वक्त गवर्नमेंट से आशा नही होती थी, बल्कि बहुत-सी बातो मे इस बात का अन्देशा रहता था कि गवर्नमेंट की तरफ से बाधा मिलेगी । मगर बावजूद उसके जो गाधीजी रास्ता बतलाते थे उसको हम मंजूर करते थे, उस पर चलने की कोशिश करते थे । उसमे रचनात्मक कार्यक्रम एक क्रम था और इसीलिए अपनी शक्ति से हमने आगे बढने की कोशिश की तो हमारी शक्ति भी आगे बढ़ी । आप लोग जो शारीरिक परिश्रम करते है वे जानते है कि शारीरिक परिश्रम करने से शारीरिक शक्ति बढ़ती जाती है । इसी तरह से यदि हम नैतिक शक्ति बढाना चाहते है तो हमको नैतिक कठिनाइयो का मुकाबला करके आगे बढ़ना पडेगा तभी हम सफलता प्राप्त कर सकते है ।

मुझे एक बात का डर कभी-कभी होता है । मै कभी-कभी देखता हू कि कितने लोग जो पहले अपने ऊपर भरोसा किया करते थे वे भी छोटे-छोटे काम के लिए

सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर चेब्रोल, आन्ध्र प्रदेश, मे एक सार्वजनिक सभा में भाषण, 20 अप्रैल, 1961

गवर्नमेंट के पास पहुंचते है, बहुत जगहो मे गवर्नमेंट मदद भी करती है और काम आगे बढ़ाती है। परन्तु यह नही भूलना चाहिए कि हमारी मदद के लिए ही सही क्यों नही हो, गवर्नमेंट जितना काम अपने हाथ मे लेती जाती है, हमारी शकित का ह्रास होता जा रहा है। इसलिए आज सबसे बड़ा प्रश्न हमारे देश के सामने यही है कि किस तरह से हम उससे लाभ भी उठाऐ और अपनी शक्ति का ह्रास नही होने दे। सर्वोदय सम्मेलन जैसे सम्मेलन से मै यही आशा रखता हूं कि हमको वह पाठ पढ़ावे कि हम अपनी शक्ति का ह्रास नही होने दे और काम भी करते जाएं। देश भर के लोगो को यह बात याद रखनी है कि शक्ति उनके हाथ मे है। और गवर्नमेंट की तरफ से भी जो काम हो रहा है उनकी दी हुई शक्ति के बल पर ही वह काम कर रही है। मगर अकसर हम अपनी शक्ति को भूल जाते है और अपनी दी हुई शक्ति पर हम अधिक भरोसा करते है, अपनी शक्ति पर नही। अच्छे आदमी यह समझ सकते है कि अगर हम दूसरो पर निर्भर करने लग जाएं तो उसकी शक्ति कम हो जाती है।

हमारे सामने मौलिक प्रश्न यह आता है कि क्या हम समाज की शक्ति पर निर्भर करे या व्यक्ति की शक्ति पर। एक विचारधारा यह है कि हम समाज की शक्ति पर निर्भर करे और दूसरी विचारधारा यह है कि समाज की शक्ति तभी रह सकती है जब व्यक्ति भी शक्ति रहे। सर्वोदय मे और जिसे लोकतन्त्र कहते है यही अन्तर है। दोनो का लक्ष्य यही है कि सभी लोग सुखी हो। मगर जहा समाज पर अधिक जोर दिया जाता है वहा व्यक्ति की शक्ति का ह्रास हुए बिना नही रह सकता। इस चीज़ को हम आसानी से दो-तीन वातो से समझ सकते है। बगल में रेल-गाड़ी चल रही है। बहुत पहले जब आप पैदा नही हुए थे रेल-गाड़ी नही चलती थी। मगर तो भी लोग किसी प्रकार से देश के एक कोने से दूसरे कोने तक जा सकते थे और जाते भी थे। मगर आज हम इस काम को बहुत आसानी से कर लेते है। इसलिए रेल का आना हमारे लिए अच्छा ही है। मगर कही रेल के आने के कारण हम पगु बन जाएं और चलने की शक्ति खो दे तो उसका आना हमारे लिए अच्छा नही कहा जाएगा। इसलिए हमको इस बात को समझ लेना है कि कहा तक हम अपनी शक्ति को हाथ में करके जो दूसरे की बनाई हुई चीजे है उन पर निर्भर करे। इसका अर्थ यह हो जाता है कि यन्त्र हमारा मालिक है या यन्त्र के मालिक है हम। जब तक हम यह समझते है कि यन्त्र के मालिक हम है तब तक हम यन्त्र को काबू मे रख सकते है। इसलिए यह जरूरी है कि हम अपनी शक्ति को बचाकर रखे। अपनी शक्ति का अर्थ है प्रत्येक व्यक्ति की शक्ति।

हिन्दुस्तान को आज व्यक्ति की शक्ति की ज़रूरत है और वह इसलिए कि सारे देश का भला हो। सारे देश का भला करने में व्यक्ति की शक्ति लगनी चाहिए। मगर इसमें जोर या दबाव नही होना चाहिए। वह अपनी इच्छा से स्वय अपने हृदय के उल्लास के साथ होना चाहिए। यही परख है कि गुलाम आदमी की मेहनत और एक आजाद आदमी की मेहनत की। काम दोनों ही करते हैं और नतीजा दोनों का निकलता है। मगर एक में एक स्वतन्त्र व्यक्ति का अपना दान शामिल है और दूसरे में जबर्दस्ती उसकी शक्ति लगाई गई। हम जितनी अपनी जरूरत बढ़ाते जाएंगे हम परेशान होते जाएंगे। यह समाज के लिए और देश के लिए अच्छी बात नही है। इसीलिए महात्मा गांधी हमको सिखाया करते थे कि हमे अपरिग्रह का भाव रखना चाहिए, अपनी ज़रूरत से अधिक नही रखना चाहिए और ऐसा हम करेंगे तभी हम अपने को स्वतन्त्र रख सकेंगे नही तो हम को परतन्त्र होना पड़ेगा।

जीवन का भौतिक स्तर ऊंचा होना एक तरह से ज़रूरी है। भौतिक स्तर को ऊंचा करना हमने मंजूर किया है, उसे नीचा नही करना है। आपने यहां कई दिनो से सम्मेलन देखा है और जो भाषण यहां हुए है उनको सुना है। जहां तक मैं समझता हूं सर्वोदय का यही मुख्य कार्यक्रम है कि सब का भला हो मगर सब अपनी खुशी से अपना भला करे। अगर कोई जबर्दस्ती करके हमारा भला भी करना चाह तो हमें कहना चाहिए, माफ कीजिए। लोकतन्त्र में इसको हमेशा याद रखना है। आप लोग एक ऐसे प्रान्त के रहनेवाले है जहां के लोगों में चेतना बहुत है और बहुत दिनो से रही है। आपसे आशा की जाती है कि स्वराज्य हासिल करने मे जिस तरह से उत्साह और परिश्रम से आपने काम लिया उसी तरह से उसको सार्थक बनाने मे भी आप मदद करेंगे।

आपने बड़े उत्साह के साथ मेरा स्वागत किया और मुझे सम्मान दिया उसके लिए मै आपका बहुत धन्यवाद मानता हूं।

ग्रनभ जयन्ती समारोह के अवसर पर

श्रद्धेय पूज्य सन्त तुकड़ो जी, बहनो तथा भाइयो,

कुछ दिन हुए जब भाई तुकाराम जी मेरे पास पहुंचे थे और उन्होंने आग्रहपूर्वक यह कहा कि मै इस अवसर पर यहा आजाऊं तो मेरे दिल मे कुछ सदेह था कि मै यहा पहुंच सकूगा या नही और इसीलिए मैंने तुरन्त कोई आश्वासन देना उचित नही समझा। वह शायद कुछ उदास होकर वहां से चले हों पर मैं बराबर सोचता रहा और अन्त मे यह निश्चय किया कि किसी न किसी तरह से पहुंचना चाहिए और आज मै पहुंच गया और पहुंचकर मुझे अत्यन्त खुशी हुई कि आज हम सन्त जी के जन्म दिन पर यहां है और उसके उपलक्ष में उनको हार पहनाने का मुझे अवसर मिला।

कई वर्ष पहले मै इस आश्रम में आया था और उसके पहले भी एक बार आया था। उस समय से आज तक बहुत अन्तर पड़ा है, आपका कारबार बहुत बढ गया है और जहां तक मैंने सुना है गुरुदेव सेवा मंडल अपने काम को चारों तरफ बढा रहा है और फैला रहा है। जैसा अभी सन्तजी ने कहा, यह एक अत्यन्त आवश्यक बात है कि इस प्रकार की सेवा करनेवाले गाव-गाव में निकले और तभी ग्राम सुखी हो सकेंगे, वहां के लोगो की रहन-सहन, खान-पान, शिक्षा-सफाई सब कुछ का प्रबन्ध ठीक तरह से हो सकेगा।

आजकल बहुत करके जहा-जहा काम इस ढंग का कुछ होता है, कुछ दलबन्दी, कुछ पक्ष, कुछ पार्टी बन जाती है और उनकी वजह से जो मुख्य उद्देश्य होता है वह बहुत फीका पड जाता है और विचार दूसरी ओर लग जाता है और इसलिए आपने बहुत ही अच्छा आरम्भ किया है कि जो सेवक मंडल में शरीक हो या जो बाहर रहकर भी काम करना चाहें वे न तो जातिभेद रखेंगे न स्वार्थ-भेद रखेंगे, सिर्फ काम का भेद रखेंगे, न ऊंच का न नीच का बल्कि उनका काम यही होगा कि किस तरह से सब की उन्नति हो, किस तरह से सब को सुख मिले, सब को आराम मिले।

आपने जैसा कहा, हम लोग अकसर बहुत कुछ करते है मगर उद्देश्य की सिद्धि नहीं होती क्योंकि सोच समझकर हम उस काम को नहीं करते। तो सबसे पहली चीज़ जो ज़रूरी है वह यह है कि काम करनेवाले स्वयं स्वच्छ हों, हर तरह

मोझरी आश्रम मे ग्रनम जयन्ती समारोह के अवसर पर भाषण; अमरावती, 21 अप्रैल, 1961

से स्वस्च्छ हो और उनका कोई स्वार्थ नही हो, निजी स्वार्थ नही हो, उनमे दूसरो को समझने की शक्ति हो, दु:ख-दर्द जानने की शक्ति हो और अपने ऊपर कुछ कष्ट उठाने की भी शक्ति हो। तभी देश का सुधार हो सकता है ।

देश मे जबसे हम स्वतन्त्र हुए है अनेक प्रकार के काम हो रहे है । बहुत बडे-बड़े काम विशेषकरके इसलिए किए जा रहे है जिसमे लोगों की सम्पत्ति बढ़े, समृद्धि बढ़े और जिनको आज रुपये की आमदनी है उनका एक का सवा हो जाए, डेढ़ हो जाए, दो हो जाएं। इसका भी प्रबन्ध किया जा रहा है कि सभी बच्चो के पढ़ने के लिए स्कूल या दूसरे प्रकार का शिक्षालय मिले। सभी जगहो पर अस्पताल कायम करके लोगो के लिए दवा इलाज का भी प्रबन्ध किया जाए और किसानो मे इस बात का प्रचार किया जाए कि वे किस तरह अन्न अधिक उपजा सके। दूसरे जो काम करनेवाले है उनको भी यह रास्ता दिखलाया जाए कि वे अपने काम को ठीक तरह से किया करे । यह सब प्रयत्न हो रहा है और इन प्रयत्नो मे बहुत खर्च भी किया जा रहा है।

मगर साथ ही साथ यह भी शिकायत सुनने में आती है कि हमारे लोगो के चरित्र मे कुछ न्यूनता आती जाती है, कुछ कमजोरी आती जाती है जिसकी वजह से कोई काम पूरी तरह से सफल नही होता। जैसा आपने कहा दो तरह से काम होता है। एक तो शासन का काम होता है जो कानून और दंड द्वारा काम लेता रहता है और उस जरिए से वह लोगों का भला भी करता है, बुराई को भी रोकता है और हर तरह से उनको ऊचा उठाना चाहता है। मगर कोई काम भी हो वह तभी सुचारु रूप से पूरा हो सकता है जब उसके करनेवाले ठीक हो और काम करनेवाले ठीक तभी हो सकते है जब उनका अपना चरित्र जैसा आपने कहा हर तरह से अच्छा हो, शुद्ध हो। तभी वे सब काम कर सकते है। सच पूछिए तो कोई काम बडा या छोटा नही होता। काम करनेवाले यदि ठीक हो, सच्चे हों तो जिसको हम छोटा काम समझते है उसको भी बडा काम बना सकते है और अगर काम करनेवाले स्वच्छ नही हों, सच्चे नही हों, ठीक नही हो तो बडे से बड़े ओहदे का काम कयो न हो वह भी काम बिगड़ सकता है ।

इसलिए मनुष्य का चरित्र सुन्दर हो यह सबसे जरूरी, सबसे अधिक आवश्यक है और प्रत्येक मनुष्य तक पहुचने का शासन के लिए कोई साधन नही है कि प्रत्येक मनुष्य के पास पहुच करके उसके चरित्र को सुधारें। आज तक संसार मे, इस देश मे ही नही, संसार भर मे व्यक्तिगत शुद्धि, चरित्र

गठन गवर्नमेंट के द्वारा नही हुआ है । उसको करनेवाले दूसरे ही लोग होते हैं और जब तक मनुष्य के जीवन मे शुद्ध भाव नही आवे और उसको सचेत करनेवाले साधु-सन्त ऐसे नही मिल जाए जो उनको हमेशा सच्चे रास्ते पर ले जाएं तब तक उसके भटकने का भय बना ही रहता है । इसी खयाल से हमेशा हमारे देश में साधु-सन्तो का इतना ऊचा स्थान रहा है और साधु-सन्तों को ईश्वर का रूप ही माना गया है । इसीलिये कोई भी काम विशेपकरके भारतवर्ष में अगर किसी ऐसे आदमी के हाथों आरम्भ होता है जिसके शुद्ध चरित्र मे लोगों का विश्वास हो जाता है वे काम बहुत जल्द आगे बढता है ।

यहा पर स्वराज्य प्राप्ति का काम जो बिल्कुल एक प्रकार से दुनिया-दारी का काम था जिसे और देशों मे लोगो ने युद्ध करके, हथियार उठा-कर, खून बहाकर प्राप्त किया था उस काम को जब ऐसे एक शख्स ने अपने हाथ मे लिया तो वह काम कितनी तेजी से आगे बढ गया और कितनी आसानी से हमको स्वराज्य मिल गया यह आप जानते है । मै समझता हू कि इसी तरह से यह गांव के चरित्र को सुन्दर बनाने का काम आपके जैसे सन्त के हाथ मे है और आप इसको कर रहे है । जब मै यहा की आवाज सुनता हू और जब थोड़ा-बहुत देखने का मौका मुझे मिलता है तो मुझे विश्वास होता है कि यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण काम हो रहा है ।

महाराष्ट्र के लिए तो यह एक परम्परा है । महाराष्ट्र में सन्तों की परम्परा बहुत दिनों से चली आ रही है और उन्होंने लोगो के चरित्र को ही नही सुधारा, देश को स्वतन्त्रता भी दिलायी, स्वतन्त्रता के लिए भी लोगो को जागृत किया । तो इसलिए इसमे कोई आश्चर्य की बात नही कि उसी परम्परा के अनुसार सन्त तुकड़ो जी महाराज आज सब काम कर रहे है । आज बहुत साधन हमारे हाथ मे आ गये है जिन साधनो के द्वारा हम ज्यादा दूर तक पहुच सकते है बमुकाबले उन सन्तो के जो पूर्व काल मे आये और जिनको पैदल चलना होता था । तो शायद यह काम एक प्रकार से आज सहज है मगर साथ ही साथ कठिनाई भी है ।

कठिनाई यह है कि आज दुनिया की बुरी हवा, अच्छी हवा सब कुछ लोगों तक आसानी से पहुंच रहा है और इसमें यह जान लेना है कि कौन चीज़ बुरी है और कौन भली है, कौन हमारे योग्य है और कौन हमारे अयोग्य, किससे हमारा लाभ है, किससे लोगों का उत्थान होगा और किससे पतन होगा यह जान लेना कोई सहज काम नही है । तो हमारे देश के सन्त जन इस प्रकार की हवा जो चारों तरफ

बह रही है, खूब जोरों से चल रही है उसमें लोगों को सच्चे रास्ते पर रखें जिसमें हम कहीं विचलित होकर भूल से, नासमझी से या जान-बूझकर गलत चीज को सही न समझ लें, कही गलत रास्ते पर न चले जायें । यही सन्तों का काम है और इसलिए आपने जो गुरुदेव सेवा मंडल कायम किया है वह अत्यन्त आवश्यक है और ठीक समय से कायम हुआ है । मैं चाहूंगा कि इसका प्रचार और प्रसार और भी बढ़े ।

जैसा आपने बताया, कई प्रान्तों में इसका काम हो रहा है । सभी जगहो पर, हर गाव में हमको सन्त तुकड़ो जी महाराज नही मिल सकते हैं मगर उनका उदाहरण हमारे सामने है और जो गुरुदेव सेवा मंडल के लोग हैं उनकी संख्या तो जितना चाहे बढ़ा सकते हैं और बढ़ सकती है यदि इच्छुक लोग मिल जाएं तो आप इस काम को दूर-दूर तक फैला मकते हैं और काम भी किया है । वह काम ऐसा है जिसके विरोध मे किसी की आवाज नही उठ सकती है । क्योंकि इसमे कोई ऐसा काम नही है जिसका कोई विरोध करे । अगर हम गाव की सफाई करना चाहते है तो कौन ऐसा आदमी होगा जो कहेगा कि वह बुरा काम है । अगर गांव के लोगों की उनकी बीमारी में हम मदद करना चाहते हैं तो कौन ऐसा आदमी होगा जो कहेगा कि वह बुरा काम है । अगर हम शिक्षा प्रचार का काम करे तो कौन ऐसा आदमी होगा जो कहे कि वह बुरा काम है ।

अगर अच्छा से अच्छा काम हो मगर उसके साथ कुछ बुरे उद्देश्य का सम्मिश्रण हो जाए तो वह बुरा काम हो सकता है । अच्छे से अच्छा काम करनेवाले, शिक्षा का प्रचार करनेवाले, गाँव की सफाई करनेवाले अगर किसी दलबन्दी में फंस जाएं और किसी उद्देश्य से काम करना चाहे तो उसका पूरा फल नहीं निकल सकता है । बात यह है कि जो कुछ हमको करना है, सेवा-भाव से करना है, इसलिए करना है कि और लोग सुखी हों, इस खयाल से नही कि अपना झंडा लेकर निकले जिसमे चुनाव के वक्त उनको वोट मिल जाए, इसलिए नहीं कि हम सेवा का बाना बांधकर चलें जिसमें कुछ हमारा अपना स्वार्थ सिद्ध हो जाए । पूरी तरह से निःस्वार्थ बनकर जब सेवा का काम किया जाएगा तभी वह पूरा हो सकता है और स्वार्थ केवल इसमें ही नही है कि हमको कुछ पैसे मिल जाएं । अंग्रेजी में एक कहावत है कि सबसे बड़ा दुष्मन मनुष्य का यही है कि वह मान चाहता है और यह लालच जो है सबसे बुरी आदत है । पैसे की लालच आदमी छोड़ सकता है, धन दौलत की लालच छोड सकता है मगर हमारा नाम हो, हमारा मान

बढ़े यह लालच बड़ी कठिन है । तो सेवा-भाव में मान की भी लालच नही रहनी चाहिए और जब मान की भी लालच छोड़कर केवल सच्चे सेवा-भाव से हम काम करेंगे तो इसका फल तुरन्त देखने में आएगा और इसका फल बढेगा ।

एक वृक्ष से बहुत फल निकलते हैं और इसी तरह से वृक्ष गांव-गांव मे फैलने लग जाए तो इसमें कोई शक नही कि थोड़े ही दिनो के अन्दर यह काम फैल सकता है । काम मुश्किल है क्योकि सच्चे सेवक, शुद्ध नि.स्वार्थ सेवक मिलना आसान काम नहीं है । मगर यह काम कभी हो सकता है या कभी भी हुआ है तो ऐसे सन्तों के आश्रम मे ही रहकर हो सकता है और इसीलिए मुझे इस बात की खुशी है और इसका पूरा भरोसा है कि आपका काम जैसे जल्दी से निकलता आया है और भी तेजी से आगे बढेगा । मेरे जैसे आदमी के लिए आपके जैसे गाव में रहकर दौड़-धूप करना तो सम्भव नही है । आजकल तो बधन भी है । बंधन से छूटने के बाद भी इस तरह से काम करना तो सम्भव नही है मगर मै आशा रखता हू कि ईश्वर मुझ मे इतनी शक्ति देगा कि जब तक जीवित रहूं सेवा के ही काम मे लगा रहू । मै सन्त तुकड़ो जी महाराज से हमेशा ऐसे काम में पथ-प्रदर्शन लेता रहूगा और मै चाहूगा कि अगर मै कही एक जगह बैठा तो इस प्रकार का काम वहा भी आप चलवा दें तो बहुत अच्छा रहेगा ।

जैसा मैंने कहा मुझे इस बात का डर था कि मै यहा आज हाजिर नही हो सकूगा । मगर ईश्वर की कृपा से मै आ सका और आप सब से मिल सका और जो कुछ यहां की गतिविधि है उससे भी परिचय प्राप्त हुआ । मै चाहूंगा कि आपका काम दिन-प्रति-दिन बढ़े और ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि इसको सफल करे ।

सार्वजनिक सभा, अमरावती में भाषण

भाई श्री कन्नमवार जी, अमरावती शहर के रहनेवाले भाइयो और बहनों,

मै कई वर्षो के बाद आज फिर एक बार आपके शहर में आ सका और आप सबसे मुलाकात हो सकी इसका मुझे बहुत हर्ष है। मै आप जानते है, गुरुदेव सेवा मडल के काम से आया था और कल संध्या को उस समारोह को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई और यह जानकर और भी मुझे खुशी हुई कि सेवा मडल का काम आपके सारे जिले में और कई जिलों और प्रान्तो में फैला हुआ है। वह एक तरीका है देश के सभी लोगो मे संगठन करने का और जनसाधारण के हृदयों मे देश के प्रति प्रेम उत्पन्न करना, सेवा भावना उत्पन्न करना उसका उद्देश्य है। देश के लिये स्वराज्य के बाद यह इतना जरूरी हो गया है कि हम इस बात को नही भूल सकते।

जब मै स्वराज्य के पहले यहा या और कही गया तो उस समय मै देश मे एकता, लोगों के हृदयो मे देश के प्रति प्रेम और देश के लिये उत्सर्ग और कुर्बानी की भावना जगाने का प्रयत्न किया करता था। अब जब स्वराज्य हमारे हाथो मे आया है और हम अपने देश मे जनसाधारण से शासक नियुक्त करते है तो स्थिति बहुत कुछ बदल गयी है। मगर तो भी देश के प्रति प्रेम भावना रहना तो उतना ही आवश्यक है जितना पहले था और यदि मै यह कहूं कि पहले से उसकी और भी अधिक जरूरत है तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। कारण यह है कि यद्यपि हम स्वराज्य प्राप्त कर चुके है और जनतन्त्रात्मक राज्य स्थापित कर पाये है तथापि अभी सारे देश में इस प्रकार की भावना को कि उसके प्रत्येक भाग का प्रत्येक दूसरे भाग से घनिष्ट से घनिष्ट सम्बन्ध है और सभी एक प्रकार से एक ही परिवार के सदस्य है जागृत करना रह गया है और यही कारण है कि जब तब छोटी-मोटी बात को लेकर आपस मे कभी-कभी झगडे भी हो जाया करते है, कभी-कभी खून-खराबी भी हो जाती है। यह देश के लिये दुख की बात है क्योंकि हम चाहते है कि एकता की भावना इतनी जबर्दस्त हो जाए कि जिसमे और दूसरी भावना किसी तरह से आकर नही जम सके।

यह देश बहुत लम्बा चौड़ा है, इसमें कितने प्रकार के धर्म प्रचलित है, कितनी ही भाषाएं बोली जाती है, लोगों के रहन-सहन में भी बहुत कुछ अन्तर है। मगर यह सब रहते हुए भी यह देश हमेशा एक रहा है और हमारे पूर्वजों ने इसे एक सूत्र में

सार्वजनिक सभा, अमरावती में भाषण; 22 अप्रैल, 1961

बाधने का ऐसा प्रयत्न किया था जिसके बल पर आज तक यह देश एक है। यद्यपि आज के पहले एक शासन नही था और देश के कई टुकडे थे, यहा तक कि जिस वक्त मुगलो का राज्य था उस वक्त कई सूबो मे अलग-अलग स्वतन्त्र छोटे-मोटे राज्य कायम थे और एक प्रकार से सबोआर्डीनेट राज्य देश के कई हिस्सो मे थे। अंग्रेजी जमाने मे भी जब वह साम्राज्य बढा तो हिन्दुस्तान का बहुत हिस्सा अंग्रेजी शासन के अन्दर आ गया। मगर तो भी देशी राज्य सारे देश भर मे फैले हुए थे और किसी तरह से यह नही कहा जा सकता था कि सारा देश एक सूत्र मे बधा हुआ है। मगर स्वतन्त्र होकर जो पहला बडा काम हम ने किया वह यह था कि देश भर मे जितने रजवाडे थे चाहे वे बडे से बडे रजवाडे हो चाहे छोटे रजवाडे हो सभी को मिलाकर एक सूत्र मे बाध दिया और वह सूत्र एक कानून अथवा सविधान है। उसी सविधान के अनुसार सारे देश का राज्य एक कायदे से के मुताबिक आज चल रहा है और एक शासन जो हुक्म, जो कानून निकालता है उसको सारे देश भर के लोग मानते है और सभी लोगो पर वह बाध्य है। इस प्रकार से जो पहले सास्कृतिक बधन सारे देश को बाधे हुए था उसके साथ-साथ अब शासनिक बधन भी हो गया है और इस तरह से यह देश आज इतना बडा हो गया है जितना बडा यह कभी भी पहले इतिहास-काल मे नही था क्योकि यह टुकडे-टुकडे शासन प्रशासन मे बटा हुआ था। सारे देश को सास्कृतिक ढग से पहले एक कह सकते थे वह शासनिक ढग से, शासनिक विधि से भी एक हो गया है। अब हमारा यह कर्तव्य है कि हम मे से प्रत्येक भारतवासी का यह कर्तव्य है कि इस एकता को जहा तक हो सके और अधिक मजबूत बनाये और उसमे किसी प्रकार से कमी या त्रुटि नही आने देवे।

इस लिये मै चाहता हू कि जितने छोटे-मोटे मतभेद आपस के हो—और इतने बडे देश के अन्दर कुछ बातो मे मतभेद होना अनिवार्य है—उन मतभेदो को आपस मे बैठकर तय कर ले और यह देख ले कि उनके कारन सारे देश की एकता पर कोई आच नही आने पावे, सारे देश के काम मे कोई बाधा नही आने पावे। यह याद रखने की जरूरत है क्योकि हमारा इतिहास बताता है कि भारत-वर्ष आपस की फूट की वजह से विदेशियो के कब्जे मे आ गया था, बाहर के लोगो के हाथ मे यह मुल्क हो गया था। मै जहा तक जानता हू कोई ऐसी लडाई नही हुई जिसमे भारतीय सिपाही किसी विदेशी से हारा हो मगर भारतीय लोगो ने कोई भी युद्ध नही जीता, नही जीता इसलिए कि दोनो तरफ से भारतीय ही लडनेवाले थे, जो विदेशी आते थे उनके साथ भी भारतीय ही भारतीय के खिलाफ लडते थे और इस तरह से सारा देश विदेशी कब्जे में आता जाता रहा है। ईश्वर की

दया से हम फिर आज स्वतन्त्र हो गये है .और सारा देश एक सूत्र मे बंधा हुआ थे । उसको हम दृढ बनावे जिसमे फिर से ऐसा मौका नही आवे कि हम को और कुछ करने की जरूरत पडे और हमारी अजादी पर कोई खतरा पहुचे ।

जब से हम स्वतन्त्र हुए है तब से देश के एकीकरण के अलावा जो दूसरा काम गवर्नमेंट ने किया है और जिस पर जोर दिया है वह है देश के लोगो की माली हालत सुधारना, उनकी सम्पत्ति बढ़ाना, जहा गरीबी है वह कम हो, जहा अशिक्षा है वहा पर शिक्षा हो, जहा बीमारी है वहा दवा इलाज का इन्तजाम हो और इसलिये बडे पैमाने पर योजनाए बनायी गयी है और उनके मुताबिक काम किया जा रहा है । योजनाए इतनी बडी है कि एक जगह पर अगर कोई बैठकर देखना-समझना चाहे तो शायद ठीक समझ मे नही आवे क्योकि योजनाएं किसी एक व्यक्ति पर नही लागू है, वह सारे देश पर लागू है जिसमे आपका हिस्सा उतना ही बैठेगा जितना सारे देश मे हरेक व्यक्ति पर होगा और तभी यह फर्ज हर व्यक्ति का है कि वह इन योजनाओ मे हर तरह से मदद करे । गवर्नमेंट अपनी ओर से योजनाए बना सकती है । उन योजनाओ को चलाने मे जो मुश्किले है, जो कठिनाइया है, जो धन की कमी है उसको जुटाने और उन मुश्किलों को दूर करने मे गवर्नमेंट की मदद करना आपका कर्तव्य है । इन योजनाओ को पूरा करने के काम मे देश के लोगो से जो दो योजनाएं पूरी हो चुकी है इनमे कोई शक नही कि लोगो की मदद मिली है । मगर मै चाहूगा कि लोगो की ओर भी अधिक मदद मिले ।

जब कोई योजना चलाने की बात होती है तो उसमे मन और धन से लोग शरीक होते है और उनको होना चाहिये । मुझे यह जानकर बडी खुशी हुई कि आपके जिले के लोगो ने अपने मन मे से छोटी बचत करके काफी पैसे जमा किये और जैसा और जगहों में हुआ उससे बहुत ज्यादा काम यहा हुआ और अधिक पैसे लोगों ने जमा करके इस काम के लिये दिये । तो यह एक ऐसा काम है जिसके लिये आप बधाई के पात्र है । आपने पैसे से मदद की, शरीर से भी मदद करे, धन से भी मदद करें और इन योजनाओं को पूरा करने में देश की यही मांग है, जरूरत है । स्वराज्य का काम जब तक हमारी गरीबी दूर नहीं हो जायगी, लोग सम्पन्न नही हो जायेगे पूरा नही समझा जायगा ।

मेरा आपसे यही अनुरोध है कि आप आपसी मतभेद दूर करे, एक होकर देश की एकता और स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखे और देश की सम्पत्ति बढ़ाने मे

ग्राप सब मिल-जुल कर हाथ बटावें तभी यह काम पूरा हो सकेगा। यही कहने मै यहां ग्राया हूं ग्रौर मुझे खुशी है कि ग्राप इतने बड़ी तायदाद में मेरी बात सुनने के लिये ग्राये हैं। मैं ग्राप सबको बधाई देता हूं ग्रौर ग्रापका धन्यवाद करता हूं।

बुद्ध पूर्णिमा समारोह के अवसर पर

इधर कुछ वर्षों से भगवान बुद्ध से सम्बन्धित समारोहों मे भाग लने का मुझे सौभाग्य मिला है। जब-जब गौतम बुद्ध की शिक्षा और उनके दिव्य संदेश पर विचार करने तथा उसके बारे मे दो शब्द कहने का मुझे अवसर मिलता है, मै उसका हृदय से स्वागत करता हू। आज भी ऐसा ही सुअवसर पा मुझे खुशी होना स्वाभाविक है।

भगवान बुद्ध के उपदेश की सब से बडी विशेषता यह है कि वह शाश्वत है, अर्थात् उसमे कुछ ऐसे तत्व हैं जो उसे देश और काल के ऊपर उठाते है। सृष्टि के इतिहास मे ढाई हजार वर्ष बहुत बडा समय नही है, किन्तु मानव समाज के इतिहास मे यह समय बडा ही नही बहुत ही महत्वपूर्ण भी रहा है। इतने समय के बाद भी उस दिव्य उपदेश और शिक्षा मे कही गई बहुत सी बाते आज भी उतनी ही सच और सारगर्भित है जितनी वह बुद्ध के जीवनकाल मे रही होगी। इसका कारण यही हो सकता है कि भगवान बुद्ध ने जो कुछ कहा वह सच्ची आत्मानुभूति के बल पर कहा। उनके उपदेश मानव चिन्तन और मानवीय प्रकृति की गहनतम गहराइयो को स्पर्श करते है। सामाजिक परिस्थितियो और उनके प्रति मानव की प्रतिक्रियाओ और, इन सब से बढकर, व्यक्ति और समाज के उच्चतम लक्ष्य के बारे मे महात्मा बुद्ध का विश्लेषण इतना ठीक और स्पष्ट है कि ढाई हजार वर्षो की घटनाये उसे धूमिल नही कर पाई है।

भगवान बुद्ध का सदेश जहा एक ओर मानव को विकास अथवा निर्माण की ओर उन्मुख करता है, वहा दूसरी ओर वह मानव जीवन की क्षुद्रता और उसकी निर्बलताओ की न उपेक्षा करता है और न उनको पलायन ही सिखाता है। मानव की सीमाये और कमजोरिया ही वास्तव मे बौद्ध-विनय का आधार है। इसलिये सब के प्रति सद्भाव, सहानुभूति, सहिष्णुता और दयाभाव बुद्ध की शिक्षा के प्रमुख अंग है। मानवीय दुर्बलताओ को स्वीकार करना एक बात है और उन्हे स्वीकार कर उनसे ऊपर उठने का प्रयास करना दूसरी बात है। और इन्ही बातों पर महात्मा बुद्ध ही नही अन्य महापुरुषों ने भी पूरा जोर दिया है। अपने आलोचकों और विरोधियो के प्रति गौतम मुनि का जो व्यवहार था और इस

बुद्ध पूर्णिमा के समारोह के अवसर पर भाषण; नई दिल्ली, 30 अप्रैल, 1961

सम्बन्ध मे जो उनके कथन बौद्ध साहित्य मे संग्रहीत है, उनकी विलक्षणता किसी भी विवेकशील व्यक्ति को प्रेरित किये बिना नहीं रह सकती ।

मै आज भगवान बुद्ध के जीवन के जिस पहलू पर विशेष रूप से जोर देना चाहूगा वह है उनकी क्रान्तिकारी मनोवृत्ति । जिस समाज मे उनका जन्म हुआ और जिसमे उनका पालन-पोषण हुआ उसके प्रति उनके मन मे घोर असन्तोष था, इतना असन्तोष, जिसे सहन न कर सकने के कारण उन्हे विद्रोह पर उतारू होना पडा, क्योंकि उन्होने अनुभव किया कि वह समाज अन्याय और शोषण पर आधारित था । समाज-सुधार सम्बन्धी बहुत से ऐसे विचार है जनमे आज सभी परिचित है किन्तु जो सम्भवत. ससार मे पहली बार भगवान बुद्ध की वाणी द्वारा व्यक्त हुए । यह ठीक है कि सामाजिक न्याय, स्त्री-पुरुष की समानता, सदाचार, जाति पांति का विरोध, मिथ्या भ्रातियो, व्यर्थ के रीति-रिवाजो, पाखडो और आडम्बरो आदि के सम्बन्ध मे भगवान बुद्ध ने जो कुछ कहा वह किसी न किसी रूप मे पूर्ववर्ती परम्परा अथवा धार्मिक साहित्य मे विद्यमान था, किन्तु बुद्ध ने इन आदर्शो को विशेष महत्व देकर ऐसे रूप मे सूत्रबद्ध किया जिससे वे आसानी से समझ मे आ सके और जनसाधारण उनका अनुसरण कर सके । भगवान बुद्ध का मुख्य ध्येय बहुजनहित अथवा लोक कल्याण था । यही नही बुद्ध ने इन आदर्शों को निजी जीवन मे उतारा और अपने असख्य अनुयाइयों को इन पर चलने की प्रेरणा दी । इसमे सदेह नही कि उनके जीवनकाल में और कुछ समय तक उनके बाद भारतीय समाज मे बहुत कुछ सुधार हुए, किन्तु दुर्भाग्य की उन सुधारो की प्रवृत्ति अधिक समय तक जीवित न रह सकी । कालान्तर मे आचार्यो, साधु-सन्तो और महात्माओ ने सुधार के काम मे सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया । आज फिर इस बात को सभी महसूस करते है कि हमारे समाज मे परिवर्तन की जरूरत है । आधुनिक विचारधारा और परिस्थितियो से मेल न खाने वाली कुछ सामाजिक प्रथाये ऐसी अवश्य है जिनमे सुधार होना अत्यन्त आवश्यक है । बुद्ध के समाज-सुधार सम्बन्धी विचार सनके समय मे भले ही क्रान्तिकारी कहे जाते रहे हो, किन्तु आज उन्हें केवल आवश्यक और युक्तिसंगत ही माना जायगा । मै चाहूगा कि सामाजिक व्यवस्था के सम्बन्ध मे बुद्ध ने जो कुछ कहा उसका व्यापक अध्ययन हो और समाज के पुनर्गठन के सम्बन्ध में हम उनसे जो कुछ सीख सकते हों उसे आत्मसात करने का यत्न करे ।

आज मुझे भगवान बुद्ध का वह वाक्य फिर स्मरण हो आता है जो उन्होंने जीवन-दीप बुझने से पहले अपने प्रिय शिष्य आनन्द से कहा था । दुखी आनन्द

को सांत्वना देते हुए तथागत ने कहा था "आनन्द अपने दीपक आप बनो"। उनकी धारणा थी कि प्रत्येक व्यक्ति अपना मार्ग आप प्रशस्त कर सकता है। मानव को किसी पर निर्भर न रह कर अपना कल्याण आप करना चाहिये, यहां तक कि मोक्ष अथवा निर्वाण की प्राप्ति के लिये भी उसे किसी बाह्य शक्ति पर निर्भर करने की जरूरत नही। अपना कर्म और ज्ञान ही मनुष्य को देवत्व प्रदान कर सकता है। भगवान बुद्ध की यह शिक्षा कितनी ऊंची है। आज हमे इस पर विशेष ध्यान देना चाहिये। यदि हम इस महामन्त्र को भी अपने जीवन मे उतार सकें और हम में से प्रत्येक अपनी शक्ति और बल को पहचान आत्मनिर्भरता का पाठ पढ सके, तो इस प्रकार के समारोहों का आयोजन सार्थक होगा।

मै आभारी हूं कि इस समारोह मे मुझे निमन्त्रित किया गया और मै भगवान बुद्ध की शिक्षा के सम्बन्ध मे कुछ शब्द कह सका।

इलाहाबाद में ग्राम भारती के कार्यकर्त्ताओं के सम्मुख भाषण

देवियो और सज्जनो,

मैं जिस वक्त यहां पहुंचा मुझे यह पूरा ध्यान मे नही था कि मै क्या यहा कहूगा और क्या सुनूगा । मगर यहा आपने पर जो कार्यक्रम है वह पूरा-पूरा सुनने मे आया और सुन करके मुझे बड़ी खुशी हुई कि इस प्रकार की योजना आपने बनायी है और रूरल इन्स्टीट्यूट कायम करने का निश्चय आपने किया है ।

हिन्दुस्तान में जो सब से बडी समस्या है वह गावो और गाव मे रहने वालो की समस्या है और जब तक हम यहा के देहातो को नही सुधारेंगे और उनको शहरो के मुकाबले में—शहरो मे जो कमजोरिया है, खामिया है उनको छोड़कर जो अच्छाइया है उनके मुकाबले मे गावो को नही ला देगे तब तक सारे देश को हम उन्नत नही कर सकते । इसलिये कोई भी कार्यक्रम हो जिसका यह उद्देश्य है कि गावो को सुधारा जाय, वहा के लोगो को सुधारा जाय, उनमे शिक्षा का प्रचार किया जाय, उनकी माली हालत बेहतर की जाय तो वैसी योजना हमेशा अच्छी से अच्छी समझी जानी चाहिये । अभी भी पिछले 10 वर्षो के पहले मैं समझता हूं कि स्कूल और कालेज और खास करके कालेज सब शहरो मे ही थे, यूनिवर्सिटिया तो शहरो मे थी ही, बड़े-बडे हाई स्कूल शहरो मे ही थे मगर देहातो में हाई स्कूल बनने शुरू हो गये थे । मै समझता हू कि पिछले 10, 11 वर्षो के अन्दर इस विषय मे बहुत तरक्की हुई है और न मालूम हजारो हजार स्कूल देहातो तक पहुंच चुके है । जैसा मे अपने जिले की बात लेता हूं । मै देहात का रहने वाला हूं । जिस वक्त मैं आज से 60, 65 वर्ष पहले स्कूल मे पढने गया, हमारे सारन जिले मे छपरे मे एक गवर्नमेंट हाई स्कूल था और एक प्राइवेट हाई स्कूल था, और कही जिले भर मे हाई स्कूल नही था । पर मेरे स्कूल में रहते-रहते 7, 8 वर्षों के अन्दर एक या दो स्कूल सब डिविजन मे और नये बने और छपरे में 3, 4 स्कूल हो गये । मैं समझता हूं कि इस वक्त कम से कम 150 से अधिक स्कूल उस जिले मे कायम हो गये है । खास करके हमारे गाव मे पढाने के लिये एक मौलवी और दूसरा गुरु रहते थे, और कोई दूसरा इन्तजाम नही था । अब हमारे गांव मे और आस पास के गावो मे कई हाई स्कूल हो गये है जहा 1200 लड़के है । तो इस तरह से देहातो मे भी शिक्षा में काफी तरक्की हुई है और शिक्षा बहुत फैल गयी है ।

राजभवन, इलाहाबाद मे ग्राम भारती के कार्यकर्ताओ के सम्मुख भाषण; 5 मई, 1961

जरूरत अब इस चीज की है कि इस शिक्षा को ऐसा मोड दिया जाय जिसमे सभी लोगो की उन्नति हो, सब की सेवा हो और वह मोड देहात की हालत को देखकर दिया जायगा तो सभी लोग सुखी हो सकेगे। इसलिये मुझे खुशी है कि अब सोचा जाने लगा है कि गाव के स्कूलो मे इस तरह की पढाई का इन्तजाम होना चाहिये जो गावो के लिये खास करके लाभदायक हो और यह नही हो कि वहा पढने के बाद लोग गवर्नमेंट दफ्तरो मे या दूसरी जगहो मे नौकरी के लिये दर्खास्त दे। गावो मे खास करके पढाई की इसलिये जरूरत है कि वहा जो काम होता है उसको लोग बेहतर कर सके और दूसरे कामो को भी बेहतर कर सके न कि नौकरी के लिये उम्मीदवार खडे हो जाये। अभी तक जो बडी कमजोरी हमारी शिक्षा पद्धति मे रही है वह यह है कि खास करके नौकरी के लिये उम्मीदवार तैयार करती है जो दूसरे काम को कर ही नही सकते।

अभी हाल मे टेकनीकल स्कूलो पर जोर दिये जाने से हालत बदल गयी है और उसका नतीजा अच्छा देखने मे आ रहा है। अब टैकनिकल एजूकेशन की जरूरत भी बढ़ती जा रही है। जो गावो के लिये आपका इन्स्टीट्यूशन हो उसमे ऐसा ख्याल होना चाहिये कि गाव की जरूरत को ध्यान मे रखकर लोगो को तैयार किया जाय और इन्स्टीट्यूशन की ओर से डिप्लोमा कोर्स दिया जाय उसमे भी यूनिवर्सिटी की डिप्लोमा की तरह नही होना चाहिये। वह ऐसा कोर्स होना चाहिये कि उससे लोग ऐसे तैयार हो कि वे गावो की सेवा अच्छी तरह से और बेहतर तरीके से कर सके। गाव के लोगो की माली हालत कैसे सुधरे इसके लिये टेकनिकल एजूकेशन की जरूरत हो सकती है। लोगो की बेहतरी के लिये शिक्षा जरूरी है। इस तरह से उनकी सेवा करने के लिये क्या क्या करना चाहिये इसको ध्यान मे रखकर कोर्स बनाया जाय तो मुझे विश्वास है कि उससे बडा काम होगा। जब आपने यह काम आरम्भ किया है तो मै जानता हूं कि आपने सब कुछ सोचा होगा। मुझे जो ध्यान मे आ गया मैं ने अर्ज कर दिया। मै आशा करता हूं कि थोडे ही दिनो मे अगर आपका काम उत्साहपूर्वक चलता रहा जैसे आज तक चलता रहा है तो उसका नतीजा देखने मे आयगा। गांवों मे लोग नौकरी के लिये नही पढकर तैयार होने चाहिये, उनको अपनी जगह पर अपनी करामात दिखलानी चाहिये। नौकरी के लिये उम्मीदवार पैदा करने से कोई लाभ नही है।

मै आपको बधाई देना चाहता हूं और उसके साथ यह कहना चाहता हूं कि आप अपने ऊपर बडी जबावदेही ले रहे है। पडित मोतीलाल नेहरू का नाम जोड़ देने से आपकी सस्था पर बडी जवाबदेही आ जाती है और उनके नाम के

साथ सस्था का नाम जोड़ने से इस काम को सफल बनाना ग्राप सब का कर्तव्य हो जाता है। यों तो शुरू से ही पंडित जी के नाम से काम हो रहा है ग्रौर ग्रब इस संस्था के नाम के साथ उनका नाम जोड दिया जाय तो जबावदेही ग्रौर भी बढ़ जाती है कि इस काम को पूरी तरह से कामयाब किया जाय ग्रौर सफल बनाया जाय ।

श्रीमती स्वरूप रानी अस्पताल का उद्घाटन तथा पंडित मोतीलाल नेहरू मेडिकल कालेज का शिलान्यास

मुख्य मन्त्री जी, बहनो तथा भाइयो,

मै अपना यह बडा गौरव मानता हू कि आपने मुझे आज के इस समारोह मे भाग लेने के लिये आमन्त्रित किया। यह समारोह दो व्यक्तियो के नाम पर दो बडी संस्थाएं कायम करने के लिये आज किया गया है। पडित मोतीलाल नेहरू और माता स्वरूप रानी के सम्बन्ध मे मेरे लिये इलाहाबाद मे कुछ कहना ढिठाई होगी क्योकि मै जानता हू कि आप न केवल उनके नाम से बल्कि उनकी प्रत्येक कार्रवाई से सिर्फ वाकिफ ही नही है बल्कि लाभान्वित भी हुए है और यद्यपि मेरा यह सौभाग्य रहा कि बहुत निकट मे आकर पडित मोतीलाल नेहरू के साथ काम करने का मौका मिला मगर तो भी मै इलाहाबाद का एक निवासी होने का दावा नही कर सकता हू।

पंडित जी की सारी जीवनी सब के लिये एक बहुत ही प्रेरणा देने वाली जीवनी है। जिस तरह से उन्होने देश की खातिर अपना सब कुछ त्याग दिया वह किसी से छिपा नही है और उनका इतना दृढ विश्वास था कि मुझे ख्याल है कि जिस समय हम लोग ब्रिटिश गवर्नमेंट के साथ जूझ रहे थे, अभी कही इसका चिह्न देखने मे नही आता था कि हमारे हाथ मे अधिकार आ जायगा, मुझे ख्याल है कि उन्होने कहा था, घबडाना नही, मै तो खुद हिन्दुस्तना के रिपब्लिक का प्रेसीडेंट होऊंगा और यद्यपि मेरी उम्र हो गयी है मगर मै उस वक्त तक जिन्दा रहूंगा और तुम लोग तो अभी बच्चे हो, तुम्हारी सारी जिन्दगी पड़ी है। यह उत्साह, इतना दृढ निश्चय, इतनी दूरदर्शिता कि उन्होंने सब कुछ देखने का निश्चय कर कर लिया था। यद्यपि यह हो नही सका कि उनके जीवन-काल मे ही भारतवर्ष एक प्रजातन्त्रत्मक राज्य हो जाय मगर उनके गुजरने के 16 वर्षों के अन्दर वह स्वप्न उनका पूरा हुआ। वह स्वयं अगर उसमें भाग नही ले सके तो उनके स्थानापन्न उनके पुत्र इस काम को इतनी खूबी से चला रहे है कि ईश्वर करे कि यह इसको इसी तरह से चलाते रहे।

श्रीमती स्वरूप रानी अस्पताल का उद्घाटन तथा पंडित मोतीलाल नेहरू मेडिकल कालेज का शिलान्यास करते समय भाषण; इलाहाबाद, 5 मई, 1961

पडित जी ने देश को वहुत कुछ दिया । मगर उनकी सब से बड़ी देन तो यह है कि उन्होने एक नही, तीन पुश्त एक के बाद दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी ऐसी पैदा की जो हमारे देश के लिये हमेशा प्रेरणादायक मिसाल बनी रहेगी और मै नही जानता कि हमारे देश के अन्दर इस वक्त कोई दूसरी ऐसी मिसाल है जिन्होंने इस तरह से एक वशगत तरीके से अपनी सेवा से, अपने त्याग बल से सब से ऊपर खुद उठे रहे । वही यहा हुआ है । यह कोई अनहोनी बात नही । यह तो जो पडित जी का जीवन रहा और उनके तथा उनके वशज के जीवन का जो नतीजा हो सकता था वही हुआ है । हम तो यह कहना चाहते है कि ये जो दो सस्थाए यहा कायम हो रही है वे सिर्फ उन्ही लोगो के लिये ही नही जो उनसे लाभ उठायेगे या जिनको उनमे सेवा करने का अवसर मिलेगा बल्कि सभी लोगों के लिये ऐसी प्रेरणादायक सस्थाए रहेगी जिनसे लोग देश के प्रति प्रेम, त्याग की भावना अच्छी तरह से सीखे और सब से अधिक स्वार्थ-त्याग को अपना धर्म माने ।

यो तो अस्पताल बहुत होते है और वहुत है मगर मै यह चाहूगा कि जिस अस्पताल का नाम माता स्वरूप रानी के नाम के साथ जोडा जाता है वह अस्पताल ऐसा अच्छा होना चाहिये कि जिस तरह से वह जितने लोग उनके सम्पर्क मे आते थे सब की माता बन जाती थी और सब माता की तरह उनको देखते थे और वह भी उनको जो उनके पुत्र होने योग्य होते थे पुत्रवती मानती थी उसी तरह की भावना लेकर यहा जितने डाक्टर, डाक्टरनी, जितनी नर्से या दूसरे सेवक हों उसी भावना से प्रेरित होकर यहा सेवा करे ।

मेडिकल कालेज का इतिहास आपने सुना । बहुत ही रोचक इतिहास है मगर साथ ही साथ हम उससे कुछ सबक भी सीख सकते है । जो सकल्प मेडिकल कालेज बनाने का गवर्नमेंट ने किया था और जो आज तक पूरा नही हुआ था वह संकल्प आज पूरा हुआ यह बहुत ही खुशी की बात है । मगर उससे भी बढ़कर खुशी की बात यह है कि इसके साथ पडित जी का नाम जुड़ा हुआ है । पडित जी के नाम के साथ इस सस्था को जोड़ देने से इसका महत्व बढ़ जाता है और इसका अपना दायित्व भी बढ़ जाता है क्योकि जैसा मै ने कहा है कि अस्पताल में काम करने वालों का दायित्व बढ़ता है उसी तरह से मेडिकल कालेज अस्पताल में पढ़ने वाले पढ़ाने वाले, सीखने वाले सिखानेवाले सब का दायित्व बढ जाता है । और अब तो कोशिश यह होनी चाहिये कि गरचे जिन कालेजों के साथ इसकी स्थापना होने वाली थी वे पूरे 100 वर्ष के हो चुके है मगर यह थोड़े ही दिनो के अन्दर इतनी

तरक्की करे कि उनके मुकाबले मे ग्रा जाय क्योंकि ग्राज तरक्की करने के साधन बहुत है, रास्ता ग्राज बहुत खुल गया है ग्रौर उस वक्त जो दिक्कते मेडिकल कालेज मे पढ़ने वालो की होती थी वह ग्राज नही है ।

मै जानता हू ग्रौर मैने सुना है कि कलकत्ते मे जब मेडिकल कालेज खुला तो पहले उसमे जाकर मुर्दे को चीरने-फाड़ने का जो काम होता है उसकी वजह से कोई उसमे पढ़ने नही जाता था, जाना नही चाहता था । मेरे ग्रपने बडे भाई थे उनकी ख्वाहिश हुई कि वह मेडिकल कालेज मे पढे ग्रौर उन्होने वहा जाकर नाम लिखाने की कोशिश की मगर यह सुनकर कि मुर्दे को काटना होता है घर के लोगों ने उन पर इतना जोर दिया कि उनको छोड देना पडा । वह उस वक्त की बात नही है, कालेज की स्थापना के 40 वर्षो के बाद की बात है । वह दिक्कत इस मेडिकल कालेज के साथ नही है, न तो यहा के प्रोफेसरो के सामने वह दिक्कत है ग्रौर न जो पढेगे उनके सामने है ।

इसके ग्रलावा सायन्स ग्राज इतना ग्रागे बढ़ गया है ग्रौर उसमे इतनी प्रगति हो गयी है कि ग्रब मुर्दे को सिर्फ काटने की बात नही रही, उसको करीब-करीब जिन्दा कर देने की बात सोची जाने लगी है । तो विज्ञान का इतना काम ग्रागे बढ़ गया है ग्रौर उसमे तरक्की दिन-प्रति-दिन होती जा रही है ग्रौर डाक्टर लोग जो दिन-रात पढ़ते है ग्रच्छी तरह से जानते है कि ग्राज से 10 वर्ष पहले जो बीमारी लाइलाज थी उनका ग्रब इलाज मिल गया है । नयी-नयी बीमारी होती है ग्रौर नया-नया इलाज मिलता जा रहा है । ये सब सुविधाए है ग्रौर सब से बड़ी सुविधा तो यह है कि यह सायन्स ग्राज एक देश का सायन्स नही रहा, यह सारे दुनिया का सायन्स है ग्रौर इसमे सारी दुनियां के लोगो का एक दूसरे के साथ सम्पर्क है ।

हमारे ग्रायुर्वेद ग्रौर ऐलोपैथी मे सब से बडा ग्रन्तर यही है कि वह इस माने में इतना संकुचित हो गया है कि वह ग्रपने प्राचीन ग्रनुभव ग्रौर ग्रन्थो पर ही भरोसा करता है, उसमे नयी चीजों को खोजने निकालने नये प्रयोग करने की गुंजाइश कम हो गयी है । इसीलिये वह जहा का तहा है ग्रौर ऐलोपैथी दिन-प्रति-दिन नये प्रयोगों को करके इतनी तेजी के साथ ग्रागे बढ़ रही है कि मै समझता हूं कि ग्राज के 10 वर्ष पहले के डाक्टर ग्रगर वे दिन-प्रति-दिन ग्रपनी विद्या को ताजा नही रखते हो तो ग्राज के डाक्टर उनको ग्रशिक्षित समझेगे ।

तो ग्रगर ग्राप इतनी तेजी से ग्रागे बढ़े ग्रौर मेडिकल कालेज के लोगों का यह काम होना चाहिये कि हमेशा सब चीजो मे वे वक्त के साथ प्रगति करते

जायं और सब चीजो मे वे अपने को आगे रखे, तभी आप इस मेडिकल कालेज के उद्देश्य को पूरा कर सकेगे और जिन महान व्यक्तियो के नाम के साथ इस कालेज और अस्पताल के नाम जोड़े जा रहे है उसके योग्य हो सकेगे ।

मै ने कहा कि मै अपना बड़ा गौरव मानता हू कि आपने मुझे इस मौके पर बुलाया और इसमे शरकत करने का मौका दिया । इसके लिये मै बहुत ही आभार मानता हू ।

मोतीलाल नेहरू शताब्दी के अवसर पर ब्राडकास्ट भाषण

यह वर्ष हमारे इतिहास मे स्मरणीय रहेगा। इस वर्ष तीन महान् भारतीय नेताओ की जन्म शताब्दी मनाई जा रही है। सौ वर्ष हुए आज के दिन मोतीलाल जी का जन्म हुआ था। इन सौ वर्षो मे हामरे देश मे अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों मे बहुत सी तबदीलिया हुई है और इन तब्दीलियो को लाने मे मोतीलाल जी का भारी हाथ रहा है।

गाधी जी के नेतृत्व मे होने वाले स्वाधीनता के सग्राम के आरम्भ के वर्षो मे पं० मोतीलाल की गणना ऐसे सर्वप्रथम राष्ट्रीय नेताओ मे थी जो हमारे राजनैतिक मंच के सूत्रधार थे और जिन्होने निजी गुणो से अनेक यातनाये सह कर और खुशी से कुरबानिया करके राष्ट्र की सेवा की। आज के दिन हमे उस महान् नेता का स्मरण करना चाहिये जिसे निकट से जानने का हममे से बहुतो को श्रेय था। मोतीलाल जी बहुत बडे देशभक्त थे और राष्ट्र के प्रति अपनी सेवाओ के बल पर उनकी गिनती सदा आधुनिक भारत के निर्माताओ और देश की राष्ट्रीय विभूतियो मे की जायेगी।

इस अवसर पर मै मोतीलाल नेहरू स्मारक समिति के कार्य की सराहना करना चाहूगा, जिन्होने इस महान् नेता की स्मृति को बनाए रखने के लिये यथा-साध्य बहुत कुछ किया है।

मोतीलाल नेहरू शताब्दी के अवसर पर ब्राडकास्ट भाषण, 6 मई, 1961

मोतीलाल नेहरू शताब्दी समारोह पर पुस्तकें भेंट किये जाने के अवसर पर

इस समारोह मे भाग लेना मै सौभाग्य का विषय मानता हू । मै आपके साथ बिल्कुल सहमत हू कि इस समारोह के और अन्य स्थानो पर इसी प्रकार के समारोहो के आयोजन का श्रेय श्री मोहनलाल सक्सेना को है । जिस दिन से उन्होंने इस कार्य को हाथ मे लिया है उन्होने मुझ से बराबर सम्पर्क रखा है । यद्यपि मे यह दावा नही कर सकता कि मै इस सम्बन्ध मे बहुत कुछ योगदान दे सका हू, फिर भी मुझे इस समारोह की गतिविधि और दिन-प्रति-दिन की इसकी प्रगति जानने से लाभ रहा है ।

पडित मोतीलाल के सम्बन्ध मे इस अवसर पर कुछ अधिक कहना मेरे लिये अनावश्यक है । श्री उपराष्ट्रपति, आपने कहा है कि अपने जीवन के अन्तिम दिनो मे मोतीलाल जी ने गाधो जी को स्वराज्य की अप्राप्ति के सम्बन्ध में कुछ कहा था इसी से मिलती-जुलती एक घटना मेरे साथ घटी थी जिसे मै यहां कहना चाहता हू । जब हम सब आजादी की लडाई मे व्यस्त थे और स्वराज्य अभी हम से बहुत दूर था और मै कुछ हतोत्साह-सा मोतीलाल जी से बात कर रहा था तो उन्होने तुरन्त मुझ से कहा "अभी तुम नौजवान हो, इसलिये चिन्ता मत करो । अपने जीवन-काल मे मै भारत को आजाद हुए देखूगा और भारतीय गणराज्य का प्रथम राष्ट्रपति बनूगा" । यह उनकी आशावादिता थी और इसी संकल्प के साथ वह जीवन भर राजनीतिक कार्य करते रहे । जब तक मोतीलाल जी जिये उन्होने इसी दृढता से काम किया । इसलिये इसमे कोई आश्चर्य नही कि उनके देहान्त के 16 वर्ष उपरान्त ही हमने स्वराज्य प्राप्त कर लिया ।

इसलिये यह कहना सत्य ही है कि पडित मोतीलाल नेहरू और उन्ही के समान अन्य नेताओ के त्याग तथा दृढ़ता का ही यह परिणाम था कि देश आजाद हो सका । इस समय हमारा यह कर्तव्य है कि हम उन नेताओ की सेवाओ का स्मरण करके केवल अपना आभार प्रगट करके ही नही बल्कि अभी जो कार्य हमारे सामने है, उसे पूर्ण करने के लिये उनके जीवन से प्रेरणा लेकर । जो आजादी हमे मिली है हमे उसे भारत की जनता के लिये उपयोगी और सोद्देश्य बनाना है । जो कार्य हम आज कर रहे है, वह पहले कार्य से कुछ भिन्न है, क्योंकि प्रगट रूप से

मोतीलाल नेहरू शताब्दी समारोह के सम्बन्ध में पुस्तकें भेंट किये जाने के अवसर पर भाषण; राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली, 6 मई, 1961

उसके लिये उसी सीमा तक त्याग की आवश्यकता दिखाई नही देती । किन्तु मेरा अपना विचार है कि यह धारणा ठीक नही। हमारा इस समय का कार्य भी त्याग और नि.स्वार्थता का उतना ही मोहताज है, जितना पहला कार्य था, या शायद उससे भी अधिक, इस बात को सदा याद रखना और पडित मोतीलाल जी जैसे महापुरुषो के जीवन को सदा अपने सामने रखना हमारे लिये आवश्यक है जिससे कि हम अपने तात्कालिक उद्देश्यो की पूर्ति के लिये तत्परता से प्रयत्नशील रहे ।

मुझे बहुत खुशी है कि इस समारोह का आयोजन दिल्ली मे ही नही बल्कि और स्थानो मे भी किया जा सका । हमारे उपराष्ट्रपति इलाहाबाद के समारोह मे शामिल हुए और मै भी कल इसी सिलसिले मे वहा गया था और इससे पहले प्रधानमन्त्री वहा गये थे । मै जानता हू और बहुत से शहरो मे भी इसी प्रकार के समारोह किये जा रहे है । यह खुशी की बात है और हमारी जनता के लिये श्रेयस्कर है, क्योकि इससे पता लगता है कि लोग इन महापुरुषो के त्याग से सत्प्रेरणा और पथप्रदर्शन के लिये कितने उत्सुक है ।

जो पुस्तके आपने मुझे भेट की है, उनके लिये मै आभारी हू । निश्चय ही मै उन्हे पढूंगा ।

पं० मोती लाल नेहरू की शतवार्षिक जयन्ती समारोह

डा० राधाकृष्णन्, बहिनो और भाइयो,

आज हम लोग श्रद्धेय स्वर्गीय प० मोतीलाल जी शतवार्षिक जन्म जयन्ती के अवसर पर यहा इकट्ठे हुए । आपको यह भी मालूम होना चाहिये कि उनको मरे हुए 30 बरस मे कुछ अधिक हो चुके है । अब एक ऐसी पीढी हिन्दुस्तान मे आ गई है जिनमे से बहुतेरो ने प० मोतीलालजी को देखा ही नही था और इस सभा मे भी, मै समझता हू कि ऐसे लोगो की सख्या काफी है जिनका जन्म उनके स्वर्गवास के बाद हुआ । ऐसे लोगो के लिये खास करके उस दिन का मनाना बडी कीमत रखता है क्योकि हम चाहते है कि हम ऐसे एक त्यागी पुरुष की याद हमेशा कायम रखे जिसने अपना सब कुछ त्याग करके देश के स्वराज्य के सग्राम मे भाग लेकर अनेक कष्ट बर्दाश्त किये और आज इस चीज की जरूरत है कि उन लोगो को, जो उस जमाने मे नही थे, स्वराज्य के सग्राम काल मे नही थे, वे समझे कि कौन-कौन ऐसे महापुरुष थे जिन्होने अपने त्याग से, अपनी तपस्या से अपनी दृढता से इस देश को आजाद करने मे कामयाबी हासिल की । ऐसे लोगो मे बहुत ऊचा स्थान प० मोतीलालजी का है । उन्होने पहले अच्छे आराम के दिन देखे और जिस वक्त वे सग्राम मे आये नही उस वक्त बहुत शान-शौकत के साथ रहते थे । बाद मे इन सब चीजो का छोड-छाड करके एक ऐसी जिन्दगी अख्तियार को—एक ऐसे आदमी के लिये जिसकी जिन्दगी आराम से बीती—बहुत ही मुश्किल था । मगर उन्होने दृढता से नई जिन्दगी को अख्तियार किया और उसके साथ-साथ जितनी कुर्बानियो की जरूरत पडी खुशी-खुशी से वे सब कुर्बानिया की । इतना ही नही सारे देश को अपने त्याग से, अपनी दृढता से जगाया और जगा करके सिर्फ अपने ही लोगो मे नही बल्कि जो उस समय गवर्नमेंट मे काम करने वाले थे, उन पर भी हावी हुए । आप जानते है जब महात्मा गाधी ने असहयोग आन्दोलन शुरू किया उसके पहले ही, कुछ ऐसे वाकयात मुल्क के अन्दर हो गये थे जिनका असर सारे मुल्क के अन्दर बहुत गहरा पडा था । वह था जलियावाला बाग का हत्याकाड और उसके बाद पजाब के लोगो पर जो ज्यादतिया और जुल्म हुए वे सब थे । उन सब चीजो को उन्होने अपनी आखो से अच्छी तरह से देखा और जहा तक हो सका लोगो की मदद की और यह भी कोशिश की कि किस तरह

रामलीला मैदान मे आयोजित प० मोतीलाल नेहरू शतवार्षिक जयन्ती समारोह के अवसर पर भाषण; 6 मई, 1961

से बात सुधर जायेगी पर उसका नतीजा कुछ नही निकला । जब ब्रिटिश गवर्नमेट टस से मस नही हुई तो महात्मा गाधी जी ने असहयोग की आवाज बुलन्द की तब प० मोतीलालजी, देशबन्धु दास तथा देश के अन्यान्य नेतागण उनके पीछे-पीछे चल करके देश की स्वराज्य-प्राप्ति मे लग गये और पडित जी ने उस समय से आखिर तक जब तक उनकी सास रही वे देश के काम मे दिन-रात, लहमा-लहमा, इसी चिन्ता मे, इसी फिक्र मे थे कि किस तरह से हम आजादी हासिल करे । पहले तो असहयोग का रूप था जिसमे कौसिल से अलग रहने की बात थी । मगर बाद मे एक ऐसा समय आया जब सोचा गया कि असेम्बली मे दाखिल होना और वहा से स्वराज्य के लिये लडना भी जरूरी है । प० मोतीलालजी उस स्वराज्य पार्टी के दिल्ली मे नेता हुए और सारे मुल्क मे जो स्वराज्य पार्टी हुई उसके भी नेता चुने गये । देशबन्धु दास, प्रेसिडेट थे और प० मोतीलालजी सेक्रेटरी थे और कई वर्ष तक गवर्नमेट के उन्होने एसेम्बली मे छक्के छुडाए । ऐसे-ऐसे लोगो के साथ, जो कभी काग्रेस मे नही थे, अलग रहते थे, उनको भी खीच करके अपने साथ मिला कर के गवर्नमेट के खिलाफ वोट दिलवा कर गवर्नमेट को कई बार हराया । असहयोग के शुरू मे और फिर जब उनके दिन करीब-करीब पूरे हो आये उस वक्त भी जेल-यात्रा की और वहा जो कष्ट हुआ उसकी वजह से उनका स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पडा मगर उसकी परवाह न करके दिन रात काम मे लग कर लोगो की सेवा करते रहे और कष्ट झेलते रहे । जब तक उनमे शक्ति रही, और मै जानता हू कि आखिर तक वह चुप नही बैठे और एक ऐसी मिसाल मुल्क के सामने छोड गये जिसकी दूसरी मिसाल शायद कम मिले । उन्होने अपनी जिन्दगी, अपना आराम और अपना सब कुछ देश के लिये दे दिया मगर उन्होने एक और बडा काम किया जो शायद और किसी ने नही किया । उन्होने देश को एक रत्न दिया जिसने उनके बाद जो काम अधूरा वे छोड गए थे उसको पूरा किया (तालिया) । आपको शायद मालूम होगा कि जब लाहौर काग्रेस हुई थी उसके पहले पडित मोतीलालजी काग्रेस के प्रेसिडेन्ट थे और लाहौर काग्रेस मे प० जवाहरलाल जी पहले-पहल काग्रेस के प्रेसिडेन्ट हुए । तब पडितजी ने अपनी भविष्यवाणी की थी, जब उन्होने प्रेसिडेन्ट का काम सौपा उस वक्त उन्होने कहा : जो बाप नही पूरा कर सका उसको लडका पूरा करे और उनके मरने के 16 बरस के अन्दर वह भविष्यवाणी सच निकली । वह इच्छा पूरी ही नही हुई—स्वराज्य हम को हासिल हुआ और उससे भी ज्यादा यह हुआ कि स्वराज्य पाने के बाद, सिर्फ एक आजाद मुल्क ही नही रहा बल्कि दुनिया के मुल्को मे एक बहुत ऊंचा दर्जा वह हासिल कर सका ।

आज दुनिया में फौज, लडाई के सामान और हथियार जिसके पास ज्यादा है उसकी बडी इज्जत है और जो सब से बडा मुल्क या ताकतवर मुल्क है वह वही है जिसके पास सब से अधिक हथियार, सब से अधिक सामान और आजकल अणु-बम का जमाना आ गया है, जिसके पास यह सब है वह सब से बडा है । मगर हम हिन्दुस्तानियों के पास उसके मुकाबले मे बम तो है ही नही, अणुबम की बात ही क्या । दूसरी चीजे भी उन सब के मुकाबले मे बहुत कम है । मगर तो भी हमारी इज्जत है । उनकी निगाहो मे बहुत ऊचा स्थान है और हम मौके पर जहा-जहा कोई ऐसा मसला पेश आता है जिसमे समझौता की जरूरत होती है दूसरे लोगों को समझाने की जरूरत होती है तो लोगो की नजर हिन्दुस्तान पर जाती है और जवाहरलाल जी के पास उनकी तरफ से सदेश आता है कि इसमे आप पडो और मसले के हल करने मे मदद करो । यह बहुत बडी बात है । मुल्क के अन्दर भी बहुत तरह की तरक्की हो रही है । जो काम हाथ मे लिये गये है उनका पूरा फल अभी देखने को नही मिलेगा मगर इसमे कोई शक नही कि वह समय जल्द ही आयेगा जब उनका पूरा फल देखने मे आयेगा और लोग समझ सकेंगे कि मुल्क ने कितनी तरक्की की । यह शायद बहुत कम जगह देखने मे आया कि एक के बाद एक, इस तरह से तीन पुश्तो तक अपने त्याग, तपस्या और सेवा से ऊचे से ऊचे पद को पाया हो--- प० मोतीलालजी, प० जवाहरलालजी और इन्दिरा जी---काग्रेस मे ऊंचे से ऊंचे पद को प्राप्त किया---किसी की मेहरबानी से नही, अपनी कुर्बानी से, किसी के एहसान से नही बल्कि अपनी सेवा और अपने बल पर ।

प० मोतीलालजी का स्मरण सिर्फ इसलिये नही किया जाता कि उन्होंने स्वराज्य मे इतना काम किया बल्कि इसलिये भी कि उनकी वजह से आज हम आगे बढ़ते जा रहे है और भी आगे बढेगे । मैं तो यह चाहूगा कि खासकर के नवजवान लोगो से, इस चीज को हमेशा याद रखे कि स्वराज्य की प्राप्ति और स्वराज्य की प्राप्ति के बाद भी हम को क्या करना चाहिये हमारा अपना फर्ज क्या है । हमारे मुल्क मे यह कमजोरी बहुत देखी गई है, बहुत पुराने समय से ही, हम लोग इतिहास को एक दूसरा रूप देते है । हम वाकयात को याद रखने की कोशिश नही करते, बहुत जल्दी भूल जाते है । यह परम्परा आज से नही बहुत दिनो से चली आ रही है और यही वजह है कि हमारे सब से बडे जो कवि हुए है उनकी जन्मतिथिया ठीक तरह से नही जानते । हमारे यहा जो प्राचीन काल के राजा हुए उनके समय को भी आज तक पूरी तरह से ठीक नही बता पाते । हम बहुत-सी चीजें दूसरे लोगों से ले रहे है । इस चीज पर भी हमें ध्यान देना चाहिये कि हमारी जितनी

ऐतिहासिक वस्तुएं, ऐतिहासिक महापुरुष वगैरह हैं उन सब की याद हम किसी तरह से कायम रख सकें। मैं आशा करूगा कि दिल्ली शहर के अन्दर अब इस चीज पर पूरा ध्यान दिया जायेगा जिसमे लोगो को मालूम हो और वे प० मोतीलालजी की जीवनी और उनके त्याग से पूरा-पूरा परिचित हो। दिल्ली एक ऐसी जगह है जहा चारो ओर ऐतिहासिक खण्डहर मौजूद हैं जो एक-एक जमाने की बाते बताते है। कई किले या इस तरह की कई चीजे हैं जिनसे बहुत-सी गुजरी बातें याद आती हैं। यह भी इससे मालूम होता है कि हम हजार कोशिश करे मगर पत्थर की चीज बहुत देर तक या बहुत दिन तक नही ठहर सकती। इस बात का सबक भी इस दिल्ली शहर के अन्दर अच्छी तरह से हमे मिल सकता है। मगर दूसरी चीज जो कभी नष्ट नही हो सकती वह है लोगो की तपस्या, लोगो की कुर्बानी, लोगो ने अपने मुल्क के लिये और मानव समाज के लिये जो कुछ काम किया वह सब—वे सब चीजे भूली नही जाती, याद रखी जा सकती हैं और यह शताब्दी का समारोह इसलिये किया जा रहा है कि आप लोग याद रखे, याद रखने की बात सीखे और जो कुछ मुल्क के लिये जरूरत है उसको पूरा करने के लिये सब लोग कोशिश करे। मुल्क की एकता मुल्क मे आपस मे किसी तरह के मतभेद के बगैर जिससे मुल्क की आजादी के लिये कोई खतरा न हो, इन सब चीजो की ओर ध्यान देना जरूरी है और सारे मुल्क को एक समझकर, प्रत्येक हिस्से को अपना हिस्सा समझकर, रहना जरूरी है। ये सब चीजे अभी भी जरूरी हैं। यहा हिन्दू, मुसलमान, सिख और ईसाई सभी प्रकार के लोग रहते हैं उनमें भी सारे देश की एकता और एक-दूसरे से कैसे व्यवहार करना चाहिये यह सब हम को प० मोतीलालजी ने सिखाया। उनकी जीवनी से हम सब इस सबक को सीख सकते है। जो काम अभी बाकी रह गया है उसको पूरा करने में आप सब इस तरह से मदद कर सकते है। पडितजी की याद आपको हमेशा इस ओर रास्ता दिखला सकेगी और उत्साह देती रहेगी।

पचमढ़ी के नागरिक सम्मान के उतर में भाषण

राज्यपाल महोदय, मुख्य मंत्री महोदय, बहिनो, और भाइयो,

मैं आप सब का आभार मानता हूं कि आपने मुझे यह मौका दिया कि मैं आप सब से इकट्ठे चन्द मिनटो के लिये मिल सका। इसके लिए जो कुछ आपने किया और जिस तरह से आदर और सम्मान दिखलाया और साथ ही एक सुन्दर भेट दी, इस सब के लिये मैं आपका शुक्रिया करता हूं।

आपके इस नगर मे मै कई बरसों मे कई बार आया हू और जब जब आया हू मुझे आप सब से मिलने का और आपके अच्छे जलवायु का लाभ मिलता गया। इसी ख्याल मे मै इस बार भी आया हू और जितने दिन यहा था उनको खुशी से अच्छी तरह से बिता कर फिर आप से बिदा लेकर आज जा रहा हू। मै चाहता हू कि आपकी यह छोटी-सी जगह और भी फूले-फले और बढे। दिक्कते इस बात की जरूर है कि यहा पर कोई ऐसी आबादी साल भर नही रहती जो बहुत कुछ आपको मदद कर सके। जो आते है थोडे दिन के लिये आते है और चले जाते है और आप लोगो को, जो हमेशा यहा रहते है, लोगो के आने-जाने से उतना लाभ नही मिलता जितना आपको मिलना चाहिये। मै चाहता हू कि ऐसी जगह पर कई इस तरह की शिक्षण संस्थाए कायम हो जिनसे आपको लाभ हो और औरो को भी लाभ हो। यह जगह मै समझता हू कि शिक्षण का स्थान बनाने के लिये बहुत ही योग्य है और मैने यह सुना है कि गवर्नमेट की भी यह इच्छा है कि यहा पर शिक्षण की सस्थाए कायम की जाए। अगर वह हो गया तो मै समझूगा कि सिर्फ आपको ही लाभ नही पहुचेगा बल्कि यहा के जलवायु से जो विद्यार्थी सीखने-पढने आवेगे उनको भी लाभ पहुचेगा और आप लोगो को तो उनसे मिलने-जुलने का मौका मिलेगा। इसके अलावा मै यह मानता हू कि यद्यपि यह जगह बहुत ही खूबसूरत है यहा कुछ दिक्कते है, पानी की काफी कमी है और इस वजह से यहा पर कोई बड़ा मजमा जमा होना बडा मुश्किल है मगर तो भी आहिस्ते-आहिस्ते अब इस ओर भी तरक्की होती जा रही है। यहा पर दो-तीन साल से बुनियादी शिक्षण के लिये मकान बनाये गये और फौजी दो-तीन संस्थाए यहा बराबर काम कर रही है। इस तरीके से मैं समझता हूं कि आप सब खुश रहेगे और मेरी यह ख्वाहिश है कि आप हमेशा खुश रहें। आप सब का आभार मानता हूं और आशा करता हूं कि आप मुझे खुशी से बिदा देंगे।

पचमढ़ी के नागरिक सम्मान के उत्तर मे भाषण; 11 मई, 1961

फिल्मफेयर पुरस्कार

इसी तरह के उत्सवों के साथ मेरा पहले भी सम्बन्ध रहा है। सूचना और प्रसारण मन्त्रालय की तरफ से सर्वश्रेष्ठ चित्रो, अभिनेताओ तथा कलाकारों को पुरस्कार दिये जाने के समय आयोजित समारोहों मे भी मै कई बार शरीक हुआ हू। इस आयोजन मे जो फिलमफेयर द्वारा आयोजत किया गया है शामिल हो सकने की मुझे बहुत खुशी है। फिलमफेयर एक गैर-सरकारी सस्था है और एक प्रकार से फिल्म उद्योग का ही एक अग है। लागत और उत्पादन की दृष्टि से भारत का फिल्म उद्योग संसार भर मे दूसरे या तीसरे नम्बर पर आता है और हमारे देश मे यह समस्त उद्योग निजी क्षेत्र के अन्तर्गत है। इस दिशा मे सरकारी प्रयास डाक्यूमेंट्री, कुछ विशेष फिल्मो और बच्चों की फिल्मो के निर्माण तक ही सीमित है।

निजी क्षेत्र मे तैयार की गई फिल्मो के सम्बन्ध में सरकार उनका नियमन ही करती है, जो दो प्रकार से किया जाता है। औद्योगिक दृष्टि से कच्ची फिलम के आयात और उपयोग पर कुछ प्रनिबन्ध लगाकर और तैयार फिल्मो के उत्पादन और प्रदर्शन के सम्बन्ध में नियम बनाकर फिल्मो का नियमन किया जाता है। दूसरे, सामाजिक और नैतिक दृष्टि से भी सरकार फिल्मो का नियमन करती है। ये दोनो ही दृष्टिकोण मत्त्हवपूर्ण है, किन्तु कुछ कारणो से नैतिक नियमन को राष्ट्र के हित मे अधिक महत्त्व दिया जाता है।

मानव के हृदय पर, विशेषकर बच्चो के दिलो पर, चलचित्र का कितना गहरा प्रभाव पडता है, इसके बारे मे मुझे कहने की जरूरत नही। लोगो के चरित्र को ढालने और उनके दैनिक व्यवहार का रूप निर्धारित करने मे सिनेमा का बहुत बडा हाथ है। समाचार-पत्रों और रेडियो की तरह सिनेमा भी जन-साधारण के विचार और व्यवहार को प्रभावित करने का बहुत बड़ा साधन है; फिलम उद्योग को भरसक प्रयत्न करना चाहिए कि अच्छी किस्म की फिलमो द्वारा लोगो का मनोरंजन करे। मनोरंजन में कला और दिल-बहलाव के सभी गुण रहने चाहिये किन्तु रागात्मक और अत्यधिक श्रृंगारमय बातो से परहेज करना चाहिये।

चूकि सिनेमा संचार का प्रबल माध्यम है और लोगो के व्यवहार तथा नैतिक विचारधारा को किसी भी दिशा मे ले जाने मे यह अत्यन्त प्रभावशाली है, इसलिये साधारण तौर पर मान्य नैतिक आदर्शो तथा सामाजिक व्यवहार के अनुरूप फिल्मों का नियमन करना सरकार की ऐसी जिम्मेदारी है जिसकी वह अवहेलना नहीं

फिलमफेयर पुरस्कार देने के समय भाषण, बम्बई, 18 जून, 1961

कर सकती । समालोचकों अथवा सेंसर के लिए यह काम चाहे कितना ही अप्रिय हो और फिल्म उद्योग के लिए चाहे कितना ही कष्टप्रद हो, फिल्मों की परीक्षा और कांट-छाट का काम देश के हित मे सरकार को कर्त्तव्य मान कर अपने ऊपर लेना ही होगा । यह समझने का कोई कारण नही कि इस तरह की कार्यवाही का फिल्मो के उत्पादन पर आवश्यक रूप से हानिकर प्रभाव पडेगा ।

यह जानकर मुझे आश्चर्य हुआ और दु.ख भी कि दोषवेचन अथवा सेसरशिप के प्रति फिल्म उद्योग का रुख हमेशा बडा कठोर रहा है । वास्तव मे उद्योग सेसरशिप को इतना नर्म करना चाहता है और यदि सभव हो इतना प्रभावहीन बनाने का इरादा रखता है जिससे कि उसकी उपयोगिता कुछ भी न रह जावे । यदि कोई यह कहे कि सेसरशिप का सचालन ऐसे ढंग से किया जाता है कि साधारण रूप से मान्य कला के आदर्शो की उससे अवहेलना होती है या सेंसर लोगो के विचार, कला और मनोरंजन के सम्बन्ध मे बहुत सकीर्ण होते है, तो यह बात समझ मे आ सकती है । किन्तु यह कहना कि किसी भी प्रकार की सेंसरशिप हो वह कष्टदायक होती है अथवा उसका एकमात्र ध्येय फिल्मों को तोड़ मोड कर इतना बेजान बना देना है कि उनमे मनोरंजन का पुट रहने ही न पावे, यह बात एकदम गलत और निराधार है । बहुत से लोगो का मत है कि इधर एक खास किस्म के अपराधो, विशेषकर बाल अपराधो मे बहुत वृद्धि हुई है और एक हद तक इसका कारण भद्दी फिल्मो का प्रदर्शन है । सचाई कुछ भी हो, इसमे संदेह नही किया जा सकता कि जहा बहुत-सी अच्छी फिल्मो से लोगों को अच्छे विचार और स्वस्थ मनोरजन मिला है, निकम्मी फिल्मो का लोगों के दिलो पर दूषित प्रभाव पड़ा है, और यह प्रभाव लडको और लडकियो के दिलों पर विशेष कर गहरा पडा है । इसीलिए यह जरूरी समझा गया है बच्चो को इस तरह की फिल्मो से दूर रखा जाए और ऐसा करने का एक उपाय बच्चो के लिए अलग फिल्म तैयार करना है । इसी विचार को लेकर बाल चित्र समिति की स्थापना हुई थी । समिति ने बच्चो के लिए खासी अच्छी फिल्मे बनाई है । मुझे आशा है कि फिल्म उद्योग भी बच्चो की आवश्यकताओ को ध्यान मे रखेगा और उनके लिए ऐसी फिल्मे तैयार करने का यत्न करेगा जो उनके लिए रोचक और शिक्षाप्रद दोनों ही हों । मै यह भी आशा करता हू कि फिल्म उद्योग और दूसरे लोगों से बाल चित्र समिति को अपने काम मे बराबर सहयोग मिलता रहेगा ।

आज इस समारोह में आकर जिसमे भारत के फिल्म उद्योग के प्रतिनिधि मौजूद हैं, मुझे बडी खुशी हुई । फिल्मफेयर पुरस्कारों की स्थापना भी लगभग

उसी समय हुई थी जब राजकीय पुरस्कार देने का निश्चय किया गया था। दोनों पुरस्कारो का एक ही उद्देश्य और एक ही लक्ष्य है, अर्थात फिल्म निर्माताओं को अधिक से अधिक अच्छी फिल्मे बनाने की प्रेरणा देना और फिल्म उद्योग तथा फिल्म दर्शको को एक-दूसरे की जरूरतो और जिम्मेदारियो के प्रति जागरूक बनाना। मुझे खुशी है कि ये पुरस्कार बराबर लोकप्रिय होते जा रहे है और यह कहा जा सकता है कि किसी हद तक इनके कारण भारतीय फिल्मो का स्तर ऊचा उठा है। जैसे उद्योग आगे बढ रहा है और अधिकाधिक फिल्मे तैयार हो रही है, मै आशा करता हूं कि इस उद्योग से सम्बन्ध रखनेवाले सब लोग इस बात को महसूस करेगे कि केवल वही व्यापारिक सफलता सच्ची और स्थायी होती है जिसे प्राप्त करने मे जनता के कल्याण और समाज की भलाई का पूरा खयाल रखा गया हो। मुझे विश्वास है कि आपकी संस्था जिसके तत्वाधान मे आज यह आयोजन हुआ है इस बात पर बराबर जोर देती रहेगी और प्रचार के अपने साधनों के बल पर इस आदर्श को फिल्म उद्योग द्वारा मान्यता दिलाने में सफल होगी।

अपना भाषण समाप्त करने से पहले मै अपने देश के फिल्म निर्माताओ से सानुरोध यह आग्रह करना चाहूंगा कि वे लोगों के और इससे भी अधिक समाज के प्रति अपनी भारी जिम्मेदारी को समझे। इस देश की ऐतिहासिक परम्पराओं का और भारत के इतिहास तथा संस्कृति में शील तथा नैतिकता को जो ऊंचा स्थान दिया गया है उसका उन्हे सदा ध्यान रखना चाहिए; औचित्य के पथ से कोई बात जरा-सी भी दूर हटती हो, उसे आपको कदापि नही अपनाना चाहिए, न तथाकथित कला की आड मे, न सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए और न ही दर्शकों को आकर्षित करने की लालसा से।

आज के समारोह के आयोजको के प्रति मै आभारी हूं कि उन्होने इस महत्त्वपूर्ण विषय पर कुछ शब्द कहने का मुझे अवसर दिया। मै उन सभी कलाकारों को बधाई और अपनी शुभ-कामनाये देता हूं जिन्हे आज पुरस्कृत किया गया है।

शिवाजी महाराज के तैल-चित्र का अनावरण

महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री, श्री यशवन्तराव चव्हाण और पूना की महानगर-पालिका के प्रति मै आभारी हूं कि उन्होने मुझे इस अवसर पर शिवाजी महाराज के तैल-चित्र का अनावरण करने के लिए निमन्त्रित किया, और पूना तथा देश की साधारण स्थिति के सम्बन्ध मे कुछ शब्द कहने का मुझे अवसर दिया। जैसा कि मैंने कई बार पहले भी कहा है, पूना से मै अपरिचित नही हू, बल्कि यह कहना ठीक होगा कि इस नगर के साथ मेरा सम्बन्ध दिनोदिन घनिष्ठ होता जा रहा है। इसका सारा श्रेय स्वयं पूना और उसके सुखद जलवायु को तो है ही, पर इसके साथ ही महाराष्ट्र की सरकार और आपके आतिथ्यप्रिय राज्यपाल तथा मुख्य मंत्री को भी कम नही। आपके महापौर श्री कराड ने ठीक ही कहा है कि देश के विभिन्न भागो से पूना लोगो को बराबर आकर्षित करता रहा है। आधुनिक समय मे जबकि यहा सभी प्रकार की रहन-सहन सम्बन्धी सुविधाओं की व्यवस्था कर दी गई है और इस नगर मे बड़े-बडे उद्योग स्थापित होते जा रहे है, यह आकर्षण और भी गहरा होता जा रहा है। मुझे इसमे जरा भी सन्देह नही कि पूना के विस्तार का यह क्रम बराबर बढता जायेगा और कुछ वर्षों मे ही इस नगर की गणना भारत के सबसे बडे शहरो मे होने लगेगी। यहा के जलवायु के अनुरूप ही पूना की महानगरपालिका ने नगर मे सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षण आदि की सुन्दर व्यवस्था की है, जिसके लिये महापौर महोदय और महानगरपालिका के दूसरे सदस्य बधाई के पात्र है।

जिस विशेष उद्देश्य से आपने आज के समारोह का आयोजन किया है उसके सम्बन्ध मे भी मै दो शब्द कहना चाहूंगा। पूना नगर का इतिहास कितना ही पुराना हो, किन्तु शिवाजी महाराज से इसका सम्बन्ध इस नगर के इतिहास मे विशेष महत्त्व की घटना है। एक महान योद्धा और प्रशासक के रूप मे शिवाजी के जीवन के प्रारम्भिक वर्ष पूना मे ही बीते और यहां की पर्वतमालाएं और उनकी चोटियों पर स्थित विशालकाय दुर्ग शिवाजी की वीरता और उनके सुदृढ आयोजन के आज भी साक्षी है। इतिहास की ये घटनाए पूरा नगर पर और आस-पास के इलाके पर अपनी अमिट छाप छोड गई है। शिवाजी महाराज के शौर्य और संरक्षण के कारण ही पूना ने सदियो की दासता और गौण स्थिति के बाद स्वाधीनता की सास लेनी आरम्भ की, जिसके फलस्वरूप एक साधारण-सी बस्ती से पूना एक नगर के रूप मे

शिवाजी महाराज के तैल-चित्र का अनावरण करते समय पूना महानगरपालिका भवन मे भाषण; 25 जून, 1961

उन्नत होने लगा । शिवाजी महाराज का यह ऋण तो केवल पूना पर है, किन्तु समस्त महाराष्ट्र और भारत देश पर जो उनका ऋण है उसका मूल्याकन करना इतिहास-वेत्ताओं का काम है । जैसा कि श्री कराड ने कहा शिवाजी एक युगपुरुष थे । उनकी प्रतिभा और ओजस्विता अन्धकार में एक ज्योति की छटा के समान थी, जो छटा उनके बाद भी देश का और विशेषकर इस क्षेत्र के लोगो का मार्गदर्शन करती रही ।

मै नही समझता इतिहास का कोई भी विद्यार्थी यहा आकर शिवाजी महाराज के वीरतापूर्ण कारनामो का स्मरण किये बिना रह सकता है । यहा की पहाड़ियो में उनके सैनिक अभियानो की गूज अब भी सुनाई देती है और उनका सार्वदेशिक दृष्टिकोण, उद्दात भावना और मानवोचित महानता के किस्से, कहानिया आज भी प्रचलित है । इतिहास के सम्बन्ध में किसी का चाहे कैसा ही मत हो, किन्तु एक बात सर्वमान्य है । मानव, समाज और सस्थाओं के सम्बन्ध मे इतिहास की कसौटी प्राय: गलत नही होती । समय और निर्लिप्त अध्ययन की सहायता से इतिहास खरे-खोटे की सच्ची परीक्षा करने में कभी नही चूकता । हमे ऐसे भी उदाहरण मिलते है कि वे राजा तथा सम्राट अथवा वे व्यक्ति जो अपने जीवनकाल मे वैभवशाली या महान समझे जाते थे, कालान्तर में लोगो की धारणा उनके सम्बन्ध में कुछ और ही हो गई । ऐसे भी उदाहरण इतिहास प्रस्तुत करता है कि कुछ लोग जो अपने जीवनकाल मे कभी प्रसिद्धि न पा सके, मरने के कुछ ही वर्ष बाद उनके यश तथा ख्याति के सूर्य का उदय हुआ । इस दृष्टि से भी शिवाजी महाराज का व्यक्तित्व एकदम असाधारण ज्ञात होता है । अपने जीवनकाल में भी उन्हें बहुत यश और कीर्ति मिली, किन्तु तीन सौ वर्ष तक इतिहास और खोज की कसौटी पर कसे जाने के बाद उनकी कीर्ति में कही अधिक वृद्धि हुई है ।

इतिहास का आदर करना और ऐतिहासिक भावना को प्रोत्साहन देना एक श्रेयस्कर राष्ट्रीय गुण है । यह भावना समाज संगठन का आधार और राष्ट्रों के उत्थान का उचित उपाय है । गत वर्ष अपनी रूस यात्रा के दौरान में मैंने वहां इस ऐतिहासिक भावना को जैसा उन्नत देखा उससे मुझे कुछ आश्चर्य हुआ । रूसी लोग अपने देश में इतिहास की प्रत्येक घटना का आदर करते हैं । उन्होंने लेनिन और स्टालीन जैसे साम्यवादी नेताओं के स्मारक तो जगह-जगह बनाये ही हैं, किन्तु इसके साथ ही रूस के गत दो हजार वर्ष के इतिहास से सम्बन्धित किसी भी घटना का उन्होंने तिरस्कार नही किया है । कवी में, समरकन्द में और अन्य प्राचीन नगरों में जिस उत्साह के साथ वहां का पुरातत्व विभाग खोज और

खुदाई का काम कर रहा है वह वास्तव में प्रशंसनीय है। रूस के प्रायः सभी बड़े नगरों में संग्रहालयों को विशेष स्थान तथा महत्त्व दिया गया है। मैं समझता हूं कि हमें भी अपने देश में इस ऐतिहासिक भावना को जागृत करना और प्रोत्साहन देना चाहिये। अभी तक हमारी यह कमी रही और यही कारण है कि यद्यपि हम एक अत्यन्त समृद्ध साहित्य के उत्तराधिकारी है हमारे इतिहास की कई शृंखलाएं टूटी है और उन सबको जोड़ने में हम अभी तक समर्थ नहीं हुए हैं।

हम भारतीय इतिहास के प्रति बहुधा उपेक्षा की भावना रखते है और यही कारण है कि बडी से बड़ी ऐतिहासिक घटनाओं और बडे से बड़े ऐतिहासिक महापुरुषो के सम्बन्ध मे हमारी जानकारी कभी-कभी बहुत अधूरी रह जाती है। छत्रपति शिवाजी महाराज उन महापुरुषो में हुए है जिनका जीवनकाल इतिहास के प्रवाह मे एक मोड का परिचायक और एक युग-परिवर्तन का साक्षी है। इसलिये छत्रपति शिवाजी के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा जाय या कहा जाय या चित्रित किया जाय, वह देश के लिए गौरव की बात है। पर मै चाहूंगा ऐसे समारोह से हम यह भी सीखे कि आधुनिक युग के महापुरुषो की कहानी को सुरक्षित रखते हुए प्राचीन तथा अर्वाचीन इतिहास की शृंखलाओं का सन्तुलित ढंग से अध्ययन करते हुए भारत का समग्र इतिहास जनता के सामने कैसे लाया जाय। जनता को इस इतिहास से अवगत ही नही होना है बल्कि उन घटनाओ से आवश्यक शिक्षा भी ग्रहण करनी है। आज जब भार स्वाधीन हो चुका है, जब हम विकास और निर्माण द्वारा नवयुग के उदय के स्वप्न देखने लगे है और जब संसार भर की नजरों मे हमारे देश को आदरपूर्ण स्थान मिलने लगा है—ऐसे समय मे देश मे ऐसी घटनायें भी घट रही है जिनसे शंका होने लगती है। इतिहास हमें फिर चौराहे पर ले आया है जहां से हमें ठीक मोड़ मुड़ना है। यह ऐसा नाजुक समय है जब भूल अथवा एक भी गलत कदम हमारी आशाओं पर तुषारापात कर सकता है और हमारे अरमानों को राख में मिला भारत राष्ट्र की एकता पर कुठाराघात कर सकता है। इसलिये काल की कोमलता को हमें समझना चाहिये और बीते इतिहास की घटनाओ से शिक्षा ले ठीक रास्ते पर चलने का यत्न करना चाहिये।

इसलिये मुझे इस बात को देखकर बहुत खुशी होती है कि महाराष्ट्र अपने इतिहास और ऐतिहासिक महापुरुषों की स्मृति बनाये रखने के लिये प्रयत्नशील है। शिवाजी महाराज अपने जीवन मे जिन आदर्शों का पालन करते थे, उनके प्रचार की आज भी आवश्यकता है। व्यक्तिगत चरित्र, धार्मिक उदारता, देशभक्ति,

आदि उनके जीवन के मूल मंत्र थे। जहां हम उनका स्मारक स्थापित करते हैं और उनके प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते है, हम सबका यह भी कर्त्तव्य है कि हम उनके आदर्शों को अपने व्यक्तिगत और राष्ट्र के जीवन में उतारें।

आपने मुझे इस सुन्दर तैल-चित्र का अनावरण करने का श्रेय दिया, उसके लिये मैं एक बार फिर अपना आभार प्रकट करना चाहता हूं। इस सत्कर्म के लिये मैं पूना महानगरपालिका तथा चित्रकार महोदय, श्री रेगे को बधाई देता हूं।

उद्घाटन-भाषण

मुझे इस बात की बहुत प्रसन्नता है कि इस सम्मेलन के सयोजको के कृपापूर्ण निमत्रण और श्री दातार के आग्रह के कारण मै इस आयोजन मे भाग ले सका। संस्कृत साहित्य मे बहुत वर्षो से मेरी रुचि है और इसके पठन-पाठन को प्रोत्साहन देने की दिशा मे मुझसे जो कुछ भी बन पडा यदाकदा मैने करने का यत्न किया है। सस्कृत विश्व परिषद् के साथ आरम्भ से ही मेरा सम्बन्ध रहा है और उसके कई वार्षिक अधिवेशन मे भाग लेने का मुझे सुअवसर मिला है। यह सौभाग्य की बात है कि संस्कृत साहित्य सम्मेलन मे भी, जिसके लगभग वही उद्देश्य और लक्ष्य है जो सस्कृत विश्व परिषद् के, मै आज सम्मिलित हो सका।

किसी भाषा का अध्ययन और उसके द्वारा ज्ञानोपार्जन व्यक्ति और समाज के लिए वांछनीय है, किन्तु जब हम संस्कृत के पठन-पाठन और देश में इसके अधिक विस्तृत प्रचार की बात करते है, तो उसके कुछ विशेष कारण हैं। संस्कृत एक भाषा मात्र नही और इसका साहित्य कवियो और लेखको की कृतियों का सग्रह मात्र नही। वास्तव मे सस्कृत के विशेष महत्त्व का कारण यह है कि इसमें भारत की आत्मा झलकती है। हमारा जीवन, हमारा चिन्तन, हमारे सामाजिक और धार्मिक अनुष्ठानो की उत्पत्ति और हजारों वर्षो से हमारी सांस्कृतिक परम्पराओ का क्रमिक विकास—ये सभी बाते अगर हमे कही देखने को मिलती है तो केवल सस्कृत साहित्य में। दूसरे शब्दो में संस्कृत-भाषा और साहित्य का इतिहास विभिन्न युगो मे इस भूखड में रहने वाले जनगण की सामाजिक गति-विधियो और उसकी बौद्धिक उन्नति का इतिहास है। विगत 4 हजार वर्षो में हमारे प्राचीन देश मे अनेक भाषाओ और बोलियो ने जन्म लिया, किन्तु शायद दक्षिण की भाषाओ को छोड़कर संस्कृत के अतिरिक्त उनमे एक भी ऐसी नही जो आज तक जीवित रही हो और जिसका सस्कृत के समान देश-व्यापी प्रचार तथा प्रसार हुआ हो। यही नही, ये अधिकांश भाषाएं एक वृक्ष की शाखाओं के समान सस्कृत से ही उपजीं और अधिकतर उसी महान वृक्ष से पोषण प्राप्त कर फली-फूली। इसलिए, एक प्रकार से संस्कृत का इतिहास कम-से-कम एक अंश मे अन्य भारतीय भाषाओं का भी इतिहास है।

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन में उद्घाटन भाषण; कलकत्ता, जुलाई, 1961

संस्कृत भाषा और साहित्य की एक और विशेषता है जिसकी अवहेलना नही की जा सकती। सौभाग्य से हमारे देश की विचारधारा और हमारी संस्कृति एक समय मे एशिया के प्राय: समस्त देशो मे जा पहुची थी, और चूकि हमारा समस्त चिन्तन अधिकतर संस्कृत अथवा इसकी पारिवारिक भाषाओ मे ही सूत्रबद्ध था, इसलिए संस्कृत का ज्ञान एशिया भर के देशो मे भी जा फैला। सदियो तक संस्कृत का अध्ययन एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप मे किया गया। इस प्रकार सस्कृत का एशिया भर के इतिहास के साथ नाता जुडा। आज भी इन देशो मे संस्कृत के अध्यापन की व्यवस्था है और हर्ष का विषय है कि इस व्यवस्था मे दिनोंदिन सुधार होता दीख रहा है। प्राय समस्त मध्य-पूर्वी एशिया, मध्य एशिया और हमारे पड़ोसी नेपाल, अफगानिस्तान आदि देशो के विश्वविद्यालयो मे संस्कृत पढाई जा रही है।

किन्तु हमारे दृष्टिकोण से संस्कृत भाषा और साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसने एक समस्त भूखंड को, जिसमे सहस्रो वर्षों से विभिन्न विचार वाले और विभिन्न बोलिया बोलने वाले लोग रहते आए है, सास्कृतिक एकता के सूत्र मे बहुत हद तक बाधे रखा है। समय-समय पर परिवर्तन होते रहे, क्रातियो के कारण सामाजिक जीवन की धारा बदलती रही और जीवन के प्रति जन-साधारण के दृष्टिकोण मे भी बहुत कुछ अदला-बदली हुई, किन्तु कोई भी विप्लव एकता के उस सूत्र को जिसमे संस्कृत ने हमे बाधा है शिथिल न कर सका। उस सूत्र की कड़िया सम्भव है कही-कही ढीली पड़ गई हो, किन्तु सौभाग्य से वे तोड़ी नही जा सकी। इसका कारण यही है कि हमारे जीवन के उन सभी अगो पर, जो मनाव के निकटतम होते है, सस्कृत का गहरा प्रभाव पड़ा है। मानव की दृढ़तम आस्थाएँ, आतरिक विश्वास और धारणाएँ तथा संस्कार जिन तत्वो से बने है, उनकी रचना कई हजार वर्ष पहले सस्कृत के माध्यम से हुई थी और आज भी ठीक वैसी ही बनी है। कोई भी भारतीय चाहे वह संस्कृत का ज्ञान रखता हो अथवा नही, अनजाने मे अपने भावात्मक जीवन मे संस्कृत से प्रेरित हुए बिना नही रह सकता। इन्ही कारणो से सस्कृत का पद इस देश में केवल एक भाषा का नही रहा। वास्तव मे वह एक संस्था रही है, एक ऐसी सस्था जो हमारे वैयक्तिक, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन की रूपरेखाओ का निर्माण करती रही है।

ऐसी भाषा और उसके साहित्य के अध्ययन की उपादेयता के सम्बन्ध में कुछ भी कहना अनावश्यक है। संस्कृत के महत्त्व के विषय में भारत के ही नही

बल्कि संसार भर के अनेक महापुरुषो ने अपने विचार व्यक्त किए है । सभी का मत है कि संस्कृत एक सम्पन्न भाषा है, उसका शब्द-भंडार असीम और अनन्त है और उसके द्वारा आवश्यकतानुसार प्रत्येक विषय के नवीन शब्दों का निर्माण सरलता से हो सकता है । संस्कृत भाषा तथा उसके साहित्य के विषय में बहुत कहा गया है पर आवश्यकता इस बात की है कि भारत की इस अमूल्य निधि की रक्षा करने के साथ-साथ इसे सर्वजन सुलभ बनाया जाय । वर्षो तक तपस्या कर भौतिक सुखो की अवहेलना करते हुए देश के कोने-कोने में हजारों विद्वानों ने इसकी रक्षा की और इसके साहित्य को समृद्ध किया । आज भी उस परम्परा के बहुत से विद्वान जीवित है । यह देश उनकी इस देन के लिए उनका सदा ऋणी रहेगा ।

किसी भी स्वतत्र राष्ट्र की सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह अपनी इस अमूल्य धरोहर की रक्षा करे । इस जिम्मेदारी का अनुभव करते हुए केन्द्रीय सरकार ने संस्कृत आयोग द्वारा सर्वेक्षण कराकर आवश्यक सुझाव प्राप्त किए है, जिन्हे केन्द्रीय मडल के द्वारा कार्यान्वित कराया जा रहा है । इस कार्य के लिए तृतीय पंचवर्षीय योजना मे भी 75 लाख रुपये स्वीकृत किए गए है । कुछ राज्य सरकारो ने उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों मे सस्कृत को अनिवार्य स्थान देकर प्रशंसनीय कार्य कर अन्य सरकारो का भी पथ-प्रदर्शन किया है । देश के विचारशील लोगो का और अधिक ध्यान अब इस ओर जाने लगा है । संस्कृत आयोग ने भी इस पर बल दिया है और शिक्षाशास्त्री भी इस बात मे एकमत है कि संस्कृत हमारी राप्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्य प्रान्तीय भाषाओ के पोषण की एक मूल भित्ति है । उत्तर प्रदेश और बिहार सरकारों ने क्रमश: वाराणसी और दरभंगा मे सस्कृत विश्वविद्यालयों की भी स्थापना की है । फिर भी इस ओर और अधिक दृढ़ तथा विवेकपूर्ण कदम बढाने की आवश्यकता है । देश की जनता में आज भी संस्कृत के प्रति आस्था है । उसका उपयोग आप सफलतापूर्वक कर सकते हैं । इस अधिवेशन मे गंभीर विचार-विमर्श करके आपको अपना पथ निश्चित करना है, क्योकि किसी भी गणतंत्रराज्य मे जनता के योगदान के बिना कोई भी कार्य, चाहे वह अच्छे से अच्छा क्यो न हो, कार्यरूप में परिणत नही किया जा सकता । जनता का सहयोग ही सरकार का बल है । मुझे प्रसन्नता है कि अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन इस दिशा में सचेत है । इसने विद्वानों और जनता के विभिन्न वर्गों का सहयोग प्राप्त किया है और यह संस्कृत प्रेमियों के समन्वयात्मक रंगमंच के रूप में कार्य कर रहा है । यह सन्तोष का विषय

है कि 'विश्व संस्कृत शताब्दी ग्रन्थ' प्रकाशन का शुभ कार्य भी सम्मेलन ने अपने हाथ में लिया है। इस ग्रन्थ की प्रति से, मेरे विचार में, संस्कृत भाषा और साहित्य का एक अन्तर्राष्ट्रीय चित्र विश्व के समक्ष उपस्थित हो सकेगा।

खुशी की बात है कि भारत की राजधानी दिल्ली मे सस्कृत भवन के निर्माण और एक आदर्श संस्कृति विद्यापीठ की स्थापना का प्रयास सम्मेलन करने की सोच रहा है। यह एक शुभ कार्य है, जिसके सम्पन्न होने से राजधानी के जीवन में एक बडे अभाव की पूर्ति होगी। मेरा विश्वास है कि इन योजनाओं में जनता और सरकार का सहयोग अवश्य प्राप्त होगा।

एक बार फिर संस्कृत साहित्य के महान् स्तम्भ उन प्राचीन तपस्वी संस्कृत विद्वानो के प्रति, जिनकी साधना ने इस अमूल्य निधि की महान् सक्रमण कालो मे भी रक्षा की है, श्रद्धा व्यक्त करते हुए मैं इन शब्दों के साथ सम्मेलन के इस 26वे अधिवेशन का उद्घाटन करता हूं।

कविराज श्री श्यामादास वाचस्पति की मूर्ति का अनावरण

देवियो और सज्जनो,

मेरे लिए यह गौरव की बात है कि आपने मुझे कविराज श्यामादास वाचस्पति की मूर्ति के अनावरण करने के लिये निमन्त्रण दिया। मै कविराज से थोड़ा परिचय रखता हू क्योंकि उस समय जब पडित मोतीलाल नेहरू बहुत बीमार थे और कविराज की चिकित्सा मे थे, तो उस वक्त यह मेरा सौभाग्य था कि मै पडित जी के साथ मे उनकी सेवा मे था। दूसरे प्रकार से भी उन्हे जानने का कुछ मौका हुआ था मगर वह एक विशेष समय था जब मै कविराज जी के सम्बन्ध मे कुछ अधिक जान सका और देख सका।

आयुर्वेद आजकल हमारे देश के अधिकांश लोगो की सेवा कर रहा है। आज जगह-जगह पर अस्पताल खुल रहे है, मेडिकल कालेज कायम किये जा रहे है और दिन-प्रति-दिन डाक्टरो की सख्या बढने और बढाने का प्रयत्न किया जा रहा है। यह सब होते हुए भी अभी भी अगर देखा जाए और इस बात का पता लगाया जाय तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि अधिकाश लोग अभी भी आयुर्वेद के सहारे जीते है और मरते है। इसमे किसी का दोष नही है। यह चीज आज की नही अनन्त काल से हमारे देश मे रही है और इसको इस देश से हटा देना या इसकी जगह पर किसी दूसरी चीज को लाकर खडा कर देना कुछ आसान काम नही है। यह सब होते हुए भी इसमें अपनी इतनी शक्ति है, इसमे इतनी जीवन-शक्ति है कि यह आज भी कायम है। आज एलोपथी की दवा पर, अस्पतालो पर, डाक्टरो पर जितना खर्च किया जा रहा है उसके अनुपात मे आयुर्वेद पर कितना खर्च हो रहा है और अगर बीमारो की सख्या जिनको दोनों से लाभ पहुच रहा है, उसका हिसाब लगाया जाए तो आप समझेंगे कि अनुपात ठीक मिलता है अर्थात् एक तरफ बहुत ज्यादा खर्च एलोपथी पर और अधिक लोग अच्छे होते है आयुर्वेद के द्वारा। यह हिसाब है।

मै तो एक बीमार आदमी हू और आज से नही बहुत जमाने से हमेशा कुछ न कुछ शिकायत होती रही। मेरा यह सौभाग्य रहा है कि सब प्रकार के चिकित्सक—अच्छे से अच्छे आयुर्वेद के वैद्य, अच्छे से अच्छे हकीम, एलोपथिक मुझे मिलते है और मुझे उनकी चिकित्सा से लाभ उठाने के मौके मिले। इसलिये

कविराज श्री श्यामादास वाचस्पति की मूर्ति के अनावरण के समय भाषण, कलकत्ता, 2 जुलाई, 1961

मैं किसी की शिकायत नही करता, मैं तो केवल बताना चाहता हूं कि किस चीज़ मे क्या कमी है। आयुर्वेद में मुझे दो बातो की कमी आज मालूम होती है। एक तो यह कि आयुर्वेद की जो औषधियां तैयार होती है उनके सम्बन्ध में कोई नही कह सकता कि जिस नाम की जो औषधि दी जाती है वह औषधि ठीक है या नही। कोई भी कविराज दवा दे दे वे अपने यहां तैयार की हुई दवा देंगे। दूसरो की तैयार की हुई दवा पर उतना उनका विश्वास नही रहता क्योंकि जितने लोग दवा बनाकर बेचते है वे ठीक शास्त्रीय ढग से बनाते है या नहीं जिस अंश में जो चीज बनाते है, जिस रीति से व ढंग से बनाना है वैसा बनाते है कि नही इस पर उनका विश्वास नही रहता। इस वजह से इसका अगर यह एक अभाव दूर किया जाए तो न मालूम इसका फल और कितना अच्छा देखने को मिलेगा। दूसरी चीज़ जिसकी कमी मै देखता हू वह यह है कि जो चीज़ पहले से लिखी हुई है उतनी ही तक हम समझते है विद्या समाप्त हो गई है उसमे और कुछ न तो बढाने की जगह है और न कोई बढ़ा सकता न कोई नये आविष्कार करता। विद्या का अंग हमेशा बढ़ता ही जाता है। जिस तरह से कोई होराइजन को पकड़ना चाहे तो नही पकड़ सकता उसी तरह से यह समझना कि सब कुछ जान चुके है यह ठीक नही है। परिस्थिति की वजह से ही कहिये पिछले सौ बरसो से आयुर्वेद एक ही स्थान पर रह गया आगे बढ़न का उसे कोई सुअवसर नही मिला। आयुर्वेद को अब गवर्नमेंट की ओर से जो थोडा-बहुत सहारा मिलने लग गया है, कुछ न कुछ सहारा मिलता ही है, उसस मै आशा करता हूं कि यह त्रुटि दूर हो जाएगी। एलोपथी के लोगो से मेरी यह दरख्वास्त है, मेरा यह निवेदन है कि उनकी जो अपनी विद्या है उस विद्या से आयुर्वेद को जाचे। यह कह देना या यह मान लेना कि जो कुछ हमारे पास है वही सभी कुछ है और जो कुछ हमारे पास नही है वह कुछ नही है यह विज्ञान की गरीबी है। विज्ञान हमेशा अपनी आख खोले रखता है और चारों तरफ देखता रहता है, खोजता रहता है। एलोपथ को अपनी आख बन्द नहीं करना चाहिये। आजकल केमिस्ट्री बहुत बढ़ गई है। केमिकल एनालिसेस भी बहुत दूर तक गई। जो चीजे तैयार होती हैं उनको परख कर, विश्लेषण कर यह बताया जाता है कि उसमे किसी चीज का कितना अश है। इसी एनालिसेस की बुद्धि लगाकर यह देखें कि आयुर्वेद की रीति से तैयार की हुई दवाएं है उन दवाओं में कौन-कौन सी चीजें है, उनके क्या-क्या अंश है और किस अंश के क्या गुण है और किस तरीके से वे उन दवाओं को अपने काम में ला सकते है। आजकल बहुत-सी दवाएं है जो ओरगानिक समझी जाती है जो किसी जानवर से निकाली

जाती हैं । कौन वस्तुओ व कौन चीजो के सम्मिश्रण के द्वारा वे दवाएं बनाई जाती है इन सबका विश्लेषण करना मुश्किल नही होना चाहिए । इस तरह से कैमिकल एनालिसेस द्वारा सब चीजो का पता लगाकर आयुर्वेद की औषधियों के दोष निकाल दिये जाए तो मैं समझता हूं कि बहुत-सी चीजें एलोपथी को भी मिल सकती है । मै समझता हू कि यह दोनो के लिये हितकर साबित होगा । इसलिये जब मुझसे यह कहा गया कि मै इस मूर्ति का अनावरण करू तो मैने यह उचित समझा कि इस सबंध मे मेरे विचार है उन्हें मै यहां व्यक्त करूं । आपने यह मौका दिया इसके लिये मै बहुत बडा आभारी हूं ।

हिन्दी शिक्षा परिषद् के वार्षिक अधिवेशन में भाषण

राज्यपाल महोदय, देवियो और सज्जनो,

मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि मै एक बार और आपके इस समारोह मे आज हाजिर हो सका। जहा तक मुझे स्मरण है मै एक बरस से अधिक पहले इस प्रकार की सभा मे शामिल हुआ और जिस तरह आज नये लोगो को प्रमाण-पत्र और पारितोषिक आदि दिये गये है, उसी तरह से और मौको पर मैने प्रमाण-पत्र और पारितोषिक बाटे थे।

भारतवर्ष मे इस बात की जरूरत है कि हमारे सार्वदेशिक काम-काज के लिये एक ऐसी भाषा हो जिसे सब लोग काम मे ला सके। हमारे सविधान ने यह निश्चय किया कि वैसी भाषा हिन्दी है और उसको देवनागरी लिपि मे लिखना चाहिये। यह सविधान की बात मैने आपको बताई। मगर जब तक उन प्रान्तो मे, जहा की भाषा दूसरी है, लोग हिन्दी इतनी मात्रा मे सीख न जाए, सारे देश का काम इस भाषा मे चलने न लग जाए, तब तक हमारा काम पूरा नही समझा जा सकता। और इसलिये, जैसी यह सस्था है, इस प्रकार की सस्थाए देश के विभिन्न भागो मे बहुत दिनो से काम करती आ रही है। हिन्दी को सार्वदेशिक भाषा, सारे देश के काम के लिए बनाने का काम, कोई नया नही है। और न यह बात भी सच है कि हिन्दी-भाषी जो अहिन्दी लोग है उन पर इस भाषा को लादना चाहते है। सारे देश को ध्यान मे रखते हुए आज नही, स्वराज के बहुत पहले 1917-18 मे महात्मा गान्धी जी ने यह कार्य आरम्भ किया था और सच पूछिए तो इसके पहले ही उन्होने इसका निश्चय किया था जब वह दक्षिण अफ्रीका मे काम करते थे और वहा भारतवर्ष के विभिन्न भागो के लोग जो गये उनके साथ उनको काम करना पडता था। तब से उनकी यह धारणा हुई थी कि सारे भारतवर्ष के लिये भारतीय भाषा को, सारे देश के काम के लिए, हिन्दी हो सकती है। इसी धारणा को लेकर उन्होने 1918 मे दक्षिण भारत मे हिन्दी पढाने का काम आरम्भ कराया। मेरी जहा तक याद है स्वामी सत्यदेव और अपने पुत्र देवदास को इस काम के लिये दक्षिण मे उन्होने भेजा था और उस वक्त से हिन्दी प्रचार सभा काम करने लगी और आज उसका काम बहुत बडे पैमाने पर फैल गया है। उत्तर भारत मे अन्य भागो मे जहा की भाषा हिन्दी नही है काम पीछे शुरू किया गया है। और उसका कारण यह है कि बहुत जगहो

हिन्दी शिक्षा परिषद् के वार्षिक अधिवेशन मे भाषण, कलकत्ता, 3 जुलाई, 1961

मे इस तरह के काम की जरूरत नही है क्योकि बहुत जगहों में पहले से लोग हिन्दी जानते है ।

जो हिन्दी-भाषी है उनके दो काम है । एक यह काम कि हिन्दी भाषा को पूर्ण बनावें, समृद्ध बनावे और उसके अन्दर सब प्रकार के साहित्य को रख दे जिसमें लोग अपनी इच्छा से हिन्दी सीखने की जरूरत समझे । आज किसी को भी यह कहने की जरूरत अग्रेज महसूस नही करते कि हमारी भाषा सीखे । उन्होने अपनी भाषा को और दूसरो ने उनकी भाषा को इतना उन्नत कर लिया है कि आज चाहे पमन्द करे या न करें सब लोग अग्रेजी बोलना और जानना जरूरी समझते है । हम लोग भी अग्रेजी सीखने की जरूरत समझते है और यही नही कि हिन्दी सीखने मे अग्रेजी सीखना ज्यादा जरूरी समझते है । इसका कारण यही है कि उनका साहित्य इतना बढ गया है कि वह खुद आकर्षण बन जाता है उन लोगो के लिये जो उनकी भाषा को नही जानते हो । अगर हिन्दी को भी हम उसी दर्जे मे ला सके तो इसमे कोई शक नही कि सिर्फ भारतवर्ष के ही नही विदेश के लोग भी हिन्दी सीखना जरूरी समझेगे । तो आप लोगो को काम है कि हिन्दी साहित्य को उन्नत करे और बढावे । साहित्य केवल कविता नही, केवल उपन्यास या नाटक लिखना ही नही बल्कि आधुनिक विज्ञान भी उसमें समाविष्ट हो । दूसरा काम उनका यह है कि भारतवर्ष के प्रान्तो मे जहां-जहा लोग नही जानते है अगर वहा जाकर हिन्दी सिखाने के लिये तैयार हो जाए तो बहुत बड़ा काम होगा । अभी मैने आपसे कहा था दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के बारे मे पहले हिन्दी भाषा-भाषियो के द्वारा काम शुरू किया गया था मगर आहिस्ते-आहिस्ते वहा काम इतना बढ गया कि आज वहा हिन्दी प्रान्त के लोगों की जरूरत महसूस नही होती । मै मानता हू कि जहां दक्षिण की भाषा हिन्दी भाषा से बिल्कुल अलग भाषा है वहा पर जब इतना प्रचार हो गया है कि मैने सुना है कि जितने लोग हिन्दी परीक्षा पास कर चुके है हिन्दी प्रचार सभा की परीक्षाओ को पास कर चुके है उनकी सख्या उन लोगो से कई गुना ज्यादा है जो अग्रेजी मे परीक्षाए पास कर चुके है तो इन 25 बरसो मे गवर्नमेंट की मदद के बिना लोगो ने अपने उत्साह से काम को चलाया । इतने लोगों को हिन्दी सिखलाई । तो इसमे कोई शक नही कि जैसे बगाल, महाराष्ट्र, गुजरात, जहा की भाषाए हिन्दी से मिलती-जुलती है वहा यह काम अधिक आसानी से हो सकता है । मै तो यह चाहूंगा कि इन सब जगहों मे प्रचार का काम जहा तक हो सके किया जाए । दक्षिण के लोग यदि यह समझे कि हिन्दी उन पर दूसरे

लोग लादना चाहते है तो उनका यह ख्याल गलत है। कुछ शायद हिन्दी वालों के दिल मे ऐसी भावना उठती है कि हमारी भाषा सब जगह चलनी चाहिए, यह भी गलत खयाल है। हिन्दी वालों का यह काम है कि यह मामला अहिन्दी-वालों पर छोड़ दिया जाए। हिन्दी वालों का यह काम है कि वह साहित्य की उन्नति करे, अगर ऐसा हुआ तो कोई विरोध नही होगा। मैने सब जगह यही बात कही, दक्षिण मे और उत्तर में भी। हिन्दी को लोकप्रिय बनाने का काम हिन्दी वालो का है और उसे अपनाने का काम दूसरो का है।

मुझे इस बात की खुशी है कि इस तरह का यहा एक विद्यालय चल रहा है। मैंने दक्षिण में एक बार देखा था इस प्रकार के पारितोषिक वितरण समारोह मे एक साथ दादा, बाप और बेटा तीनों ने पारितोषक पाया : मै चाहूंगा कि यहा हिन्दी का प्रचार बढ़े दक्षिण मे, जहा हिन्दी बोलनेवाले कम है, हिन्दी का प्रचार जब इतने बड़े पैमाने पर हो रहा है तो यहा जहा हिन्दी बोलनेवाले अधिक सख्या मे मिल सकते है, हिन्दी का प्रचार आसान है। मै आशा करूंगा कि यह काम आगे बढ़ेगा। जिन्होंने पारितोषिक और प्रमाण-पत्र पाये है उन सब को मै बधाइया देता हूं और बच्चों को विशेष करके आशीर्वाद ।

शिक्षायतन के नये भवन का उद्घाटन

भाई श्री कानोडिया जी, बहिनो और भाइयो,

जब मुझ से इस सस्था के सम्बन्ध में निवेदन किया गया कि मै आकर नये भवन का उद्घाटन करूं तो उसको मैंने एक अच्छा सुअवसर माना कि आप सब लोगों से इकटठे मुलाकात हो जायेगी और फिर इस सस्था के सबंध में भी कुछ सुन सकूगा। यह तो मुझे आज ही नही बहुत दिनो से मालूम है कि आप लोग जिस काम को हाथ मे लेते है उसको बहुत सुचारु रूप से और बड़ी योग्यता के साथ सचालित करते है, आगे बढाते है और इस देश को लाभ पहुचाते है उसी तरीके से आपने इस संस्था को भी जन्म दिया और अपनी सब बुद्धि और शक्ति लगा कर इसको बढाया और आज जितने अध्यापक यहा अध्यापन का काम कर रहे है तो यह कलकत्ते जैसे शहर में एक बडी चीज है क्योंकि आज तक हम देखते है कि विद्या के लिए सभी जगहो पर स्कूल, कालेज व यूनिवर्सिटियों की डिमान्ड हो रही है और इस तरह की संस्थाओं के लिये सभी जगहों पर जैसा सुन्दर इन्तजाम होना चाहिए, जैसी व्यवस्था होनी चाहिए वह नही रह सकती जिसका यह फल होता है कि जैसी शिक्षा मिलनी चाहिये वैसी शिक्षा नही मिल सकती। तो एक तरफ शिक्षा की माग को पूरा करना और दूसरी तरफ शिक्षा के स्तर को अधिक ऊंचा नही उठा सके तो कम-से-कम जहा तक वह पहुच गया है उस स्तर को सुरक्षित रखना है। ये दोनो चीजे देश के सामने इस रूप मे आ गई है कि न तो नए विद्यालयो को खोलना बन्द किया जा सकता और न अनेक प्रकार के अभावों के कारण उनकी ऐसी व्यवस्था की जा सकती जैसी होनी चाहिए। पैसे के अलावा अच्छे और विशिष्ट शिक्षा पाये हुए लोगों की जरूरत स्कूलों और कालेजो मे बहुत है। और अभी इतने अध्यापक जितने चाहिये उनको तैयार नही मिलते है। उनको तैयार करने का प्रयत्न बहुत बड़े पैमाने पर हो रहा है, मगर उसमे समय लगता है। तो यह सब ध्यान मे रखते हुए ऐसी संस्थाओ को इस व्यवस्थित तरीके से चलाना आसान काम नही है। जब आप इस दिशा मे इतने सफल हुए है उसे देख करके आपको बधाई देना एक प्रकार से अनिवार्य होता है और मै चाहता हू कि आपका यह काम दिन

शिक्षायतन के नये भवन के उद्घाटन के अवसर पर भाषण; कलकत्ता, 3 जुलाई, 1961

प्रतिदिन और भी उन्नति करे और जिस उत्साह से आपने आरम्भ किया और चलाया है उस उत्साह को आप बनाये रखे ।

बच्चो की शिक्षा और लडकियो की शिक्षा मे बहुत करके आज की हवा मे अन्तर नही है । आज के वायुमण्डल मे लडके और लडकियो के लिये एक ही विषय और एक ही स्थान पढने-पढ़ाने का प्रबन्ध किया जाए, ऐसी माग भी है । मगर हम यह नही भूल सकते कि दोनो के काम अलग-अलग है इसलिये कम से कम इतना तो अवश्य होना चाहिये जहा तक मिलकर एक साथ एक प्रकार की शिक्षा आवश्यक और जरूरी समझी जाय वह तो दी जाए मगर इसके अलावा अगर कुछ विशेष शिक्षा की जरूरत है बच्चियो के लिये तो वह उनको मिल जाए और लडको के लिये तो वह उनको मिल जाए और इस तरह से जब हम सोचेगे तो बहुत-सी समस्याए जो हमारे सामने खडी हुई है वे हल हो जायेगी । जब तेजी के साथ काम बढ रहा है तो हम को बहुत समय इन सब चीजो पर ध्यान देकर विचार करने के लिये नही मिलता और इस वजह से जो काम शुरू हो गया वह चलता जाए लेकिन हम चाहते है कि इन सब विषयो पर इस रीति से विचार भी किया जाए और देखा जाए कि कैसी क्या व्यवस्था आवश्यक है । मै कुछ पुरानी दकियानूसी रीति की बात नही करता हू मगर आखिर काम दोनो के अलग-अलग है । स्त्री और पुरुष जो काम दोनो कर सकते है उसके लिये शिक्षा दोनो की एक हो तो उसमे कोई हर्ज नही है । जिस काम को दोनो नही कर सकते और जिसके लिये विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता है वैसी शिक्षा मिलनी चाहिये नही तो समाज ठीक तरह से नही चल सकेगा । इसलिये शिक्षा के सम्बन्ध मे मैने आप लोगो से इतना कह देना जरूरी समझा है और इसलिये मैने कह दिया । मै आशा करूगा कि यहा जो लोग काम कर रहे है वे इस बात पर ध्यान रखेगे ज्ञान हो साथ-साथ हाथ-पैर चलाने की आदत हो और चरित्र-गठन भी हो (तालिया) । ये दोनो चीजे जरूरी है । पुस्तकीय ज्ञान ही सब कुछ नही होता । शिक्षा का पूरा अर्थ तो यह है कि मनुष्य को आज मनुष्य बना दिया जाए जितना है उससे बेहतर बना दिया जाए, नही तो शिक्षा और अशिक्षा मे फर्क क्या है ? जो काम आज एक व्यक्ति करता है या कर सकता है शिक्षा पाकर उससे काम और भी ज्यादा अच्छे तरीके से वह कर सके ऐसी योग्यता उसमे आ जानी चाहिए शिक्षा का असली अर्थ तो यही है । काम छोटा हो या बड़ा हो, चाहे वह काम प्रोफेसर बनकर कालेज मे पढाने का हो चाहे हल चलाकर खेत जोतने का हो या दुकान मे बैठकर माल बेचने का हो ।

शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि जो काम जिसके जिम्मे है वह उस काम को ज्यादा खूबी के साथ बेहतर तरीके से वह अदा कर सके, पूरा कर सके। तब सारा देश केवल पुस्तकीय ज्ञान से हमारा सारा काम चलनेवाला नही है। पुस्तकीय ज्ञान के प्रोत्साहन को मै किसी तरह से रोकना नही चाहता। मगर साथ-साथ और भी जो चीजे है उनको चलाना चाहता हू। आप इस बात पर ध्यान रखे और आप भी यह महसूस करेगे कि छात्रालयो मे खासकर के आजकल बहुत बाते सुनने मे आती है, यह करते है और वह करते है। उसको एक चरित्र गठन कह दिया है जिसमे सब कुछ आ जाता है। उसको अगर ठीक तरह से बनाया जाय और चरित्र का निर्माण ऐसा हो जाये तो उसमे जो कर्त्तव्य है वे उसका अच्छी तरह से पालन कर सके, दूसरो को सुखी रख सके और अपने को सुखी रख सके तब हम समझेगे कि हमारा प्रयत्न सफल हुआ है। यही उद्देश्य रख कर शिक्षा का सब काम किया जाना चाहिये। यही मेरे अपने विचार है। मुझे खुशी है कि आपने इस सस्था के साथ मेरा यह सम्बन्ध जोड दिया। मै आशा करूगा कि इससे लाभ पहुचेगा और खास करके जो यहा के विद्यार्थी है वे इस बात का ध्यान रखेगे कि आजकल देश की क्या जरूरत है और किस तरह से वे उसको स्वय अपने जीवन मे कर सकेगे।

सदाकत आश्रम में भाषण

भाइयो और बहिनो,

आज मै यहां कुछ बोलूगा यह सोचकर नही आया । मैंने तो यह ख्याल किया कि आज सिर्फ बदरी बाबू और नथुनी बाबू हमारे साथ रहेंगे और उन लोगो के साथ इस आश्रम के सम्बन्ध मे चुपचाप कुछ बाते करूंगा। मगर यहा आने पर मै देखता हू कि यह सभा लग गई है और उसके साथ-साथ एक गाय और एक बछडा यहा बंधे हुए है उससे और भी कुछ लोगों की दिलचस्पी बढ़ गई है। मै गाय के सम्बन्ध मे यह कह देना चाहता हूं कि ये गाय और बछड़ा दोनों इंग्लैण्ड के जेर्सी के हैं और वहां से आये थे महाराजा नाभा के पास और महाराजा नाभा ने हम को भेट किया। सोचा कि कहा रखू और क्या करूं? राष्ट्रपति भवन मे कोई खास अपनी डेरी तो नही है गवर्नमेंट की दूसरी डेरी को दे सकता था मगर पता नही उन लोगों के लिये यह उपयोगी हो या नही। मैंने सोचा सब से अच्छा तो यही है कि मै इन्हे सदाकत आश्रम को दे दू यहा के लोग इनकी देख-भाल करेगे और उनसे जो कुछ दूध-दही मिलेगा उसका सदुपयोग करते रहेगे। इसी ख्याल से मैंने इनको यहा भेज दिया है। मै आशा करता हूं कि इनकी अच्छी देख-भाल करेगे क्योकि ये विदेश से आये है और यहां की आब-हवा शायद इनके माफिक किस हद तक आवे, नहीं आवे पता नही। मगर जिस तरह उत्तर मे नाभा वगैरह मे है आशा है यहा की आबहवा भी वे बर्दाश्त कर लेंगे। मै जानता हूं कि पटना के ग्वालो के लिये यह कोई नई चीज नहीं है। बरसों से देखता हू कि यहा जेर्सी की गाये बहुत है क्योकि वे ज्यादा दूध देती है और ग्वालों को फायदा होता है। यहां के लिये ये कोई नई चीज नही है मगर तो भी आश्रम के लिये नई चीज है। आश्रम मे शायद इस तरह की गाय नही है। इसलिये मैंने मुनासिब समझा कि आश्रम को दे दू।

दूसरा काम यहां आने के लिये था वह यह कि आश्रम को एक बार फिर से देख लू कैसा है, किस तरह से चलता है, क्या काम हो रहा है रहन-सहन के तौर-तरीके क्या है कितने लोग है यह सब देखने और जानने के लिये खास करके मै आया क्योंकि हो सकता है कि मुझे फिर आना पड़े और यहा रहना पड़े तो पहले से

सदाकत आश्रम पटना मे उपस्थिति भीड़ के सामने भाषण; पटना, 4 जुलाई, 1961

देख लेना जान लेना अच्छा है। अगर यहा आना भी और रहना भी नही हुआ तो भी जब तक इधर आता हूं तो हमेशा मुलाकात होती है, आश्रम मे भी आता हूं। कुछ न कुछ लोग जमा हो जाते है। पटना मे आता हू तो आश्रम मे जरूर आता हूं यह लगा रहा और अब भी लगा रहेगा। मै उम्मीद करता हू कि आप सब लोग आश्रम का वैसा ही खयाल रखेगे जिस तरह से अब तक खयाल रखते आये है जिससे इसका काम ठीक तरह से चलता रहे।

हिन्दी पत्रिका 'सरस्वती' का हीरक जयन्ती ग्रंक की भेंट स्वीकार

सभापति महोदय, देवियो और सज्जनो,

मुझे सब से पहले आप लोगो से इस शिकायत के लिये माफी मागनी है कि आपको यह समारोह दिल्ली मे आकर करना पडा जबकि मुझे प्रयाग जाकर इसमे सम्मिलित होना चाहिये था। मगर इसका कारण आप जानते है और इसका मुझे भरोसा है कि आप ने मेरे मागने के पहले ही मुझे क्षमा कर दिया होगा।

यह शताब्दी आरम्भ से आज तक एक बडी क्रातिकारी शताब्दी भारतवर्ष के लिये रही है। वह केवल राजनीतिक क्षेत्र मे ही नही, साहित्यिक क्षेत्र मे भी, विशेष करके हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य के क्षेत्र मे भी और उसका ही यह एक सुफल है कि 'सरस्वती' जैसी पत्रिका जन्म इसके आरम्भ मे हुआ और उसका काम आज तक ठीक तरह से खूबी से चलता आया है।

इस राष्ट्रपति भवन मे एक सुन्दर उद्यान है। इसमे बहुत से सुन्दर मौलसरी और बकुल के पेड लगे है। अगर कोई देखे तो वह जल्द पहचान नही सकता कि ये बकुल के पेड है और वे जैसे सुन्दर है और वैसे सुन्दर कैसे बने है और उनकी जो दूसरी खूबिया है उनको तो और भी किसी अनजान पुरुष के लिये जानना कठिन है।

मै सोच रहा था कि 'सरस्वती' का भी वही रूप है। जिसने इसको जन्म दिया, जिन लोगो ने आरम्भ मे इसके पौधे को लगाया, वह तो ठीक उसी तरह का पौधा होगा जैसा इस मौलसरी के वृक्ष का पौधा हुआ होगा। मगर आहिस्ता-आहिस्ता जैसे यह पौधा बढता गया और इसको काट-छाट कर ऐसा सुन्दर बना दिया गया कि वह अर्धगोलाकार देखने मे आता है और सिर्फ यही नही कि इसमे सुन्दर पत्ते लगे हुए है, जब समय आता है तो इसमे बहुत सुन्दर फूल भी निकलते है और वे फूल दूसरे फूलो जैसे नही होते जिनकी सुगन्ध थोडे ही दिनो मे खतम हो जाती है बल्कि इन फूलो की सुगन्ध उनके सूख जाने के बाद भी ज्यो कि त्यो बनी रहती है। जब फूल फल मे परिणत हो जाते है तो फल भी वैसे ही सुन्दर देखने मे होते है और विशेष करके पक्षियों के खाने के लिये बहुत ही मीठे होते है। इन पेडों को अगर आप दिन में जाकर

हिन्दी पत्रिका 'सरस्वती' का हीरक जयन्ती ग्रक की भेट स्वीकार करते समय भाषण, 31 दिसम्बर, 1961

देखे तो आपको कही भी पता नही लगेगा कि इन मौलसारी के गाछो मे कोई रहता और 5 बजे शाम के करीब आप देखे तो चिड़ियो की चहचहाहट ऐसी सुन्दर मालूम होती है कि मन सुनकर मुग्ध हो जाता है।

मै सोचता हूं कि 'सरस्वती' का जन्म देने मे जिन लोगो ने मदद की, जिन लोगो ने इसके लिये साधन और सामान जुटाये उन्होने इसी तरह का काम किया जिस तरह से सीढियो के जरिये से और कैंचियो से काटकर माली इनको सजने-सजाने का काम करते रहते है। इसके अनेक सम्पादक रहे है मगर इसका श्रेय जिन्होंने इसको मुख्य रूप दिया उनको ही है "और उन्हे भी जिन्होने इसको गोलाकार रूप दिया, इसको औरो ने भी सुन्दर बनाया, सजाया और आज भी बनाते जा रहे है उन सब को है।

जिस तरह से मौलसरी के पेड के फल बहुतेरे जीवो को सहायता देत है और उनके फूल अपनी सुगन्ध चारो तरफ फैलाते है उसी तरह से जिनके लेख इस पत्रिका मे छपे, प्रकाशित हुए उनसे इनके लिखनेवाले, पढने वाले दोनो को हर तरह से फायदा पहुंचा और जिस तरह से इस बगीचे के मौलसरी के पेडो मे न मालूम कितनी चिडिया पलती है, इस सरस्वती को न मालूम कितने लेखको ने पढा, पढाया।

तो मै यह सोचता था कि जिस तरह से मौलसरी के गाछ बहुत दीर्घजीवी हुआ करते है और काटने पर उसका काठ भी बहुत जबर्दस्त हुआ करता है उसी तरह से 'सरस्वती' का जो सुन्दर वृक्ष के इतने परिश्रम से बनाया गया है, पैदा किया गया है वह दीर्घजीवी रहेगा और अन्त मे भी यह इतना जबर्दस्त और मजबूत काम कर जायेगा कि बहुत दिनो तक भारतवर्ष मे इसकी याद रखी जायेगी।

इसके लिये सब से पहले श्री चिन्तामणि घोष को हमे धन्यवाद देना है या उनकी याद रखनी है। उसके बाद श्री द्विवेदी जी, उनसे भी पहले श्याम सुन्दर दास जी और जितने लोगों ने आज तक इसकी सेवा की है, जितने लोगो ने इस पत्रिका मे कविता, लेख, कहानियो द्वारा जनता की सेवा की सब हमारे धन्य-वाद के पात्र है।

मुझे इस बात की खुशी है कि आपने सोचा कि सरस्वती की हीरक जयन्ती मनायी जाय। जैसा आपसे कहा गया, यह एक नयी चीज है। मनुष्यो की हीरक जयन्ती मनायी जाती है मगर इस पत्रिका की हीरक जयन्ती मनायी

गयी यह बडी बात है। इससे आशा होती है कि न केवल लिखने वालों की बल्कि उनकी कृत्तियों की जयन्ती मनायी जायेगी । हमारे देश में जिस तरह से 'सरस्वती' ने एक नयी परिपाटी कायम कर दी, हिन्दी भाषा को एक रूप दे दिया और जिस प्रकार से न केवल लेखो का लिखना लिखवाना ही बल्कि हिन्दी साहित्य मे आलोचनात्मक लेखो को एक प्रकार से 'सरस्वती' ने जन्म दिया सब के लिये हम उसके आभारी है और हमेशा आभारी रहेंगे।

आपने बड़ी कृपा की, इतना कष्ट उठाकर आप यहा आये। जैसा मैंने कहा, मुझे प्रयाग जाना चाहिये था और आकर और भी विशेष कृपा मेरे ऊपर आपने यह की कि आपने मुझे एक सुन्दर ग्रन्थ भेट किया। मै आप सब को दिल से धन्यवाद देना चाहता हू और आशा करता हू कि भारतवर्ष मे हिन्दी का प्रचार हर तरह से पहले, जैसा आपने बताया, अहिन्दी भाषियों के द्वारा अधिक हुआ, हिन्दी भाषियो मे भी अहिन्दी भाषियो के द्वारा हिन्दी का प्रचार हुआ, उसी तरह से अब राजनीतिक झगडों को भूल भुलाकर हम लोग हिन्दी भाषा का प्रचार एक राष्ट्रीय भाषा के रूप मे, सारे देश को एक साथ बांधने के सूत्र के रूप में हिन्दी भाषी तो करेगे ही, मगर इससे भी ज्यादा अहिन्दी भाषी इस काम को खूबी से करेंगे और तब जो स्वतन्त्रता हमने पायी है वह पूरी हो सकेगी । जब तक विदेशी भाषा की आवश्यकता हमे रहेगी तब तक हम यह नही कह सकते कि हमारी बौद्धिक उन्नति ठीक प्रकार से हुयी । क्योंकि विदेशी भाषा हमने अपने यहां नही पायी है, उसको हमे कही विदेश से लाना पड़ा। उस चीज के भरोसे हम अपनी बौद्धिक उन्नति, हम अपना बौद्धिक विकास कैसे और कहा तक कर सकेंगे यह समझने की बात है।

मुझे पूरी आशा है कि हिन्दी बोलने वाले, जो हिन्दी प्रदेशों के रहने वाले, भारतवर्ष के दूसरे हिस्से के लोगों की देश के प्रति जो आस्था है और प्रेम है उस पर विश्वास करके यह उन पर छोड़ दे कि वे हिन्दी को अपना लें और हिन्दी की जो प्रतिष्ठा होनी चाहिये वह अपनी खुशी से दें और वह सारे देश की एक भाषा हो जाये। धन्यवाद।

M2President/62—Sec. II—200—8-6-62—GIPF.